

साहित्य अकादेमी

वार्षिकी

2004-2005





साहित्य अकादेमी
वार्षिकी
2004-2005

विषय-क्रम

प्रमुख गतिविधियाँ

- साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्यता घोषित
- मानद महत्तर सदस्यता प्रदत्त
- अकादेमी *अनुवाद पुरस्कार* 2004 घोषित
- साहित्य अकादेमी *भाषा सम्मान* 2004 घोषित
- अकादेमी पुरस्कार 2004 प्रदत्त
- अकादेमी *अनुवाद पुरस्कार* और *भाषा सम्मान* 2003 प्रदत्त
- अकादेमी के स्वर्ण जयंती समारोहों का उद्‌घाटन
- स्वर्ण जयंती स्मारक डाक टिकट का लोकार्पण
- *फ़ाइव डिकेड्स* : अकादेमी के संक्षिप्त इतिहास का लोकार्पण
- दक्षिण एशियाई साहित्य सम्मेलन 'एक आसमान, अनेक संसार : दक्षिण एशियाई साहित्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन
- 40 संगोष्ठियों का आयोजन
- 240 नई एवं पुनर्मुद्रित पुस्तकें प्रकाशित
- सांस्कृतिक विनिमय एवं साहित्य मंच की 47 गोष्ठियाँ संपन्न
- 3 कार्यशालाएँ आयोजित
- 'लेखक से भेंट' श्रृंखला में 9 कार्यक्रमों का आयोजन
- 'मेरे झरोखे से' श्रृंखला में 2 कार्यक्रमों का आयोजन
- 'लोक' श्रृंखला के अंतर्गत 3; 'कवि-संधि' श्रृंखला के अंतर्गत 6; 'कथा-संधि' श्रृंखला के अंतर्गत 3; 'मुलाक़ात' श्रृंखला के अंतर्गत 5; 'अस्मिता' श्रृंखला के अंतर्गत 8; 'सुर-साहित्य' के अंतर्गत 2 तथा 'व्यक्ति और कृति' श्रृंखला के अंतर्गत 3 कार्यक्रमों का आयोजन
- 72 पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन
- *इंडियन लिटरेचर* के 6 और *समकालीन भारतीय साहित्य* के 6 अंकों का प्रकाशन
- एक करोड़ इकहत्तर हज़ार रुपये मूल्य की पुस्तकों की बिक्री

महत्तर सदस्यों का चुनाव

साहित्य अकादेमी किसी लेखक को सर्वोच्च सम्मान उसे अपना महत्तर सदस्य चुनकर करती है। यह सम्मान शीर्षस्थ साहित्यकारों को दिया जाता है। एक समय में अकादेमी के अधिकतम 21 महत्तर सदस्य हो सकते हैं।

साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् की बैठक 1 नवंबर 2004 को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग की अध्यक्षता में संपन्न हुई, जिसमें सर्वसम्मति से प्रख्यात कन्नड कथाकार प्रो. यू. आर. अनंतमूर्ति तथा पंजाबी की सुप्रसिद्ध कवयित्री एवं कथाकर श्रीमती अमृता प्रीतम को महत्तर सदस्यता के लिए चुना गया।

16 फ़रवरी 2005 को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग की अध्यक्षता में संपन्न हुई सामान्य परिषद् की बैठक में हिन्दी के प्रख्यात लेखक श्री निर्मल वर्मा और मलयाळम् के प्रख्यात कथाकार श्री कोविलन (वी. वी. अय्यप्पन) को भी साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्यता के लिए चुना गया।



यू. आर. अनंतमूर्ति



अमृता प्रीतम



निर्मल वर्मा



कोविलन
(वी.वी. अय्यप्पन)

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2004

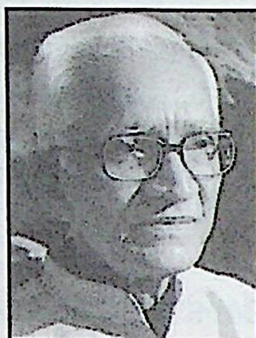
15 फ़रवरी 2005 को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में वर्ष 2004 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार के लिए 22 पुस्तकों का चयन संबद्ध भाषाओं में त्रिसदस्यीय निर्णायक मंडल की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पूर्व के वर्ष से पहले के तीन वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2000 से 31 दिसंबर 2002 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2004 से सम्मानित लेखक

असमिया	:	हीरेन्द्र नाथ दत्त, *मानुह अनुकूले* (कविता-संग्रह)
बाङ्ला	:	सुधीर चक्रवर्ती, *बाउल फकिर कथा* (समालोचना)
डोगरी	:	शिवनाथ, *चेतें दी चितकबरी* (निबंध-संग्रह)
अंग्रेज़ी	:	उपमन्यु चटर्जी, *द मैमरीज़ ऑफ़ द वेलफ़ेयर स्टेट* (उपन्यास)
गुजराती	:	अमृतलाल वेगड, *सौन्दर्यनी नदी नर्मदा* (यात्रा-वृत्तांत)
हिन्दी	:	वीरेन डंगवाल, *दुश्चक्र में स्रष्टा* (कविता-संग्रह)
कन्नड	:	गीता नागभूषण, *बदुकु* (उपन्यास)
कश्मीरी	:	गुलाम नबी फ़िराक़, *सदा ति समन्दर* (कविता-संग्रह)
कोंकणी	:	जयंती नायक, *अथांग* (कहानी-संग्रह)
मैथिली	:	चंद्रभानु सिंह, *शकुन्तला* (महाकाव्य)
मलयाळम्	:	पॉल ज़करिया, *ज़करियायुटे कथकळ* (कहानी-संग्रह)
मणिपुरी	:	नाओरेम वीरेन्द्रजित सिंह, *लांथेङ्नरिब लान्मी* (कविता-संग्रह)
मराठी	:	सदानंद नामदेवराव देशमुख, *बारोमास* (उपन्यास)
नेपाली	:	जस योञ्जन 'प्यासी', *शांति संदेह* (कविता-संग्रह)
ओड़िया	:	प्रफुल्ल कुमार मोहांती, *भारतीय संस्कृति ओ भगवद्गीता* (समालोचना)
पंजाबी	:	सुतिन्दर सिंह नूर, *कविता दी भूमिका* (समालोचना)
राजस्थानी	:	नंद भारद्वाज, *सांम्ही खुलतौ मारग* (उपन्यास)
संस्कृत	:	देवर्षि कलानाथ शास्त्री, *आख्यानवल्लरी* (कथा-संग्रह)
सिन्धी	:	सतीश रोहरा, *कविता खाँ कविता ताईं* (समालोचना)
तमिष़	:	इरोड तमिष़नबन, *वणक्कम वळ्ळुवा* (कविता-संग्रह)
तेलुगु	:	डी. नवीन, *कालरेखलु* (उपन्यास)
उर्दू	:	सलाम बिन रज़ाक, *शिकस्ता बुतों के दरमियाँ* (कहानी-संग्रह)



हीरेन्द्र नाथ दत्त



अमृतलाल वेगड



गुलाम नबी फ़िराक़



सुधीर चक्रवर्ती



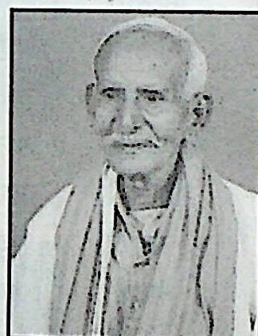
जयंती नायक



वीरेन डंगवाल



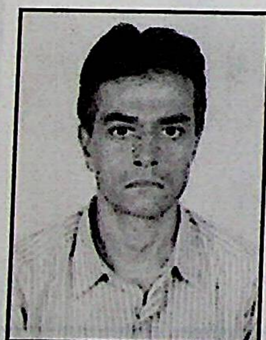
शिवनाथ



चंद्रभानु सिंह



गीता नागभूषण



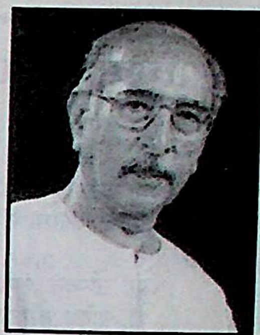
उपमन्यु चटर्जी



पॉल ज़करिया


नाओरेम वीरेन्द्रजित सिंह


सुतिन्दर सिंह नूर


सतीश रोहरा


सदानंद नामदेवराव देशमुख

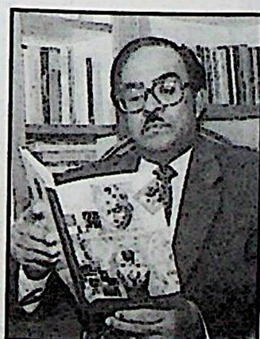

नंद भारद्वाज


इरोड तमिष़नबन


जस योञ्जन 'प्यासी'


देवर्षि कलानाथ शास्त्री

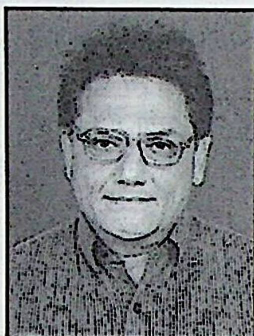

डी. नवीन


प्रफुल्ल कुमार मोहांती

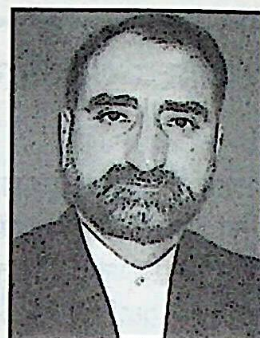

सलाम बिन रज़ाक



प्रीति बरुआ



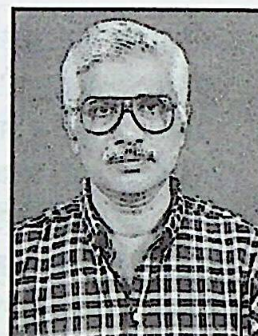
महेश चंपकलाल



रफ़ीक मसूदी



सुजीत चौधुरी



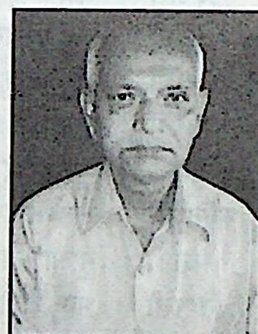
माधव बोरकर



रामशंकर द्विवेदी



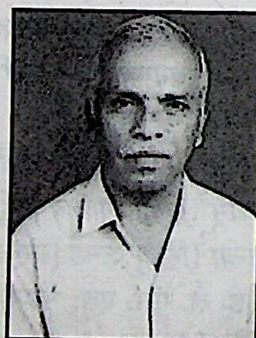
जितेन्द्र शर्मा



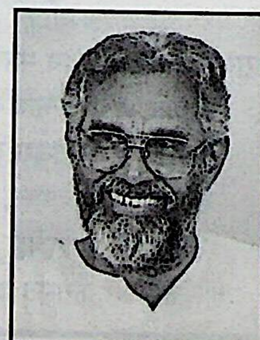
प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'



एम. असदुद्दीन



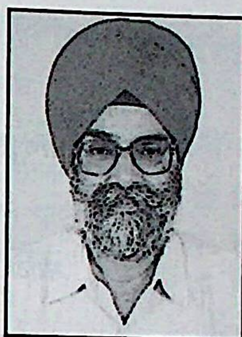
चंद्रकांत पोकळे



पुतुश्शेरि रामचंद्रन



नाङ्थोम्बम कुजमोहन सिंह



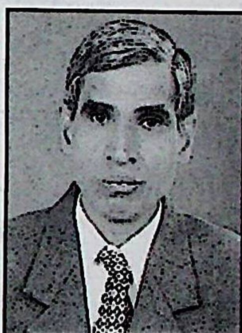
जगबीर सिंह



यशोधरा वाधवाणी



मृणालिनी प्रभाकर गडकरी



कुदन माली



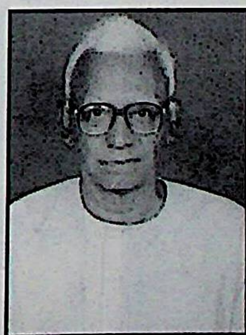
पावण्णन



भानु छेत्री



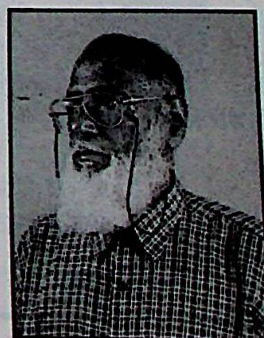
गोंगिशेट्टी लक्ष्मीनारायण



जगन्नाथ पाठक



चौधुरी हेमकांत मिश्र



करामत अली करामत

निर्णायक मंडल के सदस्य

असमिया

श्री प्रफुल्ल चंद्र बोरा
श्रीमती शुचिव्रत राय चौधुरी
डॉ. अमरेन्द्र कलिता

बाङ्ला

श्री मानवेन्द्र बंधोपाध्याय
श्रीमती मीनाक्षी सेन
श्री रामबहल तिवारी

डोगरी

प्रो. नीलांबर देव शर्मा
प्रो. चंपा शर्मा
डॉ. ज्ञान सिंह

अंग्रेज़ी

डॉ. अमिय देव
श्री दिलीप चित्रे
डॉ. अनीसुर रहमान

गुजराती

श्री चंद्रकांत टोपीवाला
श्री धीरूभाई पारिख
श्री सुमन शाह

हिन्दी

श्री नरेश सक्सेना
श्री ओम प्रकाश वाल्मीकि
प्रो. नित्यानंद तिवारी

कन्नड

प्रो. राजेन्द्र चेन्नि
डॉ. वीणा शांतेश्वर
डॉ. तिप्पेस्वामी

कश्मीरी

प्रो. मिशैल सुल्तानपुरी
श्री जी. एन. ख़याल
श्री अमीन कामिल

कोंकणी

श्री के. आर. वसंतमोनी
श्री सुरेश अमोणकर
सुश्री रूपा चारी

मैथिली

डॉ. बासुकिनाथ झा
डॉ. अमरेश पाठक
डॉ. रामदेव झा

मलयाळम्

प्रो. वी. मधुसूदनन् नायर
डॉ. पी. वेणुगोपालन
डॉ. आर. विश्वनाथन

मणिपुरी

श्री क्ष. राजेश्वर
डॉ. पी. नभचंद्र सिंह
डॉ. च. जामिनी देवी

मराठी

डॉ. चंद्रकांत पाटील
सुश्री नंदिनी आत्मसिद्धा
श्री विलास गीते

नेपाली

प्रो. अजय पट्टनायक
श्रीमती सौदामिनी नंदा
श्री शरत कुमार मोहांती

पंजाबी

श्री इक़बाल दीप
डॉ. हरभजन सिंह भाटिया
प्रो. रवीन्द्र भठ्ठल

राजस्थानी

श्री ओम पुरोहित 'खडग'
श्री जनक राज पारीक
डॉ. नंद भारद्वाज

संस्कृत

प्रो. काशीनाथ मिश्र
प्रो. श्रीनारायण मिश्र
डॉ. अशोक कुमार कालिया

सिन्धी

डॉ. जीथो लालवाणी
डॉ. कमला गोकलाणी
श्री वासदेव मोही

तमिष़

डॉ. आरएम पेरिआकरुणप्पन
श्री सी. मोहन
श्री के. स्तालिन .

तेलुगु

डॉ. पी. विजयराघव रेड्डी
प्रो. एम. विजयलक्ष्मी
प्रो. डी. रंगा राव

उर्दू

श्री मज़्हर इमाम
श्री सलाम बिन रज़्ज़ाक
डॉ. तारिक़ छतारी

भाषा सम्मान 2004

साहित्य अकादेमी प्रत्येक वर्ष उन विद्वानों/लेखकों को भाषा सम्मान प्रदान करती है, जिन्होंने कालजयी और मध्यकालीन साहित्य के क्षेत्र में कार्य किया है तथा वे विद्वान, जिन्होंने उन भाषाओं के विकास में योगदान किया हो, जो साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त नहीं हैं। ऐसे कार्यों के लिए प्रत्येक वर्ष दो वर्गों में क्रमशः दो-दो सम्मान प्रदान किए जाते हैं।

वर्ष 2004 के भाषा सम्मान के लिए निम्नलिखित विद्वानों/लेखकों को चुना गया—

प्रख्यात ओड़िया और संस्कृत के विद्वान एवं लेखक पं. दुःखिश्याम पट्टनायक को कालजयी और मध्यकालीन साहित्य में किए गए उनके योगदान के लिए।

प्रख्यात संस्कृत के विद्वान एवं लेखक प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी को कालजयी और मध्यकालीन साहित्य में किए गए उनके योगदान के लिए।

प्रख्यात विद्वान एवं लेखक डॉ. हीरा लाल शुक्ला को *गोंडी* भाषा और साहित्य के क्षेत्र में किए गए उनके योगदान के लिए।

प्रख्यात विद्वान एवं लेखक श्री विनोद कुमार नायक को *हो* भाषा और साहित्य के क्षेत्र में किए गए उनके योगदान के लिए।

निर्णायक मंडल के सदस्य

कालजयी और मध्यकालीन साहित्य

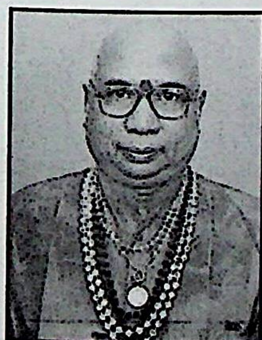
प्रो. जितेन्द्र मोहन मोहांती
प्रो. सी. राजेन्द्रन
डॉ. किरीट जोशी

गोंडी भाषा

प्रो. जी. उमामहेश्वर राव
डॉ. महेन्द्र कुमार मिश्र
प्रो. के. रमेश कुमार

हो भाषा

डॉ. लक्ष्मण पालेया
श्री जयपाल सिंह नायक
श्री सिद्धेश्वर टिउ

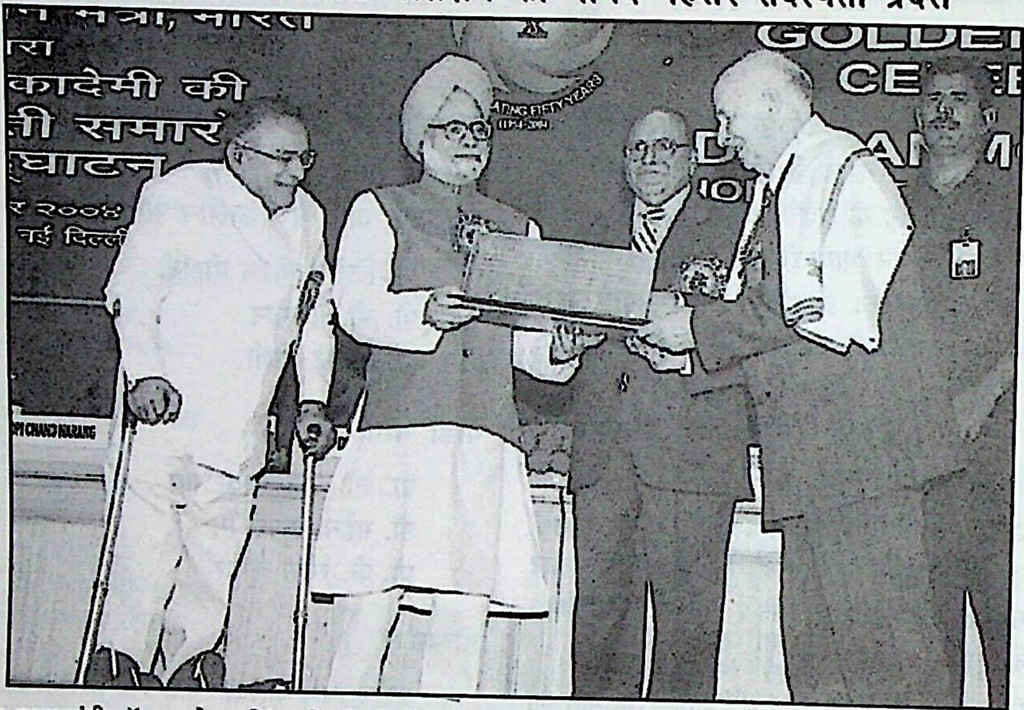

पं. दुःखिश्याम पट्टनायक


कमलेश दत्त त्रिपाठी


हीरा लाल शुक्ल


विनोद कुमार नायक

प्रो. एवगनी पेत्रेविच चेलिशेव को मानद महत्तर सदस्यता प्रदत्त



माननीय प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, प्रो. ई. पी. चेलिशेव को मानद महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए, साथ में हैं माननीय सूचना एवं प्रसारण तथा संस्कृति मंत्री श्री एस. जयपाल रेड्डी और साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग

प्रख्यात रूसी और हिन्दी के विद्वान एवं भारतविद् प्रो. ई. पी. चेलिशेव को साहित्य अकादेमी की मानद महत्तर सदस्यता प्रदान की गई। माननीय प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 1 नवंबर 2004 को नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में आयोजित स्वर्ण जयंती उद्‌घाटन समारोह में प्रो. चेलिशेव को महत्तर सदस्यता प्रदान की।

माननीय प्रधानमंत्री ने इसी समारोह में कन्नड के प्रख्यात कथाकार एवं अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष प्रो. यू. आर. अनंतमूर्ति, सुप्रसिद्ध बाङ्ला कवि और लेखक श्री शंख घोष, राजस्थानी और हिन्दी के प्रख्यात लेखक श्री विजयदान देथा, अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त भाषाविद् प्रो. भा. कृष्णमूर्ति तथा सुप्रसिद्ध पंजाबी कवयित्री एवं कथाकार श्रीमती अमृता प्रीतम को भी महत्तर सदस्यता प्रदान की।

वित्तीय सलाहकार

पहले श्री वी. सुब्रह्मण्यम् के स्थान पर श्री पी. के. मिश्रा को अकादेमी का वित्तीय सलाहकार नियुक्त किया गया और अब श्रीमती दीपा जैन सिंह वित्तीय सलाहकार हैं।

साहित्योत्सव 2005

अकादेमी 2004 प्रदर्शनी
15 फ़रवरी 2005, नई दिल्ली

ओड़िया की प्रख्यात कथाकार श्रीमती प्रतिभा राय ने साहित्य अकादेमी के वार्षिक रंगारंग उत्सव का उद्घाटन, रवीन्द्र भवन सभागार के सामने प्रदर्शित सप्ताहकालीन अकादेमी 2004 प्रदर्शनी, जिसमें वर्ष 2004 की प्रमुख गतिविधियों को प्रदर्शित किया गया था, अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग, अकादेमी के सचिव प्रो. के. सच्चिदानंदन तथा देश के विभिन्न प्रांतों से आए ख्यातिप्राप्त लेखकों की उपस्थिति में किया। अपने उद्घाटन व्याख्यान में श्रीमती प्रतिभा राय ने वर्ष 2004, जो अकादेमी का स्वर्ण वर्ष था, में साहित्य अकादेमी की विशिष्ट गतिविधियों का उल्लेख किया, विशेषकर साहित्यिक कार्यक्रमों का, जैसे—मुंबई में आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मिलन : काव्य भारती, भोपाल, त्रिवेन्द्रम, अहमदाबाद और भुवनेश्वर में आयोजित युवा लेखक सम्मिलन और 'नए स्वर' विषयक कार्यक्रम। उन्होंने कहा कि प्रो. गोपीचंद नारंग के योग्य निर्देशन और प्रो. के. सच्चिदानंदन की रचनात्मक योजनाओं तथा अकादेमीकर्मियों के सहयोग ने इन कार्यक्रमों को अविस्मरणीय बना दिया है।



अकादेमी 2004 प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए श्रीमती प्रतिभा राय; साथ में हैं मोहम्मद ज़मान आज़ुर्दा, प्रो. के. सच्चिदानंदन, श्री गिरिराज किशोर और प्रो. गोपीचंद नारंग

पुरस्कार-अर्पण समारोह
16 फ़रवरी 2005, नई दिल्ली

16 फ़रवरी 2005, बुधवार, सायं 5:30 बजे फ़िक्की स्वर्ण जयंती सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह में साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2004 प्रदान किए गए।

साहित्य अकादेमी के सचिव प्रो. के. सच्चिदानंदन ने पुरस्कार विजेताओं और श्रोताओं का स्वागत करते हुए कहा, "पिछले पचास वर्षों से हम भारतीय साहित्य की सेवा में पूर्णतः समर्पित हैं। विभिन्न भाषाओं के इतिहास, विनिबंधों, विश्वकोष, ग्रंथ-सूची, हूब़हू और विभिन्न भाषाओं से अनूदित पुस्तकों एवं पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ-साथ हम साहित्यिक संगोष्ठियों और परिसंवाद जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को साहित्य के प्रति जागरूक बनाने का काम करते रहे हैं। इसके अतिरिक्त हमने विशेषरूप से दलित, स्त्री और अल्पसंख्यकों जैसे उपेक्षित वर्ग के लेखन को भी अपनी संगोष्ठियों एवं पुरस्कारों में शामिल कर प्रोत्साहित किया है। गत वर्षों में हमने एक ऐसी लचीली और जीवंत योजनाएँ तैयार की हैं, जिनके तहत हम प्रत्येक वर्ष उत्कृष्ट पुस्तकों का चयन कर उन्हें विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रकाशित करवाते हैं तथा इन पुस्तकों के लेखक प्रख्यात भारतीय लेखक होते हैं। ऐसे भी कई लेखक हैं, जिन्हें अब तक साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त नहीं हुआ है, लेकिन इससे ये लेखक उन लेखकों से कमतर नहीं सिद्ध होते, जिन्हें यह पुरस्कार मिला; और आज भी, साहित्य



प्रो. के. सच्चिदानंदन, प्रो. यू. आर. अनंतमूर्ति, प्रो. गोपीचंद नारंग और श्री सुनील गंगोपाध्याय

अकादेमी पुरस्कार, उससे बाद में प्रारंभ हुए अन्य कई पुरस्कारों की तुलना में कहीं अधिक सम्मानित है, जिनकी राशि अकादेमी पुरस्कार से अधिक है। वे समालोचक, जो किसी भी क़ीमत पर समझौता करना पसंद नहीं करते, वे भी इस पुरस्कार को सम्मान और प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखते हैं। इसलिए हमारी कोई आलोचना हमारे लिए चिन्ता का विषय नहीं है; हम तो इस बात को लेकर हर्षित हैं, कि वह हमें इस पुरस्कार की गुणवत्ता के प्रति आश्वस्त करती है, जो सुस्पष्ट और विवेकी पाठकों को भी साहित्य के प्रति गंभीर बनाता है तथा वर्ष में कम-से-कम कुछेक दिनों के लिए उनको इस चर्चा में सम्मिलित होने का अवसर प्रदान करता है।"

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग ने व्याख्यान का पहला भाग हिन्दी और दूसरा भाग अंग्रेज़ी में प्रस्तुत किया। उन्होंने मुख्य अतिथि प्रो. यू. आर. अनंतमूर्ति का स्वागत करते हुए कहा कि मंच पर उनकी उपस्थिति ऐसी प्रतीत हो रही है मानो, 'वह अपने घर वापस आ गए हों।' प्रो. नारंग ने प्रो. अनंतमूर्ति साहित्यिक विशिष्टताओं के बारे में विस्तार से बताया, जो पाठकों के हृदय को गहरे प्रभावित करती हैं; और उनके प्रति श्रद्धा प्रकट की। अपने व्याख्यान में प्रो. नारंग ने भारतीय भाषाओं के भविष्य पर गहरी चिन्ता जताई और राष्ट्र निर्माताओं द्वारा इस दिशा में ध्यान देने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि, 'बेशक़ हमारे यहाँ शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है, लेकिन राज्य पुनर्गठन आयोग के गठन के बाद भी भाषा का मुद्दा सामान्यतः राज्यों का ही विषय माना जाता है। राजभाषा के नाम पर औपचारिकताओं की पूर्ति तो की जाती है, लेकिन इस बात पर गहराई से विचार नहीं किया जाता, न ही इसका मूल्यांकन होता है कि किस प्रकार क्षेत्रीय भाषाएँ विकसित हो रही हैं, उनकी अभिवृद्धि हो रही है, या वह कमज़ोर पड़ रही हैं। पंडित नेहरू के बाद एक बुरी बात यह हुई कि देश में राजनीतिक संस्कृति का ग्राफ़ निरंतर नीचे गया है। राष्ट्रीय स्तर पर नीति नियोजन के एजेंडा से भाषा संबंधी सरोकार लगभग लुप्त हो गए हैं। हाल ही में अभी पिछली शासन-व्यवस्था ने भाषाओं से संबंधी, बिना किसी गहन चिन्तन के, पूर्णतः राजनीतिक निर्णयों की घोषणा की तथा उसके संबंध में तर्क बाद में प्रस्तुत किए। प्रो. नारंग ने ज़ोर देकर कहा कि वैश्वीकरण के उदय, बाज़ारीकरण और उपभोक्तावाद के कारण हमारी क्षेत्रीय भाषाओं, साहित्यों और संस्कृति के लिए ख़तरनाक स्थितियाँ उत्पन्न हो गई हैं। वैश्वीकरण के आलोक में सांस्कृतिक संभागीकरण ने हमारी भाषाओं की बहुलता के समक्ष एक वास्तविक ख़तरा पैदा कर दिया है। बाज़ार ने संस्कृति को तेज़ी से उपभोग सामग्री में बदल दिया है, जो बेची और ख़रीदी जा सकती है और यह क्रिया एक ही दिशा की ओर ज़्यादा झुकी हुई है—संपन्न राष्ट्रों से निर्धन राष्ट्रों की ओर।" उन्होंने कहा, "गत दस वर्षों में संस्कृति के व्यापार में तीन गुणा बढ़ोतरी हुई है। इसके परिणामस्वरूप आनेवाले कुछ दशकों में, मनुष्य द्वारा बोली जानेवाली पाँच हज़ार अनूठी भाषाओं में से 90 प्रतिशत से अधिक भाषाएँ लुप्त हो जाएँगी। प्रो. नारंग ने कहा कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यालयी व्यवस्था क्षेत्रीय भाषाओं की तुलना में अंग्रेज़ी भाषा की ओर बड़ी मात्रा में स्थानांतरित हुई है। उन्होंने कहा, "यदि हम

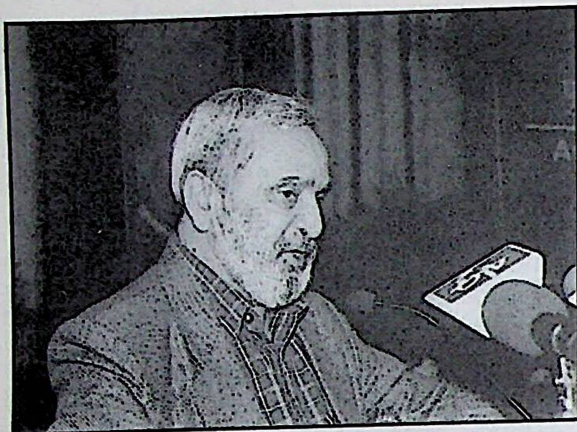
विद्यालयी व्यवस्था और सामान्य शिक्षा परिदृश्य को देखें तो हमारे यहाँ सांस्कृतिक और भाषा प्रवाह एक ही दिशा में है। 'सार्वभौम' को 'स्थानीय' की रचना मानना एक मिथक है। उन्होंने यह भी माना कि अगर अंग्रेज़ी को उसके प्रकार्यात्मक उपयोग के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो उसकी एक ऐतिहासिक आवश्यकता है और यदि डेविड क्रिस्टल के सिद्धांत को मानें तो भारतीय अंग्रेज़ी विश्वभर में सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषा हो जाएगी। विशेषज्ञ अंग्रेज़ी के इस बढ़ते प्रभाव के प्रश्नों को उठा रहे हैं, जिससे अन्य भारतीय भाषाएँ प्रभावित हो रही हैं। क्या अधिकतर क्षेत्रीय भाषाएँ अपनी पुस्तकों के अंग्रेज़ी अनुवाद उपलब्ध नहीं करा रही हैं, जबकि अंग्रेज़ी पुस्तकों का क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद नहीं के बराबर हो रहा है। एक विशेषज्ञ के हवाले से प्रो. नारंग ने कहा कि 'मालिक की भाषा' होने के स्थान पर अंग्रेज़ी तेज़ी से 'मालिक भाषा' होती जा रही है।"

इस समारोह में मुख्य अतिथि कन्नड के प्रख्यात लेखक और साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य तथा अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष प्रो. यू. आर. अनंतमूर्ति थे। उन्होंने अपने व्याख्यान का प्रारंभ पुरस्कार विजेताओं के चेहरों, उनकी केश-सज्जा, उनकी आयु को देखते हुए किया और कहा कि साहित्य अकादेमी देश के साहित्य और संस्कृति की विविधता का उत्सव मना रही है। उन्होंने कहा कि वह जब साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष थे, तब वह 'साहित्य मंथन' की प्रक्रिया का नेतृत्व करते थे—जिसमें भारतीय साहित्य के मंथन होने के पश्चात्, परिणामस्वरूप गत वर्ष की 250 प्रकाशित पुस्तकों की साहित्य अकादेमी पुरस्कार हेतु लघुसूची तैयार की जाती थी, उनमें से केवल 22 को ही पुरस्कृत किया जाता था। प्रो. अनंतमूर्ति ने सुझाया कि यदि साहित्य अकादेमी इन लघुसूचित किए गए कार्यों के अनुवाद परवर्ती वर्ष में प्रकाशित करवा सके, तो यह समस्त संसार में अपनी तरह का एक तुलनात्मक साहित्यिक अभ्यास होगा। यह गत वर्ष के श्रेष्ठ भारतीय लेखन का आईना होगा।

प्रो. अनंतमूर्ति ने प्रो. नारंग की बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि, हमारी क्षेत्रीय भाषाएँ अधोगति की ओर अग्रसित हैं। उन्होंने कहा कि गत वर्ष जब उनकी भेंट श्री एम. टी. वासुदेवन नायर से हुई थी, तब उन्होंने बताया था कि, 'मैं एक मलयाळम् लेखक इसलिए बना, क्योंकि मैं एक सरकारी विद्यालय में पढ़ा था।' प्रो. अनंतमूर्ति

साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता 2004

असमिया हीरेन्द्र नाथ दत्त	*मणिपुरी* नाओरेम वीरेन्द्रजित सिंह
बाङ्ला सुधीर चक्रवर्ती	*मराठी* सदानंद नामदेवराव देशमुख
डोगरी शिवनाथ	*नेपाली* जस योञ्जन 'प्यासी'
अंग्रेज़ी उपमन्यु चटर्जी	*ओड़िया* प्रफुल्ल कुमार मोहांती
गुजराती अमृतलाल वेगड	*पंजाबी* सुतिन्दर सिंह नूर
हिन्दी वीरेन डंगवाल	*राजस्थानी* नंद भारद्वाज
कन्नड गीता नागभूषण	*संस्कृत* देवर्षि कलानाथ शास्त्री
कश्मीरी गुलाम नबी फ़िराक़	*सिन्धी* सतीश रोहरा
कोंकणी जयंती नायक	*तमिऴ* इरोड तमिऴनबन
मैथिली चंद्रभानु सिंह	*तेलुगु* डी. नवीन
मलयाळम् पॉल ज़करिया	*उर्दू* सलाम बिन रज़ाक



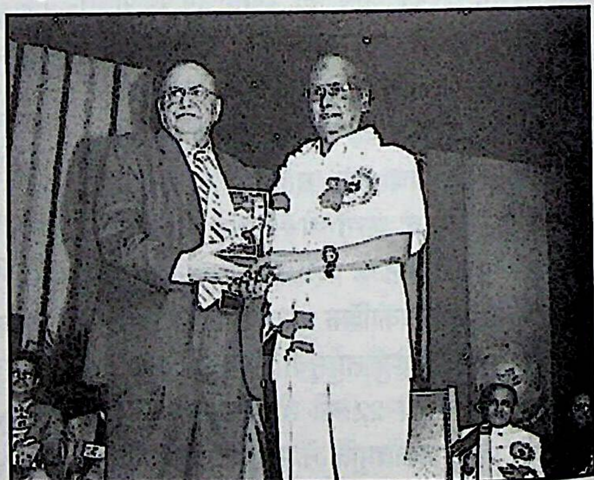
व्याख्यान देते हुए प्रो. यू. आर. अनंतमूर्ति

ने कहा कि मैं भी एक कन्नड लेखक इसलिए बना, क्योंकि मैं भी एक सरकारी विद्यालय में पढ़ा था, जहाँ आनेवाले विद्यार्थी उसी पृष्ठभूमि के थे। जो क़मीज़ मैं विद्यालय में पहनता था, उससे मेरा सृजनात्मक लेखन, घर पर पहने जानेवाले 'अंगवस्त्र' की तुलना में अधिक झलकता था। दुनिया से मेरा परिचय विद्यालय द्वारा हुआ। अब हमारे पास विशेष विद्यालय हैं, जहाँ विद्यार्थी, सशक्त भाषा के रूप में, अंग्रेज़ी सीखते हैं। पर, किस क़ीमत पर? हमारे बच्चे और उनके बच्चे जो ऐसे विद्यालयों में पढ़ रहे हैं, वह क्षेत्रीय भाषाओं में लिख नहीं सकते और न ही अपनी मातृभाषा में बात कर सकते हैं। अधिक-से-अधिक सरकारी विद्यालयों को खोलकर ही हम अपनी भाषाओं को बचा सकते हैं। सरकार की ओर से इस दिशा में कोई त्वरित कार्रवाई नहीं की गई है। यह संदेहास्पद है कि इस दिशा में कोई कारगर क़दम उठाया जाएगा। उदाहरणार्थ केरल और कर्नाटक के कुछ सरकारी विद्यालयों को बंद कर दिया गया है; और यह प्रक्रिया जारी है।" प्रो. अनंतमूर्ति, जो केरल सरकार द्वारा गठित एक ऐसे आयोग के प्रमुख हैं, जिसका कार्य स्कूली शिक्षा का पुनर्मूल्यांकन करना है, इस समस्या के बारे में निश्चित रूप से विस्तार से जानते हैं।

उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय भाषाओं में से अधिकांश प्राचीन हैं और उनमें उच्च बौद्धिक कार्य करने की क्षमता है। "उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि मेरी कन्नड भाषा भी अन्य भाषाओं की तरह सार्वभौमिक है। कन्नड का लेखक समस्त विश्व के लिए लिख रहा है। किन्तु कन्नड भाषा स्वयं यात्रा नहीं कर सकती। लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि जब शेक्सपीयर ने अपनी रचनाएँ अंग्रेज़ी में लिखीं थीं, तब अंग्रेज़ी भी यात्रा नहीं कर सकती थी।" लेकिन आज अमेरिका की संप्रभुता के कारण अंग्रेज़ी सबसे सशक्त भाषा बन गई है। यदि हम अंग्रेज़ी की तीसरे दर्जे की सामग्री को अपने सांस्कृतिक वातावरण में आने से नहीं रोकेंगे तो जल्दी ही हमारी संस्कृति नष्ट हो जाएगी। उन्होंने कहा कि वह अंग्रेज़ी के विरुद्ध नहीं हैं। अंग्रेज़ी का अपना स्थान और उपयोग है। लेकिन इसे किसी भी स्थिति में मातृभाषा पर राज करने की इजाज़त नहीं दीं जानी चाहिए।



साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री सुनील गंगोपाध्याय कन्नड की पुरस्कार विजेता श्रीमती गीता नागभूषण को पुष्प-गुच्छ भेंट करते हुए



साहित्य अकादेमी अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग तमिष़ पुरस्कार विजेता श्री इरोड तमिष़बन को अकादेमी पुरस्कार देते हुए



श्री सलाम बिन रज़ाक (उर्दू) को पुरस्कार प्रदान करते हुए अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग

हम अंग्रेज़ी बोलते हैं और जब चाहे वापस अपनी भाषाओं में लौट जाते हैं। लेकिन, क्या भावी पीढ़ी ऐसा कर पाएगी?

प्रो. अनंतमूर्ति ने सुझाव दिया कि यूजीसी को एक ऐसी योजना चलानी चाहिए, जिसके अंतर्गत प्रत्येक विश्वविद्यालय को जहाँ तक संभव हो, किसी दूसरे प्रांत के एक क्षेत्रीय भाषा विशेषज्ञ को नियुक्त करना चाहिए, जैसे एक तमिष़ भाषा के विशेषज्ञ को एक उत्तर भारतीय विश्वविद्यालय में, इसके द्वारा भारत की दो अलग-अलग भाषाओं के मिलन से क्षेत्रीय भाषाओं में एक-दूसरे के प्रति आपसी संतुलन तथा रुचि बढ़ेगी।

समारोह के अंत में साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष और प्रख्यात बाङ्ला कवि एवं कथाकार श्री सुनील गंगोपाध्याय ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए कहा कि पिछले वर्ष की तुलना में महिला पुरस्कार विजेताओं की संख्या 6 से घटकर इस वर्ष 2 रह गई है; और आशा जताई कि अगले दो-तीन वर्षों में वे अकादेमी द्वारा पुरस्कृत पुस्तकों को प्रकाशित अनुवाद के माध्यम से पढ़ सकेंगे, जो कि अकादेमी की प्रमुख गतिविधि है।

लेखक सम्मिलन

17 फ़रवरी 2005, नई दिल्ली

जिन लेखकों को वर्ष 2004 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया, उन्हें साहित्य अकादेमी सभागार में आयोजित 'लेखक सम्मिलन' में अपने विचारों को प्रकट करने हेतु पूर्वाह्न 10:00 बजे आमंत्रित किया गया। उन्होंने अपने लेखन और अनुभवों के बारे में बताया। उनके वक्तव्य के प्रासंगिक अंश दिए जा रहे हैं—

हीरेन्द्र नाथ दत्त (*असमिया*)—भारतीय भाषाएँ, विशेषकर अल्पसंख्यकों द्वारा बोली जानेवाली भाषाएँ, भूमंडलीकरण के कारण ख़तरे में पड़ गई हैं। कभी-कभी तो मुझे लगता है कि मेरी भाषा, जो कि असमिया है, वह सिकुड़कर छोटी होते-होते कहीं लुप्त ही न हो जाए। भूमंडलीकरण से चमचमाते भविष्य के आकर्षण में अपनी-अपनी भाषाओं के साहित्य को उपेक्षा सहनी पड़ रही है। निरंतर बढ़ रही उपेक्षा अपने समृद्ध अतीत से ऊर्जा प्राप्त करने में रुचि खो बैठेगी। साफ़ रूप से कहूँ तो मुझे अस्तित्व ख़तरे में नज़र आ रहा है। एक तरह से यह सबसे अच्छा और साथ ही सबसे बुरा समय है। चुनौती बड़ी है, लेकिन क़ाबू करने योग्य है।

सुधीर चक्रवर्ती (*बाङ्ला*)—पिछले तीन दशकों से मैं बंगाल और बाङ्लादेश के असंख्य गाँवों में घूमा हूँ और कई छोटे-छोटे धार्मिक संप्रदायों को देखा है, जो गुप्त सेक्स-यौगिक उपचारों में लगे हुए हैं। उनके विचार और विश्वास गीतों में प्रकट होते हैं। ये गीत हमारे समाज में उनके हाशिए पर खड़े होने का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये एक समानांतर सभ्यता और अजीब-सी रहस्यमयी द्विअर्थी भाषा को पेश करते हैं। मेरा मानना है कि मैंने एक ऐसे अद्वितीय लोक-जगत को खोज निकाला है, जिनका अपना अजीब-सा परिवेश है।



हिन्दी पुरस्कार विजेता श्री वीरेन डंगवाल अपने अनुभवों के बारे में बताते हुए



कन्नड पुरस्कार विजेता श्रीमती गीता नागभूषण अपने अनुभवों के बारे में बताती हुईं

शिवनाथ (*डोगरी*)—डोगरी साहित्य के जीवित रहने और उसके निरंतर विकास को लेकर मैं आशावादी हूँ। व्यक्तिगत रूप से मुझे इस बात की संतुष्टि है कि मैं पाठकों के समक्ष डोगरी की रचनाओं को प्रस्तुत कर अपनी मातृभाषा की सेवा कर रहा हूँ। शायद यही प्रेम मुझे गतिमान बनाए हुए है और मेरा मस्तिष्क अस्सी वर्ष पुरानी परिपक्वता से टकराता है। मुझे विश्वास है कि ईश्वर की कृपा से यही प्रेम मुझे डोगरी में अपनी जीवनी के दूसरे भाग को लिखने के लिए लंबे समय तक जीवित रखेगा।

अमृतलाल वेगड (*गुजराती*)—लिखना मेरे लिए कड़ी मेहनत का काम है। लेखन मेरे लिए एक प्रकार की पदयात्रा ही है। जल्दबाज़ी को मैं बुरा समझता हूँ। एक ही लेख को कई बार लिखता हूँ। निमर्मता से काट-छाँट करता हूँ। मैंने जल्दी ही यह भेद जान लिया कि अनावश्यक शब्द, आवश्यक शब्दों को कमज़ोर कर देते हैं और उपमा-अलंकार जितने कम होते हैं, उतने ही अच्छे लगते हैं। मैं हर बार हाथ से लिखता हूँ। सफ़ेद काग़ज़ पर काली स्याही से लिखे अक्षर मुझे अपने बच्चों की तरह प्यारे लगते हैं। टाइप के अक्षरों में वह स्पंदन कहाँ, जो हाथ से लिखे अक्षरों में होता है।

वीरेन डंगवाल (*हिन्दी*)—यह सही है कि हमारे समय में कविता को आस्वादकों की कमी के संकट से गुज़रना पड़ रहा है। कुछ हद तक सभी कलाओं के सामने यह संकट है, मगर हिन्दी कविता से तो पाठक बहुत दूर चले गए-से लगते हैं। आज कवि उस रूप में अपने पाठक को पहचानने का दावा नहीं कर सकते, जैसा मसलन निराला कर सकते थे। इसकी कुछ वजहें तो हिन्दी समाज की उन सामंती विकृतियों में हैं, जिनकी मदद से उसे बौद्धिक स्तर पर काफ़ी कुछ रसहीन, उत्साहहीन, स्वप्नहीन, संकीर्ण और पिछड़ा बना लेने का निरंतर उपक्रम जारी है। मगर पिछले साठ के दशक में कविता ने भी पाठक से अपना दामन छुड़ाने का काम किया है। बच्चन और नीरज के पिलपिलेपन से निकलने की कोशिश में प्रयोगवादियों ने कविता का जो द्वीप बनाया था, आगे भी उसका विस्तार होता गया। नतीजा सामने है। विचार स्तर पर कविता मज़बूती से सांप्रदायिकता और बाज़ार के विरुद्ध खड़ी है, जबकि मध्यवर्गीय पाठक बाज़ार से सांप्रदायिकता के साथ दौड़ता दिखाई देता है।

गीता नागभूषण (*कन्नड*)—उपन्यास रचना मैंने न खुशी के लिए और न ही जीने के लिए की है। जीने के लिए मेरे पास नौकरी थी। अनपढ़ भोली, निम्नवर्ग जाति की महिलाओं की हृदय वेदना, शोषण और अत्याचार को चित्रित करने के लिए और इसके कारणीभूत उच्चवर्ग के पुरुषों की भ्रष्ट यौन-भावना और क्रूरता को खोलकर रखने के लिए मैं लिख रही हूँ। साहित्य के इतिहास में दलित लोगों की वेदना का चित्रांकन और चिन्तन आज के समय की अनिवार्यता है। मुझे लगता है कि मैं देश की अन्य प्रसिद्ध लेखिकाओं जैसे कमलादास, अमृता प्रीतम से अलग हूँ। मैं अत्यंत निम्न वर्ग से आई हूँ।

ग़ुलाम नबी फ़िराक़ (*कश्मीरी*)—एक कवि के रचनात्मक अनुभव विरल और बहुआयामी होते हैं। इनको जिस तरह महसूस किया जा सकता है, उस तरह कहा नहीं जा सकता। इन क्षणों में उसके पास अपनी एकाग्रता को पहचानने के अलावा दूसरी चीज़ों के लिए समय नहीं होता है। अपने अनुभवों को आकार देते समय कवि इतना बेचैन होता है कि कुछ क्षणों के लिए वह आम आदमी नहीं होता है।

जयंती नायक (*कोंकणी*)—जब आदमी का अहम् ख़त्म हो जाता है, तब वह वही आदमी नहीं रहता। उसका संबंध उसके परिवार से नहीं रह जाता। न समाज से कोई संबंध रह पाता है, न संसार से। उसके व्यक्तिगत दुःख कोई मायने नहीं रखते। वह संसार की शांति के लिए लालायित रहता

है। उसका जीवन सार्वभौमिक हो जाता है। वह 'अथक' बन जाता है। यही विचार मेरे कहानी-संग्रह को सामने लाया है।

चंद्रभानु सिंह (*मैथिली*)—अपने *शकुंतला* महाकाव्य की रचना के संबंध में मैं यह कहना चाहता हूँ कि उसकी प्रेरणा मुझे सर्वप्रथम दो शताब्दी पूर्व के विश्व-प्रसिद्ध जर्मन कवि गेटे से मिली थी। उन्होंने कालिदास रचित *शकुंतला* नाटक को पढ़कर अपने विचार कविता के माध्यम से प्रकट किए थे। उसके बाद सन् 1939 ई. में मैंने प्रेमचंद का एक निबंध पढ़ा, जिसमें उन्होंने हिन्दी के महाकवियों से दो उपेक्षिता नायिकाओं—शकुंलता और दमयंती पर महाकाव्य की माँग की थी। और मेरे मन में यह बात बैठ गई।

पॉल ज़करिया (*मलयाळम्*)—भारतीय होने का विचार मुझे पसंद है, क्योंकि मैं आशावान हूँ। मैं आशावान इसलिए हूँ, क्योंकि हम कालक्रम में अपने ऊपर लादी सभ्यता, धर्म, भाषा और राजनीति द्वारा गढ़ी एकता को सहन कर लेते हैं। मैं आशावान हूँ, क्योंकि हम आश्चर्यजनक रूप से एक होकर रह लेते हैं, एक राष्ट्र की तरह; और तब भी जबकि यहाँ कुछ लोगों की सभा में यदि हम अपनी-अपनी भाषा में बोलें तो भ्रामक स्थिति उत्पन्न हो जाएगी। मतभेद होने के बावजूद शांत बने रहने की योग्यता, मेरे विचार में भारत को मज़बूती प्रदान करती है।

नाओरेम वीरेन्द्रजित सिंह (*मणिपुरी*)—कविता आज के समाज में अनिश्चित जीवन जीनेवाली, बड़ी शक्ति के पाँव तले कुचली हुई, ग़लत फ़ैसले से बलपूर्वक हराई गई, अपने ही घर में असत्य जीवन जीनेवाली जनता की घायल आवाज़ है। यह आवाज़ कुछ साहित्यकारों के द्वारा सुन ली गई है। अपने देश के प्रतिष्ठित लेखकों और कवियों से मेरा अनुरोध है कि वे अपनी-अपनी रचनाओं में कम-से-कम एक ऐसे शब्द का प्रयोग करने का कष्ट करें, जिसमें मणिपुर की जनता की पीड़ा को दूर करने की सामर्थ्य हो।

सदानंद नामदेवराव देशमुख (*मराठी*)—किसान के नसीब में हमेशा दरिद्रता का सामना करना ही लिखा है। उसके इस संघर्ष और दुःख का चित्त *बारोमास* उपन्यास का मुख्य विषय है। किसान की संतान के मन में सकारात्मक भावना मैं पैदा कर सका, यही चित्र बहुत ही भेदक, प्रभावशाली और कलात्मक होने के कारण ही आलोचकों और वाचकों ने इस उपन्यास का सम्मान किया, उसके लिए मैं बहुत प्रसन्न हूँ। मेरे इस उपन्यास ने सामाजिक दायित्व निभाने का काम किया है। साहित्य का निर्माण ही समाजसेवा का महत्त्वपूर्ण अंग है, ऐसा मैं मानता हूँ। साहित्य के माध्यम से विशेष महत्त्वपूर्ण और समाज-मन पर होनेवाला प्रभाव चिरस्थायी और संस्मरणीय स्वरूप होता है।

जस योञ्जन 'प्यासी' (*नेपाली*)—देश और समाज का एक जागरूक नागरिक होने के नाते किसी भी भाषा और साहित्य के सृजनशील रचनाकार को जन-कल्याण के मार्ग से नहीं हटना चाहिए, विशेषकर तब; जब वह अपनी अनुभूतियों और भावों को समकालीन, पूर्वकालीन या किसी भी रूप में काग़ज़ पर उतार रहा हो।

प्रफुल्ल कुमार मोहांती (*ओड़िया*)—यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि आदमी यथार्थ के तर्क को समझकर अकेला ही हालात को बदल सकता है। उसकी समुत्थान शक्ति, प्रतिष्ठा, धैर्य, प्रस्ताव रखने की समझ और उसकी आत्मशक्ति यथार्थ से ही लगातार जाँची जाती है। जब वह स्वार्थ से ऊपर उठकर पीड़ा को अपने दिल और दिमाग़ में खपा लेता है, तो वह बदलाव कर सकता है। मैं मानवता भक्त के रूप में आदमी का गुणगान करता हूँ।

सुतिन्दर सिंह नूर (*पंजाबी*)—मुझे लगता है कि मैं कविता के अनुभव और प्रक्रिया के साथ जुड़ने के कारण ही कविता की विस्तृत आलोचना करने के योग्य हुआ। आलोचना के लिए सृजन के भेद को समझना ज़रूरी है। सृजन की



कोंकणी पुरस्कार विजेता
श्रीमती जयंती नायक व्याख्यान देती हुईं

गहराइयाँ ही आलोचना की गहराइयों का भेद देती हैं। आलोचना केवल तकनीकी जानकारी नहीं होती। यदि आलोचक पाठक को उस सृजनात्मक गहराई तक पहुँचाता है, वास्तविक आलोचना मैं उसी को समझता हूँ।

नंद भारद्वाज (*राजस्थानी*)—अच्छा रचनाकार कभी अपने वक़्त की बेक़द्री नहीं करता और न ही कभी अपने को वक़्त से ऊपर या अलहदा आँकने की भूल करता है। विगत, वर्तमान और आगत के अटूट क्रम में हरेक रचनाकार अपनी जीवन-यात्रा और काम इस तरह से नियोजित करता है और अपने अथक प्रयत्नों से उसे घोषित करता है कि उससे जीवन और नए सृजन की उम्मीद पूरी होती है—यहाँ तक कि उसका मनुष्य रूप में जन्म लेना सार्थक हो जाता है।

देवर्षि कलानाथ शास्त्री (*संस्कृत*)—नई और पुरानी दोनों धाराओं का संगम संस्कृत के अलावा शायद ही अन्य किसी भाषा में मिले। सृजनात्मक लेखन की इन दोनों धाराओं के साहित्य का अधिकतर कलेवर काव्य, कविता का पद्य की विधाओं में निबद्ध मिलेगा। कविता को पद्य की पहचान देता है, यह धारणा भी संस्कृत वालों ने परंपरा में पनपायी है, यद्यपि हमारे यहाँ गद्यकाव्य का भी विपुल साहित्य उपलब्ध है।

सतीश रोहरा (*सिन्धी*)—"मेरे आलोचनात्मक निबंध मेरे विचार-जगत की यात्रा के साक्षी हैं।" गंभीर विषय पर निबंध लिखने की मेरी प्रक्रिया है, उस विषय के संबंध में निरंतर सोचते रहना। इस तरह निबंध लिखना मेरे सोच की यात्रा है। कहानी लिखने की तुलना में निबंध कम तकलीफ़देह है, क्योंकि कहानी लिखना माँ की भूमिका निभाना है। किसी घटना या चरित्र जो मुझसे बाहर है, उसको अपने भीतर में तब तक अपनी कल्पना के ज़रिए पूर्ण करना होता है, जब तक वह प्राणवान बनकर बाहर न आ जाए।

इरोड तमिष्नबन (*तमिष़*)—मैं अपनी आत्मा, ब्रह्मांड की विशालता, प्रकृति और मानवतावाद की अनंतता से प्रेरणा प्राप्त कर कविता रचता हूँ। चाहे कविता कुछ ठोस न भी कर सके, फिर भी मेरा दृढ़ विश्वास है कि व्यक्ति कविता के बिना नहीं रह सकता। चाहे कविता की—राजनीति, विज्ञान, तकनीकी ज्ञान और आर्थिक वस्तुओं के सामने कोई हस्ती नहीं, लेकिन जब मनुष्य इनसे उत्पन्न उलझनों में, और ज़िन्दगी की मुश्किल घड़ियों में पड़ता है तो निश्चित रूप से कविता उसे माँ-सा प्यार देती है।

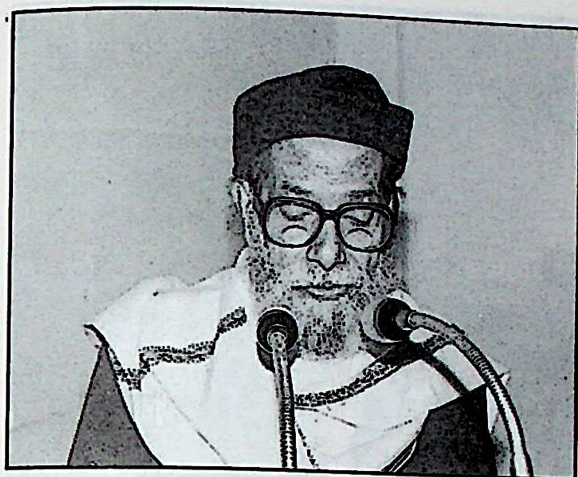
डी. नवीन (*तेलुगु*)—मेरे लिए उपन्यास लिखना उसी तरह था, जैसे मछली के लिए पानी। मैंने दस वर्ष की उम्र से ही उपन्यासकार बनने का सपना सँजोना शुरू कर दिया था। मैं उत्तरी तेलंगाना गाँव की पिछड़ी जाति से हूँ। मेरे पिता मेरे मैट्रिक उत्तीर्ण कर लेने के बाद मुझे छोटी-मोटी नौकरी में लगा देखना चाहते थे। वे थोड़े-बहुत पढ़े-लिखे थे और उनके लिए किताबों की दुनिया कोई मायने नहीं रखती थी। मुझे तो लड़कपन से ही किताबों का चस्का लगा था। कहानियाँ मुझे अपनी ओर खींचने लगीं। जब भी मैं कोई कहानी सुनता, मैं सोचने लगता कि यदि मुझे कहानी कहनी पड़े तो मैं कैसे कहूँगा, क्या-क्या परिवर्तन मैं करूँगा। जब भी कोई अद्‌भुत व्यक्ति या कोई अद्‌भुत घटना देखता तो मुझे उस पर कहानी गढ़ने का विचार आ जाता।

सलाम बिन रज़्ज़ाक (*उर्दू*)—कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं ऐसी पद-यात्रा पर निकला हूँ, जिसका कोई अंत नहीं है। मेरे पाँव नंगे हैं और धूप की चादर तनी हुई है। तलवों में छाले पड़े हैं और रास्ता पुरख़ार है। पीछे मुड़कर देखने का सवाल ही नहीं अगर मैंने ऐसा किया तो किसी जादू के ज़ोर से पत्थर का हो जाऊँगा। इस ख़ौफ़ से मैं चलता जा रहा हूँ मुतबातिल चल रहा हूँ, मेरा सफ़र जारी है मैं, इस सफ़र में लम्हा-लम्हा टूटता हूँ, रेज़ा बिखरता हूँ। अफ़साना लिखना मेरे नज़दीक अपने किरची-किरची वजूद को समेटने का नाम है, जिसके वसीले से मैं अपने आपको माहौल की ज़बरीयत से आज़ाद क़रता रहता हूँ। मेरा अफ़साना दरअसल मेरी निजात का ज़रिया है। सच तो यह है कि अफ़साना लिखना कोई खुशगवार अमल नहीं है।

संवत्सर व्याख्यान

17 फ़रवरी 2005, नई दिल्ली

17 फ़रवरी 2005 को साहित्य अकादेमी ने अपने रवीन्द्र भवन सभागार में वर्ष के सबसे महत्त्वपूर्ण व्याख्यान 'संवत्सर' का आयोजन किया। आधुनिक भारत के अग्रणी विद्वान, प्रख्यात कवि, शिक्षाविद्, समालोचक, संपादक एवं अनुवादक श्री के. अय्यप्प पणिक्कर ने 'कई धाराओं द्वारा पोषित नदी की तरह : संस्कृतियों के संगम पर चिन्तन-मनन' विषय पर व्याख्यान दिया।



संवत्सर व्याख्यान देते हुए श्री के. अय्यप्प पणिक्कर

श्री पणिक्कर ने संस्कृति के विकास की प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हर संस्कृति अपने विकास के प्रथम चरण में अपने क्षेत्र तक ही सीमित होती है, क्योंकि उस क्षेत्र का जन-जीवन—स्थानीय रीति-रिवाज़, लोक-गाथाएँ और क़िस्से-कहानियाँ, कविता और लोक- साहित्य—एक भिन्न संस्कृति का निर्माण करते हैं। उस क्षेत्र की वनस्पतियाँ और जीव-जन्तु वहाँ के निवासियों के रीति-रिवाज़ों और खान-पान संबंधी आदतों को निश्चित करते हैं। विश्वभर में अनेक प्रकार की संस्कृतियाँ हैं, हर संस्कृति की अपनी कुछ विशिष्टताएँ हैं तो कुछ समानताएँ भी हैं, जो उस क्षेत्र की संस्कृति की पहचान विश्व सांस्कृतिक मानचित्र पर दर्ज करती हैं। अपनी बात को और स्पष्ट करने के लिए उन्होंने *रामायण* महाकाव्य का उदाहरण देते हुए कहा कि *रामायण* महाकाव्य की कंबोडिया, थाईलैण्ड, इंडोनेशिया आदि देशों में विविध प्रकार से व्याख्या की गई है। इतना ही नहीं, भारत में भी थोड़े-बहुत फेर बदल के साथ *रामायण* के एक नहीं अनेक अनुवाद एवं रूपांतर पढ़े जाते हैं। ये सभी सिर्फ़ अनुवादकों की रुचियों, धर्मविश्वासों से उत्पन्न हुए भेद को व्यक्त करते हैं। अपने व्याख्यान के अंत में उन्होंने कहा—

एक अकेली लहर महासागर नहीं है;
एक अकेला वृक्ष जंगल नहीं है;
एक अकेला रंग इंद्रधनुष नहीं बनाता;
एक अकेला स्वर संगीत नहीं है।

दक्षिण एशियाई साहित्य सम्मेलन
एक आसमान, अनेक संसार : दक्षिण एशिया के साहित्य
18-20 फ़रवरी 2005, नई दिल्ली

18 फ़रवरी 2005, को प्रातः 10:00 बजे इंडिया इंटरनेशनल सेन्टर नई दिल्ली के कॉनफ्रेन्स हॉल में साहित्योत्सव के अंतर्गत दक्षिण एशियाई साहित्य सम्मेलन 'एक आसमान, अनेक संसार : दक्षिण एशिया के साहित्य' विषय पर आयोजित एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी का उद्घाटन पाकिस्तान से आए कवि श्री अहमद फ़राज़ ने किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव प्रो. के. सच्चिदानंदन ने अतिथियों और श्रोताओं का स्वागत करते हुए कहा कि, "भूमंडलीकरण ने दक्षिण एशियाई देशों में सांस्कृतिक अस्मिता के लिए गंभीर ख़तरा पैदा कर दिया है। राजनैतिक अस्थिरता, सांप्रदायिक हिंसा, आर्थिक एवं नैतिक भ्रष्टाचार, पुरुष वर्चस्व, भेदभाव और तरह-तरह के अन्याय बढ़ रहे हैं। राज्य और समाज दोनों की ओर से अभिव्यक्ति की आज़ादी पर ख़तरा बढ़ा है।" वर्तमान परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण करते हुए उन्होंने कहा कि, "लेखक और कलाकार अपने-अपने देशों की जनता की आवाज़ बन रहे हैं और उनके संघर्ष एवं आशाओं को बल दे रहे हैं।" प्रो. सच्चिदानंदन ने अपने भाषण के अंत में बाङ्ला कवि श्री अहसान हबीब की निम्नलिखित पंक्तियाँ कहीं—

मैं इतिहास रचता हूँ
और भविष्य का स्वप्न
जो समृद्धि का गीत गाता है
आगामी मनुष्य की आत्मा
मैं इस धरती के हरेक कोने में उगता हूँ
अपनी मज़बूत भुजाओं और
मनो-मस्तिष्क की उदारता के साथ।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में दक्षिण एशियाई क्षेत्र में साहित्यिक गतिविधियों का मूल्यांकन किया। मुख्य अतिथि श्री अहमद फ़राज़ की एक कविता 'मेरे हिन्दुस्तानी भाइयों के लिए' के उद्धरण को प्रस्तुत करते हुए प्रो. नारंग ने इस बात पर ज़ोर दिया कि लेखकों और सांस्कृतिक नेताओं को अशांत दक्षिण एशियाई क्षेत्र में शांति स्थापित करने के लिए निर्णायक



सुश्री सेलिना हुसैन, श्री सुनील गंगोपाध्याय, प्रो. हरीश त्रिवेदी, प्रो. गोपीचंद नारंग, श्री अहमद फ़राज़, श्री इंतिज़ार हुसैन, श्री गुणदास अमरशेखर, सुश्री फ़ातिमात नहूला एवं सुश्री तोया गुरुंग

भूमिका निभानी चाहिए। उन्होंने कहा कि, संसार को बचाए रखने के लिए सांस्कृतिक शांति को मज़बूत करना कठिन होता है, और इस काम को लेखकों-कलाकारों से बेहतर कोई नहीं कर सकता। बाङ्लादेश की सुप्रसिद्ध कथाकार सुश्री सेलिना हुसैन ने बाद में नारंग साहब के इस दृष्टिकोण पर अपनी सहमति देते हुए इस बात पर ज़ोर दिया कि लेखक 'शांतिदूत' होते हैं और उनकी शांति स्थापित करने में अहम भूमिका होती है। लेखक सदैव शांति और सद्भाव के लिए खड़े हुए हैं। यदि समुदायों, राष्ट्रों और समाज को संघर्ष और द्वंद्वों से ऊपर उठना है तो उनके लेखकों, पुरुषों और महिलाओं को शांति की परंपरा को क़ायम रखने के लिए अपनी आवाज़ बुलंद करनी होगी। जबकि प्रो. नारंग ने कहा कि कोई भी लेखक अपनी पहचान या विचारों को खोना नहीं चाहेगा, जो उनकी साझा सांस्कृतिक बपौती है। बाङ्ला कवि श्री अहसान हबीब की कविता 'सागर कितना गहरा है' की पंक्तियों को उद्धृत करते हुए प्रो. नारंग ने अपनी बात रखी—

मैं अपनी पहचान सागर में खोना नहीं चाहता
इसलिए, डरता हूँ मैं सागर से
क्योंकि बहुत विशाल है यह
और अपने विस्तार के लिए चैतन्य भी।

प्रो. नारंग ने आशा जातई कि दक्षिण एशियाई साहित्य सम्मेलन लेखकों में एक-दूसरे की संस्कृति और विचारों को समझने की प्रक्रिया को मज़बूती प्रदान करेगा और इन क्षेत्रों के अंतर्सम्बंधों और अंतरर्निभरता के लिए एक नवीन दृष्टि विकसित करेगा, इस संदर्भ में उन्होंने मुख्य अतिथि, पाकिस्तानी कवि श्री अहमद फ़राज़ की निम्नलिखित पंक्तियाँ कहीं—

चराग़ जिनसे मुहब्बत की रौशनी फैले,
चराग़ जिनसे दिलों के दयार रौशन हों।

मुख्य अतिथि श्री अहमद फ़राज़ ने अपना उद्घाटन व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि, उर्दू ज़ुबान उनके दिल की भाषा है। भारत-पाकिस्तान के संबंधों के बारे में उन्होंने कहा कि, 'हमारे दोनों मुल्क एक-दूसरे के प्रति हमेशा से उदासीन रहे हैं जबकि हम एक-दूसरे के काफ़ी क़रीब हैं।' उन्होंने सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों द्वारा शांति-प्रक्रिया में उनकी असहायता के प्रति खेद प्रकट करते हुए कहा कि लेखकों और कलाकारों ने जो कुछ भी थोड़े बहुत एक-दूसरे को निकट लाने के प्रत्यन किए हैं, उनके इन प्रयत्नों को राजनीतिज्ञों ने वक़्त-बे-वक़्त विफल ही किया है। ऐसे माहौल में लेखकों या कलाकारों द्वारा शांति-प्रक्रिया को क़ायम रख पाने में उनकी भूमिका बेहद कठिन हो जाती है।

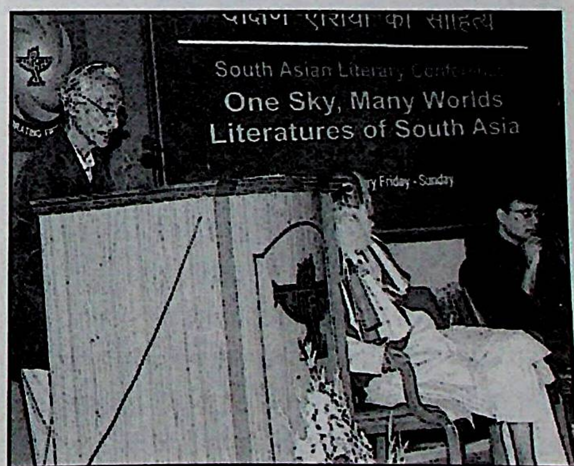
उन्होंने कहा कि हमें फिर भी उम्मीद तथा नेक ख़यालों और विचारों के साथ जीना चाहिए। श्री अहमद फ़राज़ ने प्रो. नारंग द्वारा उनके व्याख्यान से पूर्व किए गए अनुरोध पर 'मेरे हिन्दुस्तानी भाइयों के लिए' कविता का पाठ किया।

प्रख्यात विद्वान और समालोचक प्रो. हरीश त्रिवेदी ने अपने बीज-भाषण में गत 50 वर्षों में साहित्य को प्रोत्साहित करने में साहित्य अकादेमी की महती भूमिका की सराहना करते हुए कहा कि, "जैसे मुझे साहित्य में विश्वास है, वैसे ही प्रकार मुझे साहित्य अकादेमी में भी पूर्ण विश्वास है। मैं भारत या विश्वभर में ऐसी किसी अन्य संस्था के बारे में नहीं जानता, जिसने उच्च सम्मान प्राप्त पुरस्कार प्रदान करने के साथ-साथ इतने विविध तरीक़ों से किसी देश की बहुसंख्य भाषाओं के साहित्य को अनुवाद के माध्यम से प्रस्तुत और प्रसारित करने का इतना ज़्यादा कार्य किया हो। प्रो. त्रिवेदी ने कहा कि पश्चिमी विचारकों द्वारा हमारे साहित्य के लिए प्रयुक्त की गई शब्दावलियाँ जैसे—'राष्ट्रमंडल साहित्य', 'तीसरी दुनिया का साहित्य' तथा 'उत्तर औपनिवेशिक साहित्य', हमें हमारे औपनिवेशिक इतिहास का स्मरण कराती हैं, जबकि हम पश्चिमी राष्ट्रों के अधीन थे और हमारा जीवन हशिये पर था। "यह एक लंबा और सामान्य साहित्यिक इतिहास है जो कि दक्षिण-एशियाई साहित्य में प्रतिबिम्बित होता है।" उन्होंने आगे बताया कि दक्षिण-एशियाई साहित्य "आप्रवासी साहित्य है; यह अब भी हमारी भाषाओं में उन लेखकों द्वारा लिखा जाता है, जो सात-समुंदर पार नहीं गए हैं, जो प्रवास या निर्वासन पर नहीं हैं, बल्कि इसी भू-भाग में रहते हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि हमारी आत्माएँ एक जैसी हैं, जिनमें किसी प्रकार के बदलाव की ज़रूरत हमने नहीं समझी।"

मालदीव की सुश्री फ़ातिमात नहूला, नेपाल की सुश्री तोया गुरुंग और पाकिस्तान से आए तथा कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री इंतिज़ार हुसैन ने साहित्य अकादेमी को इस संगोष्ठी के आयोजन के लिए बधाई दी। श्रीलंका से आए लेखक एवं फ़िल्मकार श्री गुणदास अमरशेखर ने कहा कि, "अब वह समय आ गया है, कि जब हम एशियाई लोगों को, विशेषरूप से हमारे देश के बुद्धिजीवियों को इस सत्य को स्वीकारना होगा कि अंग्रेज़ी बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा दिखाए गए एक विश्व के स्वप्न या एक सार्वभौम सभ्यता के स्वप्न से हमलोग अब तक बाहर नहीं निकल पाए हैं।"

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री सुनील गंगोपाध्याय ने सभी अतिथियों और श्रोताओं का धन्यवाद करते हुए कहा, "यद्यपि संगोष्ठी का विषय—'एक आसमान, अनेक संसार' अर्थवान है, लेकिन आज हम आकाश की ओर कितना देख पाते हैं? शायद हमारे पास समय ही नहीं है। आज आकाश कविता में भी दिखाई नहीं देता है। चाँद एक पिष्टोक्ति बन गया है। इसलिए हमें अपने मन के आकाश को देखना चाहिए और साथ मिलकर रहना चाहिए।" उन्होंने पाकिस्तानी लेखकों द्वारा 'हिन्दुस्तान' विषयक टिप्पणी का उल्लेख करते हुए कहा कि, देश के संविधान में केवल 'इंडिया' का ही संदर्भ दिया गया है; इसलिए विशेषरूप से निर्मित 'हिन्दुस्तान' एक अनधिकृत संशोधन है। उन्होंने इस बात की भी ज़रूरत महसूस की कि जब लेखकों को दूसरे देश में यात्रा करने का निमंत्रण मिलता है, तब उनमें से अधिकतर लेखक दूसरे देश के लेखकों साहित्य नहीं पढ़ते, अतः इस रवैये को बदला जाना चाहिए।

उद्घाटन के पश्चात् प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात बाङ्ला लेखिका श्रीमती नवनीता देवसेन ने की। उन्होंने कहा कि विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्य के अनुवाद का कार्य साहित्य अकादेमी के अलावा देश की अन्य लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यिक संस्थाओं द्वारा भी प्राथमिकता से किया जाना चाहिए।



श्री अशोकमित्रन, श्री निर्मलेन्दु गून और श्री अमित चौधुरी

कनाडा से आए अतिथि वक्ता श्री नील विल्सन ने निदा फ़ाज़ली की कविता 'ख़ुदा ख़ामोश है' की पंक्तियाँ उद्धृत करते हुए, भारतीय संस्कृति के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित किया। उन्होंने कनाडा के मार्शल मैक लुहन को याद करते हुए कहा कि गत शताब्दी के साठ के दशक में उन्होंने 'सार्व गाँव' की अवधारणा इस बात को ध्यान में रखते हुए की थी कि संचार क्रांति के कारण दुनिया के लोग एक-दूसरे के क़रीब आते जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि, सर्वमानवता के अस्तित्व की अवधारणा विश्व इतिहास में सर्वप्रथम वेदों और उपनिषदों से ही आई थी। उन्होंने भारत में, जब वह कनाडा दूतावास में एक सांस्कृतिक सलाहकार के पद पर नियुक्त थे, के अपने अनुभवों के बारे में भी बताया। अमेरिकी आर्थिक नीतियों के तहत सांस्कृतिक क्षेत्र के भूमंडलीकरण के बारे में किए गए एक प्रश्न के प्रतिक्रिया स्वरूप श्री विलसन ने बाज़ारी शक्तियों की प्रशंसा की, जो भूमंडलीकरण के साथ-साथ संस्कृति के संदर्भ में भी केन्द्रीय में हैं, क्योंकि 11 सितंबर की घटना, इराक-युद्ध तथा राष्ट्रपति बुश के उपचुनाव के बाद, लगभग 20,000 अमेरिकी नागरिक जो साहित्य, कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में सक्रिय हैं, ने बेहतर अवसर अर्जित करने हेतु कनाडा जाने के लिए वीज़ा प्राप्ति का आवेदन किया है।

श्री एम. शाफ़े क़िदवई के आलेख का विषय था—'वैश्विक अंधकार से स्थानिक वैश्विकता (ग्लोक्लाइज़ेशन) की ओर'। उन्होंने संक्षेप में वैश्वीकरण की बुराइयों पर विचार करते हुए 'स्थानिक वैश्विकता' स्थानिक वैश्विकता को विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में सार्वभौम और स्थानीयता की अनूठी व्याख्या कहा जा सकता है। वैश्वीकरण की अवधारणा साम्राज्यवादी राष्ट्रों, निगमों, संस्थाओं की अभिलाषाओं तथा उनकी पसंद तथा विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों पर आधिपत्य स्थापित करने की इच्छाओं पर केन्द्रित है। दूसरे शब्दों में कहें तो वैश्वीकरण विविध संस्कृतियों के लिए एक बड़ा ख़तरा है। यह बड़ा ही विषम, विविध, बुदबुदा और स्वतंत्र है। उन्होंने कहा कि, "वैश्वीकरण एक आवश्यक परार्थवादी तथ्य है, जिसके द्वारा भाषिक और सांस्कृतिक विविधता को अभिव्यक्ति का अवसर मिल सकता है। वैश्वीकरण स्पष्टरूप से सांस्कृतिक एकरूपता और सृजनात्मक निश्चलता की विसंगतियों को दूर करता है। यह सार्वभौम और स्थायी तत्त्वों के अवशेषों को विवेकपूर्वक निकट लाता है, जो सामान्यतः सांस्कृतिक बदलावों से उत्पन्न होते हैं। यह एक विशेष वर्ग के लोगों के जीवन में केन्द्रित स्पर्शनीय और अस्पर्शनीय तत्त्वों को भी गिरने से बचाता है।"

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्रीलंका से आए श्री तिस्सा अभयशेखर ने की, इस सत्र का भी विषय इससे पूर्व के सत्र का ही था। उनके आलेख का विषय था—'खिड़की की सिल्ली पर सिमटकर बैठना : उत्तर औपनिवेशिक दक्षिण एशिया में अंग्रेज़ी का एक लेखक होना : संस्कृति और पहचान की समस्याएँ', जिसमें उन्होंने उत्तर उपनिवेशवाद की पहचान के अस्तित्व के बारे में बताया। उन्होंने कहा, "बेशक मैं एक श्रीलंकाई हूँ, किन्तु मेरे देश में बहुत-सी संस्कृतियाँ हैं और हो सकता है कि वह भी उपसंस्कृतियाँ हों, सीमाएँ अनम्य हों तथा सदैव अतिव्यापी न हों। मैं इस मोज़ेक में कहाँ हूँ? शहरी अथवा ग्रामीण, मध्य-वर्ग अथवा देश के किस वर्ग में? शायद मैं इन सभी का मिश्रण हूँ, जो मुझे मिश्रित बनाता है अथवा दूसरे शब्दों में कहें कि श्रीलंका के एक पूर्वस्वतंत्रताकालीन नेता द्वारा फ़ैशनप्रिय या एक थुप्पइय्या बनाना? यह एक अपमानजनक का शब्द है तथा इसका संबंध पुर्तगाली भाषा से है, जिसका अर्थ मेरी समझ से 'मोची' है। श्री तिस्सा अंग्रेज़ी में लिखते हैं, जो उपनिवेशवादी मालिक की भाषा है, तथा उनकी तरह अन्य भी जब इसी भाषा में लिखते हैं, तब उनको टी. एस. इलियट की वह कविता याद आ जाती है, जिसमें वह जियु की भाँति खिड़की की सिल्ली पर सिमटकर बैठे हों।

पाकिस्तान से आईं सुश्री ज़ाहिदा, सुश्री सुतपा सेन गुप्ता तथा श्री उदय नारायण सिंह ने भी अपने आलेख प्रस्तुत किए।

सुश्री सुतपा सेनगुप्ता के आलेख का विषय था—'वैश्वीकरण, संस्कृति, पहचान : वर्तमान दक्षिण एशिया की दशा।' उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक पहचान के हालिया दावों ने सांस्कृतिक परंपराओं और संकेतों के गहन विश्लेषण की आवश्यकता को रेखांकित किया है। यदि हमें प्रत्येक के योगदानों को समझना हो, तो हमें वैकल्पिक परंपराओं का अध्ययन करना होगा, जो हमें हमारी परंपराओं की स्पष्ट छवि तथा वह एक-दूसरे से किस प्रकार संबंधित हैं, बता पाएँगी।

उन्होंने यह भी कहा कि, राज्य के नागरिक की एकल ज़िम्मेदारी के शुष्क आग्रह की निष्ठा के स्थान पर, अब लोकतंत्र की रक्षा के लिए सामाजिक पहचान को छोड़ने और बहुलता की प्रासंगिकता पर पुनर्विचार करने का समय आ गया है।'

श्री उदय नारायण सिंह के आलेख का विषय था—'अनंत खोज।' उन्होंने संस्कृतियों द्वारा उनकी अपनी भाषाओं को सशक्त बनाने के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि, 'हमें इस बात को स्वीकारना होगा कि हमारे चारों ओर अव्यवस्था और विकृतियाँ हैं तथा पश्चिम की ओर से खुलनेवाली खिड़की से एक बार पुनः असुरक्षा की भावना जागृत हो गई है। प्रत्येक बार एक कवि पाठ 'आत्मस्थ' करने के क्रम में 'किसी अन्य' की खोज करता है—हम कई अनसुलझे मुद्दों को उभरते देखते हैं—सभी इसी वैश्विक दुनिया की रूढ़ियों से जन्म ले रहे हैं। कई संभवतः आगे उभरें—हमें उन संस्कृतियों और भाषाओं के अनुवाद कार्यों का शुक्रगुज़ार होना चाहिए, क्योंकि आजकल एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में रचनात्मक आदान-प्रदान बड़े पैमाने पर हो रहा है।

शाम को संगोष्ठी की पहली काव्य-गोष्ठी संपन्न हुई, जिसमें विशिष्ट अतिथियों—नेपाल की सुश्री तोया गुरुंग, मालदीव की सुश्री फ़ातिमात नहूला, तिब्बती शरणार्थी कवि श्री तेनज़िन सनड्यू और भारत के श्री ओ. एन. वी. कुरुप, श्री नारायण सुर्वे, श्रीमती पद्मा सचदेव, श्री ए. एम. के. शहरयार, श्री यूनिस डीसूज़ा, सुश्री अनामिका, श्री एस. एस. नूर, श्री के. शिवा रेड्डी और श्री सुबोध सरकार जैसे प्रख्यात कवियों ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

दूसरे दिन, चौथे सत्र का विषय था—'दक्षिण एशियाई साहित्य : चुनौतियाँ और अपेक्षाएँ'। बाङ्लादेश के श्री शम्सुर्रहमान ने इस सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि, चूँकि बंगालियों और बाङ्लादेशियों द्वारा समान भाषा में अभिव्यक्त विचारों में बहुत-सी समानताएँ पाई जा सकती हैं, इसलिए दोनों देशों के साहित्यिक वर्गों के बीच आदान-प्रदान के लिए ज़्यादा कुछ शेष नहीं बचता।

श्री चंद्रकांत पाटील ने अपने आलेख 'दक्षिण एशियाई साहित्य : चुनौतियाँ और अपेक्षाएँ—मराठी का प्रतिनिधित्व' में वर्तमान समय में मराठी कथा साहित्य की परेशानियों/चुनौतियों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। अंत में उन्होंने कहा कि 'जादुई यथार्थवाद' हमारी परंपरा में पहले से ही अंतर्निहित था, स्वप्नों और यथार्थ का मिश्रण एवं विनिमय हमारे लिए कभी भी नया नहीं था तथा रचनात्मक कल्पनाशीलता हमारे लिए सामान्य और नियमित बात थी। भूतकाल का यशगान करने के स्थान पर, जादुई पुनर्जीवन के ख़तरों को स्वीकारते हुए हमें वास्तविकताओं को स्वीकारना होगा, जिससे हमारे लेखक एक बेहतर दृष्टिकोण तथा जिस दुनिया में हम रहते हैं, उसकी जटिलताओं को हमें समझाने में सहायक सिद्ध होंगे।

प्रख्यात रंगमंच निर्देशक श्री प्रसन्ना ने बताया कि किस प्रकार प्रिण्ट मीडिया भाषा सीखाने में ज़्यादा मददगार सिद्ध नहीं होती तथा किस प्रकार रंगमंच युवा मस्तिष्कों में स्थानीय संस्कृति एवं भाषा द्वारा एक आदर्श स्थापित कर रहा है। उन्होंने बताया कि एक अंग्रेज़ी माध्यम के कॉलेज में उन्होंने एक नाट्य प्रतियोगिता का आयोजन किया था, जिसमें समस्त क्षेत्रों के विद्यार्थी-समूहों ने उसमें भाग लिया था। अंग्रेज़ी बोलनेवाले विद्यार्थियों ने शीघ्र ही मातृभाषा में बोले जानेवाले क्षेत्रीय शब्दों का प्रयोग प्रारंभ किया तथा परिणामस्वरूप अन्य विद्यार्थियों ने भी स्थानीय संस्कृति के शब्दों की ओर और अधिक ध्यान देना शुरू किया। अपने व्याख्यान के अंत में उन्होंने कहा कि भारत में जापान के 'काबूकी' की भाँति 'भारतीय रंगमंच' नहीं है।



श्री यू.आर. अनंतमूर्ति, मो. ज़मान आज़ुर्दा, श्रीमती प्रतिभा राय और श्री सलाम बिन रज़ाक

पंचम सत्र का विषय भी इससे पूर्व के सत्र का ही था। इस सत्र की अध्यक्षता बाङ्लादेश के श्री अनीसुज़्ज़मान ने की। उन्होंने कहा कि आजकल प्रकाशन योग्य सामग्री के लिए हमारे पास कम समय है। उन्होंने कहा कि स्थानीय और विश्व स्तर पर जिस सामग्री को हम अपना कहते हैं, वह असल में दूसरों से उधार ली हुई होती है।

श्रीलंका की सुश्री जीन अर्सानायकम ने कहा कि, 'जब मैं लिखती हूँ, तो वह मेरे लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। हम लेखकों को अमरपक्षी की भाँति जीना चाहिए, जिस प्रकार से मेरे देशवासी सुनामी का कहर झेल कर वापस सामान्य जीवन की ओर लौटे हैं।' उन्होंने अपने जीवन तथा अपनी वंश-परंपरा की पहचान जो डच, फ्रांसीसी, आइरिश और भारतीय मूल से होती हुई गुज़री के बारे में बताया और कहा कि उनका विवाह एक तमिष़ से हुआ है। उन्होंने कहा कि उनके अधिकांश रिश्तेदार पाश्चात्य माहौल में ढलने के लिए आस्ट्रेलिया जाकर बस गए हैं, जबकि उन्होंने अपने देश में ही रहना उचित समझा। वे सभी जो प्रवासी हो गए हैं, उन्होंने अपनी पहचान खो दी है, जबकि उन्होंने अपनी जन्मभूमि में रहकर अपनी पहचान को क़ायम रखा है। उन्होंने स्वयं को एक परिवर्तनशील और एक अतिसुधारवादी व्यक्तित्व बताया, जो जैसा जीवन है उसे उसी प्रकार जीता है। उन्होंने कहा कि मेरे विविध अनुभवों ने ही मुझे लेखक बनाया है। मुझे सीमाओं और अवरोधकों से नफ़रत है।

श्रीमती पुष्पा भावे के आलेख का विषय था—'दक्षिण एशियाई साहित्य : चुनौतियाँ और अपेक्षाएँ'। उन्होंने प्रश्न किए कि, 'हम क्या वास्तव में पश्चिमी दृष्टि में स्वयं को असाधारण सिद्ध कर सकते हैं? कालजयी और आधुनिक साहित्यिक कार्यों के प्रति विभिन्न देशों के समुदायों का क्या रुख़ है? सामाजिक बदलाव और साहित्यिक अभिव्यक्ति में क्या अंतर्सम्बंध हैं? क्या एक दक्षिण एशियाई लेखक पारंपरिक साहित्यिक पद्धतियों को क़ायम रख सकता है? दक्षिण एशियाई कलाकारों के बीच नेटवर्क के कौन-से उपकरण हैं? 'मुझे भारत और पाकिस्तान के बीच, इस प्रकार की नेटवर्किंग की थोड़ी जानकारी है—साहित्य अकादेमी या सार्क की शायद कोई योजना है? क्या लिंग व्यवस्था द्वारा विभिन्न देशों के जीवन स्तर का पता लगाया जा सकता है अथवा क्या इसके द्वारा विभिन्न उपसंस्कृतियों के अंतर्सम्बंधों का अध्ययन किया जा सकता है? क्या ऐतिहासिक परंपरा की तुलना की जा सकती है? किसी को भी यह जानने की तीव्र इच्छा होगी कि सांस्कृतिक संकट को विभिन्न साहित्यिक कार्यों द्वारा कैसे सुलझाया जाता है?' अपने भाषण के अंत में उन्होंने नेपाल के लोगों को एकजुट होने की सलाह दी, जिनकी लोकतांत्रिक व्यवस्था का हाल ही में राजतंत्र ने दमन किया है।

श्री आर. बालचंद्रन 'बाला' ने अपने आलेख 'अस्तित्व के लिए अभियांत्रिकी संघर्ष—एक प्रतिक्रिया' में तमिष़ काव्य की समस्यायों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि, 'जो मेरी अंतरात्मा की आवाज़ से निकलता है, वह मेरी पहचान के लिए होता है, एक सुस्पष्ट सांस्कृतिक मोहर के चिह्न की भाँति, एक सौन्दर्यपरक प्रदर्शन की भाँति जिसका संबंध मुझसे है। आज हमारे पास कवि हैं, जो तमिष़ में लिख सकें तथा समस्त विश्व में भी हमारे पास तमिष़ के कवि हैं। लेखन कार्य यदि मूल्यों का ह्रास नहीं है तो वह परवर्ती काल, स्थान, समय और भाषा के लिए एक संकट है।'

षष्ठ सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात पाकिस्तानी कथाकार श्री इंतिज़ार हुसैन ने की। इस सत्र में श्री हुसैन सहित बाङ्लादेश की सुश्री सेलिना हुसैन (दोनों विशिष्ट अतिथि), श्रीमती इंदिरा गोस्वामी, श्री पॉल ज़करिया और श्री दामोदर मावज़ो ने अपनी कहानियाँ पढ़ीं।

सप्तम सत्र में काव्य-पाठ हुआ। इसमें पाकिस्तान के प्रसिद्ध कवि श्री अहमद फ़राज़ की अध्यक्षता में श्री निर्मलेन्दु गून, सुश्री जीन अर्सानायकम (तीनों विशिष्ट अतिथि), श्री सीताकांत महापात्र, सुश्री सुतपा सेनगुप्ता, श्री केकी एन. दारूवाला, श्री उदय नारायण सिंह, श्री सुरजीत पातर, श्री चंद्रप्रकाश देवल, श्री बलराज कोमल, श्री शीन काफ़ निज़ाम, श्री सलाहुद्दीन परवेज़ और सुश्री मुग़नी तबस्सुम जैसे प्रख्यात कवियों ने अपनी कविताएँ पढ़ीं।

20 फ़रवरी को अष्टम सत्र का विषय था—'मेरा लेखन : मेरा समय'। इस सत्र की अध्यक्षता श्री गिरिराज किशोर ने की। इस सत्र में श्री निर्मलेन्दु गून, सुश्री फ़ातिमात नहूला, श्री अमित चौधुरी, श्री सुरेन्द्र वर्मा, श्री अशोकमित्रन् और श्री सैयद शम्सुल हक़ ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

श्री अशोकमित्रन ने अपने आत्मकथात्मक उपन्यास का एक अध्याय पढ़ते हुए बताया कि किस प्रकार से आदर्शवादी प्रो. थाम्बी मुत्थु ने अपने ढंग से राष्ट्रवादी विचारधाराओं को जीवित रखा, जबकि अंग्रेज़ी शैक्षिक परंपरा में इस तरह का अनुशासन रख पाना कितना कठिन था। प्रख्यात तमिष़

कथाकार ने स्वतंत्रता-संग्राम के पश्चात् व्यक्तिगत सामाजिक जीवन में आई विसंगतियों और समस्याओं को सफलतापूर्वक उजागर किया।

श्री सुरेन्द्र वर्मा ने कहा, 'किसी भी रंगमंचीय उद्यम के तीन घटक होते हैं—पटकथा, निर्देशक और अभिनेता तथा वे अपने संबंधित रंगमंचीय अनुभवों की पूर्ति हेतु व्यक्तिगत तथा सामुहिक रूप से सौन्दर्यपरक प्रयास करते हैं। सृजनात्मक प्रतिभागियों द्वारा इसमें भाग लेने से यह प्रक्रिया असाधारण रूप से अनूठी बन जाती है तथा इनके अभिनय के समक्ष चाहे पटकथा लघु हो या दीर्घ वह भी कठोर प्रतीत होती है।'

श्री निर्मलेन्दु गून ने कहा कि किसी कवि के बारे में बात करने से कहीं अधिक अच्छा उसकी कविताओं का पाठ करना है। उन्होंने कहा, 'एक कवि तब कहीं अधिक बेहतर लगता है, जब वह अपनी कविताओं का पाठ किसी एक बेहतर गेंदबाज़ या बल्लेबाज़ की भाँति करता हुए दिखता है।' उन्होंने अपने जीवन और किए गए कार्यों के बारे में भी बताया। श्री गून का जन्म सन् 1945 में अविभाजित बंगाल में हुआ। उन्होंने नेताजी सुभाषचंद्र बोस को अपना आदर्श माना तथा नेताजी को भारत का वास्तविक नेता बताया। श्री गून ने कहा कि भारत को एक रखने के लिए नेताजी सही व्यक्ति थे। वह धार्मिक, उदार, संस्कृति के अनुकूल तथा भावनात्मक रूप से एक सच्चे भारतीय थे। और एक दिन अचानक वह अदृश्य हो गए। आज तक हमें यह नहीं पता चल सका कि वास्तव में उनके साथ क्या घटित हुआ था। उन्होंने कहा कि, जब भारत विभाजित हुआ था, तब उनके कुछ संबंधियों ने पूर्वी बंगाल को छोड़ दिया था तथा वह दिल्ली और कोलकाता में जाकर बस गए थे। गत तीन-चार वर्षों में उनके दो या तीन निकट संबंधियों की मृत्यु हुई और वह उनके अंतिम संस्कार के अनुष्ठानों में नहीं जा सके। उनकी जीवन-गाथा एक प्रकार से किसी उपमहाद्वीप की गाथा है। उनका समस्त परिवार खंडित हो गया तथा उनके परिवार ने जीवन की विपत्तियों को क्रमशः अपने-अपने देशों में झेला। उन्होंनें विभाजन पर एक उपन्यास भी लिखा है। उन्होंने निर्दयी राजनीतिक और सामाजिक बदलावों की पृष्ठभूमि में आम लोगों की व्यथा को अपनी कविताओं में भी लिखा है। उन्होंने पाकिस्तानी तानाशाह और उसकी सेना द्वारा सन् 1971 में किए गए जन-संहार के बारे में भी बताया, जिसमें हज़ारों लोग मारे गए थे।

श्री अमित चौधुरी ने अपने जीवन तथा कार्यों के बारे में बताया। उनका जन्म कोलकाता में हुआ और वह मुंबई में पले-बढ़े तथा उच्च शिक्षा के लिए वह इंग्लैंड गए। इसी कारण से उन्हें सृजनात्मक अभिव्यक्ति हेतु अंग्रेज़ी माध्यम का चुनाव करना पड़ा। उनका मानना है कि वह एक उत्तर-आधुनिक लेखक होने के स्थान पर एक आधुनिक लेखक हैं। उन्होंने कहा कि भारत में कथा साहित्य के क्षेत्र में उनकी विचारधारा के लेखक अधिक नहीं हैं। इसके लिए वह 20वीं शताब्दी के मध्य में या उससे पूर्व की लिखी पुस्तकों का अध्ययन करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि उन्होंने एक भारतीय लेखों के संकलन का संपादन भी किया है, किन्तु उनका मानना है कि उसे और अधिक विस्तृत होना चाहिए, इसलिए शायद वह भविष्य में इसके लिए प्रयास भी करेंगे।

मालदीव की सुश्री फ़ातिमात नहूला ने अपने जीवन तथा कार्यों के बारे में बताया। उन्होंने एक अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता के संपादक को अपनी कहानी भेजी और उन्हें उसमें प्रथम पुरस्कार मिला, इससे प्रोत्साहित होकर उन्होंने अधिकाधिक कहानियाँ लिखना प्रारंभ किया। अब वह फ़िल्मों का निर्देशन, टी. वी. और फ़िल्मों के लिए पटकथा लेखन करती हैं और कविताएँ लिखती हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें उनके परिवार की ओर से इन कार्यों को करने के लिए सहयोग और प्रोत्साहन मिलता है।

दोपहर को प्रारंभ होनेवाले नवम सत्र का विषय भी पूर्ववत् था। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. यू. आर. अनंतमूर्ति



श्री अश्विन देसाई, श्री गिरिराज किशोर,
श्री अजमल कमाल और प्रो. मकरंद परांजपे

ने अपने बारे में बताया। उन्होंने कहा कि मेरी आयु अब 72 वर्ष है और जब मैं 15 वर्ष का था, तब भारत स्वतंत्र हुआ था, इसलिए मुझे स्वतंत्रता संग्राम के बारे में बहुत कुछ पता है। नेहरू जी और गाँधी जी उनके नायक थे। उन्होंने गाँव के स्कूल में अध्ययन किया था। उस वक़्त उनका सबसे बड़ा ध्येय स्वामी विवेकानंद की भाँति संन्यास लेना था। ऐसा माना जाता था कि जो प्रतिदिन तुलसी के पत्ते खाता हो, वह संन्यासी बन सकता है, और वह ऐसा किया करते थे। एक बार उनकी माँ ने उन्हें ऐसा करते हुए पकड़ लिया और उन्हें ऐसा करने से मना किया। बेशक़ वह मुझे संन्यासी नहीं बनने देना चाहती थीं। प्रो. अनंतमूर्ति ने इसके पश्चात् उस समय की तीन महान भूखों के बारे में बताया। पहली थी समानता के लिए, जिसके लिए गाँधी जी लड़े और सभी प्रकार के भेदभावों का विरोध किया। यह 20वीं शताब्दी के होने के बावजूद हुआ। दूसरी भूख थी अध्यात्म की अथवा कल्पनाशक्ति की भूख। यह खोज स्थापित धर्मों से आगे की थी तथा इन खोजों का नेतृत्व रामकृष्ण परमहंस, रमण महर्षि, श्री अरबिन्द और जे. कृष्णमूर्ति जैसे मार्गदर्शकों ने किया। तीसरी भूख आधुनिकता की थी।" कन्नड के महान लेखकों में से एक श्री के. वी. पुट्टपा (कुवेम्पु) जो कर्नाटक के पहाड़ी इलाक़ों के एक गाँव में रहते थे, ने कहा था, "यदि मैंने अंग्रेज़ी नहीं सीखी होती, तो मैं अपने सिर पर गोबर ही ढोता रहता।" इस वक्तव्य से अंग्रेज़ी द्वारा आधुनिकता के आगमन का पता चलता है। लेकिन समानता की भूख बाक़ी की दोनों भूखों से ऊपर थी। आजकल हमें ऐसे लोकवादी राजनीतिक नेता देखने को मिलते हैं, जिन्हें जनता की कोई परवाह नहीं है। आजकल के वोट माँगने वाले नाटकबाज़ों ने समानता की भूख को निष्प्रभ कर दिया है। आध्यात्मिक भूख के स्थान पर इन वोट माँगनेवालों ने सांप्रदायिकता को स्थापित कर दिया है। समस्त धर्मों में आध्यात्मिकता का स्थान व्यवसायीकरण ने ले लिया है। आधुनिकता की भूख आज वैश्वीकरण की आवश्यकता बन गई है। समस्त भाषाओं को दरकिनार करते हुए अंग्रेज़ी आज सत्ता की भाषा बन गई है। प्रो. अनंतमूर्ति ने अपने भाषण के अंत में कहा कि, 'क्या हम धर्म, आधुनिकता और लोकतंत्र की समीक्षा कर सकते हैं? यह आज का सबसे अहम प्रश्न है, जिससे हमें दो-चार होना पड़ता है?'

बाङ्लादेश के श्री सैयद शम्सुल हक़, श्रीलंका के श्री गुणदास अमरशेखर, मोहम्मद ज़मान आजुर्दा, श्रीमती प्रतिभा राय और श्री सलाम बिन रज़ाक ने अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए।

प्रखर कवि, कथाकार और उपन्यासकार की श्री सैयद शम्सुल हक़ ने कहा कि, 'मेरे देश में जो प्रत्येक लेखक स्वयं से प्रश्न करता है, वह यह है कि क्या मैं अपने देश के नेताओं के विचारों को प्रभावित कर सका? संभवतः इसका उत्तर होगा 'नहीं'। मेरे देश में जो कुछ भी घटित हुआ, वह हमारे देश में लेखकों के होने के बावजूद हुआ। मैं एक लेखक के रूप में बंधक हूँ।' उन्होंने कहा कि वह दिल्ली आकर बहुत खुश हैं, क्योंकि उन्होंने ग़ालिब के कृत्यों पर बहुत काम किया है तथा उनके 1857 के प्रथम भारतीय संग्राम के दिनों के मद्देनज़र ग़ालिब के जीवन पर एक नाट्य-गीत भी लिखा है। एक लेखक होने के नाते, "वह सामूहिक तथा व्यक्तिगत और पर आम आदमी के मस्तिष्क को पढ़ सकते थे, विशेषरूप से चाहे वह किसी राजनीतिक अथवा व्यक्तिगत दबाव में हो।" उन्होंने भारत और साहित्य अकादेमी से आग्रह किया कि वह क्षेत्रीय साहित्यों के अनुवाद का अभियान चलाएँ, जिससे राजनीतिक, सांस्कृतिक और क्षेत्रीय अवरोधों को तोड़ा जा सके।

मोहम्मद ज़मान आजुर्दा ने साहित्य तथा साहित्य के वर्तमान समय से संबंधों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि, "समय बहती नदी की भाँति है। यदि आप नदी के किनारे पर खड़े होकर बह चुके पानी को देर तक देखना चाहें तो आप ऐसा नहीं कर सकते और न ही आपने जिस बहते पानी से हाथ धोए थे, उसी पानी से आप दोबारा अपने हाथ चाहकर भी नहीं धो सकते।"

श्रीमती प्रतिभा राय ने अपने जीवन तथा साहित्यिक कार्यों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि उनके अधिकतर उपन्यासों में आत्मकथात्मक तत्त्व हैं। उन्होंने कहा कि व्यास, कालिदास, टैगोर आदि कालजयी लेखक हैं, न कि उनके जैसे लेखक। उनके लिए लेखन स्वयं को खोजने की भाँति

है। एक ही जीवन में कई बार जन्म और मृत्यु होती है। उन्होंने कहा कि उनका लेखन एक विद्रोह है—वह विद्रोह जो परंपरा, अंधविश्वास और सामाजिक बुराइयों के ख़िलाफ़ है। उन्होंने पुरी मंदिर के पुजारी द्वारा उनके ख़िलाफ़ मानहानि के एक 10 वर्ष पुराने मुक़दमे के बारे में बताया जो उनके सुधारवादी लेखन के विरुद्ध था। वह लिखतीं तो मात्र एक ही बार हैं, किन्तु वह अपने स्वप्नों में, दृष्टि में, विचारों आदि में बारंबार लिखती ही रहती हैं। उन्हें ऐसा लगता है कि वह पाषाण-युग में भी रह चुकी हैं। तदुपरांत उन्होंने अपने प्रमुख उपन्यासों के बारे में संक्षिप्त रूप से बताया।

श्रीलंका के श्री गुणदास अमरशेखर ने अपने लेखन तथा अपने देश के राजनीतिक इतिहास के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि, "जब हमें सन्1948 में ब्रिटिशों द्वारा स्वतंत्र किया गया, क्योंकि यह स्वाभाविक ही था कि भारत जैसे विशाल देश को खोने के पश्चात् वह भारत के समीप छोटे से द्वीप का क्या करते। यह व्यंग्यपूर्ण ही है कि स्वतंत्रता हम पर थोपी गई, क्योंकि हमारा नेता-वर्ग अपने कंधों पर इस देश की ज़िम्मेवारी मालिकों के सहयोग के बिना लेने के लिए अनिच्छुक था। वह चाहते थे एक सीमित आज़ादी। इस प्रकार का उत्तर ऐसे लोगों से मिलना कोई आश्चर्य की बात नहीं, जिन्होंने कोई स्वतंत्रता-संग्राम, आज़ादी का आंदोलन अथवा कोई जन आंदोलन न लड़ा हो। 'आनुवंशिक विरूपता' अथवा 'जन्मजात कलंक' के साथ जन्मी हमारी स्वतंत्रता, निःसंदेह हमारे भविष्य पर अपने निशान छोड़ेगी; जिसमें अर्थव्यवस्था तथा सत्ता से संस्कृति तक के समस्त क्षेत्र शामिल होंगे।

दशम् सत्र जो अपराह्न 2:30 बजे प्रारंभ हुआ, में कहानी-पाठ हुआ। पाकिस्तान से आई सुश्री ज़ाहिदा हिना ने इस सत्र की अध्यक्षता की। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में उन्होंने कहा कि, "अपनी लेखन शक्ति द्वारा हम वैश्वीकरण के साए में खड़े साम्राज्यवाद के ख़तरे से लड़ सकते हैं।" सुश्री हिमांशी शेलत, श्री विक्टर रांगेल-रिबेरो, सुश्री वासिरेड्डी सीतादेवी और श्री मुकेश वर्मा ने कहानियाँ पढ़ीं।

एकादश सत्र का विषय था—'साझे भविष्य की ओर'। पाकिस्तान के श्री अजमल कमाल ने इस सत्र की अध्यक्षता की। श्री गिरिराज किशोर, प्रो. मकरंद परांजपे और श्री अश्विन देसाई ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

श्री अजमल कमाल ने कहा कि वह इस संगोष्ठी में एक लेखक के नाते नहीं, वरन् एक संपादक और अनुवादक के रूप में भाग ले रहे हैं। उन्होंने निर्मल वर्मा की कहानियों को चुना तथा उनका अनुवाद किया है।

श्री गिरिराज किशोर ने अपने जीवन और कार्यों के बारे में बताया। उन्होंने विशेषरूप से अपने उपन्यास *पहला गिरमिटिया* के बारे में बताया, जिसमें उन्होंने गाँधी जी के जीवन तथा दक्षिण अफ़्रीका में उनके द्वारा किए संघर्ष के बारे में लिखा है।

प्रो. मक़रंद परांजपे ने भारत विभाजन को दो भाइयों के बीच किए गए संपत्ति के बँटवारे की तरह बताते हुए कहा कि बड़े या छोटे भाई के बीच किया गया अस्थाई बँटवारा एक दूसरे के प्रति कड़वाहट नहीं पैदा करता। इसी प्रकार से भारत और पाकिस्तान को भी एक-दूसरे के प्रति शत्रुता नहीं रखनी चाहिए। जैसा कि वृंदावन के गोस्वामी महाराज ने कहा है इस वक़्त हमें 'अपनाने की राजनीति' को अपनाने की आवश्यकता है। सब ओर केवल—'भारतीय हिन्दुस्तानी, भारतीय पाकिस्तानी तथा भारतीय बाङ्लादेशी होने चाहिए—सभी भारतीय लोग'। उन्होंने श्रीअरबिन्द के कथन 'आत्मा एक है' को दोहराया। प्रत्येक समुदाय को फलने-फूलने का अवसर मिलना चाहिए। प्रो. परांजपे ने कहा कि, 'संस्कृति मात्र एक दशा है। नाटक के लिए विविधता आवश्यक है। नाटक की सफलता तथा उसमें आनेवाले रोमांच के लिए अनुभवातीत में विभिन्नता आवश्यक है।'

समापन सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध विद्वान और शिक्षाविद् श्री मुशीरुल हसन ने की। पाकिस्तान से आए श्री खुर्शीद के. अज़ीज़ ने समापन भाषण में 'आधुनिक उर्दू ग़ज़ल पर चिन्तन' विषय पर बात करते हुए उसके विकास तथा विश्वभर में जहाँ-जहाँ भी उर्दू बोली एवं पढ़ी जाती है, की काव्यात्मक विधाओं के प्रसार पर विस्तृत प्रकाश डाला।

इस अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी ने जो बड़ी सफलता सिद्ध की वह थी दक्षिण एशियाई क्षेत्र की साहित्यिक विभूतियों का एक साथ चलना एवं बातचीत के लिए एक मंच प्रदान करना।

'भाषा सम्मान' और 'अनुवाद पुरस्कार' 2003 अर्पण

27 अगस्त 2004, नई दिल्ली

27 अगस्त 2004 को त्रिवेणी सभागार, तानसेन मार्ग, नई दिल्ली में सायं 5:30 बजे आयोजित एक भव्य समारोह में साहित्य अकादेमी के वर्ष 2003 के 'भाषा सम्मान' और 'अनुवाद पुरस्कार' प्रदान किए गए।

'भाषा सम्मान' पुरस्कार विजेता

डॉ. केशवानंद देव गोस्वामी
डॉ. मोहम्मद वारिस किरमानी
श्री मंगत रवीन्द्र
श्री बिहारी लकड़ा

(*अनुवाद पुरस्कार विजेताओं की सूची अगले पृष्ठ पर, देखें*)

(स्व.) सुजीत मुखर्जी (अंग्रेज़ी) की सुपुत्री कल्याणी बैनर्जी ने अपने पिता के लिए तथा (स्व.) उपेन्द्र दोषी (मैथिली) की पत्नी श्रीमती वीणा देवी ने अपने पति के लिए पुरस्कार ग्रहण किए।

साहित्य अकादेमी के सचिव प्रो. के. सच्चिदानंदन ने पुरस्कार विजेताओं और श्रोताओं का स्वागत करते हुए कहा, "भारत में अनुवादकों का स्थान कभी भी गौण नहीं रहा; हमारे महान कवि अनुवादक रहे चुके हैं तथा हमारे महान अनुवादक कवि रह चुके हैं। आज हमारे अनुवादक एक बार पुनः, जब औपनिवेशिक आधिपत्य में अनुवाद दूसरे दर्जे की गतिविधि माना जाना था, ऐसे में पूर्व उपनिवेशवाद में खुलापन लाने तथा अनुवाद की लोकतांत्रिक महत्ता को उजागर करने की चेष्टा कर रहे हैं, तथा उत्तर-औपनिवेशिक काल के संदर्भ में जहाँ अनुवाद ही लेखन, सांस्कृतिक हस्तांतरण, भाषिक मनोविनोद तथा अंततः एक ऐसा ज़रिया माना जाता था, जिससे हम अपने लोगों का इतिहास तथा उनके भूतकाल एवं वर्तमानकाल का अभिलेखन करते थे, की प्रासंगिकता को सुरक्षित रखने का प्रयास कर रहे हैं। यह एक भाषा द्वारा अर्जित विकास को जाँचने, अनेकत्व का एक उत्सव तथा सांस्कृतिक पहचान की पुनर्खोज करने का एक माध्यम भी



साहित्य अकादेमी के सचिव प्रो. के. सच्चिदानंदन, मुख्य अतिथि श्री मनोज दास, अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग और उपाध्यक्ष श्री सुनील गंगोपाध्याय

है। अनुवादक संस्कृतियों, मूल-पाठों तथा राष्ट्रों के बीच मध्यस्थ का कार्य करते हैं।

"साहित्य अकादेमी ने इस तथ्य को सदैव स्वीकारा है। गत 50 वर्षों में अकादेमी ने अंग्रेज़ी के साथ-साथ विभिन्न भारतीय भाषाओं के न केवल लगभग 3000 अनुवाद प्रकाशित किए हैं, वरन् इसे प्रोत्साहित करने हेतु देशभर में विभिन्न संगोष्ठियों, परिचर्चाओं एवं कार्यशालाओं का आयोजन भी किया है। अकादेमी के प्रतिष्ठित 'अनुवाद पुरस्कार' की स्थापना सन् 1989 में हुई थी। इस पुरस्कार के द्वारा हमने कई अनुवादकों तथा उनके द्वारा किए गए अनुवादों को मान्यता प्रदान की तथा इन अनुवादों से संबंधित कुछ विशेष



मुख्य अतिथि श्री मनोज दास व्याख्यान देते हुए

मानक भी तैयार किए। हमने सिद्धांतवादी अनुवादक भी तैयार किए हैं तथा हमने आज के भारत के प्रारंभिक काल में अनुवाद की महत्ता को प्रचारित भी किया है। अब तक हम 22 भाषाओं के 264 अनुवादकों को 'अनुवाद पुरस्कार' प्रदान कर चुके हैं और आज हम इस सूची में 19 और प्रख्यात नामों को जोड़ रहे हैं।"

प्रो. गोपीचंद नारंग ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि, "पहले अनुवाद संपर्क भाषा (अंग्रेज़ी) द्वारा किए जाते थे; अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद। सरसरी तौर पर देखा जाए तो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अंतर्भाषी अनुवाद में एक मूक परिवर्तन आ रहा है। इस वर्ष 19 पुरस्कारों में से 18 पुस्तकें मूल पुस्तकों से सीधे अनूदित की गई हैं।"

इस वर्ष भाषा सम्मान के लिए अल्पसंख्यक भाषाओं के रूप में *छत्तीसगढ़ी* और *कुरुख़* भाषाओं को चुना गया। अध्यक्षीय व्याख्यान के पश्चात् पुरस्कार वितरित किए गए।

इस समारोह के मुख्य अतिथि ओड़िया और अंग्रेज़ी के प्रख्यात लेखक श्री मनोज दास थे। उन्होंने कहा कि साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद एक व्यावहारिक गतिविधि है। उन्होंने कहा कि भारत में लोक साहित्य की अनूठी परंपरा है। विश्व का 75 प्रतिशत लोकसाहित्य भारतीय है। उन्होंने बताया कि सोमदेव की *कथासरित्सागर* में समस्त भारत की 2000 वर्ष पूर्व की लोककथाओं और वृत्तांतों के अनुवाद समाहित हैं। इस संकलन का 5/6 वाँ भाग एक दुर्घटना में जल गया था, इस पुस्तिका का केवल 1/6 वाँ भाग ही अब शेष बचा है। इस शेष बचे भाग का सोमदेव ने संस्कृत में अनुवाद किया था, जिसे हम आज *कथासरित्सागर* के नाम से जानते हैं। इस प्रकार भारतीय साहित्य अनुवाद से गहनता से जुड़ा हुआ है। हर क्षण हम अनुवाद कर रहे हैं। उदाहरणार्थ—संगीत मनोदशा का अनुवाद है। अनुवाद मानव जाति की सेवा करने के समान है। श्री मनोज दास ने अपने बचपन की याद ताज़ा करते हुए बताया कि उन्होंने अब से 60 वर्ष पूर्व *अंकल टॉम्स कैबिन* का ओड़िया अनुवाद पढ़ा था। उन्होंने तथा जिसने भी उस पुस्तक को पढ़ा, उसने उसके विभिन्न परस्थितियों से जूझते पात्रों की मनोदशाओं को स्वयं गहरे तक महसूस किया। यह केवल अनुवाद द्वारा ही संभव हो सका। महान रूसी लेखक (विद्वान) टॉलस्टॉय, दोस्तोयव्स्की तथा अन्यों द्वारा किए गए कार्यों के अंग्रेज़ी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में हुए अनुवाद हमें आज भी प्रभावित करते हैं। अनुवाद द्वारा ही शेष संसार

अनुवाद पुरस्कार विजेता 2003

असमिया
राजेन शइकीया

बाङ्ला
मलय राय चौधुरी

अंग्रेज़ी
(स्व.) सुजीत मुखर्जी

गुजराती
रेणुका श्रीराम सोनी

हिन्दी
देवेश

कन्नड
स्नेहलता रोहिड़ेकर

कोंकणी
आर. एस. भास्कर

मैथिली
(स्व.) उपेन्द्र दोषी

मलयाळम्
एम. पी. कुमारन

मणिपुरी
अरिबम कुमार शर्मा

मराठी
अपर्णा वेलणकर

नेपाली
सुवास दीपक

ओड़िया
सौदामिनी नंदा

पंजाबी
इक़बाल दीप

राजस्थानी
रामस्वरूप किसान

सिन्धी
कृष्ण राही

तमिष़
नील पद्मनाभन

तेलुगु
बेतवोलु रामब्रह्मम्

उर्दू
वक़ार क़ादरी


पुरस्कार ग्रहण करते हुए, तमिष़ और मलयाळम् के द्विभाषी लेखक श्री नील पद्मनाभन

को भारतीय साहित्य के चमत्कार तथा अकल्पित तत्त्व का ज्ञान मिलना संभव हो सका। जिस प्रकार शकुंतला ने गोएथे के हृदय का स्पर्श किया था।

किसी विशिष्ट भाषा से केवल उसकी विषय-वस्तु का ही अनुवाद किया जा सकता है न कि उसकी विनोदशीलता, व्यंग्योक्ति, मुहावरों, पदबंधों, अलंकारों आदि का। और न ही काव्य का अनुवाद किया जा सकता है, जो व्यावहारिक रूप से संगत नहीं है। ध्वनि अथवा भाषा की आवाज़ का अनुवाद नहीं किया जा सकता। मंत्रों और बीजाक्षरों का भी अनुवाद नहीं किया जा सकता। किसी भाषा में एक ही विचार के दो या उसके अधिक विशिष्ट शब्दों को साथ-साथ रखने से उनका अनुवाद नहीं किया जा सकता।

समस्त भाषाओं के पीछे जो जीवन शक्ति का आधार है, यदि वह आधार या किए गए अनुवाद में विचारों को भलि-भाँति समाविष्ट न किया गया हो, तो वह अनुवाद विफल है।

श्री मनोज दास ने बताया कि नोबेल पुरस्कार विजेता एवं कैरीबियाई कवि श्री डेरेक वालकॉट ने जब *पथेर पांचाली* को पढ़ा तो उन्हें ऐसा लगा कि मानो उनका जन्म बंगाल के किसी गाँव में ही हुआ हो, जबकि उन्होंने कभी भारत का दौरा ही नहीं किया था। यह अनुवाद द्वारा ही संभव हो सका। अपने भाषण के अंत में उन्होंने एक ग्रीक मिथक-गाथा सुनाई, जिसमें एक देवमानव की गतिविधियों के परिणामस्वरूप मनुष्य समस्त भाषाएँ भूल गया। अनुवाद एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा हम साहित्य को सुरक्षित तथा कई भाषाओं में यदि मूल को लोग भूल गए हों या वह कालातीत हो चुका हो तो भी वह (अनुवाद) उसे जीवंत रखता है।

समारोह के अंत में साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री सुनील गंगोपाध्याय ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि श्री मनोज दास के विद्वत्तापूर्ण तथा विचारोत्तेजक व्याख्यान के लिए अकादेमी उनकी आभारी है। फिर उन्होंने सदियों पुरानी कहावत दोहरायी कि अनुवाद को पूर्णतः सत्यनिष्ठा से किया जाना चाहिए तथा उन्होंने प्रो. सच्चिदानंदन के विचारों से सहमति जताते हुए कहा कि निष्ठाहीनता का विचार सरासर पश्चिमी है। अनुवाद द्वारा ही राष्ट्रों और क्षेत्रों का जुड़ना संभव हो पाया है।

लेखक सम्मिलन

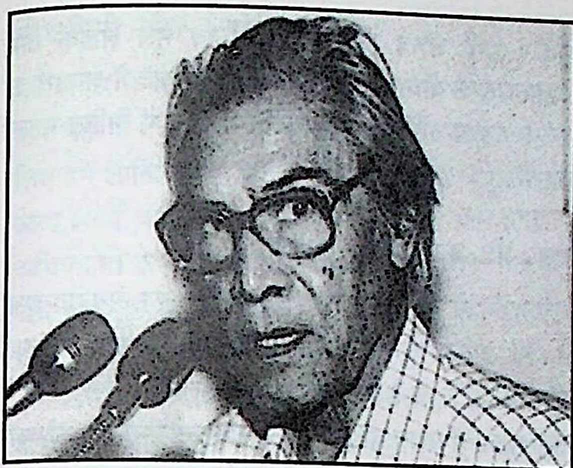
28 अगस्त 2004, नई दिल्ली

28 अगस्त 2004 को साहित्य अकादेमी सभागार में लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया। 'भाषा सम्मान' विजेताओं तथा 'अनुवाद पुरस्कार' विजेताओं ने अपने अनुभवों को उपस्थित श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया, जिनके अंश इस प्रकार हैं—

'भाषा सम्मान' से विभूषित रचनाकार

डॉ. केशवानंद देव गोस्वामी

किसी भी प्राचीन साहित्य के अंश का संपादन और अनुवाद आसान कार्य नहीं है। इस प्रकार के उद्यम के लिए कम-से-कम मूलपाठ के समालोचनात्मक अध्ययन का व्यावहारिक ज्ञान होना आवश्यक है—जो बड़ा ही ऊबाऊ होने के साथ-साथ रोचक एवं मूल्यवान भी है। हो सकता है इसमें कई अस्पष्ट और बहकाने वाली स्थितियाँ भी उत्पन्न हों जो सुलझाई न जा सकें। मेरे पास कई ऐसे रोमांचक अनुभव हैं, जिनसे मुझे प्राचीन साहित्य के अनुवाद के मेरे लंबे सफ़र में दो-चार होना पड़ा। किसी एक शब्द के स्पष्ट उच्चारण के लिए, विभिन्न प्रकार के साधन तथा समालोचना की विविध पाठकीय विधियों का प्रयोग भी बेहतर परिणाम नहीं दे सकते। प्राचीन साहित्य में प्रयुक्त मुहावरेदार अभिव्यक्तियों के वास्तविक



लेखक सम्मिलन में व्याख्यान देते हुए भाषा सम्मान विजेता डॉ. मोहम्मद वारिस किरमानी

उद्देश्य को जानना आवश्यक है। उनमें से कुछ अप्रचलित हो गए हैं, जो संदेह उत्पन्न करते हैं।

डॉ. मोहम्मद वारिस किरमानी

एक लेखक होने के नाते मैंने अपनी भावनाओं को पूरी शिद्दत से व्यक्त करने का प्रयास किया है, लेकिन मेरा यह मानना है कि मुझे अभी तक इसमें पूर्ण रूप से सफलता नहीं मिल पाई है। सृजनात्मक लेखन के दौरान मुझमें सदा एक असंतुष्टि की भावना रही, हमेशा यही लगा कि शायद उसमें कहीं कुछ छूट गया है। आज मेरे पास कई अनसुलझे सवाल, कई सुलझाने योग्य रहस्य तथा कई अनसुलझे विरोधाभास हैं। इसलिए मैं स्वयं को, इक़बाल और मिल्टन अथवा फ़ैज़ और फ़िराक़ जितना सफल कवि नहीं मानता।

श्री मंगत रवीन्द्र

छत्तीसगढ़ी भाषा न केवल व्याकरण की दृष्टि से अपितु अन्य दृष्टिकोणों से भी समृद्ध है। चाहे उर्दू हो या अंग्रेज़ी प्रत्येक भाषा तथा उपबोली का अपना महत्त्व होता है। प्रत्येक भाषा के अपने अर्थ और विचार होते हैं।

श्री बिहारी लकड़ा

यह सर्वविदित है कि जनजातीय नरेश के पुत्र का पहला नाम सुदास था तथा उसका दूसरा नाम बीदी (सूर्य) था। वही सूर्य, जिसकी छाया कुंती पर पड़ी थी। उसी सूर्य का पुत्र कर्ण था, जो अंग (प्रदेश) का राजा था तथा महाभारत में कौरवों की रणभूमि में सहायता करने के लिए राजा मद्र मुण्ड (भद्र नरेश) को अपने रथ का सारथी बनाकर ले गया था। हमें हमारे इतिहास द्वारा यह पता चला है कि सूर्य या बीदी का तीसरा नाम दिधिति था। कृष्ण, देवकी और वसुदेव के पुत्र थे। ऐसा कहा जाता है कि उराव के राजा का नाम दिधिति अथवा सूर्य अथवा बीदी था तथा उनकी सुपुत्री देवकी थी और देवकी का पुत्र कृष्ण था। कुंती राजा मद्र मुण्ड की पुत्री थी तथा उनका पुत्र कर्ण बीदी अथवा सूर्य का पुत्र था। ऐसा कहा जाता है कि मुंड ने आर्य-वंश की नींव रखी।

अनुवाद पुरस्कार विजेता

राजेन शइकीया (*असमिया*)

जब मैंने माणिक बंद्योपाध्याय के उपन्यास का अनुवाद प्रारंभ किया, तब तक उसमें सामाजिक परिवेश में बदलाव आ चुका था। युवाओं का अतिवाद उसमें स्पष्टरूप से झलक रहा था। मैंने यह पाया कि तब तक उस उपन्यास के 35 संस्करण पहले ही प्रकाशित हो चुके हैं। ऐसे में क्यों न असमिया भाषा के पाठकों को एक अवसर दिया जाए? लेकिन अफ़सोस, यह उतना आसान नहीं था, जितना कि मैंने सोचा था। जैसे-जैसे मैं इसके अनुवाद की ओर बढ़ा वैसे-वैसे मुझे इस उपन्यास की महानता के बारे में पता चला। मैं यह दावे से नहीं कह सकता क्योंकि कुछ प्रख्यात समालोचकों का यह मत है कि *पुतुल नाचेर इतिकथा* बाङ्ला का महान उपन्यास है। इस उपन्यास को रूपांतरित करने का मेरा उत्साह श्रद्धा में बदल गया तथा मैंने इस कार्य के पूर्ण होने तक इसका भरपूर आनंद लिया।

रेणुका श्रीराम सोनी (*गुजराती*)

अनुवाद करते वक़्त मुझे यह ख़याल आया कि गुजरात और ओड़िसा में चाहे हज़ारों किलोमीटर की दूरी है; फिर भी दोनों के बीच एक सामान्य बंधन है; वह बंधन साहित्य और संस्कृति का है। मेरी इच्छा है कि मैं अपने अनुवाद कार्यों द्वारा इन दोनों भाषाओं के बीच एक सेतु बनकर उनकी सेवा करूँ।

देवेश (*हिन्दी*)

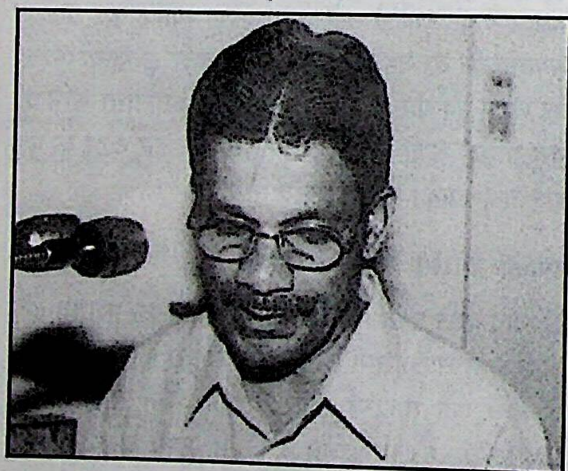
साख़्तियात, पस-साख़्तियात और मशरिक़ी शेरियात का अनुवाद बड़ा कठिन था, किन्तु प्रो. नारंग द्वारा विभिन्न सिद्धांतों और विचारों को उजागर करने की योग्यता अद्वितीय है। इससे मुझे मेरा कार्य संपूर्ण करने में बड़ी मदद मिली।

स्नेहलता रोहिड़ेकर (*कन्नड*)

मेरे द्वारा ओड़िया से कन्नड में अनूदित की गई पुस्तक *विचित्रवर्णा* का प्रकाशन साहित्य अकादेमी ने मई 2000 में किया था। यह वह समय था, जब मैं अपने जीवन के बड़े ही यंत्रणापूर्ण दौर से गुज़र रही थी। मेरे पति श्री रवि रोहिड़ेकर का 29 अप्रैल 2001 को निधन हो गया था। मैं पुस्तक विमोचन के कार्यक्रम में भी न जा सकी। मेरा पुत्र, मेरे ससुर तथा मेरे अन्य रिश्तेदार इस कार्यक्रम में गए थे।

आर. एस. भास्कर (*कोंकणी*)

अनुवाद, विज्ञान और कला है। जब एक अनुवादक किसी एक भाषा से किसी अन्य भाषा में केवल शब्दानुवाद करता है, तब वह अनुवाद तकनीकी और शुष्क हो जाता है। ऐसा अनुवाद आत्माविहीन होता है। एक अच्छे अनुवादक को किसी मूल लेखक के कार्य को किसी अन्य भाषा में अनूदित करने से पूर्व उसकी अंतर्भावनाओं को समझना चाहिए। ऐसा केवल तभी संभव हो सकता है, जब मूल लेखक और अनुवादक के बीच बौद्धिक संपर्क हो। अनुवाद में शब्दार्थ का उतना महत्त्व नहीं है, जितना कि उस शब्द में निहित महत्त्व का है।



कोंकणी पुरस्कार विजेता श्री आर. एस. भास्कर अपने अनुभवों के बारे में बताते हुए

एम. पी. कुमारन (*मलयाळम्*)

मलयाळम् में कई बाङ्ला‌भाषी उपन्यासों का अनुवाद हुआ है। डॉ. असित कुमार बैनर्जी ने *हिस्ट्री ऑफ़ मॉडर्न बंगाली लिटरेचर* में कहा है कि, फ्राँसीसी महिला कैथरीन हेन्ना ने सन् 1852 में प्रथम बाङ्ला उपन्यास *फूलोमोनी ओ कोरूनार बिबारन* लिखा था। इस उपन्यास के प्रथम प्रकाशन के छह वर्षों में ही (संभवतः सन् 1858 के आस-पास) इसका मलयाळम् में अनुवाद किया गया था। यह किसी अन्य भारतीय भाषा से मलयाळम् में किया गया प्रथम उपन्यास था। इसके बाद सन् 1909 में बंकिम चंद्र के *आनंद मठ* का ही केवल बाङ्ला से मलयाळम् में अनुवाद किया गया था।

अरिबम कुमार शर्मा (*मणिपुरी*)

केवल अनुवाद ही समस्त विश्व में मैत्रीभाव और आपसी समझ को फैला सकता है। हमें अनुवाद के महत्त्व को समझना चाहिए तथा इसे देश और समुदाय के हित में समर्पित करना चाहिए।

अपर्णा वेलणकर (*मराठी*)

गायक वर्षों तक संगीत-साधना करते हैं और तब कहीं जाकर उन्हें पहचान मिल पाती है। मेरी समझ में किसी भी सृजनात्मक लेखक के लिए अनुवाद भी एक साधना है।

सुवास दीपक (*नेपाली*)

नेपाली भाषा भारत के विभिन्न प्रांतों (विशेषरूप से दार्जीलिङ् में) में रहनेवाले एक करोड़ भारतीयों द्वारा बोली जाती है; तथा वे लोग अपने लेखन द्वारा भारतीय साहित्य के लिए योगदान दे रहे हैं। मेरा उद्देश्य भारतीय नेपाली साहित्य को हिन्दी अनुवाद के द्वारा विश्व के समक्ष प्रस्तुत करना है।

सौदामिनी नंदा (*ओड़िया*)

मेरी समझ में अनुवाद किसी मूल सृजनात्मक लेखन कला से कम नहीं है। इसे सृजनात्मक तथा सौन्दर्यपरक बनाने के लिए हमें शाब्दिक अनुवादों से बचना चाहिए। अनुवादक को अन्य शब्दों, वाक्यांशों, परिस्थितियों आदि के साथ-साथ मूल अभिव्यक्ति के महत्त्व की खोज भी करनी चाहिए। वास्तविक अर्थ सदा सुस्पष्ट नहीं होता, वरन् अधिकतर वह अस्पष्ट ही होता है।

अनुवाद में दो मस्तिष्क सम्मिलित होते हैं। अनुवाद के दौरान मूल लेखक सदैव पृष्ठभूमि में रहता है। एक अनुवादक को लेखक के अंतर्मन, उसके विचार, उसका चीज़ों को देखने का नज़रिया तथा वह जो बात कहना चाहता है, का पूर्वानुमान होना चाहिए। एक वास्तविक अनुवाद दो साहित्यिक मस्तिष्कों का सम्मिश्रण है।

इक़बाल दीप (*पंजाबी*)

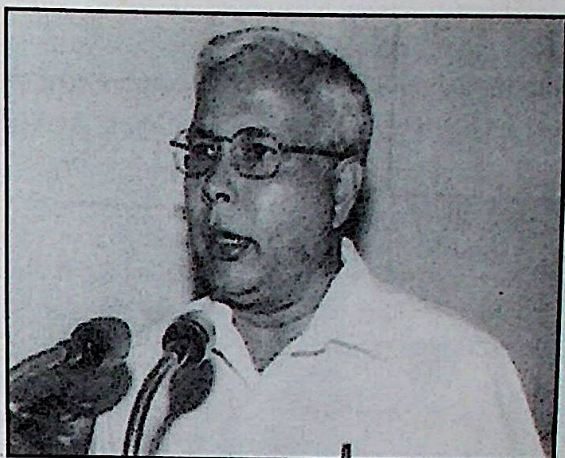
अनुवाद दो व्यक्तियों और दो समुदायों/संस्कृतियों तथा भाषाओं को आपस में मिलने तथा साहित्यिक कार्यों द्वारा एक-दूसरे के परिवेश को जानने का अवसर प्रदान करता है। अनुवादक की भूमिका एक दुभाषिये की होती है या दूसरे शब्दों में मैं कहना चाहूँगा कि अनुवादक मूल लेखक और पाठकों के बीच अनुवाद द्वारा एक सेतु का कार्य करता है।

रामस्वरूप किसान (*राजस्थानी*)

एक उत्कृष्ट अनुवाद के लिए अनुवादक को मूल और लक्ष्य दोनों भाषाओं पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए। तभी किसी एक साहित्य को किसी अन्य भाषा में ले जाने की परंपरा को क़ायम रखा जा सकता है।

कृष्ण राही (*सिन्धी*)

अनुवाद कार्य मेरे लिए एक प्रकार से शैक्षिक अनुभव है। एक लेखक के रूप में, अनुवाद द्वारा मेरी सृजनात्मक अभिव्यक्ति और ज्ञान में वृद्धि हुई है। मैंने तीन पुस्तकों का अनुवाद किया है। इनमें से दो अंग्रेज़ी के विनिबंध हैं—*ज्ञानदेव* (ले. पी. वी. देशपांडे) और *तिरुवल्लुवर* (ले. एस. महाजन)। तीसरा अनुवाद भीष्म साहनी कृत हिन्दी उपन्यास *तमस* है, जिसके लिए मुझे यह 'अनुवाद पुरस्कार' मिला।



असमिया अनुवाद पुरस्कार विजेता श्री राजेन शइकीया

नील पद्मनाभन (*तमिष़*)

मैं अनुवाद पद्धति की एक प्रमुख समस्या की ओर इशारा करना चाहूँगा। अनुवाद के संदर्भ में सदा यह मतभेद रहा है कि क्या अनुवाद शब्दशः किया जाए या स्रोत भाषा के मूल तत्त्व को लक्ष्य भाषा की अभिव्यंजन शैली में अभिव्यक्त किया जाए।

बेतवोलु रामब्रह्मम् (*तेलुगु*)

मैं इस अवसर पर अन्य भाषाओं में किए जानेवाले संस्कृत अनुवाद से संबंधित कुछ पहलुओं और समस्याओं के बारे में बताना चाहूँगा। एक समय था, जब अनुवाद को हेय दृष्टि से देखा जाता था। अब भी किसी अनुवादक या उसके अनुवाद को किसी एक सृजनात्मक लेखक या उसके द्वारा किए गए कार्य के समतुल्य नहीं देखा जाता। जबकि मैं इसे पूर्णतः अनुचित ठहराऊँगा। मेरा यह मानना है कि इस संदर्भ में अभी कुछ परिवर्तन आया है। जबकि इसमें अभी और अधिक परिवर्तन की आवश्यकता है।

वक़ार क़ादरी (उर्दू)

एक सामान्य अनुवादक के लिए कोई भी अनुवाद शब्दों की अदला-बदली हो सकता है, लेकिन किसी साहित्यिक अनुवादक के लिए पाठकों की रुचि विशेष महत्त्व रखती है। कोई भी अनुवाद तब सफल माना जा सकता है, जब एक पाठक, जिसे दोनों भाषाओं का ज्ञान हो, यह पाए कि मूलपाठ के तत्त्व को, किए गए अनुवाद में यथावत् रखा गया है।

कार्यक्रम के अंत में, श्री सुनील गंगोपाध्याय ने अनुवाद पुरस्कार विजेताओं तथा उपस्थित श्रोताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया।

स्वर्ण जयंती उद्घाटन समारोह

1 नवंबर 2004, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के स्वर्ण जयंती कार्यक्रमों का औपचारिक उद्घाटन 1 नवंबर 2004 को प्रातः 11.00 बजे नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में हुआ। भारत के माननीय प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने साहित्य अकादेमी के स्वर्ण जयंती कार्यक्रमों का उद्घाटन, माननीय सूचना एवं प्रसारण तथा संस्कृति मंत्री श्री एस. जयपाल रेड्डी तथा अकादेमी के पाँच नवनिर्वाचित महत्तर सदस्यों की उपस्थिति में किया।

कार्यक्रम का आरंभ श्री मधुप मुद्गल के प्रार्थना-गीत से हुआ। तदुपरांत प्रधानमंत्री, सूचना एवं प्रसारण तथा संस्कृति मंत्री, साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग, अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री सुनील गंगोपाध्याय तथा अकादेमी के सचिव प्रो. के. सच्चिदानंदन ने उद्घाटन दीप प्रज्वलित किया।

प्रो. गोपीचंद नारंग ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में उन्होंने कहा कि, अकादेमी लेखकों का सृजन नहीं कर सकती। यह लेखकों की सेवा करती है तथा योग्य लेखकों के लिए केवल अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा कर सकती है। उन्होंने आगे कहा कि अकादेमी ने अपने



नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में स्वर्ण जयंती उद्घाटन समारोह के अवसर पर श्रोताओं को संबोधित करते हुए माननीय प्रधानमंत्री

अस्तित्व के गत 50 वर्षों में निश्चित रूप से भाषाओं और पटकथाओं के अवरोधों को पार करते हुए भारतीय साहित्य के प्रति लोगों में जागरूकता पैदा की है। यह सत्य है कि आज के भारतीय लेखक पहले की अपेक्षा अपनी राष्ट्रीय साहित्यिक बपौती के प्रति और अधिक सजग हो गए हैं।

इसके बाद पाँच नवनिर्वाचित उत्कृष्ट भारतीय लेखकों को महत्तर सदस्यता प्रदान की गई। प्रख्यात रूसी विद्वान और हिन्दी साहित्य के अध्येता प्रो. ई. पी. चेलीशेव को मानद महत्तर सदस्ता प्रदान की गई।



अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग माननीय प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का अभिवादन करते हुए। इस अवसर पर माननीय सूचना एवं प्रसारण तथा संस्कृति मंत्री श्री एस. जयपाल रेड्डी भी उपस्थित थे

प्रख्यात कन्नड कथाकार एवं अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष प्रो. यू. आर. अनंतमूर्ति, प्रख्यात बाङ्ला कवि एवं कथाकार श्री शंख घोष, सुप्रसिद्ध राजस्थानी एवं हिन्दी लेखक श्री विजयदान देथा, अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त भाषाविद् प्रो. भा. कृष्णमूर्ति तथा सुप्रसिद्ध पंजाबी कवियत्री और कथाकार श्रीमती अमृता प्रीतम को भी महत्तर सदस्यता प्रदान की गई। महत्तर सदस्यों को प्रशस्ति-पत्र, गोलाकार फलक और शॉल भेंट की गई। श्रीमती अमृता प्रीतम के अस्वस्थ होने के कारण उनके स्थान पर उन्हें प्रदान की जानेवाली महत्तर सदस्यता उनकी पोती ने ग्रहण की।

माननीय प्रधान मंत्री ने निम्नलिखित महत्तर सदस्यों को सम्मानित किया—सुश्री क़ुर्तुल-ऐन हैदर (उर्दू), सुश्री कृष्णा सोबती (हिन्दी), श्री गोविन्द विनायक करंदीकर (मराठी), प्रो. विद्यानिवास मिश्र (हिन्दी/संस्कृत), श्री डी. जयकांतन (तमिष़), पं. एन. खेलचंद्र सिंह (मणिपुरी), श्री गुंटूर शेषेन्द्र शर्मा (तेलुगु), श्री नीलमणि फूकन (असमिया) और प्रो. गोविन्दचंद्र पांडे। उक्त सदस्यों को गोलाकार फलक और शॉल भेंट की गई।

प्रख्यात मराठी दलित लेखक श्री नामदेव ढसाल को आजीवन की गई सेवाओं के लिए पुरस्कृत किया गया। उन्हें एक लाख रुपये का चेक तथा ताम्र-फलक प्रदान किए गए।

युवा लेखकों के पुरस्कार—बाङ्ला कवि एवं कथाकार सुश्री मंद्रकांता सेन, भारतीय अंग्रेज़ी कवि श्री रणजीत होसकोटे, हिन्दी कथाकार सुश्री नीलाक्षी सिंह, कन्नड कथाकार श्री अब्दुल रशीद तथा मलयाळम् कथाकार सुश्री सितारा एस. को प्रदान किए गए।

माननीय सूचना एवं प्रसारण तथा संस्कृति मंत्री श्री एस. जयपाल रेड्डी ने इस अवसर पर कहा कि, 'तीनों अकादेमियों का कार्य देश की विविध कलाओं जैसे—साहित्य, संगीत और अभिनय कलाओं में कार्य करना है। उन्होंने यह भी कहा कि, 'साहित्य इन समस्त कलाओं में सबसे प्रभावशाली है।'

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि, 'हमारे सृजनात्मक लेखकों ने सदियों से भारतीय संस्कृति की विश्वसनीयता और स्थायित्व को क़ायम रखने में अहम भूमिका निभाई है। साहित्य अकादेमी उस सृजनात्मकता का प्रतीक है। साहित्य अकादेमी का स्वर्ण जयंती उत्सव न सिर्फ़ अकादेमी के इतिहास में वरन् समस्त देश के सांस्कृतिक इतिहास में एक ऐतिहासिक घटना है। हमारे बहुभाषी समाज में लेखकों की भूमिका पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि

लेखकों को भाषागत अवरोधों को अवश्य तोड़ना चाहिए। दूसरे शब्दों में कहें तो उन्हें समस्त राष्ट्र के लोगों के मध्य बेहतर संप्रेषण स्थापित करना चाहिए। डॉ. सिंह ने अंत में साहित्य अकादेमी को राष्ट्रीय महत्त्व के इस संवेदनशील अभियान की सफलता हेतु शुभकामनाएँ दीं।

साहित्य अकादेमी के सचिव प्रो. के. सच्चिदानंदन ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि साहित्य अकादेमी नौकरशाही और कूटनीति के संकीर्ण माहौल से ऊपर उठ चुकी है तथा इसने भारतीय साहित्य में उदारता, संलग्नता, लोच, लोकतंत्र, बहुभाषिकता एवं धर्मनिरपेक्ष अवधारणा के लिए सचेतन संघर्ष करते हुए भाषाओं, धर्मों तथा समुदायों के बीच पुल का निर्माण किया है, जिसमें न केवल हमारी सांस्कृतिक, भाषायी एवं साहित्यिक विविधता का ध्यान रखा गया है, वरन साथ ही साथ भारतीय साहित्य के समकालिक एवं ऐतिहासिक दोनों ही परिप्रेक्ष्यों के ऐक्य को भी दर्शाया गया है।

कार्यक्रम के अंत में प्रख्यात उर्दू कवि, गीतकार और फ़िल्म-निर्माता श्री गुलज़ार द्वारा साहित्य अकादेमी पर तैयार किए गए वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया।

शाम को नई दिल्ली स्थित कमानी सभागार में ग़ज़ल गायक श्री जगजीत सिंह द्वारा प्रस्तुत की गई ग़ज़लों का एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

स्वर्ण जयंती स्मारक डाक टिकट का लोकार्पण

21 दिसंबर 2004, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के स्वर्ण जयंती कार्यक्रमों के अंतर्गत स्वर्ण जयंती स्मारक डाक टिकट को संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री डॉ. शकील अहमद ने लोकार्पित किया और इसे सूचना-प्रसारण एवं संस्कृति मंत्री श्री एस. जयपाल रेड्डी ने ग्रहण किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग ने की।

साहित्य अकादेमी के सचिव प्रो. के. सच्चिदानंदन ने माननीय अतिथियों तथा उपस्थित श्रोताओं का स्वागत करते हुए हमारे देश के 5000 वर्ष पुराने इतिहास के परिप्रेक्ष्य में अकादेमी के 50 वर्षों के इतिहास के बारे में बताया। उन्होंने यह भी बताया कि भारतीय साहित्य और भाषा ने अपनी संस्कृति की एकता और अखंडता को जीवित रखने हेतु किस प्रकार निर्णायक शक्तियों का सामना किया। उन्होंने फीलाटेली कमेटी तथा पूर्व एवं वर्तमान मंत्रियों और उन अधिकारियों को धन्यवाद दिया, जिन्होंने अकादेमी के इस प्रस्ताव को स्वीकारा तथा उसे कार्यान्वित किया।

प्रो. गोपीचंद नारंग ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि साहित्य अकादेमी लेखकों और कलाकारों के साथ मिलकर चलती है। उसके बाद उन्होंने अकादेमी द्वारा स्वर्ण जयंती कार्यक्रमों के संबंध में कार्यक्रमों का ब्यौरा देते हुए बताया कि हमने पाँच प्रख्यात लेखकों को महत्तर सदस्यता प्रदान की है, एक प्रख्यात लेखक को आजीवन उपलब्धि पुरस्कार तथा पाँच युवा लेखकों को भी पुरस्कृत किया है और इसके साथ-साथ हमने भोपाल, भुवनेश्वर, त्रिवेन्द्रम और अहमदाबाद में 'नए स्वर' विषयक संगोष्ठियों का आयोजन भी किया है। उन्होंने भविष्य में आयोजित किए जानेवाले कार्यक्रमों का ब्यौरा देते हुए कहा कि हम जनवरी 2005 में 'महिला लेखन' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करेंगे, इसके साथ ही 'आदिवासी और जनजातीय साहित्य' पर छत्तीसगढ़ में एक संगोष्ठी का आयोजन तथा शंकरदेव पर एक संगोष्ठी के साथ-साथ 'दक्षिण एशियाई साहित्य' विषय पर भी एक संगोष्ठी का आयोजन किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी द्वारा प्रेमचंद की 125 वीं जन्मशती पर तथा साथ ही प्रगतिशील लेखक संघ के दो सह-संस्थापकों—डॉ. मुल्कराज आनंद एवं सैयद सज्जाद ज़हीर पर भी संगोष्ठियों का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने



माननीय संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री डॉ. शकील अहमद साहित्य अकादेमी की स्वर्ण जयंती स्मारक डाक टिकट सूचना-प्रसारण एवं संस्कृति मंत्री श्री एस. जयपाल रेड्डी को प्रदान करते हुए

यह भी घोषणा की कि अकादेमी द्वारा नवप्रकाशित पुस्तक *फ़ाईव डिकेड्स* का शीघ्र ही भारत के राष्ट्रपति द्वारा लोकार्पण कराया जाएगा।

माननीय सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री डॉ. शकील अहमद ने अकादेमी के योगदानों की सराहना करते हुए बताया कि साहित्य अकादेमी की स्थापना पं. जवाहरलाल नेहरू ने की थी और वह इसके प्रथम अध्यक्ष भी थे। डॉ. अहमद ने भारतीय अनेकत्व के गुण को विभिन्न भाषाओं के साहित्यों तथा सांस्कृतिक और संवेदनशील अखंडता को अभिव्यक्ति प्रदान करवाने के लिए अकादेमी की भूमिका की सराहना की। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार अकादेमी युवा पीढ़ी के लेखकों का नए साहित्यिक आंदोलनों तथा नई विचारधाराओं द्वारा मार्गदर्शन दे रही है, वह अपने आपमें अनूठा है। जो लेखक वक़्त के साथ चलते हैं, अकादेमी उनके लिए एक उन्मुक्त और खुला मंच प्रदान करती है। अकादेमी ने अल्पसंख्यकों और हाशिए के लोगों के स्वर को भी स्थान दिया है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय एकता के लिए विभिन्न धर्मों भाषाओं, विचारधाराओं, रुचियों में आपसी मेल-जोल बढ़ाने तथा देश की संस्कृति के अनुकूल दृष्टिकोण बनाने में साहित्य अकादेमी द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की। डॉ. अहमद ने कहा कि प्रत्येक वर्ष कई स्मारक डाक टिकटें जारी होती हैं, उनमें से कई प्रख्यात लेखकों पर होती हैं।

सूचना-प्रसारण एवं संस्कृति मंत्री श्री एस. जयपाल रेड्डी ने कहा कि संस्कृति मंत्रालय के इतिहास में 2004 असाधारण वर्ष रहा है, क्योंकि इस वर्ष देश की कई शीर्षस्थ अकादेमियों ने अपनी स्वर्ण जयंती मनाई है। उन्होंने कहा कि ऐतिहासिक प्रलेखन के क्षेत्र को छोड़कर इस देश की प्रतिष्ठा किसी भी अन्य देश की तुलना में अधिक है। यह तथ्य तब और अधिक स्पष्ट हो जाता है जब हम इसकी तुलना ग्रीस की एक सृजनात्मक गतिविधि से करते हैं—जिसके अंतर्गत वहाँ का इतिहास संक्षिप्त रूप में बड़ी ही चतुराई से लिखा जाता है। इसमें रोचक बात यह है कि इस सृजनात्मक गतिविधि के आने से पूर्व होमर का महाकाव्य तैयार हो चुका था और वह बाज़ार में बिकने को तैयार था।

यह दर्शाता है कि साहित्य वास्तव में एक गहन प्रक्रिया है, जो मस्तिष्क को झकझोर कर रख देती है और सृजनात्मक ऊर्जा को बाहर लाती है। श्री एस. जयपाल रेड्डी ने कहा कि साहित्य अकादेमी ने गत 50 वर्षों में कई ऐतिहासिक कार्य किए हैं। उन्होंने साहित्य अकादेमी के प्रथम अध्यक्ष पं. जवाहरलाल नेहरू की बात करते हुए कहा कि वह उन्हें 20वीं शताब्दी का एक उत्कृष्ट लेखक मानते हैं। उन्होंने अन्य महान व्यक्तियों जैसे—मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, डॉ. एस. राधाकृष्णन तथा अन्यों की भी सराहना की, जिन्होंने अकादेमी के विकास में अपना योगदान दिया। उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी ने गत 50 वर्षों में 4300 पुस्तकों का प्रकाशन तथा भारतीय साहित्य को अपने सम्मान से पुरस्कृत भी किया है, जो एक बड़ा ही प्रशंसनीय कार्य है। इसका जनजातीय और वाचिक साहित्यों को प्रोत्साहित करने का तरीक़ा बड़ा ही अनूठा है। अपनी द्विमासिक पत्रिकाओं *इंडियन लिटरेचर* और *समकालीन भारतीय साहित्य* के माध्यम से यह समूचे भारतीय समाज का आईना बन सकी है। अकादेमी की अनूदित साहित्य को प्रस्तुत करने की प्रविधि अद्वितीय है। अंत में, प्रो. सच्चिदानंदन के वक्तव्य, भारत में भाषाओं के बीच बढ़ते द्वंद्व, पर टिप्पणी करते हुए श्री रेड्डी ने कहा कि साहित्य को, संस्कृति के क्षेत्र में बढ़ती तकनीक के मद्देनज़र, अपने अस्तित्व को जीवित रखने हेतु स्वयं लड़ना होगा। उन्होंने कहा कि, मानव सभ्यता पर किसी भी अन्य सृजनात्मक माध्यम की अपेक्षा साहित्य का अधिक प्रभाव पड़ता है, अतः इसे संरक्षित करने की आवश्यकता है।

माननीय मंत्री महोदय ने प्रेमचंद की 125 वीं जन्मशती (जो इस वर्ष है) के अवसर पर उन्हें श्रद्धांजलि भी अर्पित की। उन्होंने प्रेमचंद को महान मानवतावादी और सृजनात्मक लेखक बताया, जो नोबेल पुरस्कार का हक़दार और टैगोर के समतुल्य है। उन्होंने आशा जताई कि साहित्य अकादेमी उन पर बड़े स्तर पर संगोष्ठी का आयोजन करेगी।

श्री एस. जयपाल रेड्डी ने अपने भाषण के अंत में कहा कि भारतीय समाज के विकास में साहित्य अकादेमी की अहम भूमिका है। उन्होंने यह भी कहा कि हमारे समाज में, हमारे महान देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था कई साहित्यों के आपसी तालमेल के कारण सुचारू रूप से चल रही है।

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष तथा प्रख्यात बाङ्ला कवि श्री सुनील गंगोपाध्याय ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। उन्होंने श्री एस. जयपाल रेड्डी द्वारा कहे गए 'साहित्य के जीवित रहने' के वक्तव्य पर टिप्पणी करते हुए कहा कि वास्तविक ख़तरा तो पुस्तकों के अस्तित्व के नष्ट होने का है, न कि साहित्य का। उन्होंने यह भी कहा कि कोई ऐसी प्रौद्योगिकी विकसित होनी चाहिए, जिससे पुस्तक के प्रकाशन के लिए काग़ज़ की ज़रूरत ही न हो और इसके लिए वृक्षों को काटना भी न पड़े। भविष्य में पुस्तक को हम स्क्रीन पर पढ़ सकें या इंटरनेट के माध्यम से डाउन लोड कर सकें।

कार्यक्रम के अंत में प्रसिद्ध ओड़िसी कलाकार सुश्री शैरोन लॉवेन ने ओड़िसी नृत्य की प्रस्तुति की।

फ़ाइव डिकेड्स पुस्तक का लोकार्पण

3 जनवरी 2005, नई दिल्ली

"यह एक ऐतिहासिक प्रकाशन है।" महामहिम राष्ट्रपति माननीय श्री ए. पी. जे. अब्दुल क़लाम ने साहित्य अकादेमी की पुस्तक *फ़ाइव डिकेड्स* को ग्रहण करते हुए कहा। साहित्य अकादेमी की स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में प्रकाशित इस उत्कृष्ट प्रकाशन की उन्होंने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

फ़ाइव डिकेड्स नामक इस पुस्तक के माध्यम से साहित्य अकादेमी ने अपना पिछले पाँच दशकों का विवेचनात्मक इतिहास प्रकाशित किया है। इसमें अकादेमी के उद्देश्यों और निरंतर विकास की उल्लेखनीय उपलब्धियों के साथ-साथ भविष्य के लिए अधूरे रह गए कार्यों का ज़िक्र भी है। पाठ्य सामग्री के साथ-साथ बीच-बीच में पं. जवाहर लाल नेहरू, डॉ. राधाकृष्णन और मौलाना आज़ाद के समय के दुर्लभ चित्रों से भी यह पुस्तक अलंकृत है। श्री डी. एस. राव द्वारा लिखित इस पुस्तक में अकादेमी की उपलब्धियों के साथ-साथ कुछ दुर्लभ दस्तावेज़ों की अनुलिपियाँ भी हैं।

3 जनवरी 2005 को इस पुस्तक का विधिवत लोकार्पण अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग ने किया और इसकी पहली प्रति महामहिम राष्ट्रपति माननीय श्री ए. पी. जे. अब्दुल क़लाम को भेंट की। यह कार्यक्रम राष्ट्रपति भवन में आयोजित किया गया। इसमें साहित्य अकादेमी के सचिव प्रो. के. सच्चिदानंदन के अतिरिक्त पूर्व प्रधानमंत्री श्री इंद्र कुमार गुजराल, उनकी पत्नी श्रीमती शीला गुजराल, श्रीमती पद्मा सचदेव, श्री गिरिराज किशोर, श्री के. जयकुमार, करनजीत सिंह, प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी आदि लेखक और बुद्धिजीवि भी उपस्थित थे।



श्री गिरिराज किशोर, श्रीमती पद्मा सचदेव, श्रीमती शीला गुजराल, प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी, श्री डी. एस. राव, महामहिम श्री ए.पी. जे. अब्दुल क़लाम, प्रो. गोपीचंद नारंग, श्री इंद्र कुमार गुजराल, प्रो. के. सच्चिदानंदन, श्री करनजीत सिंह और श्री के. जयकुमार

वामन रघुनाथ वर्दे वलवलिकर पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
3-4 अप्रैल 2004, मुंबई

साहित्य अकादेमी ने अस्मिताई प्रतिष्ठान, गोवा और कोंकणी भाषा मंडल, मुंबई के सहयोग से आधुनिक कोंकणी आंदोलन के प्रणेता वामन रघुनाथ वर्दे वलवलिकर उर्फ़ शेनॉय गोएंबाब की 125वीं जन्मशती के अवसर पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। इस संगोष्ठी का विषय था—'साहित्य के प्रणेता और आधुनिकतावादी में संक्रमण', जो विशेषरूप से कोंकणी के संदर्भ में, दो विविध आयामों—पहला विभिन्न भारतीय भाषाओं की प्रमुख साहित्यिक गतिविधियों तथा दूसरा उनमें निहित आधुनिकता में संक्रमण, पर आधारित था। श्री प्रकाश भातंब्रेकर ने सत्र की अध्यक्षता की। कार्यक्रम का आरंभ मीणाल तेंदुलकर के प्रार्थना गीत से हुआ। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात मराठी कहानी लेखक श्री के.जी. पुरोहित ने शेनॉय गोएंबाब की कोंकणी में आधुनिकता के प्रणमन में उनके द्वारा दिए गए योगदानों की सराहना की। उन्होंने आशा जताई कि इस विचार-विमर्श द्वारा उन विभिन्न भाषाओं में किए गए महत्त्वपूर्ण कार्यों के बारे में गहन चर्चा की जाएगी जिन्होंने संबंधित भाषाओं को की ओर अग्रसर करने में विशेष भूमिका निभाई।

इससे पूर्व कोंकणी के प्रख्यात उपन्यासकार एवं साहित्य अकादेमी की कार्यकारी मंडल के सदस्य श्री दामोदर मावज़ो ने शेनॉय गोएंबाब के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा उनके द्वारा दिए गए योगदानों के लिए एक राष्ट्रीय संगोष्ठी करवाए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। साहित्य अकादेमी के सचिव प्रो. के. सच्चिदानंदन ने कई भारतीय भाषाओं में आधुनिकता के संक्रमण पर चर्चा करते हुए संबंधित भाषाओं में आधुनिकता के प्रणेताओं की भूमिका को रेखांकित किया। सुश्री मारिया अरोड़ा कोउटो ने बीज-भाषण प्रस्तुत करते हुए उन परिस्थितियों के बारे में बताया जिनसे किसी एक भाषा में आधुनिकता की प्रक्रिया परिलक्षित होती है, इस संदर्भ में उन्होंने कोंकणी भाषा का उदाहरण प्रस्तुत किया। आधुनिकता की द्वैधवृत्ति की बात करते हुए उन्होंने प्रतिभागियों से विभिन्न भाषाओं में आधुनिकता के विकास के विविध आयामों पर चर्चा का आह्वान किया। उद्घाटन सत्र के अंत में कोंकणी भाषा मंडल, मुंबई के सचिव श्री पी.एन. शनबाग ने धन्यवाद- ज्ञापन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन श्री प्रकाश भातंब्रेकर ने किया।



वामन रघुनाथ वर्दे वलवलिकर पर आयोजित की गई राष्ट्रीय संगोष्ठी का एक दृश्य

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मराठी उपन्यासकार और समालोचक श्री भालचंद्र नेमाडे ने की। डॉ. निर्मला जैन, डॉ. नारायण देसाई और श्री एस.एम. बोर्गीस ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. जैन ने हिन्दी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में आधुनिकता की अवधारणा पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, जबकि डॉ. देसाई और श्री बोर्गीस ने शेनॉय

गोएंबाब प्रणीत महत्त्वपूर्ण रचनाओं के सामाजिक-सांस्कृतिक आयामों तथा उसके अनुवादकीय एवं व्याकरणात्मक पक्षों को रेखांकित किया अपने व्याख्यान के अंत में डॉ. नेमाडे ने कोंकणी समुदाय को अपनी पहचान बनाने तथा राष्ट्रीय स्तर पर अपनी भाषा के लिए एक सुलभ लिपि विकसित किए जाने हेतु निर्णय लेने को कहा। उन्होंने आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में क्रांतिकारी मस्तिष्कों द्वारा अहम भूमिका निभाए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने अन्य भाषाओं के आधिपत्य से मुक्त होने के संदर्भ में समुदायों द्वारा अपनाए गए आत्मलोचन के लक्ष्य की सराहना की तथा कोंकणवासियों को चेताया कि वे इस सारस्वत अधीनता से अपनी मुक्ति सुनिश्चित करें।

4 अप्रैल 2004 को दूसरे सत्र की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध ओड़िया लेखक डॉ. प्रतिभा राय ने की। डॉ. आर. बालचंद्रन 'बाला', प्रो. प्रफुल्ल कुमार मोहांती तथा डॉ. किरण बुडकुले ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. बालचंद्रन ने तमिष़ समाज की भाषाई-सांस्कृतिक वास्तविकता के परिप्रेक्ष्य में अपनी बात कही और आधुनिकता के संदर्भ में वहाँ के केन्द्राभिमुखी और कई विवादात्मक द्वंद्वों के बारे में भी बताया। प्रो. मोहांती ने ओड़िया साहित्य की वास्तविकता को खासतौर रेखांकित किया तथा विभिन्न उदाहरणों के ओड़िया साहित्य में व्याप्त आधुनिकता के बारे में बताया। डॉ. बुडकुले ने शेनॉय गोएंबाब के साहित्य तथा उनके वास्तविक जीवन के अनुभवों के विभिन्न पक्षों को देशज और आधुनिकता की कसौटी पर रखकर उसकी विवेचना की। डॉ. राय ने सत्र के अंत में साहित्यिक क्षेत्र में और अधिक कार्य किए जाने तथा आपसी समझ को दृढ़ बनाए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। अंतिम सत्र की अध्यक्षता कोंकणी के लेखक तथा साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य श्री जे.बी. मोरेस ने की। श्री प्रबोध पारिख, डॉ. मनु चक्रवर्ती और श्री उदय भेम्ब्रे ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री पारिख ने गुजराती साहित्य की स्थिति के बारे में चर्चा करते हुए साहित्य को 'आधुनिक' के स्थान पर 'अर्वाचीन' बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने महत्त्वपूर्ण कार्यों में नवीनता के तर्क अर्वाचीन संदर्भों में विवेचित किया। डॉ. चक्रवर्ती ने कन्नड साहित्य के महत्त्वपूर्ण प्रणेताओं पर चर्चा की तथा उन्होंने नई खोजों द्वारा बदलाव लाने की आवश्यकता पर बल दिया। श्री भेम्ब्रे ने शेनॉय गोएंबाब और उनके समकालीन ओड़िया साहित्य के लेखक फ़क़ीरमोहन सेनापति के आधुनिक लेखन पर चर्चा की। सत्र के अंत में श्री मोरेस के व्याख्यान के पश्चात्, श्रोताओं और प्रतिभागियों के बीच द्विदिवसीय संगोष्ठी से संबंधित प्रश्नोत्तर किए गए। साहित्य अकादेमी मुंबई के क्षेत्रीय सचिव श्री प्रकाश भातंब्रेकर ने धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया। समाचारपत्रों में उक्त कार्यक्रम की सराहना की गई।

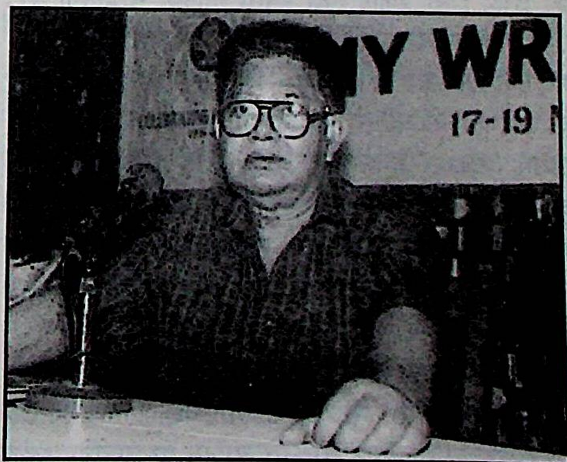
'मेरा लेखन, मेरा समय' विषय पर पूर्वी क्षेत्रीय संगोष्ठी

17-19 मई 2004, कोलकाता

साहित्य अकादेमी ने अपने कोलकाता स्थित क्षेत्रीय कार्यालय के सभागार में छह पूर्वी क्षेत्रीय भाषाओं के साथ 'मेरा लेखन, मेरा समय' विषय पर 17-19 मई 2004 तक एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में कोलकाता के क्षेत्रीय सचिव श्री रामकुमार मुखोपाध्याय ने विभिन्न पूर्वी क्षेत्रों से आए प्रख्यात विद्वानों और प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा उनका परिचय उपस्थित श्रोताओं को दिया। उन्होंने चुटकी लेते हुए कहा कि वैसे तो इस संगोष्ठी का विषय 'मेरा' पर आधारित है, किन्तु प्रत्येक भाषाओं के तीनों वक्ताओं और एक अध्यक्ष से हमें उनके अनेकतावादी, समूहवाची और सार्वभौमिक विचार सुनने को मिलेंगे।

प्रख्यात असमिया विद्वान और असमिया परामर्श मंडल के संयोजक श्री कर्बी डेका हज़ारिका ने अपने बीज-भाषण में



उद्घाटन सत्र में बोलते हुए श्री सुनील गंगोपाध्याय

कहा, संकुचित संदर्भों में लेखक की सोच को प्रभावित करने वाले किसी विशेष कालखंड का कोई आरंभ और अंत हो सकता है। किसी एक लेखक की सृजनात्मकता जब चरमोत्कर्ष पर पहुँचती है, वह समय उसके लिए सबसे महत्त्वपूर्ण होता है। सामान्य रूप से किसी एक लेखक के लिए आजीवन साहित्य सृजन एक समान मानकों को ध्यान में रखकर करना संभव नहीं होता। इसका मूल कारण यह है कि वह अपनी आत्मा (सृजनशीलता) की सचेतनता को आजीवन जाग्रत नहीं रख सकते। आत्मा अथवा सृजन के जागरण का अर्थ प्रत्येक लेखक के लिए अलग-अलग हो सकता है। वह किसी प्रतिकूल क्षण को भी अपनी सृजनात्मक कला द्वारा अनुकूल बना सकते हैं। उदाहरणार्थ—असमिया लेखक मामोनी रायसम गोस्वामी द्वारा लिखित *आधा लिखा दस्तावेज़* उनके जीवन के कष्टकारी दिनों का लेखा-जोखा है, फिर भी इसे भारतीय भाषाओं में लिखित श्रेष्ठ आत्मकथाओं में से एक माना जाता है। एक अन्य उदाहरण प्रख्यात असमिया कवियत्री नलनिबाला देवी का है, जो अपनी व्यथा से लेखन के लिए प्रवृत्त हुईं। और भी ऐसे कई बताने योग्य उदाहरण हैं।"

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रख्यात असमिया कथाकार श्रीमती इंदिरा गोस्वामी ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों तथा असम की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में अपने लेखन कार्य के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि पुस्तक इंसान का सबसे चामत्कारिक सृजन है। प्रत्येक वस्तु नष्ट हो जाती हैं, किन्तु पुस्तकें चिरजीवी हैं। समय हमारे जीवन में उस बहती नदी की तरह, जिस प्रकार रक्त हमारी नाड़ियों में दौड़ता है। उन्होंने अरुणाचल प्रदेश के जयरामपुर में हाल ही में खोजे गए एक क़ब्रिस्तान पर उनके द्वारा लिखे गए एक लघु उपन्यास के अनुभवों के बारे में भी बताया। इसका कथानक 20 असम राइफ़ल्स के कर्नल के.एस. राठौड़ द्वारा आँखों देखे वृत्तांत पर आधारित है। उन्होंने सन् 1984 के दंगाग्रस्त सिख परिवारों से मिलकर, उनके दुःख-तकलीफ़ों को सुना और उस समय की त्रासदियों को अपने उपन्यास के पृष्ठों पर उतारा, जो उस समय का एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ है। श्रीमती गोस्वामी ने बताया जिन दिनों वे अपने गाँव के मठों में लोक नाट्य किया करती थीं, उसके तीन दशकों बाद दिल्ली विश्वविद्यालय के अपने सरकारी आवास पर उन्होंने, *उसने खोवा हवदाह* नामक उपन्यास लिखा था। इस उपन्यास में उन्होंने मृतप्राय होती कामरूपी उपभाषा का प्रयोग किया, जो अपने आपमें उस उपन्यास का चरित्र बन गया। इस उपन्यास में उन्होंने उन विधवा ब्राह्मण महिलाओं की व्यथा के बारे में बताते हुए कहा कि सन् 1988 में उनका जीवन भारत के विभिन्न प्रांतों में रहनेवाली दलित महिलाओं से भी बदतर था। इस उपन्यास की कई घटनाएँ सत्य घटनाओं पर आधारित हैं। साम्यवादियों ने इंद्रनाथ (नेता) की हत्या करवा दी थी। यह घटना सत्य कथा पर आधारित है। उन्होंने अपने जीवन के कई भीषण अनुभवों के बारे में भी बताया, जिनसे उनके लेखन में निष्ठुर शैली, निर्भीकता और सामाजिक द्वंद्वों को देखने की दूरदृष्टि आई।

प्रख्यात बाङ्ला कथाकार एवं साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री सुनील गंगोपाध्याय ने इस बात पर हर्ष व्यक्त किया कि इस कार्यक्रम में विभिन्न पूर्वी भाषाओं के लेखक भाग ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम सभी भारतीय हैं, लेकिन हम एक-दूसरे की भाषाओं और साहित्य के बारे में बहुत कम जानते हैं। श्रीमती गोस्वामी के वक्तव्य कि दूरी से भावनाएँ शुद्ध होती हैं, पर उन्होंने कहा कि भौगोलिक दूरी के संदर्भ में समय की दूरी भी भावनाओं को शुद्ध करती है। लेखक को क्या लिखना चाहिए, पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा कि मनुष्य नश्वर है, किन्तु उसके द्वारा किया गया सृजनात्मक कार्य समय की कसौटी पर कसे जाने के बाद अमर हो जाता है।

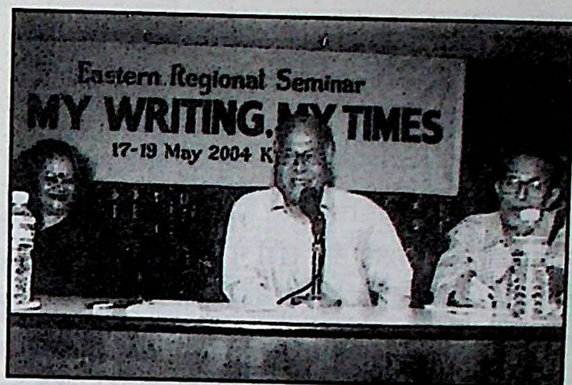
प्रथम सत्र

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री डी.के. बरुआ ने की। श्री बीरेश्वर बरुआ, श्री नगेन शइकीया और श्री अली हैदर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रख्यात असमिया कवि श्री बीरेश्वर बरुआ ने कहा कि, "मैंने जब लिखना शुरू किया था, उस वक़्त हमारे देश को नई-नई आज़ादी मिली थी। यह वह समय था, जो हमारे उज्ज्वल भविष्य का स्वप्न लेकर आया था। हम उस वक़्त किशोरावस्था में थे। यह वह काल था, जब हमारे युवाओं के मस्तिष्कों में नई विचारधाराएँ आ रही थीं। फिर भी, मैंने यह पहले ही महसूस कर लिया था कि कविता करने से कोई बदलाव नहीं आनेवाला तथा इसका किसी विचारधारा से कोई भी लेना-देना नहीं है। एक अमेरिकी समालोचक ने कवि ऑक्तोवियो पास की चर्चा करते हुए सह

टिप्पणी की है कि उनके लिए विचारों की रानजीति सबसे बड़ी त्रासदी थी। मेरा यह मानना है कि जो ऑक्तोवियो पास के लिए सत्य था, वह समस्त विवेकी लेखकों के लिए भी सत्य है। और यह भी सत्य है कि राजनीति स्थाई है और इससे कोई भी छुटकारा नहीं पा सकता। इसलिए, मेरे लेखन में भी एक हद तक राजनीतिक स्थितियों का, मेरे अनुभवों के आधार, पर चित्रण किया जाना स्वाभाविक ही था।"

प्रख्यात असमिया कथाकार श्री नगेन शइकीया ने अपने जीवन के विविध साहित्यिक चरणों तथा उनसे संबंधित अपनी अनुभवातीत अनुभूतियाँ के बारे में बताया। उन्होंने कहा, "मेरा मानना है कि सृजनात्मकता स्वार्थपरक होती है। इसके दूसरी ओर यह किसी भी समालोचना को नहीं मानती। मैं 'अहं' से कभी जीतने तो कभी हारने के लिए लड़ता हूँ। मेरा यह मानना है कि प्रत्येक लेखक और कलाकार तथा यहाँ तक कि प्रत्येक व्यक्ति में एक कवि होता है। समस्त सर्जन, इस कवि की मनोभावनाओं को समझने के स्रोत हैं। मैं इसके बिना नहीं लिख सकता और न ही मैं इसके बिना लिखे हुए कार्यों को पढ़ सकता हूँ। मैं श्रोताओं को लक्षित करके नहीं लिखता। मेरा पहला 'अहं' भावुकता को समझने के लिए लिखता है तथा मेरा दूसरा 'अहं' उस पर नज़र रखता है।"

प्रख्यात असमिया नाटककार श्री अली हैदर ने 'मेरा लेखन, मेरा समय' विषय पर बोलते हुए कहा, "उपलब्धि' नामक नाटक भारत-चीन युद्ध (1962) का एक बालक के मन पर पड़े प्रभाव की गाथा है, जिसका 'परसेप्शन' नाम से अनुवाद किया गया था। मैंने पहले भी प्रयास किया था, लेकिन मैं उसमें असफल रहा, किन्तु इस नाटक को लिखने से मुझे सफलता मिली और मेरा पटकथा लिखने की दिशा में, यह पहल क़दम माना गया। और तबसे मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। और आज कम-से-कम भविष्य में मेरी पटकथा की गुणवत्ता का मूल्यांकन कराने हेतु आज संख्यावाचक क्षमता के आधार पर मेरे पास ठोस आधार हैं। समयाभाव एवं अन्य परिसीमाएँ कार्यों को न केवल दुष्कर, अपितु द्वंद्वात्मक भी बना देती हैं। इसलिए मेरे सृजनात्मक लेखन के लिए कोई निर्धारित समयावधि नहीं है। मेरा जीवन समय की नोक पर चलने को बाध्य है न कि मेरा सर्जन-कार्य।"



श्रीमती इंदिरा गोस्वामी, श्री दिलीप कुमार बरुआ और श्री बीरेश्वर बरुआ

प्रख्यात समालोचक श्री डी.के. बरुआ, जो आजकल एक पुस्तक लिख रहे हैं–*ए सेंटेनियल पर्सपेक्टिव ऑन असमिया पोएट्री*, ने बताया कि किस प्रकार असमिया कविता में वहाँ के जनमानस की अभिव्यक्ति है। उन्होंने कहा कि, सामुदायिक समर्थन के बिना जीना बड़ा मुश्किल है। एक ओर तो अधिकतर असमिया लेखक और कवि अपने विचारों को लेकर प्रायः इतने जुनूनी हैं कि वह अपने को सबसे बड़ा मानते हैं और दूसरी ओर वे कभी इतने विनम्र हैं कि ख़ुद को प्रतिबिम्बित या प्रक्षेपित नहीं करना चाहते। यही वह द्वंद्व है, जिससे लेखकों को बाहर निकलना है। उन्होंने कहा कि बेज़बरुआ ही केवल ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने जटिलताओं को पार किया था। कॉटन कॉलेज में बिताए दिन ही डॉ. बरुआ के जीवन के बेहतरीन दिन थे। अपने जीवन के इन बेहतरीन दिनों में ही उनकी भेंट अपने श्रेष्ठ मित्रों से हुई। उन्होंने यह भी बताया कि, वह जो लिखते थे; वह न केवल पुस्तकों से एकत्रित तथ्य होते थे, वरन् वह मूल्यों को प्रदर्शित करने की एक ऐसी प्रणाली थी, जिसके द्वारा जो मानवीय सोच उनमें विद्यमान थी, उनके मूल्यों को दर्शाने की एक ऐसी विधि थी, जो उनके कॉटन कॉलेज में बड़े-बड़े विद्वानों के सान्निध्य में आने से उनमें विकसित हुई थी।

द्वितीय सत्र

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री दिव्येन्दु पालित ने की। श्री अमिताव दासगुप्ता, सुश्री बानी बसु और देबाशीष मजूमदार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रख्यात बाङ्ला कवि तथा

परिचय के संपादक श्री अमिताव दासगुप्ता ने कहा कि, "सन् 1957 में मेरी प्रथम पद्य पुस्तक *समुंद्र थेके आकाश* प्रकाशित हुई थी, तत्पश्चात् मेरी 30 कविताओं का संग्रह और शेक्सपीयर, लोरेस, फैज़ अहमद फैज़ एवं माओ-त्से-तुंग के चार पद्य खंडों के अनुवाद का भी प्रकाशन हुआ है। मेरी श्रेष्ठ एवं चुनिन्दा कविताओं का संकलन तीन खंडों में प्रकाशित हुआ है और मैंने चुनिन्दा समकालीन बाङ्ला कविताओं का *कविता पुरुष* के नाम से संपादन भी किया है। इसके अतिरिक्त मेरे सात उपन्यास दैनिक समाचार-पत्र *शारदीय* के विभिन्न अंकों में प्रकाशित हुए हैं। गत नौ वर्षों से मैं *डेली संवाद प्रतिदिन* में नियमित रूप से साप्ताहिक स्तंभ लिखता हूँ तथा *परिचय* पत्रिका का सन् 1985 से संपादन कर रहा हूँ।"

प्रख्यात बाङ्ला कथाकार सुश्री बानी बसु ने अपने कथा साहित्य के बारे में अपने साहित्यिक जीवन के विभिन्न दौरों के परिप्रेक्ष्य में बताया। अपने वरिष्ठ साथियों की विद्वेषपूर्ण टिप्पणियों के फलस्वरूप बाङ्ला पाक्षिक पत्रिका *देश* में उनका प्रथम प्रकाशन उनके लिए चुनौतीपूर्ण था। कहानी का शीर्षक था 'बेहुलर भेला', इसकी भाषा, समय और प्रस्तुति को देखकर पाठक आश्चर्यचकित रह गए।

उन्होंने कहानी-विधा पर ही ध्यान केन्द्रित किया और कभी उपन्यास लिखने पर विचार नहीं किया, क्योंकि उनका मानना था कि न तो उनके पास उपन्यास लिखने का समय है और न ही वह सोच। किन्तु *देश* पत्रिका के संपादक श्री सागरमय घोष ने उन्हें उपन्यास लिखने के लिए प्रेरित किया। उनके कुछ उपन्यास प्रश्नमूलक प्रवृत्ति के हैं, लेकिन उनके अनुभवों ने उन्हें उनका उत्तर देने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने रैखिक एकल दिशा वृत्तांतों के लिए संभावित विधा रूपों पर भी चर्चा की, उनके मन में नक्सली संघर्ष संबंधी कुछ प्रश्न हैं। उन्होंने नक्सलियों के घोषणा-पत्र को दोहराया। उन्होंने एक तीसरे व्यक्ति रूप में उनका घोषणा-पत्र तैयार किया था तथा उसके परिणामस्वरूप उसे, उनके दो दशकों पुराने घोषणा-पत्र के संदर्भ में कहा कि बर्बरता और रक्तपातपूर्ण क्रांति व्यर्थ है। उनका इस आंदोलन पर आधारित यह उपन्यास विषाद और त्रासदी से भरा है। उन्होंने दो प्रकार के पात्रों के प्रयोग द्वारा एक ही समय में भूतकाल और वर्तमानकाल पर कब्ज़ा करने की नई विधा प्रारंभ करने की भी चेष्टा की।

प्रख्यात कथाकार श्री देबाशीष मजूमदार ने कहा कि ये दो शब्द 'मेरा लेखन' एक व्यक्तिगत दायरे का सीमांकन करते हैं। कोई एक विशिष्ट विषय जो मेरे मष्तिष्क में चल रहा हो उसे पूरा करने के लिए मेरे अंतर्मन में निरंतर विचारों की अन्योन्य क्रिया चलती रहती है। सामान्यतः दूसरा मस्तिष्क एक प्रच्छन्न संकट में होता है। इसलिए लेखन को किसी निर्धारित अवधि के पश्चात् 'मेरा' नहीं कहना चाहिए। जैसे ही किसी लिखित नाटक का रंगमंच पर मंचन किया जाता है, उस नाटक का कथाकार अपना स्वामित्व खो बैठता है। नाटक में अभिनय कला जोड़ने से वह एक नवीन कला में परिवर्तित हो जाती है। इसका अर्थ यह है कि कला जब श्रोताओं के बीच पहुँचती है, तब वह निजी के स्थान पर सर्वस्व की हो जाती है।

प्रख्यात बाङ्ला कथाकार और बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक श्री दिव्येन्दु पालित ने कहा कि जिस प्रकार हम जीने के लिए खाते हैं, उसी प्रकार हम जीने के लिए लिखते हैं। हमें यह ध्यान देना चाहिए कि लेखक ने समय से किस प्रकार संघर्ष किया और वास्तव में वह कौन-सा काल खंड है। श्री पालित ने कहा कि जब उन्होंने लेखन-कार्य प्रारंभ किया था, तब उन्होंने कई समस्याओं का सामना किया था। समस्त सृर्जनात्मक लेखकों को दो तथ्यों से अवश्य जूझना पड़ता है—क्या लिखें और कैसे लिखें तथा क्या न लिखें? क्या उसे अपने पूर्ववर्ती लेखकों की परंपरा को स्थापित रखना होगा? क्या एक लेखक को समय का भाष्यकार होना चाहिए? उन्होंने ऐसे समस्त सवालों को उठाया।

तृतीय सत्र

तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री चंद्रकांत मिश्र 'अमर' ने की। श्री विवेकानंद ठाकुर, श्री रमाकांत राय 'रमा' और श्री शैलेन्द्र आनंद ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। मैथिली कवि श्री विवेकानंद ठाकुर ने कहा, "मैंने अपने जीवन में देर से कविता लिखनी आरंभ की। जब मैंने अपनी प्रथम कविता लिखी, तब मेरी उम्र 60 वर्ष थी। हालाँकि यह असाधारण वाक़या है, जो मेरे साथ घटित हुआ। लेकिन मैं अपनी किशोरावस्था से ही कविता लिखने का प्रयास करता रहा हूँ। उस वक़्त मेरी कविता लिखने की तीव्र इच्छा थी, परंतु मुझे

किसी-न-किसी कारण से अपनी भावनाओं को दबाना पड़ा। कविता लिखने का जो ज्वारभाटा मुझे 14 वर्ष पूर्व आया था, तब मेरी आयु 60 वर्ष थी, वैसी ही कविता लिखने की, प्रबल इच्छा मुझमें आज भी है। मेरी बढ़ती उम्र की वजह से मैं रत्ती-भर भी अशांत नहीं हूँ।"

प्रख्यात मैथिली कथाकार श्री रमाकांत राय 'रमा' ने अपने लेखन में दर्शाए गए सामाजिक भ्रष्टाचार के बारे में बताया। प्रारंभिक तौर पर वह पद्य लेखन करना चाहते थे, किन्तु सामाजिक अन्याय और भ्रष्टाचार ने उन्हें गद्य लेखन द्वारा दीन-हीन समुदाय के लिए लिखने हेतु प्रेरित किया। उनके लेखन में, विधवाओं का दुःख, राजनीतिज्ञों द्वारा मूल्यों का ह्रास, ग़रीबों का शोषण, ग़रीबी, बेरोज़गारी, शराब की लत तथा युवा पीढ़ी के लिए निषिद्ध मार्गों, जैसे सामाजिक विकार प्रतिबिम्बित होते हैं।

प्रख्यात मैथिली नाटककार श्री शैलेन्द्र सिंह ने प्राचीनकाल से नाटक की विधा और विषय-वस्तु के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि बदलते वक़्त के साथ नाटकों की शैलीगत विशेषताओं, तकनीक, अभिव्यक्ति एवं बोधगम्य पद्धतियों पर कई प्रकार के प्रयोगात्मक प्रयोग किए गए हैं, किन्तु इन प्रयोगों के बावजूद भी जीवन का तत्त्व कभी नहीं बदला। चाहे शेक्सपीयर हों या कालिदास अथवा बादल सरकार हों या जगदीशचंद्र माथुर, किसी भी नाटककार का (नाटक लिखने का) उद्देश्य जीवन के सत्य को खोजना ही रहा है।

प्रख्यात मैथिली कवि और समालोचक श्री चंद्रनाथ मिश्र 'अमर' ने मैथिली भाषा और साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए साहित्य अकादेमी का आभार व्यक्त किया तथा अकादेमी से यह अपील भी की कि वह देश के गाँवों की सांस्कृतिक विरासत की खोज करे, जिससे किए गए सृजनात्मक साहित्यिक कार्यों द्वारा भारतीयता की वास्तविक छवि प्रतिबिम्बित हो सके।

चतुर्थ सत्र

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता श्री ख. प्रकाश सिंह ने की। श्री थ. इबोपिसाक सिंह, सुश्री ई. सोनमणि सिंह तथा श्री एम. प्रियव्रत सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। मणिपुरी कवि श्री थ. इबोपिसाक सिंह ने कहा, "आधुनिकतावाद के दो अगुवा कवियों (स्व.) श्री ई. नीलकांत और श्री एल. समरेन्द्र सिंह से प्रभावित होकर मैंने और श्री बिरेन ने आधुनिकतावादी कविताएँ लिखनी प्रारंभ कीं।" वर्ष 2003 तक उनके पाँच कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। अंत में उन्होंने अपनी कविताओं की कल्पनाशीलता के बारे में बताते हुए कहा कि, "कुछ पुनरावर्ती दृश्य या आकृतियाँ जो हमें खलती हैं वे हैं—सशस्त्र विद्रोह, सांप्रदायिक हिंसा, नृशंस हत्याएँ, अपहरण, घरों का जलाया जाना, बड़ी संख्या में मासूम बच्चों और महिलाओं का अपने परिवारों से बिछड़कर राहत शिविरों में शरण लेना। मेरी कविता मानवता के लिए कोई आशा की किरण नहीं देख पाती। मेरी कविता सुरंग के दूसरे कोने पर आशा की किरण देख पाने में असमर्थ है।"

सुप्रसिद्ध कथाकार और अनुवादक सुश्री ई. सोनामणि सिंह ने कहा, "मैं किसी उद्देश्य के लिए नहीं लिखती। मेरा जो मन करता है, मैं लिखती हूँ; इसलिए मेरा लेखन प्रकृति से प्रभावित है। मैंने तटस्थता में समय भी गुज़ारा है और पुनः मैं इस विशाल विश्व के समक्ष आई तथा समाज में आए अनुवर्ती परिवर्तनों (जहाँ अधिकारों की माँग को तो सही ठहराया जाता है, पर उनके क्रियान्वयन की अनदेखी की जाती है) के बारे में सबको बताया। इसलिए 'मेरा समय' शांति और सद्भाव से लेकर अव्यवस्था और अस्तव्यस्तता तक तथा विरलता के काल में परिवर्तित होता हुआ तटस्थता एवं अनावरण काल तक का है।"

प्रख्यात मणिपुरी नाटककार एवं कवि श्री एम. प्रियव्रत सिंह ने कहा, "मेरी प्रथम कविता की पुस्तक *आशा तोउरी अनुबा पृथ्वी* (होप फ़ॉर ए न्यू वर्ल्ड) सन् 1978 में प्रकाशित हुई थी तथा मेरी अंतिम समालोचनात्मक पुस्तक *कुमदम* (फ़र्स्ट सीज़नल थंडर) सन् 2004 में प्रकाशित हुई थी। कविता मुझे



मैथिली सत्र के वक्ता

सर्वप्रिय है। नाटककार के रूप में अपनी संलग्नता से पूर्व मैंने कुछ कविता-संग्रह और दो कहानियों की पुस्तकें प्रकाशित करवाई थीं। मेरे प्रथम रेडियो नाटक 'पुनशीना पुनशीगीदामक' (लाइफ़ फ़ॉर लाइफ़्स सेक) का प्रसारण आकाशवाणी, इंफ़ाल द्वारा सन् 1984 में किया गया था। मैंने अब तक 65 रेडियो नाटक, 5 रेडियो धारावाहिक नाटक, 5 टी.वी. नाटक तथा 17 रंगमंचीय नाटक लिखे हैं।"

उन्होंने यह भी कहा, "समय, निःसंदेह एक न्यायाधीश की भाँति है। समय अपने बल द्वारा काल का (बीते समय का) स्थान ले लेता है, किन्तु आत्मा उससे भी अधिक प्रबल है। लेकिन बदक़िस्मती से, मेरा समय बहते हुए भारहीन वर्तमानकाल को भूतकाल और भविष्यकाल को एक साथ बाँध पाने में सक्षम नहीं है।"

मणिपुरी कवि एवं मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री ख. प्रकाश सिंह ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि पहले के मणिपुरी लेखकों को रूढ़िवादी समाज के हाथों कई गतिरोधों का सामना करना पड़ा था। अब मणिपुरी समाज काफ़ी उदार हो गया, जहाँ पर लेखक ऐतिहासिक महत्त्व की घटनाओं या तिथियों के बारे में पता लगा सकते हैं।

पंचम सत्र

श्री गोपीनारायण प्रधान ने पंचम सत्र की अध्यक्षता की। श्रीमती लखीदेवी सुंदास, श्री कृष्ण सिंह मोक्तान और श्री लक्ष्मण श्रीमाल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रख्यात नेपाली कवयित्री श्रीमती लखीदेवी सुंदास ने कहा, "वह सन् 1948 था जब दार्जीलिंग से मेरी कहानी प्रकाशित हुई थी। मेरी कहानियाँ, कविताएँ और निबंध *गोरखा, हाम्रो कथा, बापू* (हिन्दी पत्रिका), *सालहे प्रगति, प्रतिभा, नेपाल पुकार* (काठमांडु, नेपाल से प्रकाशित) आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं और बाक़ी की मेरी रचनाएँ दार्जीलिंग और कैलिम्पौंग से भी प्रकाशित हुई हैं। मेरी समझ में एक लेखक का मूल्यांकन उसके लेखन-कार्य को ही देखकर किया जा सकता है, कि उसका लेखन कितना सच्चा और निष्ठापूर्ण है। समालोचना के दो पहलू या दृष्टिकोण होते हैं। एक के अनुसार साहित्य में कोई संकेत या समाधान नहीं दिया जाना चाहिए—यानी पाठक को ही उसे महसूस और उसका आनंद लेने दिया जाए। मेरी समझ में मात्र वास्तविकता को प्रस्तुत करना, कोई हल नहीं है। इसमें किसी विशेष समाधान या संकेत को अवश्य रेखांकित करना चाहिए, वरन् वास्तविकता बिना किसी समाधान के जस की तस बनी रहेगी।"

नेपाली कथाकार श्री कृष्ण सिंह मोक्तान ने कहा, "मेरी लेखनी न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता अर्जित करनेवाले लोगों, बल्कि आर्थिक स्वतंत्रता, जिसमें सामाजिक रूढ़िवादिता और संकीर्ण मानसिकता के विरुद्ध आवाज़ उठानेवाले लोग शामिल हों, से प्रभावित और गतिशील है। मैं नेपाली उपन्यासकार श्री लयन सिंह बंगदेल और श्री रूपनारायण सिंह तथा महान बाङ्ला उपन्यासकार श्री शरतचंद्र चटर्जी तथा श्री बंकिमचंद्र चटर्जी से बड़ा प्रभावित हूँ।"

प्रख्यात नेपाली नाटककार श्री लक्ष्मण श्रीमाल ने कहा, "कविता के प्रति उत्साही होने के नाते मैंने अब तक बहुत कविताएँ लिखी हैं। किन्तु एक नाटककार होने के नाते मैंने सन् 1966 में अपना प्रथम एकांकी नाटक 'पगला' लिखा था। सच कहूँ तो हमारे घर पर पहले से ही नाटकीय गतिविधियों का माहौल रहा है। गत शताब्दी के सत्तर और अस्सी के दशकों में मैंने नेपाली नाटक को उन्नत बनाने के लिए दार्जीलिंग में रहते हुए अपना सर्वस्व प्रदान किया है। भारतीय-नेपाली नाटक के नाट्य साहित्य ने परोक्ष रूप से दो मार्ग चुन लिए हैं, निरर्थक और प्रगतिशील।"

नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गोपीचंद प्रधान ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में अस्थाई समय और अनंत समय पर टिप्पणी करते हुए लेखकों को सुझाव दिया कि लेखकों को अस्थाई सुख की प्राप्ति हेतु न लिखकर कुछ ऐसा लिखना चाहिए, जिसके स्थाई मूल्य हों और वह पाठकों को प्रभावित कर सके।

षष्ठ सत्र

षष्ठ सत्र की अध्यक्षता श्रीमती प्रतिभा राय ने की। श्रीमती प्रतिभा सत्पथी, श्री रामचंद्र बेहरा और श्री रत्नाकर चैनी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रख्यात ओड़िया कवयित्री श्रीमती प्रतिभा सत्पथी ने कहा, "जब से इस दुनिया में कविता का पहला अंतरा उच्चारा गया है, तब से अब तक समय के साथ-साथ काव्य अभिव्यक्ति भी कई बदलावों से गुज़री है। कई लोगों का मानना है कि वर्तमान समय कविता लेखन के लिए उपर्युक्त नहीं है। इस मत के पीछे असंख्य कारण हो सकते हैं। जैसा कि हम देख सकते हैं कि आज हम अनेक

प्रकार के संकटों, जैसे—आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक या मानवीय प्रकृति के, से जूझ रहे हैं। "उक्त तीनों कारकों द्वारा मेरी कविता अपनी अंतर्भावनाओं एवं उपलब्धियों तथा चिन्ताओं और संवेदनाओं को अभिव्यक्त कर पाती है। किसी विशिष्ट कालावधि में लिखी गई कविता उस समय के भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल अर्थात् 'त्रिकाल' को प्रतिबिम्बित करती है।"

प्रख्यात ओड़िया कथाकार श्री रामचंद्र बेहरा ने कहा, "व्यक्ति का संबंध समय और स्थान से होता है। उसकी मनोदशाएँ और विशिष्टताएँ उसे अमूल्य बनाती हैं। लेखक जो महसूस करते हैं, उसका सारतत्त्व उनकी लेखनी में परिलक्षित होता है। जिस समालोचक ने यह दावा किया है कि इतिहास के स्थान पर शेक्सपीयर को पढ़ने से उनके समय और समाज के बारे में जाना जा सकता है, ने वास्तव में यह कथन समस्त लेखकों के लिए कहा है।"

प्रख्यात ओड़िया नाटककार श्री रत्नाकर चैनी ने लेखकों के बौद्धिक विकास तथा उनकी सूझ-बूझ और विपत्तियों से होनेवाले संघर्षों तथा स्वतंत्रता के बाद से अब तक के ओड़िसी साहित्यिक परिप्रेक्ष्य के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा, "मेरी जन्मभूमि और मेरे समय ने एक नाटककार के रूप में उभरने हेतु मुझे कई अवसर और अनुभव प्रदान किए हैं। मुझे अपने राज्य और अन्य राज्यों से भी प्रोत्साहन मिला है और मेरे लेखन को मान्यता प्राप्त हुई है।

सुप्रसिद्ध ओड़िया कथाकार और ओड़िया परामर्श मंडल की संयोजक श्रीमती प्रतिभा राय ने कहा कि यह संगोष्ठी पूर्वी भारतीय लेखकों की एक उद्देश्यपूर्ण बैठक है। उन्होंने कहा कि एक लेखक का सृजनात्मक कार्य उसके भूतकाल के अनुभव, वर्तमानकाल की उपलब्धियों और भविष्यकाल की दूरदृष्टि का लेखा-जोखा होता है, उनके कार्य समय, स्थान और भाषा से बढ़कर होते हैं।

समापन सत्र

समापन सत्र में प्रख्यात बाङ्ला कथाकार एवं समाजसेवी श्रीमती महाश्वेता देवी ने अपने जीवन और कार्यों के बारे में बताया। सन् 1936-38 के दौरान उन्होंने रवीन्द्रनाथ ठाकुर को लेखन-कार्य करते हुए तथा शांतिनिकेतन में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेते हुए प्रत्यक्ष देखा था। उन्होंने बताया कि 40 के दशक में जब इंडियन पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन ने नाटकों और रंगमंचों पर मंचन कर सामाजिक वास्तविकता को दिखाने का प्रयास किया था, इससे प्रभावित होकर तब उन्होंने लेखन-कार्य प्रारंभ किया था। उन्होंने यह भी बताया कि किस प्रकार से उन्होंने अपने ऐतिहासिक नाटकों में लोगों के संघर्षों को प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है। उन्होंने कहा कि 70 के दशक में नक्सलियों के राजनीतिक संघर्ष से प्रभावित होकर उन्होंने कुछ कहानियाँ और उपन्यासों की रचना की, जिनमें *हज़ार चौरासीर माँ* भी शामिल है।

'मैथिली लोकगाथा : स्वरूप, विवेचन एवं प्रस्तुति' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

5-6 जून 2004, खुटौना (मधुबनी), बिहार

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और कल्याण पथ दायिनी, खुटौना (मधुबनी) के संयुक्त तत्त्वावधान में, 'मैथिली लोकगाथा : स्वरूप विवेचन एवं प्रस्तुति' विषय पर 5 एवं 6 जून 2004 को रामजानकी विवाह भवन, खुटौना में एक द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का शुभारंभ विद्यापति रचित गोसाउनिक गीत 'जय जय भैरवि' के गायन के साथ हुआ। साहित्य अकादेमी के उपसचिव श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने उपस्थित विद्वानों एवं साहित्यकारों का स्वागत करते हुए लोकगाथा की परंपरा एवं उसके स्वरूप पर प्रकाश डाला। अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक पं. श्री चंद्रनाथ मिश्र 'अमर' ने विषय प्रवर्तन किया। संगोष्ठी का उद्घाटन आकाशवाणी, दरभंगा के सहायक केन्द्र निदेशक सजल रंजन माइती ने दीप प्रज्वलित कर तथा महाकवि विद्यापति एवं मिथिला के लोकनायक राजा सलहेस की मूर्तियों पर माल्यार्पण कर किया। उन्होंने मिथिलावासियों की सांस्कृतिक जागरूकता एवं समृद्ध लोक परंपरा की सराहना की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. महेन्द्र प्रसाद सिंह ने की। मुख्य अतिथि थे श्री अशोक कुमार ठाकुर। मैथिली लोकगाथा पर अपना बीज-भाषण प्रस्तुत करते हुए डॉ. ताराकांत मिश्र ने मैथिली लोकगाथा की व्यापकता और उसकी विविधता पर विस्तार से प्रकाश डाला। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. महेन्द्र नारायण राम ने किया, जबकि धन्यवाद-ज्ञापन श्री मोतीलाल मुखिया ने।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र अपराह्न तीन बजे प्रारंभ हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. नरेन्द्र नारायण सिंह 'निराला' ने की।

इस सत्र में डॉ. धर्मेन्द्र कुमार ने 'मैथिली लोकगाथा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि', डॉ. अशोक कुमार मेहता ने 'भौगोलिक पृष्ठभूमि', डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी ने सामाजिक परिवेश, डॉ. अरुण कुमार कर्ण ने 'मैथिली लोकगाथा और देवता' तथा शंकर देव झा ने 'मैथिली लोकगाथा का भूत, वर्तमान और भविष्य' पर आलेख प्रस्तुत किए।

मैथिली लोकगाथा की प्रस्तुति सत्र सायं 7:00 बजे से आरंभ होकर देर रात तक चलती रही। इस सत्र में लगभग एक दर्जन कलाकार मंडलियों द्वारा गायन, नृत्य एवं अभिनय के माध्यम से मैथिली लोकगाथाओं की मंच पर प्रस्तुति की गई।

6 जून को संगोष्ठी के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. मनोरंजन झा ने की। इस सत्र में डॉ. खुशीलाल झा ने 'मैथिली लोकगाथा का अभिनेय स्वरूप', डॉ. राजाराम प्रसाद ने 'मैथिली लोकगाथा के पुरुष पात्र', डॉ. नवोनाथ झा ने 'मैथिली लोकगाथा में मानवेतर पात्र' एवं डॉ. धीरेन्द्रनाथ मिश्र ने 'मैथिली लोकगाथा की भाषिक संरचना' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अपराह्न 3:00 बजे आयोजित तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री रमाकांत 'रमा' ने की। इस सत्र में यादव ने 'मैथिली लोकगाथा का काव्यशास्त्रीय मूल्यांकन', श्री चंद्रेश ने 'मैथिली लोकगाथा : सामग्री और मैथिली साहित्य', डॉ. कमलाकांत भंडारी ने 'मैथिली लोकगाथा विषयक अनुसंधान आलोचना' विषय पर अपने आलेख पढ़े।

संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता कल्याण पथ दायिनी एवं मैथिली अकादेमी, पटना के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र नारायण राम ने की। इस सत्र में संगोष्ठी के पर्यवेक्षक डॉ. बासुकिनाथ झा ने पढ़े गए समस्त आलेखों पर अपने विद्वत्तापूर्ण विचार व्यक्त किए एवं साहित्य अकादेमी द्वारा युवा साहित्यकारों को प्रोत्साहित किए जाने पर अपनी प्रसन्नता जातई। समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में मैथिली के वरिष्ठ कवि एवं समालोचक तथा प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा मंत्री डॉ. रामलषण राम 'रमण' ने लोककंठ में विद्यमान मैथिली लोकसाहित्य एवं लोक-गाथाओं को अभिलेखित करने की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. राम ने संगोष्ठी में आमंत्रित सभी विद्वानों को मिथिला की परंपरा के अनुसार 'पाग डोपटा' एवं प्रतीक चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। पं. श्री चंद्रनाथ मिश्र 'अमर' ने सहयोगी संस्था एवं सहभागी विद्वानों के प्रति साहित्य अकादेमी की ओर से आभार व्यक्त किया। श्री रामनारायण महतो द्वारा धन्यवाद-ज्ञापन के साथ इस द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन हुआ।

सुभद्रा कुमारी चौहान जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

9-10 जून 2004, नैनीताल

साहित्य अकादेमी और कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल के संयुक्त तत्त्वावधान में 9 एवं 10 जून 2004 को हिन्दी की प्रसिद्ध कवयित्री-कथाकार और स्वतंत्रता सेनानी सुभद्रा कुमारी चौहान की जन्म शतवार्षिकी के अवसर पर एक द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। नैनीताल क्लब में संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए उत्तरांचल के राज्यपाल महामहिम सुदर्शन अग्रवाल ने कहा कि साहित्य के क्षेत्र में सुभद्रा जी ने जो महत्त्वपूर्ण योगदान किया, उसे विस्मृत नहीं किया जा सकता। उनका साहित्य युवा पीढ़ी को सदैव देशप्रेम के लिए प्रेरित करता रहेगा। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में उनका अद्वितीय योगदान था। अपने प्रेरणास्पद गीतों से उन्होंने जन-मन में उत्साह और राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने का काम किया। अल्प आयु में ही उनकी मृत्यु हो जाने से साहित्य जगत को अपूरणीय क्षति हुई। यदि आज वे जीवित होतीं तो वर्तमान राजनीति को भ्रष्टाचार के प्रदूषण से मुक्त करने में सहयोगी बनतीं। अपने स्वागत भाषण में अकादेमी के सचिव प्रो. के. सच्चिदानंदन ने कहा कि सुभद्रा जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से मीराबाई और जनाबाई की परंपरा को आगे बढ़ाया। जीवन के प्रति ममता भरा विश्वास उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी। देशप्रेम के साथ उनकी कविताओं में मानवीय प्रेम की भी गहरी अनुभूति दिखाई देती है। जीवन और समाज की समस्याओं को अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने सहजता से प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के हिन्दी परामर्श मंडल के संयोजक श्री गिरिराज किशोर ने कहा कि सुभद्रा कुमारी चौहान का जीवन बहुत संघर्षमय रहा। अभी तक उनके साहित्य का सम्यक मूल्यांकन नहीं हुआ है, जबकि उन्होंने लोगों को गुलामी और महिला समाज को विचारों के प्रदूषण से मुक्त कराने के लिए काम किया। उन्होंने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनकी रचनाओं के मूल्यांकन पर ज़ोर देते हुए कहा कि इसके माध्यम से आज के मूल्यहीन होते जाते समाज को समझने में मदद मिल सकती है।

अपने मुख्य व्याख्यान में प्रो. कृष्ण कुमार ने कहा कि सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इतिहास को जीवंत किया, लेकिन उनको समझने के लिए हमारे पास कोई औज़ार नहीं है। उन्होंने जिस दौर में अपना साहित्य रचा, उस युग को समझने का प्रयास अब शुरू हुआ है। उसे आगे बढ़ाने की ज़रूरत है। उन्होंने कहा कि प्रारंभिक कक्षाओं में तो सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाएँ पढ़ने को मिल जाती हैं, लेकिन हमारा समाज अभी इतना उदार नहीं हुआ है कि उनकी रचनाओं को स्नातक स्तर की कक्षाओं में शामिल कर सके। 'झाँसी की रानी' कविता की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि यह इतिहास को जीवित करनेवाली रचना है और यह इतिहास की पुनर्रचना करती है। जब तक समाज के पास इतिहास दृष्टि नहीं है, इतिहास का लोगों द्वारा दुरुपयोग किया जाता रहेगा। प्रो. कुमार ने सुभद्रा जी की 'अभियुक्त', 'उन्मादिनी' और 'अँगूठी की खोज' कहानी की चर्चा करते हुए कहा कि इन कहानियों में उनके समय के स्त्री-विमर्श की सीमाएँ स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं।

कुमाऊँ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. पंत ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में सभी आमंत्रित अतिथियों का स्वागत करते हुए सुभद्रा कुमारी चौहान के रचना-संसार पर प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के उपसचिव श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने आगत प्रतिभागियों और समुपस्थित साहित्य-प्रेमियों के प्रति आभार प्रकट करते हुए सुभद्रा कुमारी चौहान के व्यक्तित्व और कृतित्व का विवेचन किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र का विषय था—'सुभद्रा कुमारी चौहान और उनका काव्य।' सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात हिन्दी कवि डॉ. केदारनाथ सिंह ने की। इस सत्र में डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल और श्री प्रयाग शुक्ल ने आलेख पढ़े। डॉ. मानवेन्द्र पाठक ने संवादी के रूप में अपने विचार प्रस्तुत किए। डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि जब कोई रचनाकार इतिहास को अपनी रचना में उतारता है तो वह इतिहास नहीं रह जाता, बल्कि वह उसका अपना यथार्थ होता है। सुभद्रा कुमारी चौहान के संदर्भ में इस बात को ध्यान में रखा जाना चाहिए। उनकी कविता गंभीर-से-गंभीर भाव को सहज सरल रूप में व्यक्त करनेवाली कविता है। एक तरह से सहजता ही उनकी कविता का शिल्प है। उन्होंने कहा कि कविता को जाँचने-परखने की कोई एक कसौटी नहीं बन सकती। कविता की बहुत कुछ कसौटी उसके भीतर से ही निकलती है। डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल ने कहा कि स्वच्छंद धारा के कवियों ने, जिनमें सुभद्रा जी भी आती हैं, छायावाद की अर्थभूमि का विस्तार किया। यहाँ आकर कविता ठोस यथार्थ में बदल जाती है। सुभद्रा जी की काव्य-निर्मिति में माखनलाल चतुर्वेदी के योगदान का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि इतिहास के जिस मोड़ पर वे खड़ी थीं, वहाँ उन्होंने कर्तव्य की कविता लिखी। सुभद्रा कुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और भगवतीचरण वर्मा में हिन्दुस्तानी ज़िन्दगी की लय धड़कती हुई महसूस होती है। जिसे छायावाद का शेषांश कहते हैं, वह प्रेरणा की कविता है। जहाँ छायावाद की कविता अपराजेय संकल्प की कविता है, वहीं स्वच्छंद धारा की कविता अपराजेय विवशता की कविता है। श्री प्रयाग शुक्ल ने कहा कि कोई अच्छी कविता रोमांचित भी करती है, यह हम सुभद्रा जी जैसे कवियों की कविताओं को पढ़कर जान सकते हैं। सुभद्रा जी की भाषा 80-90 वर्षों बाद भी ताज़ा बनी हुई है। उनकी सरल, सहज, प्रवाहमयी भाषा न केवल आज की, बल्कि भविष्योन्मुखी भी लगती है। ऐसा इसलिए है कि



श्री कृष्णदत्त पालीवाल, श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, श्री बटरोही, श्रीमती निर्मला जैन श्रीमती ममता कालिया और श्री विजय बहादुर सिंह

उन्होंने शब्दों को उसी क्रम में चुना है, जो उनके भावों के संवाहक बन सकें। सुभद्रा जी के पास कोई गहरी तरकीब है, जिससे वे अपनी कविता को विश्वसनीय बनाती हैं और उन्हें एक व्यापक संदर्भ देती हैं। सत्र के अध्यक्ष प्रो. केदारनाथ सिंह ने इस संगोष्ठी को सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य-विमर्श का नया प्रस्थान बताते हुए कहा कि लंबे समय तक सुभद्रा जी के ऊपर चर्चा नहीं होती रही, लेकिन उनका अभिग्रहण बराबर होता रहा। कोई भी महत्त्वपूर्ण कवि न केवल अपने समय के पाठकों से बल्कि आज के पाठकों से भी जुड़ा हुआ होता है। 'झाँसी की रानी' कविता की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि यह उन भाग्यशाली कविताओं में है, जो हमारी स्मृति में गहरे धँसी हुई है। क्या जादू है इस कवयित्री का—जो उन्होंने लोकप्रियता का एक नया प्रतिमान बनाया। उस दौर में छायावाद की एक प्रति-कविता लिखी जा रही थी। जो लोग उस समय नई भाषिक चेतना को कविता में संभव कर रहे थे, उनमें सुभद्रा जी अन्यतम थीं। उनमें बोलचाल की लय है, जहाँ अन्विति की दरकार नहीं रह जाती। उनकी कविता अभिधा का एक नया ठाठ है।

10 जून को तीन सत्र संपन्न हुए। 'सुभद्रा कुमारी चौहान का कथा साहित्य और आधुनिक कथा साहित्य' विषयक सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध समालोचिका डॉ. निर्मला जैन ने की। सत्र में डॉ. विजय बहादुर सिंह, श्रीमती ममता कालिया और श्री बटरोही ने अपने आलेख पढ़े। संवादी के रूप में डॉ. नीरजा टंडन और सुश्री प्रीति सागर ने विचार-विमर्श में भाग लिया।

डॉ. विजयबहादुर सिंह ने कहा कि सुभद्रा जी की कहानियों का महत्त्व कुछ ऐसा ही है, जैसा कि मैथिलीशरण गुप्त की प्रसिद्ध काव्यकृति *भारत भारती* का। उनकी रचनाओं में भी *भारत भारती* की चिन्ताओं की अनुगूँज है। सुभद्रा जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की कल्पना की थी। प्रश्न यह है कि किन प्रतिमानों पर सुभद्रा जी के कथा-साहित्य को कसा जाए। उन्होंने सुभद्रा जी की कहानियों के मूल्यांकन के लिए नए प्रतिमान गढ़ने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि उनकी कहानियों में रोज़मर्रा के क़दम-क़दम पर आ खड़े होनेवाले प्रश्न हैं, जड़ नैतिकता पर गहरा प्रहार है, स्त्री का अपने व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष है और एक अत्याचारमुक्त समाज की रचना का स्वप्न है। मूलभूत तौर पर उनकी कहानियाँ करुणा की भावना से भरी हुई हैं और उन्हें राष्ट्रीय आंदोलन की रचनात्मक प्रसृष्टियाँ कह सकते हैं। ये कहानियाँ क्रांतिकारी बदलाव की आकांक्षा से भरी हुई कहानियाँ हैं। श्रीमती ममता कालिया ने कहा कि सुभद्रा जी के मन में कहानी को लेकर कुछ दुविधाएँ थीं। वे अपनी गद्य रचनाओं को लेकर कुछ आश्वस्त नहीं दिखतीं। उन्होंने कहा कि उनकी कहानियों में बीसवीं सदी का स्वातंत्र्य-पूर्व समाज नज़र आता है। आज के फ़ॉर्मूलाबद्ध नारीवाद से हटकर हैं उनकी कहानियाँ। इन कहानियों में भाषा-शैली की सहजता दिखती है। उनकी 'मझली रानी' कहानी में जहाँ कई झोल नज़र आते हैं, वहीं कथा सामर्थ्य के अनेक बिन्दु भी दिखाई पड़ते हैं। क्योंकि आज का यथार्थ इकहरा न होकर जटिल है, इसलिए नए शिल्पगत रूप सामने आ रहे हैं तथा विधाओं का पार्थक्य भी समाप्त होता दिख रहा है। श्री बटरोही ने कहा कि सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानी भारतीय कहानियों की आधुनिक दुनिया का जीता-जागता दस्तावेज़ है। उन्होंने किताबी ज्ञान के आधार पर या सुनी-सुनाई बातों को एकत्र कर कहानियाँ नहीं लिखीं, बल्कि अपने अनुभवों को कहानियों में रूपांतरित किया। सन् 1930 के दौर में अधिकांश कहानीकार कहानी बना रहे थे, जबकि उनकी कहानियों का कथ्य ही नहीं, उनकी भाषा और शब्द-चयन भी यथार्थपूर्ण है। उनकी कहानियों में ज़मीन का संस्पर्श दिखाई पड़ता है। एक स्त्री के रूप में उनका संघर्ष बहुआयामी है और उनके कथा-लेखन को इस परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। नई कहानी आंदोलन की अधिकांश कहानियाँ जहाँ स्त्री-पुरुष संबंधों और स्त्री देह को लेकर हैं, वहीं सुभद्रा जी इसकी अपवाद हैं।

सत्र की अध्यक्ष डॉ. निर्मला जैन ने कहा कि सुभद्रा जी ने अपनी कहानियों में आपबीती और जगबीती दोनों का समन्वय किया है। उनमें एक गहरी नैतिक आवाज़ है। अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने रचना के सामाजिक पक्ष पर पूरा ज़ोर दिया। निर्मला जी ने कहा कि सुभद्रा कुमारी चौहान के कथा-साहित्य की उपेक्षा का कारण है—उनके काव्य पर केन्द्रित हो जाना। उनमें बहुत-सी संभावनाएँ हैं। कोई भी साहित्य दृष्टि दे सकता है, दिशा नहीं। अतः साहित्य से क्रांति की अपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। सुभद्रा जी ने अपनी आत्मा के प्रति जवाबदेही तय कर रखी थी, इसलिए उनका साहित्य जन-मन का साहित्य बन सका।

अगले सत्र का विषय था—'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और सुभद्रा कुमारी चौहान।' इस सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध कवि, नाटककार और चिन्तक श्री नंदकिशोर आचार्य ने की। डॉ. कमला प्रसाद, डॉ. आनंद प्रकाश और श्री अरुण कमल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। संवादी के रूप में सुश्री उमा भट्ट और निर्मला ढैला ने भाग लिया। कमला प्रसाद ने कहा कि स्वतंत्रता-संग्राम के दौरान सुभद्रा जी की कविता 'झाँसी की रानी' बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक को याद थी और इसे गुनगुनाकर बूढ़े भारत में जवानी आती थी। उनकी कविताएँ सीधे जनता को संबोधित होती थीं। श्री आनंद प्रकाश ने कहा कि सुभद्रा जी राष्ट्रीय भावना और ओज की प्रतीक अवश्य हैं, लेकिन अपनी कहानियों में वे एक विकासमान, निर्भीक और जिज्ञासु नारी की भाँति अपने पाठकों से मुखातिब होती हैं। उनकी कहानियाँ स्वतंत्रता आंदोलन के दौर की नारी का मानसिक पटल प्रस्तुत करती हैं। श्री अरुण कमल ने कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन के समय लिखी गई उनकी कविताओं में राष्ट्र प्रेम की भावना स्पष्ट रूप से झलकती है। उनकी हर कविता में साहस, संकल्प और विश्वास का भाव भरा हुआ है। डॉ. नंदकिशोर आचार्य ने सत्र के अध्यक्ष के रूप में कहा कि 'स्वराज्य' से जो आशय गांधी जी का है, 'स्वतंत्रता' से लगभग वही आशय सुभद्रा जी का है। औपनिवेशिक सभ्यता से स्वतंत्रता का अर्थ है अपने समाज की रूढ़ियों-बंधनों से स्वतंत्रता। सुभद्रा जी की राष्ट्रीयता की संकल्पना, आलोचनात्मक संकल्पना है। सुभद्रा जी की सभी कहानियों को हम 'सत्याग्रही' कहानियाँ कह सकते हैं। यहाँ हृदय परिवर्तन पात्र का नहीं, पाठक का होता है। एक तरह से उनकी कहानियाँ स्त्री स्वतंत्रता के पक्ष की कहानियाँ हैं। सुभद्रा जी की स्त्री को अपने कर्तव्य पालन का 'स्पेस' चाहिए—न केवल परिवार के लिए, बल्कि समाज के लिए और देश के लिए। आचार्य जी ने कहा कि वैसे उनकी कहानियाँ मुझे बहुत प्रभावित नहीं करतीं। अगर उन्हें सुघटित रूप में प्रस्तुत किया गया होता तो वे अधिक कालजयी कृतियाँ होतीं।

संगोष्ठी के अंतिम सत्र का विषय था—'सुभद्रा कुमारी चौहान का चिन्तनपरक गद्य।' अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए श्रीमती नासिरा शर्मा ने कहा कि सुभद्रा कुमारी चौहान का गद्य ज़्यादा तराश की माँग करता है। उनकी कहानियों में समय धड़कता महसूस होता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में दलित, जनजातीय लोगों की समस्याओं को उठाया है। उनकी रचनाएँ अपने समय की क्रांतिकारी सोच को उजागर करती हैं। डॉ. दिवा भट्ट ने संवादी के रूप में कहा कि सुभद्रा जी की कुल मिलाकर 85-86 कविताएँ और 45 कहानियाँ प्रकाशित हैं। इनमें से उनकी लगभग 10 कविताएँ बराबर पढ़ी जाती रही हैं। यह किसी भी लेखक के लिए सौभाग्य की बात है। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्री अजित कुमार ने सुभद्रा जी की गद्य रचनाओं पर व्यापक रूप से विचार किया और अपने दौर तथा आज के संदर्भ में उनके महत्त्व को रेखांकित किया।

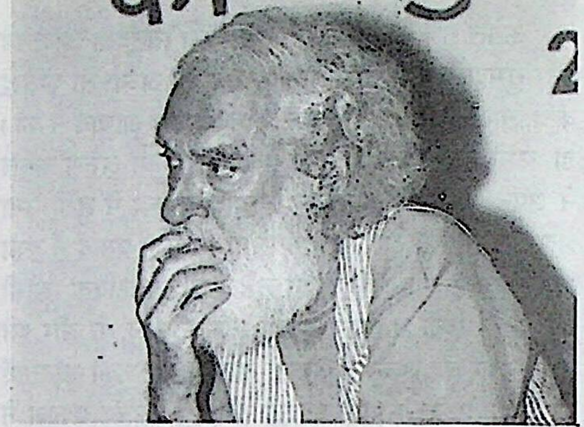
संगोष्ठी के अंत में कुमाऊँ विश्वविद्यालय की तरफ़ से हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. लक्ष्मण सिंह बिष्ट 'बटरोही' और साहित्य अकादेमी की ओर से उप-सचिव श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

'काव्यानुवाद : क्या यह असंभव है' विषय पर परिसंवाद

21 अगस्त 2004, नई दिल्ली

दसवें दिल्ली पुस्तक मेले के अवसर पर साहित्य अकादेमी नई दिल्ली ने 'काव्यानुवाद : क्या यह असंभव है' विषय पर परिसंवाद का आयोजन 21 अगस्त 2004 को नई दिल्ली स्थित साहित्य अकादेमी सभागार में किया।

प्रतिभागियों में विद्वानों, कवियों, अनुवादकों और कवि-अनुवादकों की बड़ी भारी सेना थी, जैसे—प्राकृत प्रेम कविताओं तथा निराला का अंग्रेज़ी में अनुवाद करनेवाले महान अनुवादक श्री अरविन्द कृष्ण मेहरोत्रा; द्विभाषी कवि श्री दिलीप चित्रे जिन्होंने तुकाराम, ज्ञानदेव, समकालीन मराठी कविता एवं कथा-साहित्य को अंग्रेज़ी में अनूदित किया है; पाश सहित कई आधुनिक पंजाबी कवियों को हिन्दी में रूपांतरित करनेवाले श्री चमन नाहल; साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता श्रीमती रति सक्सेना जिन्होंने बालमणि अम्मा, कमला दास, अय्यप्प पणिक्कर, अनीसुर रहमान के कार्यों का हिन्दी अनुवाद तथा उर्दू के कई प्रमुख कवियों की रचनाओं का अंग्रेज़ी अनुवाद किया है; बाङ्ला के अधिपतियों जिनमें रवीन्द्रनाथ ठाकुर और जीवनानंद दास शामिल हैं, का हिन्दी अनुवाद करनेवाले श्री प्रयाग शुक्ल; मध्यकालीन कवियों के कन्नड अनुवादक तथा प्रख्यात कन्नड कवि, नाटककार और



परिसंवाद की अध्यक्षता करते हुए श्री अरविन्द मेहरोत्रा

अनुवादक श्री एच.एस. शिव प्रकाश; महान ओड़िया कवियों के हिन्दी अनुवादक श्री राजेन्द्र प्रसाद मिश्र और एक संवेदनशील बाङ्ला अनुवादक श्री सुकांत चौधुरी जिन्होंने बाङ्ला अधिपतियों जिनमें रवीन्द्रनाथ ठाकुर और जीवनानंद दास भी शामिल हैं कि रचनाओं का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया है।

परिसंवाद के प्रश्न को तथा प्रतिभागियों का उपस्थित श्रोताओं से परिचय कराते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव प्रो. के सच्चिदानंदन ने अपने व्याख्यान में अनुवाद में आनेवाली समस्याओं तथा उसमें निहित त्रुटियों को स्वीकारा। जो लोग काव्यानुवाद को असंभव मानते हैं, उनके लिए प्रो. सच्चिदानंदन ने कहा कि वह लोग यह भूल गए हैं कि वह स्वयं अनुवाद के धरातल पर खड़े हैं तथा वह वाल्मीकि, होमर, दाँते, लिओपार्दी, वादलेयर और मलार्मे से रिल्के तक, लोर्का, नेरूदा, अखमातोव, मोनताले, रिटसोस, सेलन, सेफेरिस, मिलोस्ज़, सेइफर्ट, हर्बर्ट, होलूब, सिमबोर्स्का तथा अन्य कवियों के किए गए अनुवादों को जिन्हें हम लगभग मूल ही मानते हैं, का आनंद निरंतर ले रहे हैं।

मलयाळम् के प्रमुख कवि होने के अतिरिक्त प्रो. सच्चिदानंदन स्वयं एक अनुवादक हैं तथा उन्होंने 15 काव्य पुस्तकों का अनुवाद किया है। उन्हें इस बात का आश्चर्य था कि मूल कवियों से अधिक अन्य कवि, समालोचक और पाठक इस बात को उठाते हैं कि अनुवाद में क्या छूट गया है—यह हम जानते हैं कि क्या छूटा है, जैसे—मूल शाब्दिक संगीत, स्थानीय सांस्कृतिक जुड़ाव, विशेष संदर्भ, मूल पाठ के अंतर संकेत और सुझाव। पर क्या वह कभी, दूसरी भाषा में कविता के पुनर्जन्म, या नई भाषा के शाब्दिक संगीत, उसकी वाक्यगत विशेषताओं तथा नए संदर्भों के साथ कविता को एक नई दिशा और सुझाव मिलने की बात करते हैं।

श्री अरविन्द मेहरोत्रा ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में अपने अनुवादकीय अनुभवों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि लगभग प्रत्येक प्रमुख कवियों के कार्यों में अनुवाद की विधाएँ पाई जाती हैं। इसकी तुलना मूल कार्य से करने का विचार हास्यास्पद लगता है। 18वीं शताब्दी का एक महान सृजनात्मक कार्य अलाक्सेन्द्र पोप द्वारा होमर के *इलियट* का अनुवाद था। अरविन्द के अनुसार गत शताब्दी में अंग्रेज़ी की सबसे सुंदर लिखी गई कविताएँ थीं—ए.के. रामानुजन द्वारा अनूदित महान् कन्नड और तमिष़ गौरवग्रंथ और अरुण कोल्हटकर द्वारा कम प्रख्यात मराठी कविताओं का अंग्रेज़ी अनुवाद।

अरुण कोल्हटकर द्वारा किए गए अनुवादों पर चर्चा करते हुए श्री अरविन्द ने कहा, "कोल्हटकर न केवल शब्दों का अनुवाद करते थे, वरन् अन्य भाषा में मूल को पुनर्सृजित करने का प्रयास भी करते थे, जो दोहराए जानेवाला प्रतिध्वनित होता था तथा ऐसा लगता था कि जैसे झरने बह रहे हों, सब शब्द उचित स्थान पर हों, समस्त अनुवाद मूल जैसा ही प्रतीत हो तथा उनके द्वारा किए गए अनुवाद के विषय को वह आविष्कारी तथा वैविध्यपूर्ण बना देते थे। श्री अरविन्द का मानना है कि अनुवाद में जहाँ कुछ छूट जाता है, वहीं हमें कुछ प्राप्त या अर्जित भी होता है।"

श्री दिलीप चित्रे ने अनुवाद के जन्म के संदर्भ में कहा, "अनुवाद की प्रक्रिया तब से विद्यमान है, जब मानव जाति दस हज़ार वर्षों पूर्व झुंडों में रहती थी।" अपने व्याख्यान के अंत में उन्होंने कहा, "अब काव्य और काव्यानुवाद की संभावनाएँ और असंभावनाएँ साझा संप्रेषण पर निर्भर हैं और साझा संप्रेषण को भाषाई तौर पर सीमित नहीं रखा जा सकता, क्योंकि अनुवाद संभव है, भाषा संभव है, परानुभूति के आधार पर संप्रेषण संभव है तथा परानुभूति को भाषाई तौर पर सीमित नहीं रखा जा सकता, उसे मानव विज्ञान, समाज विज्ञान, इतिहास विज्ञान में बाँधा नहीं जा सकता और न ही इसे स्थान और समय द्वारा रोका जा सकता है।"

श्री चमन नाहल ने कहा कि काव्यानुवाद में लयात्मक ध्वनियों की सुंदरता का पुनरुत्पादन वास्तव में कठिन कार्य है। किन्तु लक्ष्य भाषा की लयात्मक ध्वनियों की सुंदरता कविता को एक नई प्रस्तुति दे सकती हैं। श्री चमन नाहल ने अपने

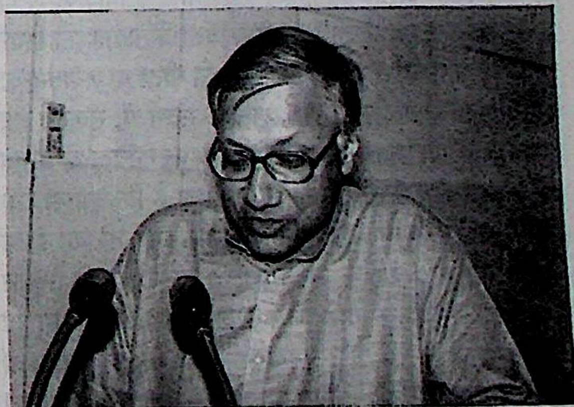
व्याख्यान के अंत में कहा कि काव्यानुवाद सरल कार्य नहीं है तथा काव्यानुवाद उस कवि या व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है, जिसे कविता की समझ तथा उसमें रुचि हो।

श्रीमती रति सक्सेना ने कहा, "*गीता* और उपनिषदों के अनुवाद में अनुवादकों ने अपने विचारों तथा कल्पनाओं का भी काफ़ी हद तक प्रयोग किया है। फिर भी *गीता* तथा उपनिषदों की काव्यगत सुंदरता अद्भुत है। यदि हम *गीता* के अनुवाद को चुनौती देते हैं, तब हम इसके काव्यानुवाद को भी चुनौती दे सकते है। *रामायण* का अनुवाद भारत की लगभग समस्त क्षेत्रीय भाषाओं में किया जा चुका है।" श्रीमती रति सक्सेना ने अन्य वक्ताओं के विचारों से सहमति जताते हुए कहा कि काव्यानुवाद असंभव नहीं है, कठिन अवश्य है। उन्होंने कहा कि अनुवाद के दौरान हम स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में उसकी प्रकृति, संस्कृति, समाज तथा उसके भूगोल को रूपांतरित करते हैं। मलयाळम् कविताओं को हिन्दी अथवा अंग्रेज़ी भाषा में अनूदित करते समय, पाठकों को कविता समझाने के लिए उन्हें मातृतंत्र को पितृतंत्र में रूपांतरित करना पड़ा। अपने व्याख्यान के अंत में उन्होंने कहा कि काव्यानुवाद असंभव नहीं है, किन्तु यह चुनौतीपूर्ण है तथा अनुवादक इन चुनौतियों का प्रायः आनंद लेते हैं।

काव्यानुवाद के असंभव होने के प्रश्न पर आने से पूर्व श्री प्रयाग शुक्ल ने संक्षिप्त रूप से इस बात का विश्लेषण किया कि किस प्रकार से अन्य मीडिया में काव्य को प्रस्तुत किया जाता है। उन्होंने कहा, "हमें यह देखना चाहिए कि अन्य मीडिया काव्य के साथ क्या कर रहे हैं। हम काव्य पर आधारित चित्र देखते हैं, काव्य को मंच पर प्रस्तुत किया जाता है, नर्तक काव्य पर नृत्य प्रस्तुत करते हैं। पर जब हम काव्यानुवाद की बात करते हैं, तब केवल एक ही माध्यम है और वह है भाषा। श्री शुक्ल, जो स्वयं एक सफल अनुवादक हैं, का मानना है कि किसी भी भाषा में शब्दों के विकल्प मिल सकते हैं और अनुवाद के ज़रिए असंभव को संभव बनाया जा सकता है।"

श्री अनीसुर रहमान, जो उर्दू और अंग्रेज़ी के कवि हैं, ने बताया कि एक अनुवादक होने के नाते वह खुश हैं। उन्हें ग़ालिब की शायरी का अनुवाद करना कठिन लगा, तब उन्होंने उनके समकालीन उर्दू कवियों को अनुवाद हेतु चुना। श्री रहमान का यह मानना है कि काव्यानुवाद असंभव नहीं है, किन्तु कठिन है तथा वह गद्य, वृत्तांतों आदि, मूल-पाठ की विधाओं से अलग है। उन्होंने अपनी कुछ विशिष्ट समस्याओं तथा मतभेदों के अनुभवों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने अपनी पसंदों के बारे में स्पष्ट रूप से बताया। उनके लिए नए स्वर वास्तव में मायने रखते हैं। उन्होंने फिर बताया कि वह किस कवि का अनुवाद करना चाहते हैं तथा किस प्रकार की कविता या किस प्रकार की विधा अथवा अभिव्यक्ति का अनुवाद करना चाहते हैं। उनका अगल प्रश्न था कि वह इसके (काव्यानुवादक) लिए कौन-से मानक तैयार करते हैं। किस प्रकार से काव्य परंपरा को उन्नत किया जा सकता है। बाद में जो उन्होंने एक प्रश्न उठाया वह यह था कि, उन्हें किस काल के कवियों का अनुवाद करना चाहिए। उन्होंने इसके उत्तर में कहा कि उन्हें आधुनिक काल के कवियों से लेकर सन् 1930 के आंदोलनकारी प्रगतिशील लेखकों तक का अनुवाद करना चाहिए। श्री रहमानी का मानना है कि उर्दू कविता अपनी वास्तविक ख़ूबियों के साथ प्रस्तुत नहीं की गई है। अनुवाद उनके लिए एक वर्धनीय क्रिया है। उन्होंने कहा कि, एक समय में कई कवियों को अनूदित करने की तुलना में उनके लिए एक कवि को अनूदित करना कहीं आसान है।

श्री एच.एस. शिवप्रकाश ने अपनी समझ और अपने अभ्यास के प्रकाश में काव्यानुवाद पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उनके यह विचार अन्य भाषाओं के संदर्भ में भी उल्लेखनीय हो सकते हैं। उन्होंने कहा, "काव्य और अनुवाद का विचार कन्नड साहित्यिक परंपरा के लिए पूर्णतः भिन्न है।" उन्होंने कहा कि कन्नड के प्रथम कवि पंपा, जिन्हें 'आदि कवि' कहा जाता है, को 'आदि अनुवादक' के नाम से



अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए श्री सुकांत चौधुरी

भी जाना जाता है। *महाभारत* का प्रथम उपलब्ध कन्नड अनुवाद पंपा का ही है। पंपा ने *महाभारत* की कहानियों और उसकी (पुस्तक की) संरचना को छेड़े बिना ही उसके सार को सुनाने का निर्णय लिया। उनके लिए *महाभारत* मानवीय आदर्शों और मूल्यों तथा स्थितियों से जूझकर उबरनेवाली एक बड़ी ही सुंदर रचना थी। वह उसे सुनाने में बेहद स्वच्छंदता बरतते थे। उन्होंने जो सबसे अहम परिवर्तन किया था, वह यह कि उन्होंने अपने आदर्श अरिकेसरी को अर्जुन के समतुल्य बना दिया था। श्री शिव प्रकाश द्वारा कन्नड साहित्य के विभिन्न कवियों एवं अनुवादकों पर किए गए गहन सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि किस प्रकार से उन्होंने (कवियों / अनुवादकों) अपने व्यक्तिगत अनुवादों में विभिन्न संदर्भों और स्थितियों का विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

श्री सुकांत चौधुरी ने कहा कि काव्यानुवाद चाहे कितना भी कठिन क्यूँ न हो, अनुवादक उसे संभव कर दिखाते हैं। उनके अनुसार काव्यानुवाद में कम-से-कम दो विशेष चुनौतियाँ हैं, 'पद्य' विधा और 'शाब्दिक स्रोतों का सघन प्रयोग।' काव्य में पद्य सशक्त होता है। यह अधिक अर्थवान होता है तथा इसमें जटिल पद्धतियों पर आधारित ध्वनियाँ स्वयं अपना अर्थ बताती चलती हैं। काव्य में लक्ष्ण-विज्ञान अर्थविज्ञान के साथ चलता है—सुकांत इसे काव्यानुवाद की आधारभूत शर्त मानते हैं। कविता विज्ञान की एक जटिल पद्धति है, जिसमें प्रत्येक शब्दों के अपने अर्थ होते हैं। यह उसकी संरचनात्मक ध्वनियों, उसके अनुप्रास एवं तुकबंदियों, उसके प्रवाह तथा ठहरावों, उसकी घटती-बढ़ती पंक्तियों आदि, के अर्थों के बारे में बताता है। यह वह स्थान होते हैं, जहाँ पर अनुवादक की सोच संभवतः अलग पड़ती है। जो कमी कुछ विशिष्ट शब्दों के न आने से आ जाती है, उसे कविता के प्रवाह को स्थिर रखकर सुधारा जा सकता है। कविता को मीटर या लयात्मकता की योजना के अधीन बनाए रखने के संदर्भ में, सुकांतो इस बात का भर्सक प्रयास करते हैं कि वह मूल कविता के प्रभाव को न कम होने दें, यदि उन्हें ऐसा लगता है कि लयात्मकता बनाए रखने हेतु मूल से थोड़ा घटना पड़ेगा, तो वह इसमें संकोच भी नहीं करते। अपने व्याख्यान के अंत में उन्होंने कहा कि, अनुवादक चाहे जिस प्रकार की भी स्वंछदता या परिवर्तनों का प्रयोग करें, अनुवादक का कार्य दोनों भाषाओं की भाषाई समझ को जीवित रखते हुए अनुवादक कार्य को पूरा करना होता है।

त्रिदिवसीय संगोष्ठी 'नए स्वर'
3-5 सितंबर 2004, भोपाल

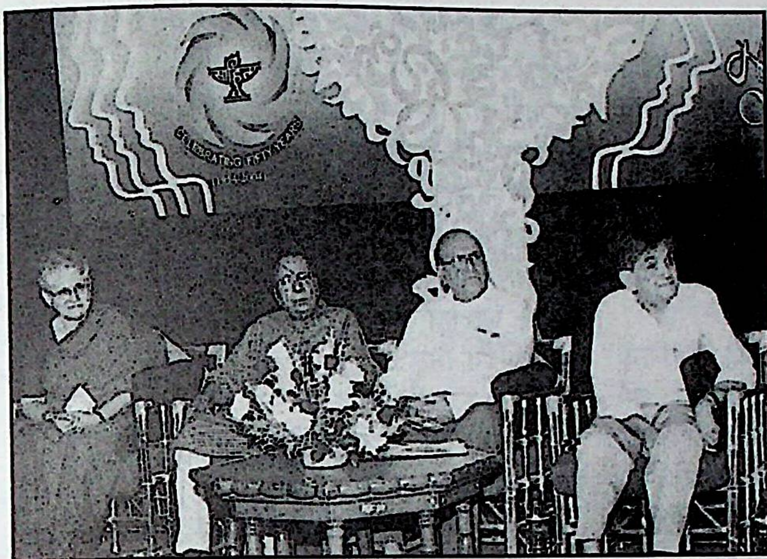
साहित्य अकादेमी ने मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद् और भारत भवन के सहयोग से 3-5 सितंबर 2004 को भारत भवन, भोपाल में 'नए स्वर' शीर्षक एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

प्रो. के. सच्चिदानंदन ने अतिथियों और उपस्थित श्रोताओं का स्वागत किया। अपने स्वागत-भाषण में उन्होंने साहित्य अकादेमी के स्वर्ण जयंती कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से बताया और कहा कि 'नए स्वर' शीर्षक नया कार्यक्रम स्वर्ण जयंती कार्यक्रमों का ही एक भाग है।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात हिन्दी लेखक श्री निर्मल वर्मा ने कहा कि, गत 200 वर्षों में भारत का बुद्धिजीवि-वर्ग अपनी पारंपरिक जड़ों से उखड़ गया है। उन्होंने माना कि आधुनिकता ने भारतीय समाज को लाभ देने से अधिक नुक़सान पहुँचाया है। एक ओर तो आधुनिकता ने बुद्धिजीवि-वर्ग को पथ-भ्रष्ट किया है, दूसरी ओर इसने भारतीय लेखकों को, साहित्य में उनके निजी स्वरों को पहचान दिलाने में सहायता की है। उन्होंने युवा लेखकों को परंपराओं पर आँख बंद करके विश्वास न करने की चेतावनी दी। उन्होंने महात्मा गाँधी के पद चिह्नों पर चलने को कहा, जो उनके अनुसार परंपरा के सबसे संतुलित समालोचक थे।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में लिखित शब्दों द्वारा झेले जानेवाले संकट के बारे में बताया और यह भी कहा कि लेखकों को अपने शब्दों को समकालीन सभ्यता के संबंधित अर्थों से सराबोर कर देना चाहिए, जिससे कि शब्द की लुप्त हो रही शक्ति को पुनर्जीवित किया जा सके। उन्होंने भोपाल की समृद्ध संस्कृति और साहित्यिक परंपराओं के बारे में बताया और कहा कि जब वह 24 वर्ष के थे, तब भोपाल में ग़ालिब की शायरी का एक ग़ैरसंपादित संकलन *नुसखा-ए-हमीदिया* शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। शब्द की शक्ति बताने के लिए उन्होंने ग़ालिब, तुकाराम और कबीर की रचनाओं के कुछ अंश भी प्रस्तुत किए।

प्रख्यात हिन्दी लेखक श्री कमलेश्वर ने अपने बीज-भाषण में युवा लेखकों को अपने लेखन में उनके समकालीन विश्व की सच्चाई उजागर करने को कहा और यह भी कहा कि उन्हें



संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में श्रीमती अंशु वैश्य, श्री कमलेश्वर, प्रो. गोपीचंद नारंग और श्री निर्मल वर्मा

अपनी कल्पनाओं की दुनिया को सच्चाई के रूप में प्रस्तुत नहीं करना चाहिए। उन्होंने लेखकों को सच्चे रामभक्त तुलसीदास के सृजनात्मक व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने की सीख भी दी।

मध्य प्रदेश सरकार की प्रधान सचिव (संस्कृति) श्रीमती अंशु वैश्य ने साहित्य अकादेमी द्वारा अपनी नई शृंखला 'नए स्वर' कार्यक्रम के आयोजन के लिए मध्य प्रदेश को सर्वप्रथम चुने जाने पर अपनी ख़ुशी ज़ाहिर की।

प्रथम सत्र का विषय था—'नई कहानी के मुद्दे।' साहित्य अकादेमी के हिन्दी परामर्श मंडल के संयोजक श्री गिरिराज किशोर ने सत्र की अध्यक्षता की तथा सुश्री कावेरी नामबिशन, श्री सुरजीत सिंह, श्री कुंदन माली और श्री अबुल कलाम क़ास्मी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सुश्री कावेरी नामबिशन ने विनोदशीलता को लेखन में लाने की वकालत करते हुए कहा कि धर्म पर लिखते हुए मानवीय दृष्टिकोण से यह उसका एक अनिवार्य तत्त्व है। श्री सुरजीत सिंह ने उग्रवाद तथा उसके परिणामस्वरूप पंजाब के, लोगों में आई संवेदनहीनता के बारे में बताया। श्री कुंदन माली ने सामंतवादी राजस्थान में महिलाओं पर हो रहे शोषण के बारे में बताया।

तृतीय सत्र कवि सम्मिलन था, जिसकी अध्यक्षता श्री केकी एन. दारूवाला ने की। श्री सुरजीत सिंह 'होश', सुश्री ममांग दई, श्री रिज़ो राज, श्री सुंदर चंद्र ठाकुर, श्री निसार गुलज़ार, श्री बलवीर माधोपुरी, श्री विनोद स्वामी, श्री राम विनय सिंह और सुश्री शाहनाज़ नबी ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। कविता सत्र, प्रेम गीतों की प्रतिध्वनियों, व्यर्थ लगनेवाले बुद्धिवाद तथा उससे संबंधित विषयों पर प्रस्तुत की गई कविताओं से गुंजायमान हो उठा।

चतुर्थ सत्र का विषय था—'नए नाटक की ओर'। इस सत्र की अध्यक्षता श्री मालचंद तिवाड़ी ने की। श्री मधु आचार्य, श्री महेश दत्तानी, श्री श्रीकांत किशोर, श्री पाली भूपेन्द्र सिंह तथा श्री इक़बाल नियाज़ी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री पाली भूपेन्द्र सिंह ने पंजाब में रंगमंच के विकास पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह आश्चर्यजनक बात है कि राज्य में रंगमंच का विकास उस दौर में हुआ (सन् 1980-85 के मध्य), जब वहाँ उग्रवाद का दौर था। उन्होंने कहा कि आधुनिक और ग्रामीण पंजाब के रंगमंच में ज़मीन-आसमान का फ़र्क़ है। राज्य के श्रोताओं की रुचियों के अनुरूप, आधुनिक रंगमंच में समकालीन मुद्दों का मंचन किया जाता है जबकि ग्रामीण रंगमंच धार्मिक प्रस्तुतियों तक ही सीमित हैं। उन्होंने कहा कि पंजाब में लड़कियों से रंगमंच में कार्य करवाना बड़ा कठिन काम है। इसलिए वहाँ पर केवल महिला पात्रों या केवल पुरुष पात्रों के ही नाटक लिखे जाते हैं।

श्री इक़बाल नियाज़ी ने उर्दू रंगमंच के पक्ष में अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने यह तर्क प्रस्तुत किया कि यदि उर्दू रंगमंच में अब तक कोई कार्य नहीं किया गया, तब हबीब तनवीर, नादिरा बब्बर और नसीरुद्दीन शाह किस भाषा में कार्य कर रहे हैं? उनके अनुसार मुंबई, पश्चिम बंगाल, भोपाल और लखनऊ उर्दू रंगमंच के गढ़ माने जाते हैं तथा इस क्षेत्र में कई स्थापित और उभरते हुए नाम शामिल हैं। उन्होंने कहा कि पूर्वकालीन उर्दू रंगमंच बड़ा सशक्त था।

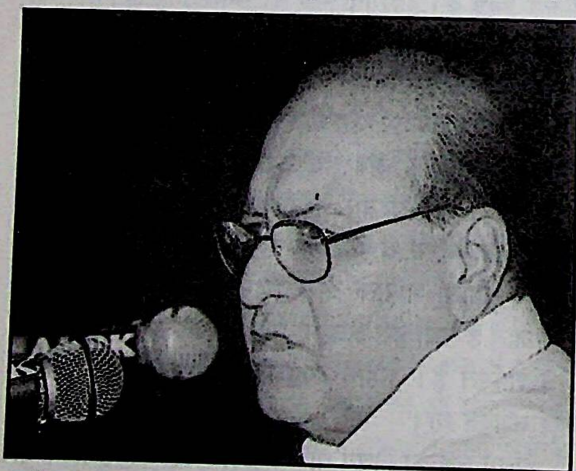
पंचम सत्र का विषय था—"काव्य : नई चुनौतियाँ"। श्री शीन काफ़ निज़ाम ने इस सत्र की अध्यक्षता की। श्री मदन

गोपाल पाधा, श्री जी.जे.वी. प्रसाद, श्री पंकज चतुर्वेदी और श्री शफ़ी शौक़ ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री पंकज चतुर्वेदी ने हिन्दी कविता की चुनौतियों की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि हिन्दी में विभिन्न कारणों से, कविताओं की रचना बहुतायत में होती है। उन्होंने हिन्दी में कवियों की बढ़ती संख्या पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की। श्री मदन गोपाल पाधा ने समकालीन डोगरी कविता के अध्ययन पर विस्तार से चर्चा की।

षष्ठ सत्र का विषय था—'नई पीढ़ी के लिए समालोचनात्मक अवधारणाएँ।' इस सत्र की अध्यक्षता श्री वाचस्पति उपाध्याय ने की। श्रीमती प्रिया सारुक्कई छाबरिया, श्री अभिनव शुक्ल, श्री ललित कार्तिकेय और श्री निज़ाम सिद्दिक़ी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

सप्तम् सत्र कविता-पाठ का था। श्री आग्नेय ने इस सत्र की अध्यक्षता की। श्री सुशील शर्मा, श्री आनंद ठाकुर, श्रीमती प्रिया सारुक्कई छाबरिया, श्री अष्टभुजा शुक्ल, सुश्री राजुला शाह, श्री सत्यदीप, श्री एस. तरसेम, श्री ज़मीर अली अंसारी, श्री मनुलाल शर्मा और श्री फरहत अहसास ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

अष्टम् सत्र की अध्यक्षता श्री इक़बाल मजीद ने की। प्रख्यात समालोचक श्री सी. राजेन्द्रन ने विस्तार से संगीत तथा संस्कृत भाषा की महत्ता बताई। प्रख्यात हिन्दी समालोचक श्री मदन सोनी ने यह विचार प्रस्तुत किया कि सृजनात्मक साहित्य एक ऐसी अवधारणा है, जिसे विषयों की खोज नहीं करनी पड़ती, बल्कि उसे स्वतः ही विषय मिल जाते हैं। उन्होंने अपने दृष्टिकोण को टैगोर के कार्यों के प्रसंग में व्याख्यायित किया। कुछ उभरते हुए लेखकों ने समालोचक श्री पंकज चतुर्वेदी द्वारा हिन्दी में बढ़ते हुए कवियों पर की गई टिप्पणी के लिए आपत्ति उठाई। श्री अमिताभ मिश्र और श्री अनिल करमेले ने कहा कि किसी भाषा में कार्य किए जाने से वह उन्नत होती है तथा इस भावना की आलोचना करने के स्थान पर सराहना की जानी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य के प्रति प्रतिकूल रवैया किसी लेखक को समझने की प्रक्रिया में अवरोधक सिद्ध होता है। क्रिकेट विश्लेषक श्री रतनलाल तलाशी ने कहा कि लेखक को एक गेंदबाज़ की तरह होना चाहिए जो गेंद फेंकने से पूर्व पीछे से भाग कर आता है तथा बल्लेबाज़ के सामने तेज़ी से गेंद फेंकता है। इस प्रकार से लेखकों को पूर्व परंपराओं में जाना चाहिए तथा उसे भविष्य के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहिए।


प्रो. गोपीचंद नारंग अध्यक्षीय व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए

नवम् और दशम् सत्र में कहानी-पाठ हुआ। सुश्री कावेरी नामबिशन, श्री बलवंत सिंह जामोरिया, श्री प्रमोद भरतिया, सुश्री महफ़ूज़ा जान तथा श्री एम. अशरफ़ ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं। नवम् इस सत्र की अध्यक्षता श्री भगवत रावत ने की। श्री कर्णजीत सिंह ने दशम् सत्र की अध्यक्षता की जिसमें श्री बुलाकी शर्मा, श्री संजय खाती, श्री नासिर मंसूर और साजिद रशीद ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं।

समापन सत्र में मो. ज़मान आजुर्दा ने शब्दों की शक्ति के बारे में बताया। उन्होंने एक हकीम की कहानी सुनाई, जिसमें वह अपने मरीज़ों का इलाज शब्दों (बातों) से करता था। अंत में उन्होंने कहा कि शब्दों से बीमारी का इलाज किया जा सकता है, इसमें समस्याओं और चुनौतियों में सामंजस्य स्थापित करने की शक्ति है। श्री रमेशचंद्र शाह ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि व्यक्ति अपनी प्रकृति से बँधा है। वह जानता है कि उसके लिए क्या सही है और क्या ग़लत, लेकिन वह फिर भी अपनी प्रकृति के अनुसार (आदत) व्यवहार करता है। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने *महाभारत* के कुछ उद्धरण प्रस्तुत किए।

भगवतीचरण वर्मा जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
10-12 सितंबर 2004, इलाहाबाद

हिन्दी के प्रख्यात कथाकार भगवतीचरण वर्मा की जन्मशत-वार्षिकी के अवसर पर साहित्य अकादेमी ने हिन्दी साहित्य

सम्मेलन, प्रयाग के सहयोग से 10-12 सितंबर 2004 को एक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन राजर्षि टंडन मंडपम, प्रयाग, इलाहाबाद में किया।

10 सितंबर 2004 को संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री विद्यानिवास मिश्र ने भगवतीचरण वर्मा से जुड़ी अपनी स्मृतियों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि भगवती बाबू के सरल स्वभाव होने के कारण वह सबके प्रिय थे। उनका जीवन बहुमुखी था; राजनीति उनकी कमज़ोरी थी। वह अपने हास्य विनोद-शीलता के लिए प्रख्यात थे; उनकी कहानियाँ पाठकों के बीच लोकप्रिय थीं।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात हिन्दी लेखक श्री श्रीलाल शुक्ल ने कहा कि भगवतीचरण वर्मा के कार्यों में पाठकों को आकृष्ट करने हेतु विविधता थी। उन्होंने इस भ्रांति को ग़लत सिद्ध किया कि लोकप्रिय साहित्य द्वितीय श्रेणी का है। उन्होंने अपना साहित्यिक सफ़र कविता लिखने के साथ प्रारंभ किया तथा कोई भी उनके काव्य में असाधारण अभिव्यक्तियाँ पा सकता है।

इस अवसर पर हिन्दी कथाकार तथा अकादेमी के हिन्दी परामर्श मंडल के संयोजक श्री गिरिराज किशोर ने अपने बीज-भाषण में भगवती बाबू की इलाहाबाद के प्रति उनकी आत्मीयता के बारे में बताया। उनके कार्यों का उद्देश्य जीवन में ख़ुशी लाना था। अपने लेखन द्वारा वह पाठकों से सीधी बात किया करते थे।



भगवतीचरण वर्मा के चित्र पर पुष्पमाला अर्पित करते हुए श्री विद्यानिवास मिश्र

साहित्य अकादेमी के उपसचिव श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने भगवतीचरण वर्मा के लेखन-कार्यों का ब्यौरा प्रस्तुत किया तथा उपस्थित प्रतिभागियों और विद्वानों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

अगले दिन 11 सितंबर 2004 को प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात हिन्दी कथाकार श्री अमरकांत ने की। उन्होंने 'नई कहानी' आंदोलन पर भगवती बाबू की रचनाओं के प्रभाव के बारे में बताया।

सुप्रसिद्ध हिन्दी कथाकार श्रीमती मैत्रेयी पुष्पा ने कहा कि भगवती बाबू ने पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं की स्थितियों को उजागर किया। हिन्दी मासिक पत्रिका *वागर्थ* के संपादक श्री रवीन्द्र कालिया ने कहा कि, भगवतीचरण वर्मा की कहानियों में हमें प्रेमचंद से मिलते-जुलते विचार या दृष्टिकोण देखने को मिलते हैं, विशेषरूप से जब हम कहानियों के विस्तार में जाते हैं। प्रख्यात हिन्दी समालोचक श्री रविभूषण ने कहा कि भगवती बाबू की कहानियाँ हमें बिना किसी विचारधारा से प्रभावित हुए बिना हमें वर्तमान समय के प्रश्नों को समझने और जानने का अवसर प्रदान करती हैं। हिन्दी कथाकार श्री अखिलेश ने भगवती बाबू की कहानियों में जटिल अनुभूतियों और खोखले आदर्शों के बारे में बताया। हिन्दी कथाकार श्री मार्कण्डेय और हिन्दी समालोचक श्री प्रेम सिंह ने भी भगवतीचरण वर्मा के लेखन-कार्यों पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र में प्रख्यात हिन्दी समालोचक श्री सत्यप्रकाश मिश्र ने वर्मा जी के उपन्यासों *टेढ़े-मेढ़े रास्ते* और *भूले बिसरे चित्र* का हवाला देते हुए कहा कि इन उपन्यासों के अंग्रेज़ी पात्रों का काले लोगों के प्रति पुनर्जागरण ठीक उसी प्रकार है, जिस प्रकार से आज के वैश्वीकरण के युग में अंग्रेज़ी पात्रों के बीच नवजागरणवाद उदित हुआ है। उनके उपन्यासों में षड्यंत्र की वही प्राथमिक विधा देखने को मिलती है, जो स्वतंत्रता के पश्चात् राजनीतिज्ञों, बड़े उद्योगपतियों, पूंजीपतियों आदि में विकसित हुई।

हिन्दी समालोचक श्रीमती रोहिणी अग्रवाल ने स्वतंत्रता आंदोलन और महिलाओं की समस्याओं के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि वर्मा जी के लेखन में दलित चरित्रों का अभाव है। प्रख्यात स्तम्भ-लेखक श्री भारत भारद्वाज ने कहा कि भगवती बाबू का लेखन व्यक्तिगत भावुकताओं और संवेदनाओं पर अधिक केन्द्रित था। उन्होंने उनके उपन्यासों

के संदर्भ में उसमें दर्शायी गई अच्छाइयों और बुराइयों तथा नियति पर चर्चा की। प्रख्यात हिन्दी समालोचक श्री परमानंद श्रीवास्तव ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

प्रख्यात हिन्दी समालोचक श्री नित्यानंद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में हमें स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि में राजनीतिक छवि देखने को मिलती है। उन्होंने कहा कि आंदोलनों से साहित्य सशक्त बनता है। भगवती बाबू के उपन्यासों में यह परिलक्षित होता है।

चतुर्थ सत्र भगवतीचरण वर्मा के काव्य पर आधारित था। यह एक बड़ा ही आत्मीय सत्र था। प्रख्यात हिन्दी कवि श्री नीलाभ ने भगवती बाबू के कविता-संग्रह *मधुकर* के बारे में बताया और कहा कि काव्य का प्राथमिक उद्देश्य भावुकताओं को अभिव्यक्त करना है। श्री राजेन्द्र कुमार ने कहा कि भगवती बाबू वाचिक परंपरा के अंतिम कवि थे।

संगोष्ठी का पंचम् सत्र भगवतीचरण वर्मा के ग़ैर-गद्यात्मक कथा-लेखन पर आधारित था। सुश्री मृदुला गर्ग, श्री नंदन और श्री सत्यकाम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रख्यात हिन्दी समालोचक श्री राम कमल राय ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए अपने अध्यक्षीय व्याख्यान ने भगवती बाबू के लेखन के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

श्री सत्यप्रकाश मिश्र ने संगोष्ठी का संचालन किया तथा कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'नए स्वर' शीर्षक त्रिदिवसीय संगोष्ठी
10-13 सितंबर 2004, त्रिवेन्द्रम

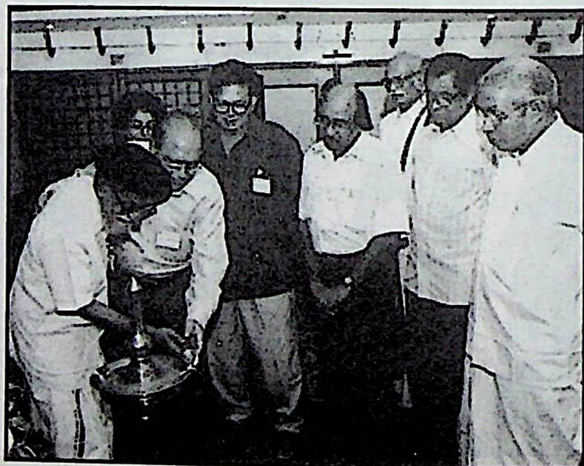
साहित्य अकादेमी ने 10-13 सितंबर 2004 को कॉनफ्रेंस हॉल, मोस्कोट होटल, त्रिवेन्द्रम में 'नए स्वर' शीर्षक त्रिदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी के सचिव प्रो. के. सच्चिदानंदन ने युवा लेखकों को पश्चिमी नक़ल और पूर्वकालीन संकीर्ण भारतीयता से मुक्त होने का आवाहन किया। उन्होंने कहा कि कोई भी लेखक लेखन-कार्य के संकटों से मुक्त नहीं है। वैश्वीकरण की अनियंत्रित प्रक्रिया संस्कृतियों को निरंतर अधोगति की ओर ले जा रही हैं।

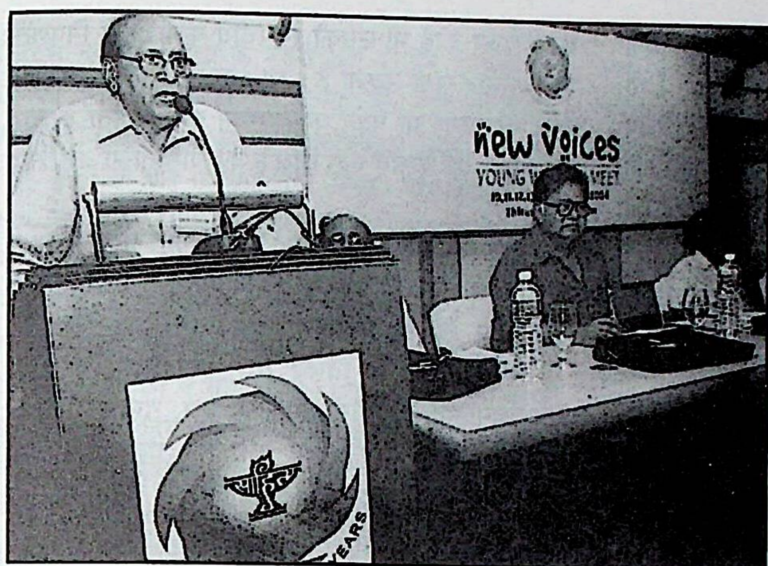
साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि यह एक नए साहित्य की घोषणा करने का समय है। युवा लेखकों को अपनी पहचान बनाए रखने की चेष्टा करनी चाहिए। उन्हें खोखले आदर्शों का अनुसरण नहीं करना चाहिए तथा उन्हें अपनी सामर्थ्य के विकास हेतु समान अवसर मिलने चाहिए। युवा लेखकों को स्वाभाविक होना चाहिए तथा उन्हें अपने अंतर्मन की आवाज़ सुननी चाहिए। समाज में व्याप्त संघर्षों के बावजूद, इससे उबरने की उम्मीद की किरण केवल युवा प्रतिभाएँ ही हो सकती हैं, जो इस समाज में फैले समस्त संकटों/संघर्षों से निकलने की एक नई राह (दिशा) बना सकती हैं।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात शिक्षाविद् एवं मलायळम् कवि श्री के. अय्यप्प पणिक्कर ने कहा कि युवा लेखकों द्वारा उपलब्ध जानकारियों द्वारा हमें यह ज्ञात होता है कि अब तक किस चीज़ की उपेक्षा हुई है। युवा लेखक अपने गुरुओं की नक़ल नहीं करते। वह अपना स्वनिर्माण करते हैं तथा वह 'गुरुओं' से मार्गनिर्देशन नहीं लेते। सृजनात्मक स्वतंत्रता स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगी है। उन्होंने यह भी कहा कि युवा लेखकों के लिए कुछ भी पवित्र नहीं है। वह पारंपरिक पद्धतियों का अनुसरण नहीं करते तथा वह सिद्धांत मुक्त हैं। युवा लेखकों के कार्य सृजनात्मक स्वतंत्रता का साक्ष्य हैं। यद्यपि किशोरों ने भी अपने आपको अभिव्यक्त करना प्रारंभ कर दिया है। बच्चों ने अपना साहित्य लिखना प्रारंभ कर दिया है। हमें शिशुशाला की शक्ति का अनुभव होने लगा है।

प्रख्यात लेखिका सुश्री गीता नागभूषण ने बीज-भाषण



'नए स्वर' शीर्षक संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए श्री के. अय्यप्प पणिक्कर



अध्यक्षीय व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए प्रो. गोपीचंद नारंग। मंच पर हैं, प्रो. के. सच्चिदानंदन, श्री सुनील गंगोपाध्याय और श्री के. अय्यप्प पणिक्कर

प्रस्तुत किया। अंत में साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री सुनील गंगोपाध्याय ने धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र का विषय था—"काव्य : नई चुनौतियाँ"। प्रख्यात तमिष़ कवि एवं समालोचक तथा साहित्य अकादेमी के तमिष़ परामर्श मंडल के संयोजक श्री आर. बालचंद्रन 'बाला' ने सत्र की अध्यक्षता की। सर्वश्री ओ. एल. नागभूषण स्वामी, पी. पी. रामचंद्रन, ना. मुथु निलावन और के. मधुज्योति ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री पी. पी. रामचंद्रन ने कहा कि आज समस्त युवा लेखकों ने ऐसे समय में लिखना प्रारंभ किया है, जब सब प्रमुख आंदोलन समाप्त हो चुके हैं। यह सभी अपनी विचारधाराओं को अभिव्यक्त करने के लिए स्वच्छंद हैं। नए कवि अपने कार्यों में आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग कर रहे हैं, लेकिन उनकी कविता में समझ की कमी है। आज की कविताओं के काव्य में राज्यों की जीवन स्थिति प्रतिबिम्बित होती है, न कि कवि के स्व-निर्माण अथवा स्व-विकास की। तेलुगु कवि मधुज्योति ने कहा कि तेलुगु में नई कविता लघु से लघुतर होते-होते 'हाइकू' में बदलती जा रही है। कवि आजकल राजनीतिक जागरूकता, वैश्वीकरण के प्रतिपक्ष में, जाति तथा लिंग भेद की असमानताओं तथा बिखरते परिवारों पर आधारित कविताएँ लिख रहे हैं। वर्तमान तेलुगु कविता में, दलित नारीवाद अल्पसंख्यकों जैसे स्वरों का प्रयोग बड़े प्रभावशाली ढंग से किया जाता है। तमिष़ कवि श्री मुथु निलावन ने कहा कि पिछले दशक में तमिष़ में नई कविता का लोकतंत्रीकरण हुआ है, इसमें कवियों ने रोज़मर्रा के अनुभवों तथा तमिलनाडु में उभरती नई जीवन शैलियों पर आधारित कविताएँ लिखनी प्रारंभ की हैं। उन्होंने ई-पत्रिकाओं के प्रर्वतन के संदर्भ में भी बताया, जो कि काव्य को समर्पित हैं।

श्री आर. बालचंद्रन 'बाला' ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि नए लेखकों के समक्ष वास्तविक चुनौती उनके समकालीन कवि ने होकर, कविता अभिव्यक्त करने का माध्यम है। कविता में दूरदृष्टि लाना वर्तमान समय की मांग है। उन्होंने युवा लेखकों को 'संस्कृति उद्योग' से बने 'साहित्य और फ़िल्म के सूत्र' का प्रतिरोध करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने नए लेखकों के प्रति दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि वह सामाजिक प्रतिबद्धता की क़ीमत पर स्वयं को स्व-प्रेम, स्व-दया और स्व-बधाई में संलिप्त किए हुए हैं।

द्वितीय सत्र का विषय था—"नव कथा-साहित्य के मुद्दे।" श्री गिराड्डी गोविन्दराज ने इस सत्र की अध्यक्षता की। श्री आर. शशिधर, श्री के. एस. रविकुमार, श्री नवीन और श्री रविकुमार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। कन्नड समालोचक श्री आर. शशिधर ने अंग्रेज़ी उपन्यास लिखने वाले भारतीय लेखकों के संदर्भ में कहा कि वह अक्सर किसी-न-किसी प्रश्न पर 'पैकेज उपन्यास' लिखते हैं। भारतीय भाषाओं के लेख एक ओर बड़ी जटिल प्रकृति वाले तथा सरलता से व्याख्यायित न किए जानेवाली प्रकृति के होते हैं। उन्होंने कन्नड साहित्य में 'नव' आंदोलन की समाप्ति के संदर्भ में भी बताया और कहा कि यह रूप अब भी शिवराम कारंत के लेखन में पाया जाता है। मलयाळम् समालोचक श्री के. एस. रविकुमार ने कहा कि आधुनिक मलयाळम् कथा-साहित्य कल्पना, पैरोडी और मिश्रित रचना से भरा पड़ा है। तेलुगु कथा लेखक श्री वासिरेड्डी नवीन ने तेलुगु उपन्यासों में आत्मनिष्ठा एवं अस्तित्वपरक अनुभवों की वापसी तथा वृत्तांतों में उपबोलियों और स्थानीय अभिव्यक्तियों के बारे में बताया।

श्री गिराड्डी गोविन्दराज ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि कर्नाटक में नए लेखकों को प्रभावित करने के लिए साहित्यिक अथवा राजनीतिक क्षेत्रों में कोई भी प्रमुख आंदोलन शेष नहीं बचा है। कई उपन्यासकार भारतीय आख्यान विधा पर आधारित 'यथार्थवादी' विषयों पर प्रयोग कर रहे हैं, जो 'जादुई यथार्थवाद' के समान है।

तृतीय सत्र कहानी-पाठ का था। बी. चंद्रिका ने सत्र की अध्यक्षता की तथा विवेक शंभाग, ए.एस. प्रिया, सुब्र भारती मणियन् और चंद्र लता ने अपनी कहानियाँ पढ़ीं।

चतुर्थ सत्र कविता-पाठ का था। इसमें शंकर कतागी, हा.मा. कनक, अनीता थम्पी, मनुष्य पुतिरन, को. वसंतकुमारन, पी. रामकृष्ण तथा पी. गीता जैसे युवा कवियों ने अपनी कविताएँ पढ़ीं। प्रख्यात मलयाळम् कवि श्री ओ. एन. वी. कुरूप ने इस सत्र की अध्यक्षता की।

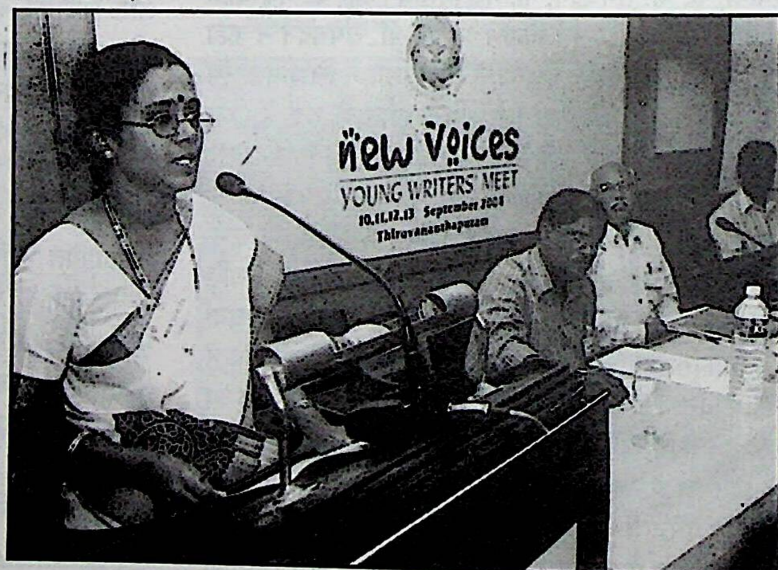
12 सितंबर 2004 को आयोजित पंचम सत्र का विषय था—"नए नाटक की ओर।" श्री कवलम नारायण पणिक्कर ने इस सत्र की अध्यक्षता की। सर्वश्री के.वी. अक्षरा, सतीश के. सतीश, वेलु श्रवणन् और एम. कृष्णमोहन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। आष्टी चिल्ड्रन थिएटर ग्रुप के श्री वेलु श्रवणन् ने कहा कि निर्देशक को स्वयं को अभिनय कक्षा की स्थिति के अनुकूल बनाना चाहिए तथा बच्चों को अभिनय के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। ऐसा व्यक्ति ही केवल बाल-नाटकों का निर्देशन कर सकता है। इस प्रकार का निर्देशक किसी शिक्षक तथा किसी बाल-प्रेमी में भी पाया जा सकता है। इस प्रकार के व्यक्ति को रंगमंच कला में प्रशिक्षण देकर उसे एक अच्छा निर्देशक बनाया जा सकता है। उन्होंने आगे कहा कि बच्चों को औपचारिक शिक्षा जैसे—पढ़ना, लिखना तथा विद्यालय से मिलनेवाले गृह-कार्य के अतिरिक्त कुछ और अधिक पाने या सीखने की प्रत्याशा होती है। वह विद्यालय में नवीनता की खोज करने तथा एक-दूसरे से मिलने के लिए आते हैं। बच्चों की संतुष्टि के लिए, शिक्षक को प्रशिक्षित तथा उनकी चिन्ता करनेवाला भी होना चाहिए। किसी शिक्षक की भाव-अभिव्यक्तियों और शारीरिक भाषा को देखकर कोई भी उसकी रंगमंचीय कलाओं में निपुणता का अनुमान लगा सकता है। वह अपनी शारीरिक कलाओं द्वारा महासागर या पर्वत का आभास करा सकता है तथा इस प्रकार की कलाएँ एक शिक्षक की योग्यताओं को सिद्ध करती हैं।

षष्ठ सत्र कहानी-पाठ का था। श्री नील पद्मनाभन ने इस सत्र की अध्यक्षता की तथा जयश्री कसरावल्ली, बी. मुरली, पेरूमल मुरूगन और पी. श्रीनिवास ने अपनी कहानियाँ पढ़ीं।

सप्तम् सत्र का विषय था, "नई पीढ़ी के लिए समालोचनात्मक अवधारणाएँ।" श्री एस. गुप्तन नायर ने सत्र की अध्यक्षता की तथा एन. मनु चक्रवर्ती, ई.पी. राजागोपालन, पद्मावती विवेकानंदन और वी. चीना वीरभद्रडु ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अष्टम् सत्र कविता-पाठ का था। बी. सुगत कुमारी ने सत्र की अध्यक्षता की तथा आनंद जुनजुरवाड, एस. जी. सिद्धरमैया, रफ़ीक़ अहमद, अनवर अली, रवि सुब्रह्मण्यन् और भास्कर योगी ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

13 सितंबर 2004 को आयोजित नवम् सत्र एक खुला मंच था। प्रो. के. सच्चिदानंदन ने इस सत्र की अध्यक्षता की तथा बी. मुरली, आर. शशिधर, ओ. एल. नागभूषण स्वामी, मनुष्य पुतिरन, नवीन, पी. गीता, एन. शशिधरन, पी. पी. रवीन्द्रन और पेरुमल मुरुगन प्रतिभागी थे। तेलुगु समालोचक



श्रीमती मधुज्योति, श्री मुथु नीलावन और श्री आर. बालचंद्रन 'बाला'

वासिरेड्डी नवीन ने आंध्र के शहरी और ग्रामीण लेखकों के बीच की असंबद्धता के बारे में बताया और कहा कि शहरी लेखकों ने किसानों द्वारा की गई आत्महत्याओं अथवा भुखमरी से हुई मौतों के बारे में कभी नहीं लिखा। मलयाळम् कथा लेखक बी. मुरली ने कहा कि युवा लेखकों को आधुनिकतावादी कथासाहित्य के प्रभाव से मुक्त होना चाहिए। कन्नड समालोचक आर. शशिधर ने कहा कि समाजवादी राष्ट्रों के विघटन ने एक ऐसे भोगवादी समाज को जन्म दिया है, जो उदारवाद के पोषण में सहायक है। एन. शशिधरन ने कहा कि एक प्रमुख मलयाळम् रंगमंच के व्यक्ति ने जिस रंगमंच को विदेशों में प्रदर्शित और प्रोत्साहित किया है, उसका वास्तविकता से कोई लेना-देना नहीं है तथा उसे आकर्षक बनाने के लिए कुछ विशिष्ट पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। तेलुगु कवि मनुष्य पुतिरन ने कहा कि क्षेत्रीय भाषाओं में किए गए अनुवादों पर साहित्यिक दुनिया में सक्रियता से चर्चा नहीं की गई है। प्रो. के. सच्चिदानंदन ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में एक नए साहित्य तथा एक नई सौन्दर्यपरकता के प्रतिरोध की आवश्यकता पर बल दिया।

दशम् सत्र कहानी-पाठ का था। सुश्री अशिता ने इस सत्र की अध्यक्षता की तथा सुभाषचंद्रन, वी.जे. जेम्स, संतोष ईचिकनम और पी. शिवकामी ने अपनी कहानियाँ पढ़ीं।

एकादश सत्र भी कहानी-पाठ का ही था। जी. तिलकावती ने इस सत्र की अध्यक्षता की तथा राघवेन्द्र पाटिल, के. ए. सेबेस्टियन, एस. तमिल सेल्वन और डोरावेटी ने अपनी कहानियाँ पढ़ीं।

श्री केकी एन. दारूवाला ने समापन सत्र के अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि साहित्य की अंतिम परख उसकी साहित्यिक उत्कृष्टता के आधार पर की जा सकती है न कि इस आधार पर कि कोई पुस्तक दलित अथवा नारीवाद पर लिखी गई है। युवा लेखक चाहे अंग्रेज़ी अथवा किसी भी अन्य भारतीय भाषा में लिखें, उससे मुद्दों की विषय-वस्तु प्रभावित नहीं होती।

संगोष्ठी में हुए विचार-विमर्श से यह स्पष्ट हो गया कि क्षेत्रवाद और राष्ट्रवाद की आज के समय में ज़बर्दस्त वापसी हुई है। यह बात इस तथ्य से भी स्पष्ट हो जाती है कि युवा लेखकों ने स्थानीय अथवा क्षेत्रीय समस्याओं का विरोध किया है, जबकि उनसे पूर्वकालीन लेखकों ने राष्ट्रीय अथवा अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के बारे में ही लिखा था। नए लेखक एक नए समालोचनात्मक प्रतिमान की खोज में लगे हुए हैं, किन्तु अभी तक उन्हें इसमें सफलता प्राप्त नहीं हुई है।

'कोंकणी कथा-साहित्य में क्षेत्रीय वैविध्य' विषय पर संगोष्ठी

14-15 सितंबर 2004, ननथूर, मंगलौर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई और कोंकणी साप्ताहिक *रक्नो* के संयुक्त तत्त्वावधान में 'कोंकणी कथा साहित्य में क्षेत्रीय वैविध्य' विषय पर एक द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 14 से 15 सितंबर 2004 के द इंस्टीट्यूट फ़ॉर सोशल डवलपमेण्ट, ननथूर, मंगलौर में किया गया।

रक्नो साप्ताहिक के संपादक श्री एफ़. ऐरिक क्रस्टा ने अतिथियों और श्रोताओं का स्वागत किया। अपने स्वागत-भाषण में उन्होंने कहा कि कोंकणी लोग चार क्षेत्रों में फैले हुए हैं तथा उनकी संस्कृति, परंपरा और जीवन-शैली में क्षेत्रीय वैविध्य है, जो कि उनके आस-पास की अन्य भाषाओं एवं संस्कृतियों से प्रभावित है; और यह वैविध्य कोंकणी कथा साहित्य में भी प्रतिबिम्बित होता है।

संगोष्ठी के बारे में बताते हुए श्री दामोदर मावज़ो ने कहा कि जिस प्रकार किसी भी कार्यकलाप के लिए विकास की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार साहित्य को भी विकास की आवश्यकता होती है। कोंकणी साहित्य के भविष्य के लिए क्रमविकास की योजना बनाना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। मेरी दृष्टि में यह संगोष्ठी, विभिन्न क्षेत्रों में लिखे गए कोंकणी साहित्य के मूल्यांकन हेतु तथा इसके भविष्य की योजना पर चर्चा करने हेतु, एक उपयुक्त मंच है।

प्रख्यात कन्नड लेखक श्री जयंत कड़किनी ने दीप प्रज्ज्वलित कर संगोष्ठी का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन-व्याख्यान में उन्होंने कहा कि इस सूचना एवं प्रौद्योगिकी के युग में हम इन कहानियों और साहित्य में लोगों की भावनाओं और संवेदनाओं को पहचान सकते हैं। श्री के. गोकुलदास ने अपने बीज-भाषण में कहा कि यदि कोंकणी कथा साहित्य को संपूर्णता में देखा जाए, तो इसके मुख्यधारा का साहित्य क्षेत्रीय स्वरूप की छाया से निष्प्रभ हो सकता है। यद्यपि यह बता पाना बड़ा कठिन है कि कोंकणी कथा साहित्य की मुख्यधारा किसका सम्मिश्रण है। उन्होंने कहा कि कोंकणी

साहित्य की शक्ति उसका यथार्थवाद और लेखकों की मार्मिक अनुभूतियाँ हैं।

प्रथम सत्र में एडविन जे.एफ़. डीसूज़ा ने 'कर्नाटक और शिवराम कारंथ में कोंकणी साहित्य की विलक्षणताएँ और प्रादेशिक विशिष्टताएँ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री दामोदर मावज़ो ने इस सत्र की अध्यक्षता की, स्टैला डी कोस्टा और मिक मैक इस सत्र के संवादी थे।

अपने आलेख में एडविन डीसूज़ा ने बताया कि कर्नाटक में गत 50 वर्षों में किस प्रकार से कोंकणी कथा साहित्य का क्षेत्रीय वैविध्य प्रारंभ हुआ तथा कोंकणी लेखक अब तक इसे किस शिखर तक पहुँचा पाने में सफल हुए हैं। तदुपरांत उन्होंने गत दस वर्षों में कन्नड लिपि में प्रकाशित कोंकणी पुस्तकों के बारे में बताया, जिनमें उपन्यास, कहानियाँ, कविताएँ, नाटक और अनुवाद शामिल थे। श्री मिक मैक्स ने कहा कि हमने ईसाइयों के साहित्य को लोकप्रिय बनाने के प्रयास नहीं किए हैं। हमें इस दिशा में भी प्रयास करने होंगे। उन्होंने कहा कि कोंकणी बोलनेवाले समस्त वर्गों के लोगों के बीच कोंकणी साहित्य को लोकप्रिय बनाने हेतु और अधिक प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

सुश्री स्टेला डी कोस्टा ने कहा कि समस्त अन्य भाषाओं में भी समस्याएँ विद्यमान हैं। किन्तु अन्य भाषाओं में परिशोधन किए जा चुके हैं। यदि इसे कोंकणी भाषा में भी कर लिया जाए तो निःसंदेह कोंकणी भाषा और साहित्य अपने वैविध्य और विशिष्टता के साथ सफलता अर्जित कर लेगी। शिवराम कारंथ को उद्धृत करते हुए सुश्री डी कोस्टा ने कहा कि विशेषरूप से उपन्यासों को लिखते वक़्त पात्रों का विश्लेषण अत्यंत आवश्यक और महत्त्वपूर्ण होता है।

15 सितंबर 2004 को समस्त प्रतिभागियों के स्वपरिचय द्वारा द्वितीय सत्र प्रारंभ हुआ। *रक्नो* कोंकणी साप्ताहिक के उपसंपादक श्री प्रशांत डीसूज़ा ने चार कहानीकारों को *रक्नो* साप्ताहिक के संपादक श्री आर.एफ. ऐरिक क्रस्टा के साथ मंच पर कहानी पढ़ने हेतु आमंत्रित किया गया। श्री के. आर. वसंत मोनी, श्री एडवर्ड नज़ारेथ, श्री वसंत भगवंत सावंत और श्री एडविन नेट्टो ने अपनी कहानियाँ पढ़ीं।

तृतीय सत्र में श्री शिवदास एन. ने अपना आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र के संवादी थे—जेस फर्नांडिस, जयमाला दनैत और रामनाथ गावड़े। इस सत्र की अध्यक्षता सुश्री एलेक्सेंडर एफ़. डीसूज़ा ने की।

श्री एन. शिवदास ने 'गोवा में कोंकणी साहित्य की विलक्षणताएँ और प्रादेशिक विशिष्टताएँ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। गोवा में कोंकणी साहित्य के अनूठेपन पर बात करते हुए उन्होंने बताया कि गोवा को कोंकणी भाषा की मातृभूमि कहा जाता है। वह गोवा की राज भाषा बन चुकी है। गोवावासियों द्वारा इसे बड़ा ऊँचा दर्ज़ा दिया गया है, जबकि अन्य राज्यों में इसे केवल राज्य भाषाओं की तुलना में दूसरा दर्ज़ा प्राप्त है।



श्री प्रकाश भातंब्रेकर, श्री जयंती कइकिनी, श्री दामोदर मावज़ो, श्री गोकुलदास प्रभु और श्री एफ. ऐरिक क्रस्टा

श्री जेस फर्नांडिस ने कहा कि जब भी गोवा के लोग अन्य स्थानों पर विस्थापित हुए हैं, उनके साहित्य में संस्कृतियों का आपसी आदान-प्रदान हुआ है। गोवा के साहित्य में क्षेत्रीय वैविध्य देखा जा सकता है। जयमाला दनैत ने कहा कि उनके साहित्य में वहाँ के लोगों की जीवन-शैली दर्पण की भाँति प्रतिबिम्बित होती है, जो लोग गोवा से अन्य स्थानों पर विस्थापित हुए हैं, वह जहाँ पर बसे हैं; उन स्थानों के क्षेत्रीय तत्त्वों और वहाँ के पात्रों को अपने

साहित्य में उजागर करते हैं। कोंकणी साहित्य की विशेषता यह है कि जो पुस्तक भारत में पहली बार प्रकाशित हुई थी, वह कोंकणी भाषा में थी। कोंकणी भाषा ने अपने विकासक्रम की प्रक्रिया में कई आघातों को साहा है।

श्री रामनाथ गावड़े ने कहा कि गोवा के लेखकों के बीच भी विभिन्नताएँ हैं, जिसमें कई बार ऐसी स्थितियाँ पैदा हो जाती हैं, जहाँ पर किसी एक विशेष इलाक़े में रहनेवाले लेखक दूसरे इलाक़े में रहनेवाले लेखकों के वैविध्य पूर्ण शैलियों से परिचित नहीं होते। गोवा के साहित्य में गोवा के लोगों के क्षेत्रीय तत्त्वों को भली-भाँति दर्शाया गया है।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता श्री एस.एम. कृष्ण राव ने की। श्री महाबलेश्वर सैल ने अपना आलेख प्रस्तुत किया, जबकि एफ़. मार्क वालदेर, प्रकाश पारेकर और शशिकांत पुनाजी इस सत्र के संवादी थे। श्री महाबलेश्वर सैल के आलेख का विषय था—"एकता में अनेकता की खोज"। उन्होंने कहा कि कोंकणी लोगों का पुर्तगालियों और हैदर अली के हाथों राजनीतिक दमन हुआ है। इतिहास हमारे विभाजन का गवाह है। हमारा समुदाय चार विभिन्न राज्यों में विभक्त है तथा भौगोलिक रूप से हम एक-दूसरे से अलग हैं। दूर-संचार के सीमित उपलब्ध साधनों द्वारा हमने दूरियों को कम करने का प्रयास किया है। मराठी, कन्नड और पुर्तगाली भाषाओं की तुलना में भाषिक समुदाय अल्पसंख्यक है। एफ़. मार्क वालदेर ने सुझाव दिया कि साहित्यिक संगोष्ठियों तथा सम्मेलनों के आयोजनों द्वारा दूरियों को नज़दीकियों में बदला जा सकता है। क्योंकि इन्हीं संगोष्ठियों के आयोजनों द्वारा वह एक-दूसरे की, आज के समय में बोली जानेवाली उपबोलियों के बारे में जान पाएँगे। उन्होंने ऐसे साहित्यिक कार्यक्रमों के अधिक-से-अधिक संख्या में आयोजन किए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। श्री प्रकाश पारेकर ने कहा कि कोंकणी समुदाय तीन विभिन्न धर्मों में विभाजित है, जो तीन राज्यों में विभिन्न उपबोलियों के साथ फैला हुआ है। कोंकणी भाषा में पाँच विभिन्न लिपियों का प्रयोग किया जाता है। कोंकण समुदाय में विचारों और संस्कृतियों का वैविध्य है।

समापन सत्र में एफ़. वालेरियन फर्नांडिस, डोलफ़ी लोबो और गलैडियस रेगो ने दो दिनों तक चली इस संगोष्ठी का विश्लेषण प्रस्तुत किया। एफ़. ऐरिक क्रस्टा ने समस्त आलेख वाचकों तथा संवादियों को उनके बहुमूल्य विचार प्रस्तुत करने के लिए धन्यवाद दिया।

आद्य रंगाचारी 'श्रीरंग' जन्मशतवार्षिकी राष्ट्रीय संगोष्ठी

24-26 सितंबर 2004, बंगलौर

प्रख्यात कन्नड लेखक आद्य रंगाचारी 'श्रीरंग' की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर 24-26 सितंबर 2004 को सिनेट हॉल, सेण्ट्रल कॉलेज, बंगलौर में एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात रंगकर्मी सुश्री विजया मेहता ने किया तथा प्रख्यात कन्नड लेखक और नाटककार श्री चंद्रशेखर कंबार ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी के सचिव प्रो. के. सच्चिदानंदन ने प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। प्रख्यात कन्नड समालोचक श्री जी. एस. अमूर ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया।

24 सितंबर 2004 को आयोजित प्रथम सत्र का विषय था—'श्रीरंग और भारतीय रंगमंच'। प्रख्यात निर्देशक श्री एम. एस. सत्यु ने सत्र की अध्यक्षता की। बाङ्ला निर्देशक श्री अमित्व राय ने 'श्रीरंग और बाङ्ला रंगमंच' विषय पर; मराठी रंगकर्मी श्री वामन केन्द्रे ने 'श्रीरंग और मराठी रंगमंच' विषय पर तथा मलयाळम् नाटककार श्री वायला वासुदेवन पिल्ले ने 'श्रीरंग और मलयाळम् रंगमंच' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र का विषय था—'श्रीरंग और वैकल्पिक रंगमंच'।



सुश्री विजया मेहता, श्री चंद्रशेखर कंबार, श्री जी.एस. अमूर और प्रो. के. सच्चिदानंदन

इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मराठी नाटककार श्री महेश एलकुंचवार ने की। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, बंगलौर के क्षेत्रीय निदेशक श्री सुरेश अनागल्ली ने 'श्रीरंग और आधुनिक कन्नड रंगमंच' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। मणिपुरी निर्देशक श्री लोकेन्द्र अरिम्बम ने 'मणिपुरी रंगमंच का परिदृश्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

25 सितंबर 2004 को आयोजित तृतीय सत्र का विषय था—'श्रीरंग के नाटक'। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कन्नड नाटककार और निर्देशक श्री प्रसन्ना ने की। प्रख्यात कन्नड समालोचक श्री टी.पी. अशोक और प्रख्यात समालोचक श्री लिंगादेवारु हालेमाने ने क्रमशः 'श्रीरंग के यथार्थवादी नाटक' तथा 'श्रीरंग के एकांकी नाटक' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चतुर्थ सत्र का विषय था—'श्रीरंग और रंगमंच'। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात नाटक-विश्लेषक श्री के. मरुलासिद्धप्पा ने की। कन्नड रंगमंच निर्देशक श्री के. वी. अक्षरा ने 'श्रीरंग के रंगमंच पर विचार' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। कन्नड निर्देशक श्री जे. श्रीनिवासमूर्ति ने 'श्रीरंग और संस्कृत नाटक और नाटककारों' विषय पर तथा प्रख्यात कन्नड लेखक और समालोचक श्री माल्लेपुरम जी. वेंकटेश ने 'श्रीरंग और भगवद्गीता' विषय पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

शाम को, श्री वी. राममूर्ति के निर्देशन में श्रीरंग द्वारा लिखित नाटक 'श्रीपुरंधर' का मंचन बंगलौर से आई 'प्रयोगरंग' नामक रंगमंडली ने किया।

26 सितंबर 2004 को आयोजित पंचम् सत्र का विषय था—'श्रीरंग की अन्य रचनाएँ'। इस सत्र की अध्यक्षता कन्नड कथाकार श्री व्यासराय बल्लाल ने की। कन्नड समालोचक श्री श्यामसुंदर बिद्राकुंडी ने 'श्रीरंग के उपन्यास' विषय पर; कन्नड समालोचक श्री एम. जी. हेगड़े ने 'श्रीरंग की आत्मकथा, जीवनी' विषय पर तथा कन्नड लेखक श्री बासवराजा सादरा ने 'श्रीरंग के सहज निबंध' विषय पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

षष्ठ सत्र का विषय था—'श्रीरंग का जीवन और सामाजिक कार्य'। इस सत्र की अध्यक्षता श्री के.एस. देशपांडे ने की। कन्नड लेखक श्री श्रीनिवास हवानूर ने 'श्रीरंग का जीवन और सामाजिक प्रतिबद्धता' विषय पर तथा कन्नड कवि सिद्धलिंगय्या पट्टनाशेट्टी ने 'सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में श्रीरंग' विषय पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

प्रख्यात कन्नड समालोचक श्री एल.एस. शेषगिरि राव ने समापन-व्याख्यान प्रस्तुत किया। समापन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लेखक और समालोचक श्री गिराड्डी गोविन्दराज ने की। अंत में, साहित्य अकादेमी बंगलौर के क्षेत्रीय सचिव श्री ए. कृष्णमूर्ति ने श्रोताओं का स्वागत किया तथा संगोष्ठी का सारांश प्रस्तुत करते हुए धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

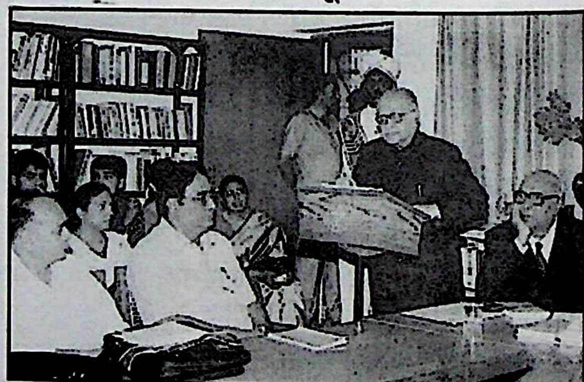
संगोष्ठी के संवादी थे—उषा देसाई, शशि देशपांडे, एच. वी. वेंकटासुब्बय्या, बी. जयश्री, रघुनंदन, बसवलिंगय्या, एच. एस. उमेश, एल. कृष्णप्पा, लक्ष्मी चंद्रशेखर और ना. दामोदर शेट्टी। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में श्रोता उपस्थित हुए तथा मीडिया ने संगोष्ठी के कार्यक्रमों को भली-भाँति प्रकाशित-प्रसारित किया।

'भारत में कारागार लेखन' विषय पर संगोष्ठी

25-27 सितंबर 2004, मैसूर

साहित्य अकादेमी ने ध्वन्यालोक, मैसूर के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भारत में कारागार लेखन' विषय पर 25 से 27 सितंबर 2004 को मैसूर में एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव प्रो. के. सच्चिदानंदन ने अपने स्वागत-भाषण में साहित्यिक समालोचक विक्टर ब्रोम्बेरी के वक्तव्य "कारागार हमारी सभ्यता के पीछे पड़ा है" को उद्धृत किया तथा उन श्रेष्ठ लेखकों जैसे—ऑस्कर वाइल्ड, दोस्तोयव्स्की, एंटन चेखव, टॉलस्टॉय, विक्टर ह्यूगो तथा अन्य लेखकों की



संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम माननीय श्री टी.एन. चतुर्वेदी

ओर ध्यान आकृष्ट किया, जिन्होंने बंदी-गृह में लेखन-कार्य किया। उन्होंने कहा कि इस संगोष्ठी का उद्देश्य कारागार लेखन को एक अभिलेख के रूप में देखना है। उन्होंने विस्मित होकर कहा कि क्या भारत ने कारागार लेखन को भी वही महत्त्व दिया है, जो पाश्चात्य साहित्यिक परंपराओं को दिया है। उन्होंने यह भी कहा कि जब भी राजधर्म-विरोधियों ने व्यवस्था को चुनौती दी है, तब-तब कारागार लेखन से समस्त विधाओं जैसे—आत्मकथा, संस्मरण, पत्र, कविताएँ, कहानियाँ तथा प्रलेख, में हमें रोचक कृतियाँ पढ़ने को मिली हैं।

कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम माननीय श्री टी.एन. चतुर्वेदी ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि महान कारागार लेखकों की कृतियाँ बंदी-गृह के पुलिसकर्मियों का मार्ग निर्देशन करने में सहायक सिद्ध हो सकती हैं। उन्होंने यह इच्छा ज़ाहिर की कि विद्वानों को इस बात की तह में जाना चाहिए कि वास्तव में वह क्या था, जिस कारण से राजनीतिक बंदी इतने लंबे समय तक कारागार में रह पाते थे। क्या इसी कारण से वह बाहरी दुनिया को अपना समर्थन या अपनी तदनुभूति पहुँचा पाते थे? उन्होंने कहा कि गुरु नानक द्वारा लिखित *गुरु ग्रंथ साहिब* संभवतः प्रथम कारागार लेखन है। माननीय राज्यपाल महोदय ने तिलक और नेहरू के कारागार लेखन का तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया।

अपने आरंभिक वक्तव्य में 'ध्वन्यालोक' के निदेशक श्री सी.डी. नरसिम्हा ने प्राचीनकाल तथा ग्रीक मिथकों से कारागार लेखन के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए। अंत में उन्होंने थोरू के वाक्यांश को उद्धृत किया, "हमारे समय में कारागार केवल एक आम आदमी का स्थान है।"

प्रख्यात कवि श्री केकी एन. दारूवाला ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। कारागार लेखन पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि लोकतंत्र के कठिन कार्यों में एक यह है कि इसमें जिन लोगों का प्रतिनिधित्व नहीं होता, उनका भी प्रतिनिधित्व होता है। साहित्य लेखन पर सबका अधिकार है तथा इसके ज़रिए बेआवाज़ों को अपनी बात कहने का अवसर प्राप्त होता है। उन्होंने कहा कि, यहाँ तक कि जिन लोगों को बहुत कष्ट दिए गए हैं तथा वह स्वतंत्रता संग्रामी और अपराधी जिन्हें नक्सलियों के नाम से जाना जाता है, ने भी अपने जेल में बिताए अनुभवों के बारे में लिखा है।

उपसचिव श्रीमती गीतांजलि चटर्जी ने ध्वन्यालोक, मैसूर को साहित्य अकादेमी के साथ मिलकर इस गरिमापूर्ण राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन कराने में दिए गए सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

25 सितंबर 2004 को आयोजित प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री एस. बालाराम गुप्ता ने की। डॉ. रजनीश बहादुर सिंह, श्री अक्षय कुमार और श्री सच्चिदानंद मोहांती ने इस सत्र में अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. सिंह ने 'कारागार में तथा उससे संबंधित मुद्दों पर लिखा गया पंजाबी साहित्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

उन्होंने सर्वप्रथम बाबा ज्वाला सिंह द्वारा लिखित पुस्तक *गद्दर दी ललकार* के संस्मरणों पर चर्चा की गई। इस पुस्तक में ज्वाला सिंह ने बंदी-गृहों के हालातों तथा ब्रिटिश साम्राज्यवादियों द्वारा उन बंदियों पर की गई क्रूरताओं के बारे में लिखा है, जिन्होंने उनके विरुद्ध आवाज़ उठाई थी। उन्होंने बताया कि "भाई रणधीर सिंह के कारागार में लिखे गए पत्र" तथा शहीद भगत सिंह द्वारा जेल में लिखी गई डायरी, कारागार लेखन की उत्कृष्ठ विधाओं में से एक हैं। उन्होंने यह भी बताया कि गुरमुख सिंह मुज़ाफिर द्वारा लिखित कहानियाँ और कविताएँ उनके स्वतंत्रता-संग्राम के आंदोलन के समय में जेल में बिताए गए अनुभवों पर आधारित हैं। श्री अक्षय कुमार ने 'पंजाबी कविता के बदलते संदर्भ' विषय पर तथा श्री सच्चिदानंद मोहांती ने 'भारत में कारागार लेखन : आधुनिक ओड़िसा का दृष्टिकोण' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

26 सितंबर 2004 को द्वितीय सत्र श्री केकी एन. दारूवाला की अध्यक्षता में प्रारंभ हुआ। श्री सुरेश्वर झा ने 'आपातकाल में जयप्रकाश नारायण का कारागार लेखन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री ग़ुलाम नबी ख़याल ने सेण्ट्रल जेल, श्रीनगर में उन्हें मिली सज़ा के दौरान उनके द्वारा किए गए कारागार लेखन पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री वी. कृष्णमूर्ति ने अपना आलेख जयप्रकाश नारायण की जेल डायरी पर प्रस्तुत किया। उन्होंने पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा लिखित *ग्लिम्प्सेज़ ऑफ़ वर्ल्ड हिस्ट्री* और *डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया* के साथ अन्य विशेष महत्त्व रखनेवाले कारागार में किए गए लेखन कार्यों की भी चर्चा की। उन्होंने कार्ल सैण्डबर्ग के जेल अनुभवों की चर्चा से अपने व्याख्यान की

शुरुआत की। उन्होंने सन् 1975 की घटनाओं के बारे में बताया। 'प्रिज़न डायरी' में 15 हफ़्तों (अर्थात् 21 जुलाई से 4 नवंबर 1975) तक का कालखंड समाहित है। इस डायरी की शुरुआत स्वीकारोक्ति से होती है, "मेरी दुनिया मेरे चारों ओर हो रहे गड़बड़-घोटालों के बीच है।" फिर भी हताश होने की आवश्यकता नहीं है। जे.पी. युवाओं और लोगों के लिए लोकतंत्र लाने के लिए पूर्ण क्रांति लाने के लिए आंदोलन चलाने की अपील करते हैं। 'यह संघर्ष पूर्ण क्रांति लाने के लिए आंदोलन चलाने का है, अर्थात् यह क्रांति सामाजिक जीवन और संगठनों के प्रत्येक क्षेत्र में आंदोलन द्वारा बदलाव लाए जाने की अपील है।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लेखक एवं विद्वान श्री सच्चिदानंद मोहांती ने की। श्री सी.पी. रविचंद्रन ने बी.वी. कारंथ की कारागार डायरी पर चर्चा की। श्री चंद्रमोहन के आलेख का विषय था "मैं यहाँ नहीं रह सकता। मैं यहाँ से नहीं जा सकता।" श्री अमिताव हाज़रा ने अपने आलेख का विषय उपेन्द्रनाथ बंद्योपाध्याय द्वारा लिखित *निर्बासितेर आत्मकथा* को चुना। उपेन्द्रनाथ बंद्योपाध्याय को श्री अरबिन्द घोष और बीरेन्द्र कुमार घोष के साथ सन् 1907 में अलीपुर विस्फोट कांड में हिरासत में लिया गया था। वह अलीपुर जेल में अभियोगाधीन क़ैदी के रूप में रहे तथा उन्होंने अंडमान सेलुलर जेल में 12 वर्षों के लिए आजीवन क़ैद की सज़ा काटी। बाङ्ला में लिखी गई उनकी *निर्बासितेर आत्मकथा* एक अद्वितीय कृति है, जो एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ होने के साथ-साथ एक साहित्यिक वृत्तांत भी है। वह इस कृति को लिखने के लिए श्री अरबिन्द घोष के कहे दृढ़कथन 'हमें ब्रिटिश हुकूम से पूर्ण स्वतंत्रता चाहिए' से प्रभावित हुए थे। इस पुस्तक के प्रथम तीन अध्यायों में क्रांतिकारियों के उग्रवाद और धार्मिक तपश्चर्या के बारे में लिखा गया है। इसमें एक स्थान पर टिप्पणी की गई है कि "भोजन करने के प्रथम दिन हमें प्रसन्नता हुई, उसके दूसरे दिन हमें क्रोध आया और तीसरे दिन हमें ऐसा लगा कि हमारे आँसू निकल जाएँगे। ब्रिटिश अफ़सर ने कहा—आख़िर तुम यहाँ आ ही गए! वहाँ तुम वह कोठरी देखते हो। यहाँ पर हम शेरों को पालते हैं।" इस पुस्तक में बंदियों को दिए गए समस्त कष्टों और दंडों के बारे में बड़े ही अपनेपन और सहानुभूतिपूर्ण ढंग से बताया गया है, जो कथानक को त्रासदी की ओर ले जाता है, इसमें युवा क्रांतिकारियों के बारे भी बताया गया है जैसे—इंद्रभूषण राय द्वारा आत्महत्या किया जाना तथा उल्लासकर दत्त का पागल हो जाना। लेखक कहानी का अंत एक अनिश्चित भविष्य की आशा में कर देता है। श्री अमिताव हाज़रा ने अपने आलेख के अंत में टैगोर द्वारा रचित *निर्बासितेर आत्मकथा* के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि यह एक अद्भुत पुस्तक है, मैंने शायद ही कभी ऐसी बाङ्ला पुस्तक पढ़ी होगी।

श्री गुलाम नबी ने चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र में श्री जी.एस. बालाराम गुप्ता ने अपना आलेख 'इस प्रकार, जेल की सलाख़ों के पीछे से बोले बायोजी' विषय पर प्रस्तुत किया। श्री डी.ए. शंकर के आलेख का विषय था—'कला की सक्रियता : यरवदा जेल से गाँधी जी का लेखन।' के.सी. बेल्लिप्पा, अस्मत जहाँ और रहमान अली ने अपने आलेखों में गाँधी और सोयिंका के कारागार लेखन का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया।

पंचम सत्र की अध्यक्षता श्री अक्षय कुमार ने की। इस सत्र में श्री एम.एस. नागराजा राव ने बाहदुरशाह ज़फ़र और उनके जेल में बिताए गए अनुभवों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री आर. रामचंद्र ने अपना आलेख जयप्रकाश नारायण की *प्रिज़न डायरी* पर प्रस्तुत किया। श्री विजय शेषाद्रि ने भी अपना आलेख जयप्रकाश नारायण की विचारधाराओं और *प्रिज़न डायरी* पर प्रस्तुत किया। के.एस. श्रीराम और उमा राम ने अपने आलेखों में एक बिलकुल अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, उनके आलेख का विषय था—'द प्रिज़न रूट टू राम-' जो भद्रचलम द्वारा रामचंद्र पर लिखे गए गीत हैं। यह घटना 17वीं शताब्दी की है। भद्रचलम रामदास गोलकोण्डा सुल्तान के राज्य में तहसीलदार थे। लेकिन उन्होंने राम मंदिर के निर्माण हेतु राज्य का राजस्व ख़र्च करना शुरू कर दिया था। उन्हें गोलकोण्डा क़िले में 12 वर्षों की क़ैद की सज़ा सुनाई गई थी। भक्ति साहित्य में जेल में लिखे गए भक्ति-गीत श्रेष्ठ रचनाओं में गिने जाते हैं।

मीडिया ने संगोष्ठी के कार्यक्रमों को भली-भाँति प्रकाशित-प्रसारित किया। मैसूर के साहित्य-प्रेमियों ने बड़ी संख्या में इस कार्यक्रम में आकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और आलेख वाचकों के समक्ष अनी जिज्ञासाएँ रखीं। संगोष्ठी में स्वच्छंदता से विचारों को प्रस्तुत किया गया। मैसूर के

विद्वानों और लेखकों ने साहित्य अकादेमी और ध्वन्यालोक को इस संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

'आज का कश्मीरी अदब और इंसान दोस्ती' विषय पर परिसंवाद

1 अक्तूबर 2004, श्रीनगर

साहित्य अकादेमी ने श्रीनगर, कश्मीर के होटल ब्रोडवे में 'आज का कश्मीरी अदब और इंसान दोस्ती' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया।

श्री रहमान राही ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने संक्षिप्त रूप से बदलते समय के बारे में बताया और यह भी बताया कि गत 50 वर्षों से अब तक किस प्रकार इंसान दोस्ती कश्मीरी साहित्य का हिस्सा बनी हुई है। एम.वाई. टैंग, नीरजा मट्टू, एम.एच. ज़ाफ़र, नसीम शाफ़े, फ़ारूक़ फयाज़ और हूमरा कुरैशी ने अपने विचार प्रस्तुत किए। साहित्य अकादेमी के कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक मो. ज़मान आज़ुर्दा ने अपने व्याख्यान में कहा कि कश्मीरी साहित्य में कुछ नई प्रवृत्तियों के साथ निश्चितरूप से बदलाव आ रहे हैं। अधिकाधिक युवा लेखक अपनी अनुभूतियों को प्रस्तुत कर रहे हैं तथा कई लेखिकाएँ अपनी खीज, व्यथा और दुर्दशा को उन्मुक्तता से प्रस्तुत कर रही हैं। कार्यक्रम में कई साहित्यिक विद्वानों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

गोपालकृष्ण अडिग पर द्विदिवसीय संगोष्ठी

1-2 अक्तूबर 2004, बंगलौर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बंगलौर ने प्रख्यात कन्नड लेखक गोपालकृष्ण अडिग पर 1-2 अक्तूबर 2004 को सुराना कॉलेज, बंगलौर के सहयोग से एक द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन, उन्हीं के कॉलेज परिसर में किया।

प्रख्यात मराठी कथाकार श्री विश्वास पाटिल ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। सुराना कॉलेज की संस्थापक ट्रस्टी सुश्री अर्चना सुराना, ललिता गोपालकृष्ण अडिग, ए. कृष्णमूर्ति, कन्नड विश्वविद्यालय के कुलपति बी.ए. विवेक राय, कन्नड विद्वान जी. वेंकटासुबय्या, कन्नड साहित्य परिषद् के अध्यक्ष हरिकृष्ण पुरारुर और सुराना कॉलेज के प्राचार्य श्री के.ई. राधाकृष्ण ने उद्घाटन सत्र में भाग लिया।

दो दिनों तक चले इस विचार-विमर्श में प्रख्यात कन्नड लेखकों और समालोचकों, जैसे—राजेन्द्र चेन्नी, मुरलीधर उपाध्याय, जी.एच. नायक, शिवराम पाडिक्कल, माल्लेपुरम जी. वेंकटेश, पद्म शेखर, पट्टाभिराम सोमयाजी, राघवेन्द्र पाटिल, चंद्रशेखर नेजली, जयंत कइकिनी, बी.सी. रामचंद्र शर्मा, सुमतीन्द्र नाडिग, कि. राम नागराजा और बी.वी. केडलिया ने अडिग की साहित्यिक सृजनात्मकता के विविध आयामों पर अपने विचार व्यक्त किए।

'स्वातंत्र्योत्तर तेलुगु साहित्य की प्रमुख प्रवृतियाँ' विषय पर संगोष्ठी

8-10 अक्तूबर 2004, मछलीपट्टनम

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बंगलौर ने मछलीपट्टनम साहित्य समस्थला समाख्या, मछलीपट्टनम के सहयोग से 8 से 10 अक्तूबर 2004 को 'स्वातंत्र्योत्तर तेलुगु साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ' विषय पर एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन श्री मुटनूरी कृष्णराय पुरामंदिरम् में किया।

श्रीवाणी के संपादक श्री कुमारगिरि कृष्णमोहन राव ने मंच पर उपस्थित प्रतिष्ठित व्यक्तियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने जी.वी. सुब्रह्मण्यम और अकादेमी का मछलीपट्टनम में इस संगोष्ठी के आयोजन किए जाने के लिए धन्यवाद दिया। आंध्र प्रदेश के कृष्णा ज़िले के ज़िलाधीश श्री के. प्रभाकर रेड्डी ने दीप प्रज्वलित कर संगोष्ठी का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन व्याख्यान में उन्होंने अकादेमी द्वारा अपना कार्यक्रम एक ऐसे स्थान पर, जो तेलुगु के कई महान साहित्यिक दिग्गजों की जन्मभूमि है, पर आयोजित किए जाने की सराहना की। साहित्य अकादेमी की तेलुगुं परामर्श मंडल के संयोजक श्री जी.वी. सुब्रह्मण्यम ने अकादेमी द्वारा अपनी गतिविधियों में भारतीय साहित्य तथा वैश्विक साहित्य के परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषाओं के प्रति अपनाए गए नए दृष्टिकोण के बारे में बताया। अर्श विज्ञान ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष न्यायाधीश पी. कोन्द्रारमय्या इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कहा कि चाहे कोई भी कविता हो, उसमें रस का आनंद आवश्यक होना चाहिए। श्री अग्रहारा कृष्णमूर्ति ने अतिथियों और श्रोताओं का स्वागत करते हुए उन्हें अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराया।

प्रथम सत्र का विषय था—'दक्षिण भारतीय साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ।' इस सत्र की अध्यक्षता पोथुकूची संभाशिव राव ने की। उन्होंने कहा कि तेलुगु साहित्य की विभिन्न विधाओं की पूर्ण रूप से तथा समय-समय पर समीक्षा करने की आवश्यकता है। आर.वी.एस. सुंदरम ने 'कन्नड़ साहित्य की प्रवृत्तियाँ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने तेलुगु और कन्नड की विभिन्न विधाओं की तुलना प्रस्तुत की तथा यह भी बताया कि किस प्रकार से आधुनिक कन्नड साहित्य का प्रारंभ नवोदय से हुआ, तदुपरांत वह नव्या में विकसित हुआ और फिर शनैः-शनैः वह आधुनिक प्रवृत्तियों के अनुकूल ढल गया। ई.पी. राजगोपालन ने 'मलयाळम् साहित्य की प्रवृत्तियाँ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि साहित्य सारांश रूप में और अपने महत्त्व में उपनिवेशवाद विरोधी है, किन्तु पश्चिमी प्रभाव इसका प्रेरणा स्रोत है।

श्री जी.वी. सुब्रह्मण्यम ने 'तेलुगु साहित्य की प्रवृत्तियाँ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कथा साहित्य कविता से अधिक प्रभावशाली और सशक्त है तथा वह जीवनानुभवों को प्रतिबिम्बित करता है।

दूसरे सत्र का विषय था—'तेलुगु कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ।' बेथावोलु रामब्रह्मम ने इस सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने यह आशा जताई कि यह संगोष्ठी एक नई अंतर्दृष्टि प्रदान करेगी, और उन्होंने सृजनात्मक लेखकों को जाति/रंगभेद की राजनीति से दूर रहने तथा उन्हें एकजुट होकर उत्कृष्ट साहित्य रचने तथा उसे पहचान दिलाने की अपील की। श्री नागाल्ला गुरुप्रसाद राव विशेष आमंत्रित अतिथि थे। उन्होंने बताया कि समस्त तेलुगु कविता के आंदोलनों का जन्म लोकतंत्र के नाम पर होनेवाले अत्याचारों के कारण हुआ और जहाँ तक उसमें सच्चाई को उजागर करने की बात है या भावाभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रश्न है, उसे स्वीकार किया जा सकता है। श्री कोवेला संपतकुमाराचार्य के आलेख का विषय था—'नव्य संप्रदायम (आधुनिक परंपराएँ)।' श्री के. संजीव राव 'शिखामणि' ने अपने 'प्रगतिशील दिगंबर एवं क्रांतिकारी कविता की प्रवृत्तियाँ' विषयक आलेख में कविता की विभिन्न विधाओं के उत्स और विकास पर चर्चा की। कात्यायनी विदमाहे ने अपने आलेख में नारीवादी और दलित कविता का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। 'अल्पसंख्यक कविता' विषयक अपने आलेख में शमीरुल्लाह ने कहा कि अल्पसंख्यक कविता अल्पसंख्यक लोगों की पहचान और भावाभिव्यक्ति की खोज करती है।

तीसरे सत्र में, जो 'तेलुगु कथा साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ' विषय पर आधारित था, में श्री पोरंकी दक्षिणामूर्ति ने तेलुगु कथा साहित्य की प्रवृत्तियों के बारे में बताया। मुदिगोंडा शिवप्रसाद ने 'ऐतिहासिकता और तेलुगु उपन्यास' विषयक अपने आलेख में 'इतिहास' और 'ऐतिहासिकता' के अंतर को व्याख्यायित किया। सी. मृणालिणी ने 'उपन्यास में मनोविश्लेषण' विषयक अपने आलेख में 12 मनोविश्लेषणवादी उपन्यासों के बारे में बताया। एम. सुजाता रेड्डी ने 'नारीवाद और दलित संवेदना' विषयक अपने आलेख में पूर्व-स्वतंत्रताकाल में स्त्रियों और निम्न जाति के लोगों की दुर्दशा तथा उस काल की सामाजिक कुरीतियों के बारे में बताया और यह भी बताया कि किस प्रकार ये मुद्दे विशेषरूप से कथा साहित्य का अंग बन गए।

10 अक्तूबर 2004 को आयोजित चौथे सत्र का विषय था 'नाटक और मीडिया की प्रमुख प्रवृत्तियाँ।' इस सत्र की अध्यक्षता जी. कृपाचारी ने की। इन दोनों विधाओं की वर्तमान प्रवृत्तियों पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि सृजनात्मक कार्यों की उत्कृष्टता में आई कमी के कारण पाठकों की संख्या में कमी आई है। 'नाटक' विषय पर प्रस्तुत किए गए अपने आलेख में श्री विजय भास्कर ने कहा कि तेलुगु नाटकों की प्रमुख विशेषता यह है कि इसके कथानकों का न केवल आंतरिक मुद्दों पर प्रयोग वरन् विश्व के समकालीन मुद्दों पर भी प्रयोग किया जाता है। टी. उदयावरलु ने 'प्रिण्ट-मीडिया की प्रवृत्तियाँ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं की भूमिका पर असंतोष व्यक्त किया। वोलेटी पर्वाथीशम के आलेख का विषय था—'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की प्रवृत्तियाँ।' उन्होंने उन दिनों के बारे में बताया जब एक शहर या समुदाय के लोग ख़बरें सुनने के लिए एक रेडियो सेट के चारों ओर एकत्रित हो जाया करते थे और आज हालात बदल चुके हैं, जब लोग अपने घरों में ही बैठकर दुनिया का हाल जान लेते हैं। उन्होंने अंत में कहा कि तेलुगु भाषा की समृद्ध संस्कृतियों और साहित्यिक विरासतों को मीडिया के अभिलेखागारों में संरक्षित किया गया है।

अंतिम सत्र का विषय था—'साहित्यिक समालोचना की प्रवृत्तियाँ।' इस सत्र की अध्यक्षता अवुला मंजूलता ने की। श्री के. सुप्रसन्ना ने 'सौन्दर्यपरक समालोचना' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने तेलुगु साहित्य में व्याप्त सौन्दर्यपरक समालोचना का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया। श्री कदियाला राममोहन राय ने 'मार्क्सवादी समालोचना' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि तेलुगु कवि मार्क्सवादी सिद्धांतों से बहुत अधिक प्रभावित हैं। के. मधुज्योति ने 'दलित सौन्दर्यपरकता' विषयक अपने आलेख में दलित साहित्य के उत्स तथा उसकी प्रवृत्तियों के बारे में बताया। श्री के. कोटेश्वर राव ने 'कथा साहित्य में वैश्वीकरण' विषयक अपने आलेख में कहा कि आंध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्रों में नारियल पानी ने कोकाकोला संस्कृति को दूर रखा हुआ है। श्री आर. सीताराम राव ने 'उत्तर-आधुनिक समालोचना' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

10 अक्तूबर 2004 को समापन सत्र का आयोजन किया गया। सद्गुरु के. शिवनंदमूर्ति ने इस सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि ऐसा कुछ भी नहीं है, जिस पर साहित्य रचना न की जा सके; भारतीय साहित्य पूर्णतः दर्शनशास्त्र तथा मानव जाति के कल्याण पर आधारित है। जी.वी. सुब्रह्मण्यम ने संगोष्ठी में हुई चर्चा का संक्षिप्त सार प्रस्तुत किया और कहा कि तेलुगु साहित्य की विविध विधाओं की समय-समय पर समीक्षा की जानी चाहिए।

श्री अग्रहारा कृष्णमूर्ति ने मछलीपट्टनम के साहित्यिक भ्रातृसंघ को धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने स्थानीय सहयोगियों और मीडिया को भी इस संगोष्ठी के भली-भाँति प्रचार-प्रसार के लिए धन्यवाद दिया।

'गुजराती साहित्य की नई प्रवृत्तियाँ' (1975-2000) विषय पर संगोष्ठी

9-10 अक्तूबर 2004, अहमदाबाद

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने गुजरात साहित्य अकादमी, गाँधीनगर के सहयोग से 'गुजराती साहित्य की नई प्रवृत्तियाँ' (1975-2000) विषय पर 9-10 अक्तूबर 2004 को एक द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 'गोवर्धन स्मृति मंदिर', गुजराती साहित्य परिषद्, अहमदाबाद में किया। गुजरात



श्री शिरीष पांचाल, श्री भोलाभाई पटेल, वरदराज पंडित और श्री प्रकाश भातंब्रेकर

साहित्य अकादमी के रजिस्ट्रार वरदराज पंडित ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। अपने व्याख्यान में उन्होंने गुजरात अकादमी की विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया। अपने उद्घाटन व्याख्यान में प्रख्यात गुजराती लेखक एवं साहित्य अकादेमी के गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक श्री भोलाभाई पटेल ने संगोष्ठी के विषय का परिचय दिया। उन्होंने कहा कि आधुनिक गुजराती साहित्य एक महत्त्वपूर्ण प्रस्थान बिन्दु साठ के दशक में तब आया, जब सुरेश जोशी के कहानी-संग्रह *गृह-प्रवेश* का प्रकाशन हुआ।

गुजराती के आचार्य एवं समालोचक श्री शिरीष पांचाल ने अपने बीज-भाषण में प्राचीन तथा वर्तमान समय के संदर्भ में नव प्रवृत्तियों के बारे में बताया। गुजराती लेखकों की आलोचना करते हुए श्री पांचाल ने कहा कि उन्होंने सृजनात्मक लेखन को अत्यंत संकुचित बना दिया है। उद्घाटन-सत्र के अंत में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री प्रकाश भातंब्रेकर ने धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रख्यात आधुनिक कवि एवं नाटककार श्री लाभशंकर ठाकेर ने 'कविता और नाटक' विषय पर आधारित प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। अपने आरंभिक वक्तवय में उन्होंने किसी भी प्रकार के लेखन के लिए पूर्ण चेतना होने की आवश्यकता पर बल दिया। श्री विनोद जोशी ने कुछ महत्त्वपूर्ण कवियों के संदर्भ में विशेषरूप से गुजराती कविता की नव प्रवृत्तियों और उनमें आए बदलावों के बारे में बताया। उन्होंने ग़ज़लों और गीतों के रचनाधिक्य की निन्दा की। श्री राजेश पाण्ड्या ने

गत ढाई दशकों में कवियों द्वारा अर्जित की गई उपलब्धियों के बारे में बताया।

10 अक्तूबर 2004 को आयोजित सत्र का विषय था—'गुजराती कहानियों और उपन्यासों में आई नव-प्रवृत्तियाँ।' इस सत्र की अध्यक्षता श्री रघुवीर चौधुरी ने की। उन्होंने कहा कि किसी भी साहित्य में 'शब्द' का बड़ा महत्त्व होता है। गाँधी जी, से प्रभावित होकर लेखकों की भाषा में बड़ा बदलाव आया था। सुविख्यात अनुवादक और समालोचक सुश्री अनिला दलाल ने कहा कि सुरेश जोशी द्वारा लिखित नई कहानियों के आने से एक नई विधा का आगमन हुआ है, जो कि एक-दूसरे में मिलकर एक पूर्णतः नई विधा को जन्म देती हैं। प्रख्यात कथाकार और दलित साहित्य के प्रचारक श्री मोहन परमार ने अपने आलेख में गत तीन दशकों की कहानियों की विषय-वस्तुओं के बारे में बताया।

बिन्दु भट्ट ने चार विभिन्न पद्धतियोंवाले गुजराती उपन्यासों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय उपन्यासों ने भाषा को एक नई विधा दी है। उपन्यासकार तथा दलित जागरूकता के कहानीकार योसफ़ मैकवान इस अवसर पर उपस्थित नहीं थे, उनके स्थान पर उनका आलेख मणिलाल एच. पटेल ने पढ़ा। अपने आलेख में उन्होंने कहा कि ग़ैर-दलित लेखकों ने दलित जागरूकता का सत्यनिष्ठा से अपने साहित्य में उल्लेख नहीं किया है। अंत में, श्री रघुवीर चौधुरी ने अपना अध्यक्षीय व्याख्यान दिया। उन्होंने वक्ताओं की सराहना की तथा तीन महान् उपन्यासकारों—धीरूबेन पटेल, वीणेश अंतानी और ध्रुव भट्ट के बारे में बताया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री कुमारपाल देसाई ने की। इस सत्र में निबंधों और समालोचनाओं पर आलेख प्रस्तुत किए गए। निबंधकार और समालोचक श्री प्रवीण दर्जी ने कहा कि कोई भी 'निबंध' को केवल अपना सृजन नहीं कह सकता। भाषा की बात करते हुए उन्होंने कहा कि 'गद्य' निबंध की आत्मा होती है। किसी भी कविता द्वारा एक अच्छे निबंध की रचना नहीं की जा सकती। कवि, उपन्यासकार और कहानी लेखक श्री मणिलाल एच. पटेल ने कहा कि निबंध के विशाल कार्य क्षेत्र में किसी का भी अपने व्यक्तित्व को परिलक्षित कर पाना बहुत कठिन है।

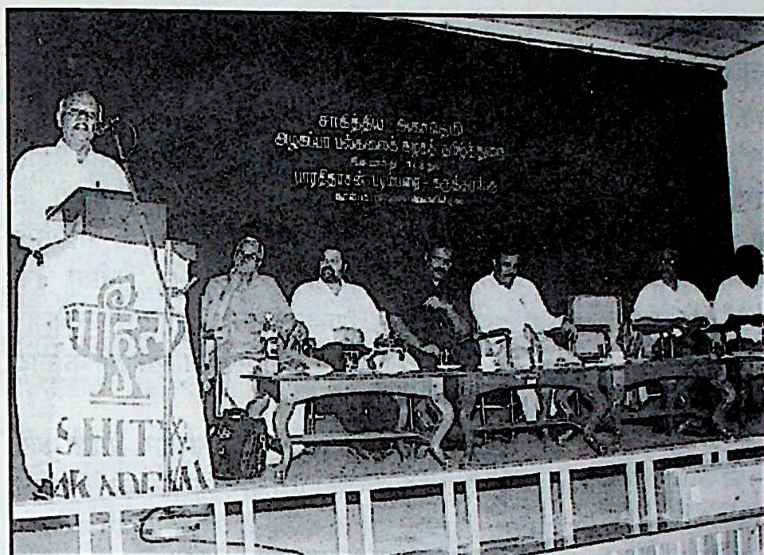
अंतिम सत्र के दूसरे भाग में 'समालोचना' पर चर्चा की गई। श्री रमेश दवे ने समालोचना को एक बौद्धिक व्यवहार की संज्ञा दी। 80 और 90 के दशकों की समालोचना की समीक्षा के दौरान उन्होंने उसमें कोई ख़ास बदलाव नहीं पाया है। उन्होंने कहा कि इसमें बहुत अधिक साहित्यिक अनुशासनहीनता है। उन्होंने गत तीन दशकों की समालोचनात्मक उपलब्धियों पर भी प्रकाश डाला। भारत मेहता ने कहा कि सन् 1975 से 2000 तक का कालखंड सुरेश जोशी से बहुत अधिक प्रभावित था। उनका संरचनावाद की ओर पूर्वाभिमुखीकरण उनकी समालोचना के मार्ग में सबसे बड़ा अवरोधक सिद्ध हुआ। कार्यक्रम के अंत में श्री कुमारपाल देसाई ने संगोष्ठी में हुए विचार-विमर्श का संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में गुजराती में सृजनात्मक निबंध-लेखन में अधिक वृद्धि हुई है। संगोष्ठी के अंत में गुजरात साहित्य अकादमी के रजिस्ट्रार श्री वरदराज पंडित ने धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'भारतीदासन की कविता परंपरा' विषय पर संगोष्ठी
15 अक्तूबर 2004, कारैकुडि

'भारतीदासन की कविता परंपरा' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 15 अक्तूबर 2004 को कारैकुडि स्थित अलगप्पा विश्वविद्यालय के तमिऴ विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में अलगप्पा विश्वविद्यालय के सभागार में आयोजित किया गया।

उद्घाटन कार्यक्रम का आरंभ तमिऴ थाइ वाऴ्थु (तमिऴ भाषा के स्तुति-पाठ) से हुआ। श्री अग्रहारा कृष्णमूर्ति ने श्रोताओं तथा मंच पर उपस्थित विद्वानों का स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताते हुए अकादेमी द्वारा हाल ही में तमिऴ में आयोजित कार्यक्रमों जैसे 'लेखक से भेंट' तथा 'मेरे झरोखे से', जिसमें अकादेमी के महत्तर सदस्य श्री डी. जयकांतन ने भारतीदासन पर अपने विचार व्यक्त किए थे, के बारे में बताया।

अलगप्पा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पी.कन्नीप्पन ने उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता की। डॉ. कन्नीप्पन ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में बताया कि भारतीदासन का असली नाम कनक सुब्बुरत्नम था, किन्तु सुब्रह्मण्यम् भारती के प्रति उनके सम्मान, प्रेम और लगाव की वजह से उन्होंने अपना नाम बदलकर भारतीदासन रख लिया। भारतीदासन ने



संगोष्ठी के उद्‌घाटन का दृश्य

श्री एम. पांडी ने उपस्थित श्रोताओं और विद्वानों को धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता कवि वेज़हवेनदन ने की, जो स्वयं भारतीदासन के अनुयायी हैं। सर्वश्री आर. बालसुब्रह्मण्यम्, ए. अरिवुनाम्बी और एम. पांडी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता तमिष़ कवि एवं साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता श्री सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम् ने की। उन्होंने भारतीदासन द्वारा उनको मिले प्रोत्साहन के बारे में बताया। सुश्री सेनथामिल पावई, एस. राजाराम और एम. नटेशन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

राष्ट्रवादी कविताएँ लिखीं तथा वह तमिष़ के पहले ऐसे क्रांतिकारी कवि थे, जिन्होंने कविता को एक नई भाषा प्रदान की। उन्होंने यह भी कहा कि केवल मनुष्य की मृत्यु होती है, किन्तु कवियों की नहीं और यह संगोष्ठी इसका प्रमाण है।

अलगप्पा विश्वविद्यालय के तमिष़ विभाग के आचार्य एवं प्रमुख श्री आर. बालसुब्रह्मण्यन ने अपने आरंभिक व्याख्यान आलेख वाचकों को विशेषरूप से भारतीदासन के समकालीन कवियों तथा उनके अनुयायियों पर ध्यान केन्द्रित करने को कहा। उन्होंने अकादेमी का इस संगोष्ठी के आयोजन के लिए आभार भी व्यक्त किया।

संगोष्ठी का उद्‌घाटन करते हुए श्री आर. बालचंद्रन 'बाला' ने कहा कि कविता अंतर्मन से की जानी चाहिए और इस दिशा में तमिष़ भाषा में दो महान आधुनिक कवि हैं—सुब्रह्मण्यम् भारती और भारतीदासन। उन्होंने यह भी बताया कि भारतीदासन ने अपने काव्य के द्वारा महिलाओं की स्वतंत्रता तथा महिलाओं को शिक्षित करने के लिए भी आवाज़ उठाई।

तमिलनाडु जन सेवा आयोग के सदस्य श्री आर. पेरूमल ने अपने बीज-भाषण में भारतीदासन के काव्य के विविध आयामों के बारे में बताया। उन्होंने यह भी कहा कि कोई भी भारतीदासन के प्रभाव को देख सकता है, जिसने उनके परवर्ती कवियों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

समापन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति ने की। साहित्य अकादेमी के चेन्नई कार्यालय के प्रभारी अधिकारी श्री एस. जितेन्द्रनाथ ने श्रोताओं का स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने विश्वविद्यालय के सहयोग से ऐसे और कार्यक्रम आयोजित करने की इच्छा ज़ाहिर की। श्री आर. मोहन ने विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया।

थावथीरू पोन्नमबाला आदिकलर ने समापन व्याख्यान देते हुए दोनों संस्थाओं का ऐसे महान कवि पर संगोष्ठी आयोजित करने के लिए आभार व्यक्त किया, जिसने सामान्यरूप से कविता के क्षेत्र में तथा विशेषरूप से तमिष़ भाषा के क्षेत्र में अपनी गहरी छाप छोड़ी है।

श्री आर. बालसुब्रह्मण्यम् ने धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम को मीडिया ने भली-भाँति प्रचारित-प्रसारित किया।

काव्यभारती : अखिल भारतीय कवि सम्मिलन
17-19 अक्तूबर 2004, मुंबई

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने भारतीय कविता के स्वर्ण जयंती समारोहों की शृंखला में 'काव्यभारती' शीर्षक कार्यक्रम का आयोजन 17-19 अक्तूबर 2004 को रवीन्द्र नाट्य मंदिर, मुंबई में आयोजित किया।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग ने उद्‌घाटन सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी के सचिव

प्रो. के. सच्चिदानंदन ने प्रारंभ में अतिथियों और उपस्थित श्रोताओं का स्वागत किया। अपने स्वागत-भाषण में उन्होंने काव्यभारती के गत पाँच हज़ार वर्षों के दार्शनिक भक्तिकाल के युग से लेकर आधुनिक काल तक की टीस, वेदना और संकटपूर्ण अस्तित्व के बारे में बताया। वह काव्यभारती, जिसने सदैव मानव-जाति के कल्याण, अहिंसा तथा मानवता के अस्तित्व के लिए आवाज़ उठाई है, ने अपनी मासूमियत आधुनिक तकनीक तथा निरंतर संघर्ष, दहशत और हिंसा से भरी मशीनी ज़िन्दगी के आगे खो दी है। दुर्भाग्यवश आधुनिक विचारधाराएँ मानव जाति को नफ़रत का पाठ पढ़ा रही हैं तथा विश्वव्यापी भ्रष्टाचार ने कविता को भी अपनी चपेट में ले लिया है। उन्होंने कहा कि काव्यभारती कविता की शाश्वतता और अदम्यता को मनाने का उत्सव है।

प्रख्यात इस्लामी विद्वान श्री रफ़ीक़ ज़करिया ने सत्र का उद्घाटन किया। अपने व्याख्यान में उन्होंने विशेषरूप से गुदगुदानेवाले कथा साहित्य तथा कवियों के चिकने-चुपड़े कार्यों द्वारा गीतों/कविताओं को अर्थहीन बना देने के ख़तरों से सावधान रहने को कहा। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में प्रो. नारंग ने कहा कि विभिन्न भाषाओं के बहुत से साहित्यों को देकर लगता है कि कविता जीवित है। उन्होंने कहा, 'कविता साहित्य का सार है' एक संवाददाता द्वारा पूछे गए एक प्रश्न क्या कविता बिना बिके जीवित रह सकती है? का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि कविता अमर है। कविता के भविष्य को लेकर परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। लोग अच्छा काव्य ख़रीदते हैं। उन्होंने कहा कि अकादेमी निरंतर उत्कृष्ट साहित्य को प्रोत्साहित करती रहेगी। उन्होंने कहा कि इस उत्सव में विभिन्न भाषाओं के कवियों के आने से उन्होंने यह सिद्ध किया है कि काव्य का स्वर प्रदोलनकारी है।

उद्घाटन सत्र में, के. अय्यप्प पणिक्कर, विन्दा करंदिकर, गुलज़ार, जावेद अख़्तर, नीलमणि फूकन, सुनील गंगोपाध्याय, केकी एन. दारूवाला और पद्मा सचदेव ने अपनी कविताएँ पढ़ीं।

इंडियन लिटरेचर के संपादक श्री निर्मलकांति भट्टाचार्जी ने धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

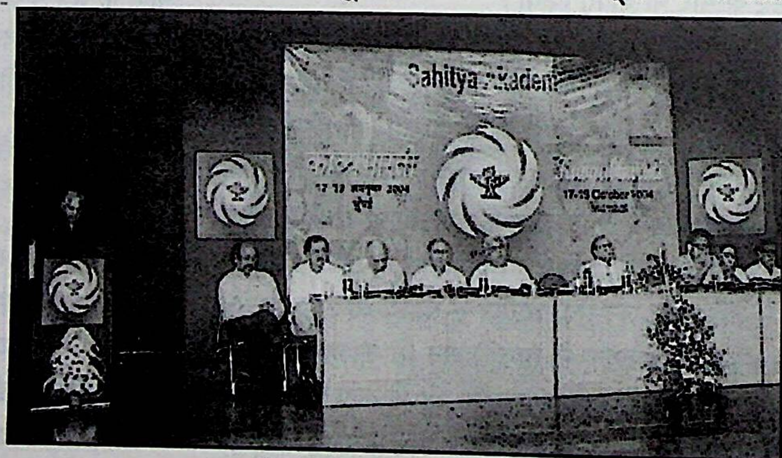
प्रथम सत्र में सचिव महोदय ने प्रतिभागियों का परिचय दिया तथा सत्र का संचालन करने के लिए श्री नारायण सुर्वे को आमंत्रित किया। उन्होंने यह सुझाया कि प्रत्येक कवि/कवयित्री पहले अपनी मातृभाषा में अपनी कविता प्रस्तुत करे। तत्पश्चात् वह अपनी बाक़ी की कविताओं के हिन्दी/अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत करें। इस सत्र के प्रतिभागी कवि थे—अनुभव तुलसी, विजय नामबिसन, सुनीता जैन, बालाचंद्रन चुल्लिक्काड, नामदेव ढसाल और तरन्नुम रिआज़। सत्र के अंत में श्री नारायण सुर्वे ने अपनी टिप्पणियों के साथ अपनी कविताएँ भी प्रस्तुत कीं।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात भारतीय अंग्रेज़ी कवि श्री यूनिस डीसूज़ा ने की। इस सत्र के आलेख वक्ता थे—प्रबल कुमार बसु (बाङ्ला), नागेश करमाली (कोंकणी), स्वरूप वाई. ध्रुव (गुजराती), इब्राहीम अश्क (उर्दू और हिन्दी) तथा यूनिस डीसूज़ा (अंग्रेज़ी)।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात उर्दू शायर श्री ए.एम. के. शहरयार ने की। प्रख्यात कन्नड कवि कनक हा.मा. ने स्त्री-संवेदनशीलता संबंधित दो कन्नड कविताएँ प्रस्तुत कीं। तत्पश्चात् शरतचंद्र थियम (मणिपुरी), शफ़ी शौक़ (कश्मीरी) और अबब्दुल अहद साज (उर्दू) ने भी अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

कार्यक्रम के अंत में, रणजीत होसकोटे, के. सच्चिदानंदन, अनुराधा पाटिल, कणिमोष़ी करुणानिधि, के. शिवा रेड्डी और चंद्रशेखर कंबार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

19 अक्तूबर 2004 को आयोजित पंचम् सत्र की अध्यक्षता



कवि सम्मिलन का उद्घाटन सत्र

श्री सुरेश दलाल ने की। इस सत्र में मल्लिका सेनगुप्ता, अरुंधती सुब्रह्मण्यम, नरेश सक्सेना, वसंत आभा जी दाहके और हर्षदेव माधव ने अपनी कविताएँ पढ़ीं। षष्ठ सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात पंजाबी कवि श्री सुरजीत पातर ने की। बद्री नारायण (हिन्दी), उदय नारायण सिंह (मैथिली), सूर्य मिश्रा (ओड़िया) और के. गीता (तेलुगु) ने अपनी कविताएँ पढ़ीं।

सप्तम् सत्र में, हिन्दी, कन्नड, अंग्रेज़ी गुजराती, राजस्थानी, तमिष़ और मणिपुरी भाषा के कवियों जैसे—कैलाश वाजपेयी, प्रतिभा नंदकुमार, दिलीप झवेरी, चंद्रप्रकाश देवल, मु. मेहता और थाङजम इबोपिशाक सिंह ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

समापन सत्र में, बापु रेड्डी (तेलुगु), अंजु मखीजा (अंग्रेज़ी), मोहनजीत सिंह (पंजाबी), कृशिन राही (सिन्धी), शीन काफ़ निज़ाम (उर्दू) और निदा फ़ाजली (उर्दू) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। साहित्य अकादेमी, मुंबई के क्षेत्रीय सचिव श्री प्रकाश भातंब्रेकर ने धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'बदलते हुए मलयाळम् भाषा और समाज' विषय पर संगोष्ठी

21-22 अक्तूबर 2004, त्रिचूर

साहित्य अकादेमी, चेन्नई ने द थुंचन मेमोरियल ट्रस्ट के आतिथ्य में 21-22 अक्तूबर 2004 को 'बदलते हुए मलयाळम् भाषा और समाज' विषय पर एक द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन थुंचन परंबु में किया। साहित्य अकादेमी, चेन्नई कार्यालय के प्रभारी अधिकारी श्री एस. जितेन्द्रनाथ ने मंच पर उपस्थित विद्वानों तथा सभागार में उपस्थित श्रोताओं का स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी इस संगोष्ठी का आयोजन कर गौरवान्वित महसूस कर रही है क्योंकि इस देवभूमि पर इज़हुट्टचन ने पहली बार मलयाळम् भाषा में बदलाव लाने की पहल की थी तथा उनके नाम पर इस संस्था का नाम पड़ा।



अपना आलेख पढ़ते हुए श्री के.पी. रहमान उन्नी

साहित्य अकादेमी की मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक तथा द थुंचन मेमोरियल ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री एम. टी. वासुदेवन नायर ने उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता की। श्री एम.टी. वासुदेवन नायर ने कहा कि यह बड़े दुःख की बात है कि मलयाली समाज आज ऐसे मुक़ाम पर पहुँच गया है, जहाँ पर हमारे आचार-व्यवहार, संस्कृति, भाषा तथा साहित्य में आमूल-चूल बदलाव आ गए हैं। उन्होंने यह भी कहा कि मलयाली समाज बेशक़ ख़ुद को आधुनिकतावादी होने का दावा करता है, किन्तु अब तक उन्होंने आधुनिकतावाद की परिधि में क़दम भी नहीं रखा है। आधुनिकतावाद का फ़ीता लगाने के स्थान पर, हमें अपनी आत्मा को देदीप्यमान करना चाहिए; और जब तक ऐसा नहीं होता, तब एक मलयाली आधुनिकतावादी नहीं बन सकता।

श्री एम.टी. वासुदेवन नायर ने अपने भाषण के अंत में कहा कि अब हम किसी को भी अपनी दुःख-तकलीफ़ों को संप्रेषित कर पाने में असमर्थ हैं। उपभोक्तावाद की संस्कृति ने मलयालियों को कंगाल बना दिया है, जिसके परिणामस्वरूप लोग आत्महत्याएँ कर रहे हैं। मलयाली समाज को इन दुःख-तकलीफ़ों से बाहर निकलने के लिए जीवन की वास्तविकताओं को समय और स्थान के आधार पर पुनर्मूल्यांकित करना चाहिए।

प्रख्यात इतिहासकार एवं श्री शंकर संस्कृत विश्व-विद्यालय, कलाडी के कुलपति श्री के.एन. पणिक्कर ने द्विदिवसीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन व्याख्यान में उन्होंने कहा कि केरल के संप्रदायवादियों ने पुनर्जागरण को केरल की आत्मा बना दिया है—जो एक दिव्य गाय की भाँति है। वे मलयाली, जो स्वयं को सुसंस्कृत जीवन का अंग मानते हैं, ने भी औपनिवेशिक शक्तियों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया है। पुनर्जागरण से प्रभावित किसी मलयाली का मिल पाना बड़ा कठिन है; और अब मलयाली मानवीय देवताओं के सम्मुख खड़े हैं और वे नव मंदिरों के

निर्माण की अग्रपंक्ति में खड़े हैं। आजकल मूर्ति पूजा एक व्यापार बन गया है तथा मलयाली समाज अंधविश्वासों और जीवन की विसंगतियों का केन्द्र बिन्दु बन गया है। वैश्वीकरण ने मलयालियों को बहुत प्रभावित किया है। अब नए उत्पादों का परीक्षण पहले केरल में होता है। श्री पणिक्कर ने मलयालियों को इन ख़तरों से सावधान रहने के लिए चेतावनी भी दी।

थुंचन मेमोरियल ट्रस्ट के सचिव श्री पी. नंदकुमार ने धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र का विषय था—'बदलते व्यवहार'। इस सत्र की अध्यक्षता मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य श्री के.पी. रहमान उन्नी ने की। सर्वश्री पी.एम. मैथ्यु, जेम्स वडाक्कुनचेरी, हाफ़िज़ मोहम्मद और मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य पी. पी. रवीन्द्रन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र का विषय था—'बदलती संस्कृति'। इस सत्र की अध्यक्षता श्री मानांबर राजन बाबू ने की। शिवगिरी माधोम के श्रीमद सूक्ष्मानंद स्वामीकल और सिविक चंद्रन तथा दिलीप राज ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे दिन, तृतीय सत्र का विषय था—'बदलती भाषा और साहित्य'। श्री पी.के. गोपी ने इस सत्र की अध्यक्षता की। सुश्री एम. लीलावती, सर्वश्री वी. मधुसूदनन नायर, सामान्य परिषद् के सदस्य एवं मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य ए. अच्युतन और एम.एन. कारसेरी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चतुर्थ सत्र का विषय था—'बदलता वर्तमान'। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लेखक वैशाखन ने की। कालीकट विश्वविद्यालय के मलयाळम् विभाग के अध्यक्ष प्रो. टी.वी. वेणुगोपाल पणिक्कर, 'भाषापोषिणी' के प्रभारी संपादक श्री के.सी. नारायणनन् और आलमकोडे लीलाकृष्णन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

थुंचन मेमोरियल ट्रस्ट ने संगोष्ठी के दोनों दिन कार्यक्रमों के पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रमों जैसे—कथकली नृत्य एवं संगीत समारोहों का आयोजन किया। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में श्रोता उपस्थित हुए तथा मीडिया ने संगोष्ठी के कार्यक्रमों को भली-भाँति प्रकाशित-प्रसारित किया।

'तमिलनाडु में जीवंत परंपरा के रूप में लोकगाथाएँ' विषय पर संगोष्ठी

24 नवंबर 2004, तिरुनेलवेली

साहित्य अकादेमी, चेन्नई ने 'तमिलनाडु में जीवंत परंपरा के रूप में लोकगाथाएँ' विषय पर एकदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन सेंट ज़ेवियर कॉलेज, तिरुनेलवेली के लोकसाहित्य विभाग के सहयोग से उन्हीं के सभागार में आयोजित किया।

साहित्य अकादेमी, चेन्नई कार्यालय के प्रभारी अधिकारी श्री एस. जितेन्द्रनाथ ने उपस्थिति श्रोताओं और आलेख वाचकों का स्वागत किया। सेंट ज़ेवियर कॉलेज के प्राचार्य श्री ए. एण्टोनीसामी ने सत्र की अध्यक्षता की। सेंट ज़ेवियर कॉलेज के लोकसाहित्य विभाग के अध्यक्ष श्री ए. धनंजयन ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। श्री मनोज दास की अनुपस्थिति में डॉ. आर. बालचंद्रन 'बाला' ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। अपने व्याख्यान में डॉ. बाला ने कहा कि अकादेमी न केवल साहित्य को महत्त्व देती है, बल्कि वह लुप्त होती लोक-कलाओं और संस्कृतियों को भी उतना ही महत्त्व देती है। उन्होंने आशा जताई कि सेंट ज़ेवियर कॉलेज के लोकसाहित्य विभाग जैसी संस्थाओं को लोक परंपराओं को जीवित रखने हेतु आगे आना चाहिए। रेव. डॉ. एंटोनी, ए. पप्पुराज, एसजे और सेंट ज़ेवियर कॉलेज के सचिव रेव. एम. चार्ल्स ने समापन व्याख्यान प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र का विषय था—'पाठ और प्रस्तुति'। अकादेमी के तमिल़ परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. आर. बालचंद्रन 'बाला' ने इस सत्र की अध्यक्षता की। श्री ए.के. पेरूमल ने 'लोकगाथाओं का आदर्श और प्रस्तुत्य पाठ : गायक और वर्तमान विश्व' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सेंट ज़ेवियर कॉलेज में लोकसाहित्य के व्याख्याता श्री धर्मराज ने 'चित्रगुप्त नयनार कथाइप्पदल में वाचिकता और पाठ्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। कत्तलै कैलाशम और ए. षण्मुगय्या ने प्रस्तुत किए गए आलेखों पर चर्चा की। तदुपरांत 'लोकगाथाएँ और इतिहास' विषय पर एक उपसत्र आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता ए. शिव सुब्रह्मण्यम् ने की। आई. मुथय्या ने 'लोकगाथाएँ और इतिहास-लेखन' विषय पर अपना आलेख

प्रस्तुत किया। सेंट ज़ेवियर कॉलेज में लोकसाहित्य के उपाचार्य श्री एन. रामचंद्रन नायर ने 'लोकगाथाओं में चित्रित सामाजिक संघर्ष' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। पलयमकोट्टै में तमिष़ के उपाचार्य श्री मणिकम और सेंट ज़ेवियर कॉलेज में लोकसाहित्य के उपाचार्य श्री ए. चेल्लापेरूमल ने प्रस्तुत किए गए आलेखों पर चर्चा की।

द्वितीय सत्र का विषय था—'लोकगाथाओं और चिन्दु शैलियों का अध्ययन'। तमिल विश्वविद्यालय, तंजावूर के श्री अरु रामनाथन ने इस सत्र की अध्यक्षता की। मनोन्मणियम् सुंदरनर विश्वविद्यालय, तिरुनेलवेली में तमिष़ के व्याख्याता श्री जी. स्टीफ़न ने 'तमिलनाडु की लोकगाथाओं के अध्ययन के समालोचनात्मक प्रतिमान' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। मानवजाति-वर्णन अध्ययन (पी.आई.एल.सी.) के व्याख्याता श्री पिलावेंधिरन ने 'सामूहिक अवचेतना और महाकाव्यात्मक चरित्र' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सेंट ज़ेवियर कॉलेज में तमिष़ विभाग के अध्यक्ष श्री एन. शिव सुब्रह्मण्यम तथा मनोनमणियम् सुंदरनर विश्वविद्यालय, तिरुनेलवेली में तमिष़ के रीडर श्री ए. रामसामी ने पठित आलेखों पर विमर्श प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के तमिष़ परामर्श मंडल के सदस्य श्री तोप्पिल मोहम्मद मीरान ने समापन सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी की तमिष़ परामर्श मंडल के सदस्य श्री सी.आर. रवीन्द्रन ने समापन भाषण प्रस्तुत किया। श्री एस. जितेन्द्रनाथ तथा श्री ए. धनंजयन ने क्रमशः स्वागत तथा धन्यवाद-ज्ञापन किया।

सत्रों की समाप्ति के उपरांत, परमशिव राव एवं उनकी मंडली ने (तोल्लपावइ कूथू) तथा तांगावेल कनियान एवं उनकी मंडली ने (कनिचनकूदू) का कठपुतली-नृत्य प्रस्तुत किया। मीडिया ने संगोष्ठी के कार्यक्रमों को भली-भाँति प्रकाशित-प्रसारित किया।

'नए स्वर' शीर्षक संगोष्ठी
3-5 दिसंबर 2004, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी के वर्ष भर चलनेवाले स्वर्ण जयंती समारोहों की शृंखला में साहित्य अकादेमी ने 'नए स्वर' शीर्षक त्रिदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन इस बार भुवनेश्वर में आयोजित किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव प्रो. के. सच्चिदानंदन ने आमंत्रित विद्वानों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि यह संगोष्ठी युवाओं और बुजुर्गों के बीच परस्पर प्रक्रिया को और अधिक सुदृढ़ करेगी। उन्होंने आज के सृजनात्मक लेखकों के समक्ष खड़ी चुनौतियों के बारे में बताया तथा आज की नई वास्तविकताओं एवं सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक मुद्दों के संदर्भ में सृजन के नए मुहावरों की वकालत की।

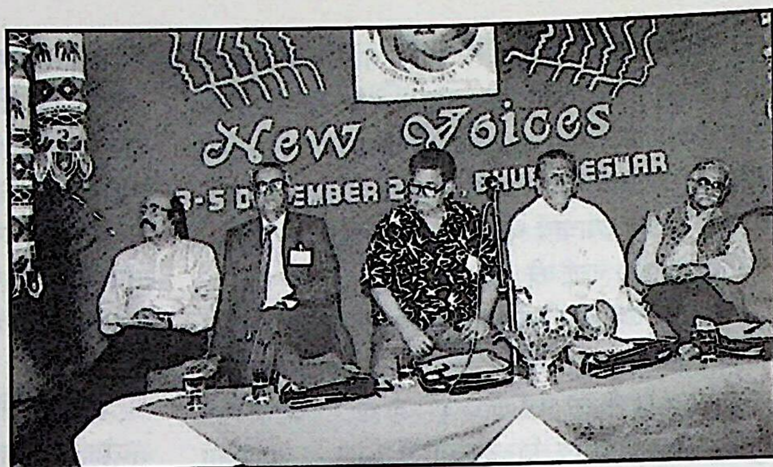
प्रख्यात ओड़िया कवि एवं साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष श्री रमाकांत रथ ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन-व्याख्यान में उन्होंने कहा कि साहित्य की उचित भाषा फुसफुसाहट है न कि प्रवचन। उनके अनुसार जिसे हम नया समझ कर बोलते हैं, वह कभी भी नया नहीं होता तथा आज भी रास्तों को बदलनेवाले वही दृढ़कथन अथवा नैतिक पूर्वानुमान सही हैं तथा इस संदर्भ में 'नव स्वरों' पर एक बड़ी ज़िम्मेदारी है, जिससे कि वह एक अर्थपूर्ण तरीक़े से नेतृत्व करते हुए चारों ओर फैले अंधकार को अपने ज्ञान के प्रकाश द्वारा नष्ट कर सकें।

प्रो. अमिय देव ने अपने बीज-भाषण में कहा कि नए लेखकों को अपनी नवीनता पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए तथा उन्हें हमारी स्थित्यनुसार रुचियाँ पैदा करनी चाहिएँ। प्रो. देव ने कालिदास से आज तक की भारतीय सृजनात्मकता का ऐतिहासिक सर्वेक्षण प्रस्तुत करते हुए वर्तमान लेखकों की संख्या और उनके लेखन के वैविध्य की सराहना करते हुए कहा कि वह न केवल शब्दों को एकत्र कर संप्रेषण का ज़रिया बनाते हैं; बल्कि उन मूल्यों की खोज भी करते हैं, जो हमारी सामाजिक, राजनीतिक एवं नैतिक परिस्थितियों के अनुकूल हैं।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि तथा प्रख्यात ओड़िया एवं अंग्रेज़ी कथाकार श्री मनोज दास ने नए स्वरों द्वारा मानवता के अस्तित्व पर भरोसा रखने के प्रति संतोष व्यक्त किया। श्री दास ने समाचार प्रस्तुतीकरण तथा उसे सनसनीखेज़ तरीक़े से प्रस्तुत करते समय उन्होंने नए स्वरों को हमारी सामाजिक चेतना के प्रति सजग रहने को कहा। उन्होंने नए स्वरों से चेतना के विशाल *ज्ञानीतीत्व* (जो हमारी राह प्रशस्त करता है)

से उत्कृष्ट प्रेरणा, अंतर्दृष्टि तथा प्रदीप्ति की खोज करने को कहा।

प्रख्यात बाङ्ला लेखक एवं अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री सुनील गंगोपाध्याय ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में उन प्रयासों पर संतोष व्यक्त किया, जो युवा मस्तिष्कों के विलोड़न को प्रतिबिम्बित करते हैं। शैले, कीट्स, सुकांत भट्टाचार्य और नज़रुल इस्लाम का संदर्भ देते हुए श्री गंगोपाध्याय ने इस बात पर बल दिया कि प्रामाणिक तौर पर मौलिक लेखन रचनाकार के युवावस्था में ज़्यादा संभव है। उन्होंने युवाओं को अपनी शैली और विषय-वस्तु की निरंतर खोज में चिन्तन की खोज के लिए भी प्रोत्साहित किया।



संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में (दाएँ से बाएँ) प्रो. के. सच्चिदानंदन, श्री रमाकांत रथ, श्री सुनील गंगोपाध्याय, श्री मनोज दास और प्रो. अमिय देव

कार्यक्रम के अंत में प्रख्यात ओड़िया लेखक और अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल की संयोजक श्रीमती प्रतिभा राय ने धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

पहले सत्र का विषय था—'नव कथासाहित्य के मुद्दे।' इस सत्र की अध्यक्षता श्री दिव्येन्दु पालित ने की। डॉ. नारायण पांडा और श्री क़ुतबुद्दीन अहमद ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. पांडा ने बताया कि किस प्रकार ओड़िया के नए स्वर बहिर्गामी हो गए हैं तथा किस प्रकार उनकी वृत्तांतों की खोज आवश्यकता-आधारित और इच्छा-आधारित हो गई है। श्री क़ुतबुद्दीन अहमद के आलेख का विषय था—'युवा असमिया कथाकार।' उन्होंने देवव्रत दास, अरूपा पतंगिया कलिता, मैथिली फूकन और अरुंधती दत्ता जैसे लेखकों के संदर्भ में बताया कि कैसे उन्होंने सामूहिक मनोवैश्लेषिक अशांत परिवेश के बारे में लिखा था। श्री दिव्येन्दु पालित ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि आज के कथाकार अपना समय एक नए मुहावरे की खोज में लगाते हैं।

तदुपरांत कहानी-पाठ के सत्र का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता ख. प्रकाश सिंह ने की। मौसमी कंदली, अरिन्दम बसु, गुप्त नारायण प्रधान और दीप्ति रंजन पट्टनायक ने अपनी कहानियों का अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किया। अपने व्याख्यान के अंत में ख. प्रकाश सिंह ने कहा कि कहानी विधा को आज हमारे समाज में उचित स्थान प्राप्त हो चुका है।

तीसरा सत्र 'कविता-पाठ' पर आधारित था। श्री गोपी नारायण प्रधान ने इस सत्र की अध्यक्षता की। सर्वश्री सौरव सइकिया, तपन बरुआ (असमिया), विनायक बंद्योपाध्याय, सुश्री मंदाक्रांता सेन (बाङ्ला), बी.एस. राजकुमार (मणिपुरी), मन प्रसाद सुब्बा (नेपाली), सुनील प्रूस्ति और दुर्गा प्रसाद पांडा (ओड़िया) ने अपनी कविताओं का अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किया। श्री प्रधान ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में युवा कवियों से अपनी मानवीय संवेदनाओं और संवेदनशील भावों को एक साथ लेकर आगे बढ़ने की अपील की।

दूसरे दिन चौथे सत्र का विषय था—'नए नाटक की ओर।' श्री प्रफुल्ल कुमार मोहांती ने इस सत्र की अध्यक्षता की सर्वश्री नरेन पटगिरि, एम. प्रियव्रत सिंह और अशोक कुमार त्रिपाठी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। उन्होंने असमिया, मणिपुरी और ओड़िया नाटकों में किए गए प्रयोगों के बारे में सूक्ष्मता से बताया। सर्वश्री विश्वजीत डे, रजत कुमार कर, एल. जयचंद सिंह, अमिय देव और जे. एम. मोहांती ने भी अपने विचार व्यक्त किए। पठित आलेखों की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय नाटकों का भविष्य उज्ज्वल है। श्री पी.के. मोहांती ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि नए नाटककारों को अपनी आंतरिक कला को अभिव्यक्त करना चाहिए तथा मंच-निर्देशकों की गिरफ़्त से खुद को बचाना चाहिए।

पाँचवें सत्र का विषय था—'काव्य : नई चुनौतियाँ'। इस सत्र की अध्यक्षता श्रीचंद्रनाथ मिश्र 'अमर' ने की। कुमुदिनी राय और श्री कमला बरगोहाई ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

श्रीमती राय ने ओड़िसा के वर्तमान सक्रिय और गुंजायमान काव्य परिप्रेक्ष्य के बारे में बताया। उन्होंने ओड़िसा के कवियों द्वारा अपनी पहचान तथा आर्थिक परिप्रेक्ष्य में चुनौतियों का सामना करने के लिए उनके द्वारा एक नए मुहावरे की खोज के बारे में बताया। श्री बरगोहाई ने असमिया काव्य के बारे में विचारोत्तेजक व्याख्यान प्रस्तुत किया। श्री चंद्रनाथ मिश्र 'अमर' ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि साहित्य सामान्य रूप से तथा कविता में विशेषरूप से हमें एक उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जा सकता है।

छठे सत्र का विषय था—'नई पीढ़ी के लिए समालोचनात्मक अवधारणाएँ'। इस सत्र की अध्यक्षता श्री ब्रजनाथ रथ ने की। श्री अरविन्द कुमार सिंह झा, डॉ. शीला रमानी तथा श्री कृष्ण कुमार मोहांती ने अपने समालोचनात्मक आलेख प्रस्तुत किए। श्री अरविन्द कुमार सिंह ने मैथिली साहित्य के समालोचनात्मक इतिहास का सर्वेक्षण प्रस्तुत किया और कहा कि आज भी, मैथिली साहित्यिक समालोचना अपने प्रारंभिक दौर में ही है। डॉ. शीला रमानी ने मणिपुरी साहित्य में महिला लेखन के विविध आयामों के बारे में बताया। श्री कृष्ण कुमार मोहांती ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समालोचना के क्षेत्र में प्रयुक्त किए जानेवाले विभिन्न सिद्धांतों एवं पद्धतियों के बारे में बताया। श्री ब्रजनाथ रथ ने अपने अध्यक्षीय-व्याख्यान में समालोचना के आधार कार्य के बारे में बताया जैसे रुचि का स्पष्टीकरण।

सातवाँ सत्र कविता-पाठ का था। प्रख्यात अंग्रेज़ी कवि और अनुवादक श्री जयंत महापात्र ने इस सत्र की अध्यक्षता की तथा सर्वश्री कौशल दत्त, अंशुमन कर, विमलेन्दु शेखर पाठक, राज कुमार मिश्र, शरतचंद्र थियम, राजेन्द्र भंडारी, सुश्री सुचेता मिश्र, केदार मिश्र, मनोरंजन दास और कबिदार प्रति ने अपनी कविताएँ तथा उनके अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए। श्री जयंत महापात्र ने नए युवा स्वरों की सराहना की, जो सुदृढ़ हैं तथा जिनमें अभिव्यक्ति की तीव्र उत्कंठा है।

तीसरे दिन की शुरुआत खुले सत्र से हुई। श्री एल. जयचंद्र सिंह ने इस सत्र की अध्यक्षता की। प्रो. के सच्चिदानंदन ने अपने आरंभिक व्याख्यान में लेखकों को हमारे चारों ओर हो रहे असाधारण बदलावों पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने की अपील की।

असम की एक पत्रकार और लेखिका सुश्री गीतिमल्लिका नियोग ने आधुनिक असमिया साहित्य के इतिहास का सर्वेक्षण प्रस्तुत किया। श्री जयंत डे ने नए बाङ्ला लेखकों के बीच एक नई सोच और एक नया दृष्टिकोण लाए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। श्री प्रदीप विहारी ने विशेष रूप से मैथिली नाटकों और कहानियों में मैथिली साहित्य के नव स्वरों द्वारा किए जा रहे रचना-लेखन के बारे में बताया। थ. इबोहनबी सिंह ने मणिपुर के युवा लेखकों के अनिश्चितता-बोध के बारे में बताया। श्री लक्ष्मण श्रीमाल ने नेपाली रंगमंच के विकास के बारे में बताया। हरेन अल्लाय ने हाल ही में नेपाली साहित्य के हालिया आंदोलनों के बारे में बताया, जिन्होंने नेपाल के युवा लेखकों को प्रभावित किया है। श्रीमती प्रतिभा सतपथी ने ओड़िया कहानीकार होने की हैसियत से अपनी भावनाएँ और दृष्टिकोण प्रस्तुत किए। श्री अमरेश पटनायक ने लेखकों को मानवीय वेदनाओं पर ध्यान केन्द्रित करने का सुझाव दिया। सुश्री अर्चना नायक ने ओड़िया कथा साहित्य की विकासमान प्रवृत्तियों के बारे में बताया। श्री अश्विनी कुमार मिश्र ने नए स्वरों के बारे में बताया तथा यह भी बताया कि वह प्राचीन स्वरों से किस प्रकार भिन्न हैं। सुश्री मनोरमा बिस्वाल महापात्र ने अपनी कुछ ओड़िया कविताएँ उनके अंग्रेज़ी अनुवादों के साथ प्रस्तुत कीं। अंत में, श्री एल. जयचंद्र सिंह ने कहा कि एक संवेदनशील लेखक अपने आस-पास हो रही घटनाओं की अनदेखी नहीं कर सकता, इसलिए उन्हें इन संदर्भों में सार्थक भूमिका निभानी होती है।

नौवाँ सत्र कहानी-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता श्रीमती प्रतिभा राय ने की। सुष्मिता पाठक, केशम प्रियकुमार सिंह, इंद्रमणि दरनाल और देबाशीष पाणिग्रही ने अपनी कहानियाँ पढ़ीं। श्रीमती प्रतिभा राय ने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि प्रस्तुत की गई कहानियाँ उत्कट और मर्मस्पर्शी थीं और अंततः हम भारतीय कहानी लेखन में एक सार्थक समयावधि के आने की उम्मीद कर सकते हैं।

दसवाँ सत्र भी कहानी-पाठ का था। सुश्री कर्बी डेका हज़ारिका ने इस सत्र की अध्यक्षता की। सर्वश्री अतनु भट्टाचार्य, सोहराब हुसैन, चक्रधर ठाकुर, सुधीर नैरोबियन ने अपनी कहानियों के अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए। सुश्री हज़ारिका ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि भारतीय कहानियों ने एक उपयुक्त मुहावरे की खोज कर ली है तथा उसका एक उज्ज्वल भविष्य है। श्री दिव्येन्दु पालित ने कथाकारों को

धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने यह आशा व्यक्त की इस प्रकार की संगोष्ठियों का आयोजन विभिन्न स्थानों पर प्रायः किया जाना चाहिए।

समापन सत्र में श्री जितेन्द्र मोहन मोहांती ने समापन व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि 'नया' शब्द के विविध आयाम हैं तथा हमें 'नए स्वरों' की पहचान देखभाल कर करनी चाहिए; हमें अकादेमी के इस प्रयास की सराहना करनी चाहिए कि उन्होंने बहुत से 'नए स्वरों' को एक साथ एक ही मंच पर एकत्र किया है। इस प्रकार की संगोष्ठियों का आयोजन प्रत्येक भाषा के आधार पर करना चाहिए, जिससे कि हम विचारधाराओं के विविध आयामों के बारे में जान पाएँगे। वर्तमान लेखक अपने परवर्ती लेखकों से भिन्न हैं, क्योंकि उन्हें एक विभिन्न वास्तविकता का सामना करना पड़ता है। इसलिए हमें समस्त परिवर्तनों के प्रति जागरूक रहना चाहिए। जब तक हम दृष्टिकोणों को नहीं जान पाएँगे, तब तक हम परिवर्तनों को नहीं समझ पाएँगे। हमें यह मानना होगा कि आज भारतीय लेखक लुप्त होने के कगार पर हैं तथा यह हमारी ज़िम्मेवारी बन जाती है कि हम संवेदनशील युवा लेखकों को लुप्त होने से बचाएँ। हमारे पास भविष्य के लिए अवश्य कुछ सार्थक अवधारणाएँ होनी चाहिए।

साहित्य अकादेमी, कोलकाता के क्षेत्रीय सचिव श्री रामकुमार मुखोपाध्याय ने धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'उर्दू-मराठी : आदान-प्रदान' विषय पर परिसंवाद
4 दिसंबर 2004, मुंबई

साहित्य अकादेमी के मुंबई स्थित क्षेत्रीय कार्यालय ने 4 दिसंबर 2004 को 'उर्दू-मराठी : आदान प्रदान' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन प्रेस क्लब, गिलास हाउस, महापालिका मार्ग, मुंबई में आयोजित किया।

साहित्य अकादेमी में कार्यक्रम अधिकारी श्री खुर्शीद आलम ने अतिथियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया तथा अकादेमी की विविध गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी दी। मराठी कवि और पत्रकार श्री मनोहर रणपिसे ने अपना आलेख अनुवाद के महत्त्व और उसकी भूमिका पर प्रस्तुत किया। श्री राम पंडित ने अपने आलेख में कहा कि कई अनुवादक मराठी साहित्य का अनुवाद केवल उर्दू में ही कर रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप केवल एकतरफ़ा अनुवाद ही हो पा रहा है। उन्होंने सुझाया कि उर्दू साहित्य का भी समान रूप से मराठी में अनुवाद होना चाहिए। उन्होंने अपने उर्दू के मराठी में किए गए अनुवादों के कुछ उदाहरण भी प्रस्तुत किए। श्री यूनुस अगस्कर ने उर्दू और मराठी के बीच द्विभाषी संबंधों का विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए बताया कि इन दोनों के बीच बहुत पुराना संबंध है तथा इनकी बड़ी समृद्ध परंपरा है। परिसंवाद के अंत में श्रोताओं और प्रतिभागियों के बीच रोचक सवाल-जवाब भी हुए।

'नए स्वर' शीर्षक संगोष्ठी
10-12 दिसंबर 2004, अहमदाबाद

साहित्य अकादेमी ने अपने पचास वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में 'नए स्वर' शृंखला के अंतिम कार्यक्रम का आयोजन पश्चिमी क्षेत्र, अहमदाबाद में एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी आयोजित करके किया। गुजराती, मराठी, कोंकणी, सिन्धी और अंग्रेज़ी भाषाओं में लिखनेवाले प्रतिष्ठित तथा नई पीढ़ी के लेखकों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया।

प्रमुख मराठी लेखक श्री मंगेश पडगाँवकर ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में साहित्यिक उपलब्धि को व्याख्यायित करते हुए उसे मानवीय जीवन की एक निरंतर खोज, भावाभिव्यक्ति का एक नया माध्यम तथा उसके द्वारा हमारे अंतर में छुपे 'मानव' की खोज बताया। आई.आई.टी., दिल्ली में भाषिकी और अंग्रेज़ी साहित्य की प्रोफ़ेसर एवं प्रख्यात अंग्रेज़ी कवियित्री रुक्मिणी भाया नायर ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने वर्तमान संदर्भ में साहित्य में लोकतंत्र के बारे में बताया। आधुनिकतावादी लेखक, जो अपनी पहचान के लिए मनोवैज्ञानिक संकट से जूझ रहे हैं, पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने बताया कि किस प्रकार आज के इस भाषा के युग में एक साहित्य के लेखक को अपनी पहचान बनाने के लिए जूझना पड़ता है। संगोष्ठी की पृष्ठभूमि बताते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव प्रो. के. सच्चिदानंदन ने 'सांस्कृतिक हिंसा' को आज का सबसे बड़ा संकट बताया।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग ने अपने व्याख्यान में अहमदाबाद के पहले उर्दू कवि वली गुजराती के बारे में बताया तथा साथ ही संगोष्ठी के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी लेखकों को पैदा नहीं कर सकती, वह तो केवल महान लेखकों के कार्यों का



श्री भोलाभाई पटेल, प्रो. के. सच्चिदानंदन, श्रीमती रुक्मिणी भाया नायर, प्रो. गोपीचंद नारंग और श्री मंगेश पडगाँवकर

मूल्यांकन कर उन्हें पहचान दिला सकती है। यह अपने अनुवाद कार्यक्रमों के आयोजन द्वारा विभिन्न भाषाओं में लिखे गए साहित्य के आदान-प्रदान हेतु एक मंच उपलब्ध कराती है। युवा लेखकों को प्रोत्साहित करने हेतु, अकादेमी ने अपने स्वर्ण जयंती वर्ष में चार 'नए स्वर' कार्यक्रमों का आयोजन प्रतिष्ठित और उभरते हुए लेखकों के साथ भोपाल, त्रिवेन्द्रम, भुवनेश्वर और अब अहमदाबाद में आयोजित किया है। और साहित्य अकादेमी ने पहली बार पाँच उभरते हुए युवा लेखकों को पुरस्कृत किया है, क्योंकि इन लेखकों द्वारा अभी कई महत्त्वपूर्ण कार्य किए जाने संभावित हैं।

उद्घाटन सत्र के अंत में प्रख्यात गुजराती लेखक श्री भोलाभाई पटेल ने धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

विभिन्न भाषाओं के कवियों, जैसे—वीरु पुरोहित (गुजराती), प्रसाद लोलिनकार (कोंकणी), कविता महाजन (मराठी) और विम्मी सदारंगाणी (सिन्धी) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। शाम को बाबूभाई रणपुरा ने गुजराती लोकसंगीत प्रस्तुत किया तथा बीरेन पुरोहित ने गुजराती सुगम संगीत में गीत प्रस्तुत किए।

11 दिसंबर 2004 को, प्रख्यात सिन्धी लेखक श्री मोती प्रकाश ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र का विषय था—'नई चुनौतियाँ'। गुजराती कविता का समकालीन परिदृश्य प्रस्तुत करते हुए श्री वीरु पुरोहित ने इस बात पर चिन्ता व्यक्त की कि किस प्रकार गुजराती कविता को लोकप्रिय बनाया जा सकता है। कोंकणी कवि श्री प्रकाश दत्ताराम ने इस बात पर अपना रोश व्यक्त किया कि कोंकणी साहित्य में स्तरीयता और समालोचनात्मक दृष्टि की कमी है। कोंकणी साहित्य को लोकप्रिय बनाने हेतु श्री नाइक ने अनुवादकीय गतिविधियों को बढ़ाए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। सुश्री विम्मी सदारंगाणी ने कहा कि सिन्धी साहित्य भी इसी प्रकार के समान दौर से गुज़र रहा है, उसने अपनी मातृभूमि की सांस्कृतिक महक को खो दिया है, सिन्धी कविता की भी अपनी कोई लिपि नहीं है।

द्वितीय सत्र कहानी-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कोंकणी कथाकार श्री दामोदर मावज़ो ने की। श्री मोहन परमार (गुजराती), श्री रामनाथ गावड़े (कोंकणी), सुश्री मोनिका (मराठी) और श्रीमती द्रौपदी धनवाणी (सिन्धी) ने अपनी कहानियाँ पढ़ीं।

प्रख्यात रंगकर्मी एवं कथाकार श्री सतीश आलेकर (मराठी) ने अगले सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र की विषय था—'नए नाटक की ओर'। उन्होंने स्वयं को 'रंगधर्मी' बताया। उन्होंने भारतीय रंगमंच के प्रति विजय तेन्दुलकर (मराठी), बादल सरकार (बाङ्ला), गिरीश कार्नाड (कन्नड) और मोहन राकेश (हिन्दी) के योगदानों की सराहना की। उन्होंने नए नाटककारों को किसी परंपरा का खंडन करने के स्थान पर वर्तमान संदर्भ में उसके भावोन्मेष की खोज करने को कहा।

युवा नाटककार और रंगकर्मी श्री सौम्य जोशी ने अपने निर्देशकीय अनुभवों के बारे में बताया कि उनके विद्यार्थी कलाकारों पर उनका कैसा सृजनात्मक प्रभाव पड़ा।

प्रख्यात कोंकणी लेखक श्री प्रकाश जावडेकर ने नाटक को 'पंचम वेद' बताया। मराठी रंगमंच ने प्रारंभिक कोंकणी नाटकों और रंगमंच को बड़ा प्रभावित किया था। बाद में

कोंकणी नाटक स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में आया और नाटककार नाटक लिखने के साथ-साथ एक लेखक भी होता था। उस काल के नाटककार के लिए ख़ुद की एक गोवाई कोंकणी लेखक के रूप में अपनी अलग पहचान बना पाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। संप्रति, नाटकों की लगभग 200 पांडुलिपियाँ प्रकाशन की प्रतीक्षा में हैं।

नाटककार और नाट्य समालोचक श्री जयंत पवार, जो सन् 1960 के पश्चात् मराठी रंगमंच की गतिविधियों से जुड़े, ने इसके 150 वर्षों के इतिहास का विश्लेषण प्रस्तुत किया। मराठी में अस्तित्वात्मक या असंगत नाटक यदा-कदा ही लिखे जाते हैं। प्रयोगात्मक मराठी रंगमंच में सदैव ही वंशागत परंपरा रही है। विजय तेन्दुलकर, सतीश आलेकर महेश एलकुंचवार, अजीत दलवी और मकरंद साठे द्वारा लिखित नाटक इस परंपरा को व्याख्यायित करते हैं। संस्कृति का वैश्वीकरण, सामाजिक स्वतंत्रता, वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य और इसी प्रकार की आज की सामाजिक वास्तविकताएँ मराठी नाटकों में देखी जा सकती हैं, फिर भी इन वास्तविकताओं का चित्रांकन अपर्याप्त है।

चतुर्थ सत्र कविता-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मराठी कवि श्री नारायण सुर्वे ने की। जेरी पिण्टो और रिज़िओ राज ने अपनी कविताएँ पढ़ीं। प्रियंका कल्पित, अंकित त्रिवेदी (गुजराती), प्रसाद लोलिएनकर, नयना अदरकर और कविता महाजन (मराठी), साइमन मार्टिन (हिन्दी) और विम्मी सदारंगाणी (सिन्धी) ने क्रमशः अपनी मातृभाषा अथवा हिन्दी/अंग्रेज़ी अनुवाद में अपनी कविताएँ पढ़ीं।

पंचम सत्र का विषय था—'नए कथासाहित्य के मुद्दे'। प्रमुख गुजराती कथाकार श्री रघुवीर चौधुरी ने इस सत्र की अध्यक्षता की। गुजराती कहानीकार किरीट दधात ने वर्तमान गुजराती के उभरते हुए लेखकों तथा उसकी विधा के बारे में बताया। उनके अनुसार सन् 1980 के पश्चात् गुजराती कहानी में बदलाव आया है। दलितों की आवाज़ सशक्त हुई है तथा उसमें गति आई है।

मराठी कवयित्री, कहानीकार एवं समालोचक सुश्री नीरजा ने मराठी कथासाहित्य की एक संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि मराठी साहित्य को ग्रामीण एवं शहरी जागरूकता विरासत में मिली है। जयंत दलवी, मधु मंगेश कॉर्णिक और अरुण साधू की लेखनी को देखकर यह बात सिद्ध होती है। भालचंद्र नेमाडे द्वारा *कोसला* में अपनाई गई तकनीक, एक निर्भीक प्रयोग था। सोनिया सिरसा ने कोंकणी साहित्य को विरासत में मिली उत्कृष्टता, संस्पर्शता, परिपक्वता तथा शाश्वत मानवीय विश्वास के बारे में बताया तथा पुंडलीक नायक, दामोदर मावज़ो, चंद्रकांत केणी, मीन काकोदकर, जयमल दानयत, जयंती नायक, सिल्वेस्टर डी'सूज़ा, हेमा नायक और नारायण दाभोलकर की रचनाओं पर बात की।

षष्ठ सत्र में श्री किरीट दाधत, सुश्री मेहर पेस्टनजी और श्री कलाधर मुतुवा ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं। प्रख्यात गुजराती लेखक श्री कुमारपाल देसाई ने इस सत्र की अध्यक्षता की।

सप्तम् सत्र खुला सत्र था। इस सत्र की अध्यक्षता श्री अश्विन देसाई ने की। रिज़िओ राज, रमेश दवे, मौजी महेश्वरी, किरण बुडकुले, रमेश धोंगडे, साइमन मार्टिन और मोहन गेहानी



सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्री रघुवीर चौधुरी

ने बताया कि उन्हें सामान्यतः साहित्य से क्या अपेक्षाएँ हैं? इनमें से कुछ का मत था कि वर्तमान लेखक अपने लेखों में समकालीन मुद्दों पर नहीं लिखते, जबकि कुछ ने साहित्य को दलितों एवं स्त्रीवादी श्रेणियों के बीच विभक्त किए जाने के प्रति अपना रोष व्यक्त किया। वक्ताओं ने इस बात पर भी चर्चा की कि एक लेखक के लिए विधा, विषय अथवा केन्द्रीय भाव के बीच संतुलन बनाए रखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। किसी लेखक द्वारा स्वयं के, भाषा के तथा अपनी संस्कृति के आतंक से मुक्त हो पाना आम समस्या है। कुछ नया सृजित करने के लिए उक्त बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है। यह चिन्ता का विषय है कि आज के लेखक और पाठक दोनों ही असंवेदनशील हैं।

अंतिम सत्र का विषय था–'नई पीढ़ी के लिए विवेचनात्मक अवधारणाएँ'। इस सत्र की अध्यक्षता सुश्री अनिला दलाल ने की। शरीफ़ा विजलीवाला ने कथासाहित्य के संदर्भ में गुजराती के समालोचनात्मक परिदृश्य पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि समालोचना के संदर्भ में बनाए गए मानदंड और प्रतिमान अपर्याप्त हैं।

कोंकणी लेखक श्री भूषण भावे ने सृजनात्मक तथा समालोचनात्मक लेखन को एक ही सिक्के के दो पहलू बताया, अर्थात् वह एक-दूसरे के पूरक हैं। उन्होंने पश्चिमी समालोचनात्मक सिद्धांतों को अपनाने हुए हमें सावधान रहने को कहा। प्रख्यात कोंकणी विद्वान श्री आर.एस. किमबाहुने ने टिप्पणी की कि हमारी नई पीढ़ी गत दो दशकों द्वारा तेज़ी से बदलती जटिल वास्तविकताओं से दो-चार हो रही है। उन्होंने कहा कि भारतीय सृजनात्मक लेखन को एक मील का पत्थर साबित होना चाहिए।

समस्त संगोष्ठी के दौरान, सिन्धी, गुजराती, मराठी, कोंकणी तथा अंग्रेज़ी भाषाओं के प्रख्यात साहित्यिक दिग्गजों ने बड़े उत्साह के साथ संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में भाग लिया तथा उपस्थित गुजराती श्रोताओं से मुखातिब हुए।

'समकालीन पंजाबी कविता' पर परिसंवाद

18 दिसंबर 2004, जालंधर

साहित्य अकादेमी ने समकालीन पंजाबी कविता के मूल्यांकन हेतु पंजाबी साहित सभा, खालसा कॉलेज के सहयोग से 18 दिसंबर 2004 को कॉलेज के मुक्ताकाश रंगमंच में एक परिसंवाद का आयोजन किया। परिसंवाद का उद्घाटन कॉलेज के प्राचार्य श्री एस.एस. चाथा ने किया। शैक्षिक और साहित्यिक जगत के प्रख्यात विद्वानों ने इस परिचर्चा में भाग लिया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक श्री कर्णजीत सिंह ने की। प्रख्यात विद्वान जैसे–सर्वश्री एस.एस. नूर, सुखदेव सिंह, सुरजीत सिंह और गुलज़ार सिंह संधू ने उक्त विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

भारत में पंजाबी कविता की वर्तमान शैलियों और पद्धतियों के साथ-साथ पाकिस्तान तथा अमेरिका, कनाडा और यूरोप जैसे अन्य देशों पर चर्चा करते हुए, वक्ताओं ने पंजाबी कविता द्वारा झेले जानेवाली चुनौतियों के बारे में बताया। देश के सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन की सांप्रदायिक लहर को एक प्रमुख मुद्दा माना गया। दूसरा मुद्दा मुक्त और तुकांत छंद को लागू करने का माना गया। फिर भी वक्ताओं ने यह महसूस किया कि एक रचना को कविता के अनिवार्य सिद्धांतों का अनुपालन करना चाहिए। वक्ताओं ने यह भी पाया कि (एक गीत के सर्जन में) विशेषरूप से ग़ज़ल की विधा लेखकों और पाठकों के बीच काफ़ी लोकप्रिय है। जिस प्रकार से प्रगतिशील काल में कविता का सैद्धांतिक आधार सशक्त था, उसी प्रकार वह आज भी है।

द्वितीय सत्र पंजाबी कविता-पाठ का था। कॉलेज के पूर्व-प्राचार्य राजा श्री हरनरेन्द्र सिंह ने इस सत्र की अध्यक्षता की। सर्वश्री सुरजीत पातर, गुरुभजन गिल, सुखवंत आर्टिस्ट, सुश्री वनीता तथा दर्शन भुट्टर ने अपनी कविताएँ पढ़ीं। श्री राजा हरनरेन्द्र सिंह ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में उर्दू के प्रख्यात शायरों जैसे–ग़ालिब, इक़बाल और फ़ैज अहमद फ़ैज के कुछ शेर भी प्रस्तुत किए। कॉलेज के वरिष्ठ व्याख्याता श्री वरयाम सिंह संधू ने दोनों सत्रों का संचालन किया। कॉलेज के पंजाबी विभाग की अध्यक्ष श्रीमती इंद्रजीत कौर बेदी ने धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

के.वी. पुट्टप्पा 'कुवेम्पु' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

28-29 दिसंबर 2004, उडुपी

साहित्य अकादेमी ने राष्ट्रकवि गोविन्द पै संशोधन केन्द्र, उडुपी के सहयोग से प्रख्यात राष्ट्रीय कवि एवं कन्नड साहित्य



समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए प्रो. जी.एस. शिवरुद्रप्पा, साथ में हैं, सर्वश्री हीरंजे कृष्ण भट, के.के. पै, एम.एल. समगा

के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न व्यक्तित्व के.वी. पुट्टप्पा 'कुवेम्पु' की जन्मशतवार्षिकी मनाने हेतु एक द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 28-29 दिसंबर 2004 को एम.जी.एम. कॉलेज, उडुपी में किया।

प्रख्यात कन्नड कवि एवं समालोचक प्रो. जी.एस. शिवरुद्रप्पा ने 28 दिसंबर 2004 को न्यू रवीन्द्र मंडप, एम. जी.एम. कॉलेज, उडुपी में दीप प्रज्वलित कर संगोष्ठी का उद्घाटन किया। राष्ट्रकवि गोविन्द पै संशोधन केन्द्र के निदेशक श्री हीरंजे कृष्ण भट ने उपस्थित विद्वानों और श्रोताओं का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी, बंगलौर के क्षेत्रीय सचिव श्री अग्रहारा कृष्णमूर्ति ने श्रोताओं को संगोष्ठी के विषय का परिचय दिया। प्रो. शिवरुद्रप्पा ने अपने उद्घाटन-व्याख्यान में कुवेम्पु के महान व्यक्तित्व तथा उनके कन्नड साहित्य को दिए गए अतुलनीय योगदानों के बारे में बताया।

एकेडमी ऑफ़ जनरल एजुकेशन, मनिपाल के रजिस्ट्रार श्री के.के. पै ने सत्र की अध्यक्षता की तथा आधुनिक कन्नड कवियों के बीच कुवेम्पु की महानता के बारे में भी बताया। एम.जी.एम. कॉलेज, उडुपी के प्राचार्य श्री एम.एल. समगा ने धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'महाकाव्य परंपरा और कुवेम्पु कृत्त *श्री रामायण दर्शनम्*, विषयक सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लेखक और समालोचक श्री डी.ए. शंकर ने की। सेण्ट्रल विश्वविद्यालय, हैदराबाद के अंग्रेज़ी प्रोफ़ेसर मोहन रमणन् ने अपना आलेख (*श्री रामायण दर्शनम्* के विशेष संदर्भ में) महाकाव्य परंपरा पर प्रस्तुत किया। हैदराबाद के श्री वेंकटारमणन् राव ने (*रामचरितमानस* और मैथिलीशरण गुप्त के *साकेत* का विशेष संदर्भ लेते हुए) अपना आलेख 'रामायण का पुनर्कथन' विषय पर प्रस्तुत किया। कालिकट के श्री आर. विश्वनाथ ने (इष़ट्टच्चन के विशेष संदर्भ में) अपना आलेख 'रामायण का पुनर्कथन' विषय पर प्रस्तुत किया।

दूसरा सत्र कुवेम्पु के काव्य को समर्पित था। प्रख्यात कन्नड लेखक श्री जी.एस. सिद्धलिंगय्या ने सत्र की अध्यक्षता की तथा 'कन्नड काव्य परंपरा और कुवेम्पु' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

श्री बसवराज सबरदा ने 'कुवेम्पु की प्रेम कविताएँ' विषय पर तथा श्री बसवराज कलगुड़ी ने 'कुवेम्पु के काव्य में विरोध के तत्त्व' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् कुवेम्पु के काव्य पर प्रतिभागियों और श्रोताओं के बीच प्रश्नोत्तरी भी हुई।

तीसरा सत्र 'कुवेम्पु के उपन्यासों और नाटकों' विषय पर आधारित था। श्री सी.एन. रामचंद्रन ने इस सत्र की अध्यक्षता की। श्री राजेन्द्र चेन्नी ने 'कन्नड उपन्यास परंपरा और कुवेम्पु के उपन्यास' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि कन्नड उपन्यास परंपरा में कुवेम्पु के उपन्यासों का अनूठा स्थान है। श्री एल. सी. सुमित्रा के आलेख का विषय था—'कुवेम्पु के उपन्यासों में औपनिवेशिक अनुभव'। प्रकाश गरुड़ ने अपने आलेख में कुवेम्पु के नाटक और कन्नड रंगमंच के बारे में बताया।

चौथे सत्र का विषय था—'कुवेम्पु का व्यक्तित्व और उनके विचार'। श्री श्रीकांत कुडिगे ने 'कुवेम्पु के सांस्कृतिक विचार', श्री जी.एम. हेगड़े ने 'कुवेम्पु एक व्यक्तित्व' तथा श्री सत्यनारायण मल्लीपटना ने 'कुवेम्पु के समालोचनात्मक कार्य' विषय पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। सर्वश्री एल. हनुमंतय्या, के.सी. शिवरेड्डी, लक्ष्मीपति कोलार, मुरलीधर उपाध्याय, उदयवर माधवाचार और एम. रामचंद्र इस सत्र के संवादी थे।

संगोष्ठी का समापन सत्र कविता-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता श्री श्रीकांत कुडिगे ने की। इस सत्र में भाग लेनेवाले कवि थे—सर्वश्री जी.एस. सिद्धलिंगय्या, एल. हनुमंतय्या, लक्ष्मीपति कोलार, सुश्री वैदेही, सर्वश्री ना. मोगासाले, यू. महेश्वरी, ज्योति गुरुप्रसाद, जयराम कारंथ, श्रीमती अमृता

सोमेश्वर, सर्वश्री वसंत कुमार परेला, वसंत बन्नाडी और बी. एम. बशीर।

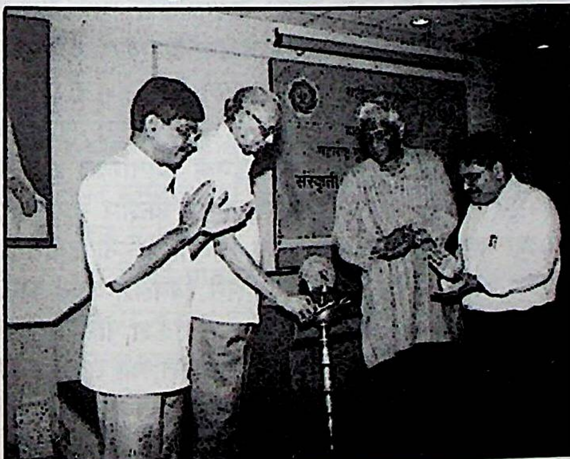
प्रख्यात कन्नड कवि कय्यर किनहान्न राय ने समापन व्याख्यान प्रस्तुत किया। अपने व्याख्यान में उन्होंने कुवेम्पु और गोविन्द पै के बारे में बताया और संगोष्ठी के दौरान अपनी कुछ स्वरचित कविताएँ भी प्रस्तुत कीं।

'संस्कृति और साहित्य' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
8-9 जनवरी 2005, नासिक

साहित्य अकादेमी ने यशवंत राव चह्वान महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय के सहयोग से 8-9 जनवरी 2005 को 'संस्कृति और साहित्य' विषय पर एक द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन एकेडमिक बिल्डिंग के कॉनफ्रेन्स हाल, ध्यान-गंगोत्री परिसर, नासिक में किया।

"महात्मा गाँधी ने साम्राज्यवादी ताक़त को जनशक्ति में बदलने का काम किया था। जब ऐसा हुआ तो शिक्षण संस्थानों और विश्वविद्यालयों ने ज्ञान का विकेन्द्रीकरण कर दिया था। राष्ट्रीय नेता यशवंतराव चह्वाण का भी यही कहना था कि जन-साधारण की भाषा ही ज्ञान की भाषा बननी चाहिए।" यशवंतराव चह्वान महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय, नासिक में मानविकी व समाज विज्ञान स्कूल के निदेशक श्री रमेश वरखेड़े ने अपने प्रारंभिक व्याख्यान में कहा।

वे साहित्य अकादेमी, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई और यशवंतराव चह्वान महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय, नासिक के सहयोग से



संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में, श्री राजन वेलूकर, श्री गंगाधर पाटिल, श्री प्रकाश भातांब्रेकर और श्री रमेश वरखेडे

'संस्कृति और साहित्य' विषय पर आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी में बोल रहे थे।

कार्यक्रम का आरंभ प्रसिद्ध मराठी कवि कुसुमाग्रज के गीत से हुआ। साहित्य अकादेमी, मुंबई के क्षेत्रीय सचिव श्री प्रकाश भातंब्रेकर ने अतिथियों और श्रोताओं का स्वागत करते हुए संगोष्ठी के विषय और उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

विद्यापीठ के कुलपति राजन वेलूकर ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। गंगाधर पाटील ने अपने बीज-भाषण में लेखकों को पाठ उत्पादक जीव के रूप में पारिभाषित किया। उन्होंने कहा कि यह पाठ मनुष्य में से मनुष्यता को उभारनें का शिल्प है। जब एक लेखक कुछ लिख रहा होता है तो वह मनुष्य की मनुष्यता का निर्माण कर रहा होता है।

संगोष्ठी में कुल पाँच सत्र थे। इन सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः सर्वश्री दिगंबर पाध्ये, सुमित्रा भावे, दिलीप धोंडगे, एम.एस. पाटील ने की, और मिलिंद बोकिल, मिलिंद मालशे, नरेन्द्र डेंगळे, रवीन्द्र किमबाहुने, आशा बगे, भास्कर भोले, मनोहर शाहाणे, सुश्री नीरजा, सुश्री लता छत्रे, भारत सासणे, प्रतिभा काणेकर, प्रदीप कार्णिक, सदानंद मोरे, सुधीर पानसे, उत्तम कांबळे, एम.बी. कुलकर्णी, यशवंत सुमंत और आर. एन. वरखेडे ने संगोष्ठी से जुड़े विभिन्न विषयों पर पर्चे पढ़े और विस्तारपूर्वक चर्चा की।

समापन सत्र की अध्यक्षता श्री अरुण साधू ने की। संगोष्ठी का निष्कर्ष निकालते हुए उन्होंने कहा कि लेखक मनुष्य की मूल्य पद्धति, जो नीचे की ओर झुक रही है, के ग्राफ़ की उन्नति के लिए लिखता है। आज जब युवाओं के पास मूल्य नहीं बचे हैं, ऐसे में लेखक की ज़िम्मेदारियाँ बढ़ी हैं।

'प्रवासी हिन्दी लेखन तथा भारतीय हिन्दी लेखन' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी
12-14 जनवरी 2005, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने 'प्रवासी हिन्दी लेखन तथा भारतीय हिन्दी लेखन' विषय पर 12-14 जनवरी 2005 को एक त्रिदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन अपने साहित्य अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में किया।

"प्रवासी हिन्दी साहित्य भारत के साहित्यिक जगत से किसी तरह की छूट की माँग नहीं करता, लेकिन रूढ़िवादी



प्रो. के. सच्चिदानंदन, श्री सीताहुल, प्रो. गोपीचंद नारंग, श्री श्रीलाल शुक्ल, श्री अभिमन्यु अनत और श्री गिरिराज किशोर

नज़रिए को बदलने की उम्मीद तो कर सकता है।" मॉरीशस से पधारे प्रख्यात हिन्दी कथाकार अभिमन्यु अनत ने 'प्रवासी हिन्दी लेखन तथा भारतीय हिन्दी लेखन' विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मॉरीशस में लिखे जा रहे हिन्दी साहित्य को संदर्भित करते हुए कहा।

प्रो. गोपीचंद नारंग, अध्यक्ष, साहित्य अकादेमी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में स्वीकार किया कि प्रवासी लेखन से हिन्दी भाषा निरंतर समृद्ध हुई है। उन्होंने प्रवासी लेखन से भारतीय लेखन के पारस्परिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए ऐसे आयोजनों की आवश्यकता पर बल देते हुए घोषणा की कि अकादेमी हर वर्ष इस तरह के आयोजन का प्रयास करेगी।

इस संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात हिन्दी कथाकार श्री श्रीलाल शुक्ल ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में भारतीय हिन्दीभाषी समाज में विदेशों में विकसित हो रहे हिन्दी लेखन के प्रति उत्सुकता और सजगता बढ़ी है और भारतीय हिन्दी लेखन के साथ उसके अंतर्सम्बंध गहनतर हुए हैं। एक सर्वथा नई संस्कृति के बीच से गुज़रते हुए उनकी कृतियाँ विषय-वस्तु के ही स्तर पर नहीं, बल्कि संवेदना के स्तर पर भी हमें एक नए अनुभव संसार में ले जाती हैं।

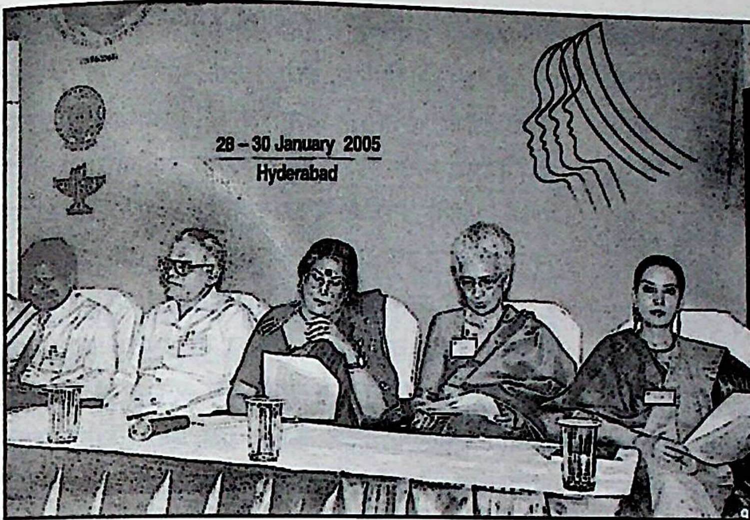
अकादेमी के हिन्दी परामर्श मंडल के संयोजक श्री गिरिराज किशोर ने इस बात पर विशेष बल दिया कि अगर हम भाषाई बंधुत्व का विकास चाहते हैं, तो हमें इस संगोष्ठी को प्रस्थान बिन्दु मानकर चलना चाहिए।

प्रो. के. सच्चिदानंदन, सचिव, साहित्य अकादेमी ने अतिथियों और श्रोताओं का स्वागत करते हुए कहा कि प्रवासी हिन्दी लेखक अपने साथ भिन्न अनुभव, आयाम, आस्वाद और मिज़ाज लेकर हिन्दी साहित्य में आए हैं और इस प्रकार उन्होंने भारत की सीमाओं के बाहर इसके प्रसार और अभिगम को विस्तारित किया है तथा इसे सही अर्थों में अंतर्राष्ट्रीय बनाया है।

कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि मॉरीशस की उच्चायुक्त महामहिम उषा द्वारका की अस्वस्थता के कारण उनके स्थान पर उच्चायोग के उप-प्रमुख श्री सीताहुल ने साहित्य अकादेमी को इस तरह के आयोजन के लिए बधाई दी।

पाँच सत्रों में फैले इस त्रि दिवसीय समारोह में लगभग एक दर्जन से अधिक भारतीय और प्रवासी विद्वानों तथा साहित्यकारों ने प्रवासी हिन्दी लेखन से संबंधित विभिन्न विषयों पर अपने मत व्यक्त किए। समारोह में भारतीय साहित्यकारों ने भी हिस्सा लिया। मॉरीशस से श्री अभिमन्यु अनत, नेपाल से श्रीमती मृदुला शर्मा, इंग्लैण्ड से श्री सत्येन्द्र श्रीवास्तव एवं श्री कृष्ण कुमार, डेनमार्क से सुश्री अर्चना पैन्यूली, अमेरिका से श्रीमती उषा राजे सक्सेना एवं श्री वेदप्रकाश 'वटुक', सूरीनाम से डॉ. पुष्पिता ने अपने-अपने देश के प्रवासी लेखकों द्वारा लिखित साहित्य पर चर्चा की और कुछ महत्त्वपूर्ण और विचारपरक बिन्दु उठाए। इनके अतिरिक्त सर्वश्री सत्यभूषण वर्मा, परमानंद पांचाल, कमल किशोर गोयनका, वी.आर. जगन्नाथन, मदनलाल मधु, श्रीमती मोहिनी हिंगोरानी, हिमांशु जोशी, पुष्पेश पंत, प्रत्यूष गुलेरी, विमलेश कांति वर्मा, कृष्णदत्त पालीवाल, मोहन का. गौतम, राकेश पांडेय, सुरेश ऋतुपर्ण, प्रेम जनमेजय, श्रीमती ऋता शुक्ल, श्री सोहन राही आदि ने भी आलेखों में उठाए गए मुद्दों पर विश्लेषणात्मक विमर्श प्रस्तुत किया।

उद्घाटन सत्र के अतिरिक्त पाँच सत्रों में विभाजित इस संगोष्ठी में 'प्रवासी हिन्दी लेखन की पृष्ठभूमि और स्वरूप', 'प्रवासी एवं भारतीय हिन्दी साहित्य के अंतर्सम्बंध', 'प्रवासी



श्री नागी रेड्डी, श्री जी.वी. सुब्रह्मण्यम, सुश्री नबनीता देवसेन, सुश्री सूजी थारू और श्रीमती शबाना आज़मी

हिन्दी साहित्य की अपेक्षाएँ', 'प्रवासी हिन्दी साहित्य : परिवेश एवं अभिव्यक्ति' आदि विषयों पर विभिन्न भारतीय एवं प्रवासी लेखकों और विद्वानों ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी में प्रवासी हिन्दी साहित्य और भारतीय हिन्दी साहित्य के अंतर्सम्बंधों पर बारीकी से विचार-विमर्श हुआ तथा अनेक अनुद्घाटित तथ्य सामने आए।

धन्यवाद-ज्ञापन अकादेमी के उपसचिव श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने किया।

अखिल भारतीय लेखिका सम्मेलन

28-30 जनवरी 2005, हैदराबाद

साहित्य अकादेमी ने आंध्र प्रदेश सरकार के संस्कृति विभाग के सहयोग से 28-30 जनवरी 2005 को 'अखिल भारतीय लेखिका सम्मेलन' का आयोजन जुबली हॉल, पब्लिक गार्डन्स, हैदराबाद में किया।

"स्त्री की पारंपरिक तस्वीर के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए नई तस्वीर बनाना ही कारगर तरीक़ा है।" अभिनेत्री और सामाजिक कार्यकर्ता शबाना आज़मी ने अखिल भारतीय लेखिका सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर अतिथि भाषण में महिलाओं से अपील की कि वे जोखिम-भरे साहसिक कार्य कर उन क्षेत्रों में आगे आएँ, जहाँ अभी तक पुरुषों का वर्चस्व क़ायम है।

कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव प्रो. के. सच्चिदानंदन ने अपने स्वागत-भाषण में भारत में महिला लेखन की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने उन संभावित मुद्दों की ओर भी इशारा किया, जिन पर सम्मेलन में चर्चा होने की उम्मीद थी।

सम्मेलन का उद्घाटन लब्धप्रतिष्ठ बाङ्ला लेखिका सुश्री नबनीता देवसेन ने किया। उन्होंने माना कि युवा लेखिकाओं में असामान्य रूप से ज़्यादा आत्मविश्वास है। इसके साथ ही उन्होंने पुरुषों में जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता पर बल दिया और उन महिला लेखिकाओं को भी सचेत किया जो खुले रूप से 'पोर्नोग्राफ़िक' भाषा का प्रयोग कर रही हैं। उनका कहना था कि यह काम स्त्री को स्वतंत्रता के बजाय गुलामी की ओर ले जाएगा।

तेलुगु विश्वविद्यालय के कुलपति और साहित्य अकादेमी की तेलुगु परामार्श मंडल के सदस्य श्री जी.वी. सुब्रह्मणियम ने अपने अध्यक्षीय-व्याख्यान में स्वीकार किया कि अगर हम बहुत पहले रचित महिला लेखन को देखें तो सर्वोच्च साहित्य मानकों के अनुसार, यह किसी भी दृष्टि से दूसरे दर्जे का नहीं है।

सुश्री सूजी थारू ने अपने बीज-भाषण में विगत की साहित्य के क्षेत्र की पितृसत्तात्मक घटनाओं का ज़िक्र करते हुए महिला लेखन को नई राजनीतिक श्रेणी में रखने की सिफ़ारिश की। उनका मानना था कि साहित्य को चारों ओर घटनेवाली सामाजिक-राजनीतिक घटनाओं से अलग नहीं किया जा सकता, यह समाज की हर शाखा को प्रतिबिम्बित करता है। उन्होंने उन लेखिकाओं की आलोचना की जो बाहरी चकाचौंध में पीड़ा और अनुभूति को भूल जाती हैं। उनका कहना था कि पीड़ा और अनुभूति को खो देना औरतों के लिए ख़तरनाक है।

उद्घाटन सत्र के अंत में श्री नागी रेड्डी, सचिव, पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय, आंध्र प्रदेश सरकार ने धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

दस सत्रों में विभाजित इस संगोष्ठी में लगभग 20 साहित्यकारों और विद्वानों ने हिस्सा लिया। सम्मेलन में निम्न

विषयों पर चर्चा हुई—'देह केन्द्रित लेखन : लिंग की राजनीति', 'भाषा, स्व, प्रतिनिधित्व', 'मानदंडों को तोड़ते हुए : नारीवादी परिप्रश्न', 'मेरी दुनिया, मेरा लेखन'। अंतिम सत्र में जोकि खुला मंच था, में दर्शकों ने भी 'नारी-मुद्दे, नारी-लेखन' पर हुई परिचर्चा में हिस्सा लिया।

संगोष्ठी में जी. तिलकावती, जया मित्र, सी. विजयश्री, शिवकामी, मीनाक्षी मुखर्जी, जसबीर जैन, वासा प्रभावती, प्रभा गनोरकर, शशि देशपांडे, सी. मृणालिनी, लिपि पुष्पा नायक, नीरजा मट्टू, जीलानी बानो, हिमांशी शेलत, चित्रा मुद्गल, प्रतिभा राय, मृदुला गर्ग आदि विभिन्न भाषाओं की प्रतिष्ठित लेखिकाओं ने अपने पर्चों में महिला लेखन से जुड़े हर विषय पर तर्क-वितर्क किया।

तीसरे और सातवें सत्र में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। क्रमशः पद्मा सचदेव और नबनीता देवसेन की अध्यक्षता में सुनीता जैन, कोंडेपुडी निर्मला, अनुपमा बसुमतारी, संस्कृतिरानी देसाई, जे. भाग्यलक्ष्मी, ममता सागर, सावित्री राजीवन, रंजिता नायक, शारदा कृष्ण, मंदारपु हिमावती, अरिम्बम ओङ्बी मेम्चौबी और शहनाज़ नबी ने कविता-पाठ किया।

पाँचवें, छठे और नवें सत्र में कहानी-पाठ का आयोजन किया गया। क्रमशः प्रतिभा राय, अब्बूरि छाया देवी और वासिरेड्डी सीतादेवी की अध्यक्षता में बी. चंद्रिका, शशि देशपांडे, सारा अबूबकर, वोल्गा, चित्रा मुद्गल, शिवशंकरी, मीना काकोदकर, हिमांशी शेलत, अलका सरावगी, जीलानी बानो, अब्बूरि छाया देवी, विजया राजाध्यक्ष और मृदुला गर्ग ने कहानियाँ पढ़ीं।

'असमिया साहित्य की समकालीन प्रवृत्तियाँ' विषय पर संगोष्ठी

2-3 फ़रवरी 2005, असम

साहित्य अकादेमी ने डी.के.डी. कॉलेज के सहयोग से 2-3 फ़रवरी 2005 को 'असमिया साहित्य की समकालीन प्रवृत्तियाँ' विषय पर एक द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन डी.के.डी. कॉलेज परिसर, डेरागाँव, असम में किया।

"आधुनिक भारतीय साहित्य के निर्माण में असमिया लेखकों का महत्त्वपूर्ण योगदान है।" कई प्रसिद्ध असमिया लेखकों के योगदान को रेखांकित करते हुए साहित्य अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल के संयोजक श्री कर्बी डेका हज़ारिका ने कहा।

प्रख्यात असमिया लेखक और असम साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष लक्ष्मीनंदन बोरा मुख्य अतिथि थे, गौहाटी विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष जी.पी. शर्मा ने मुख्य भाषण दिया। श्री रामकुमार मुखोपाध्याय, क्षेत्रीय सचिव, साहित्य अकादेमी ने अपने भाषण में असमिया साहित्य की समकालीन प्रवृत्तियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी कुल पाँच सत्रों में विभाजित थी। सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः कर्बी डेका हज़ारिका, मो. इमरान शाह, आनंद बरमोदोई और पी.सी. बोरा ने की और अनुभव तुलसी, पूरन भट्टाचार्य, कमला बरगोहाईं, देवव्रत दास, प्रदीप कुमार बरुआ, रूपाक्षी गोस्वामी, उमेश डेका, जी.पी. शर्मा, अखिल चक्रवर्ती, सपन ज्योति ठाकुर, देवव्रत महंत, जोगेन चेटिया, राजेन कलिता, पी. कनडोली आदि साहित्यकारों और विद्वानों ने असमिया कविता, कहानी, उपन्यास एवं नाट्य लेखन के साथ-साथ आलोचना की प्रवृत्तियों और असमिया कविता, कहानी, उपन्यास एवं नाट्य-लेखन के विभिन्न पहलुओं पर आलेख प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम के अंत में संगोष्ठी के सह-आयोजक डी.के.डी. कॉलेज के अंग्रेज़ी विभाग के अध्यक्ष श्री के. अहमद ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

'स्त्रीवाद और पंजाबी साहित्य' विषय पर संगोष्ठी

4-5 फ़रवरी 2005, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने पंजाबी अकादमी, दिल्ली के सहयोग से 4-5 फ़रवरी 2005 को 'स्त्रीवाद और पंजाबी साहित्य' विषय पर एक द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन साहित्य अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में किया।

"पंजाबी आख्यान-काव्य में औरत के अस्तित्व, उसकी पीड़ा और उसकी कार्यशीलता पर विचार किया गया है। पंजाबी कथाकारों का अपना दृष्टिकोण भी औरत के प्रति हमदर्दी वाला न होकर पुरुष प्रधान सोच से प्रभावित है।" अमरजीत सिंह कांग ने स्त्रीवाद और पंजाबी साहित्य पर आयोजित संगोष्ठी में उक्त विचार प्रकट किए।

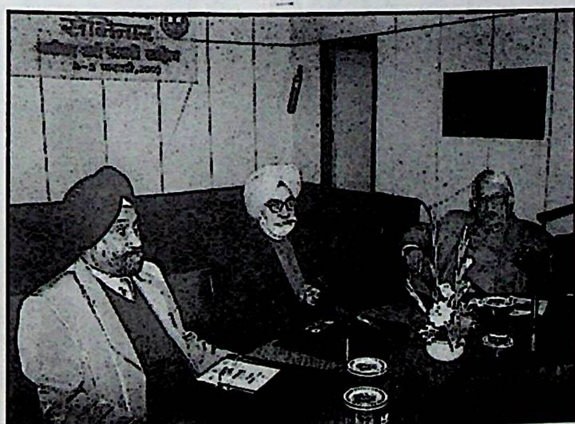
साहित्य अकादेमी के पंजाबी सलाहकार मंडल के संयोजक श्री कर्णजीत सिंह ने पंजाबी परंपरा और पंजाबी साहित्य के

विकास में नारीवाद की सार्थकता पर विस्तार-पूर्वक चर्चा की।

प्रख्यात पंजाबी कवि एवं आलोचक श्री एस.एस. नूर ने विश्व साहित्य के संदर्भ में नारीवाद और उत्तर नारीवाद की सार्थकता और पंजाबी साहित्य में उसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के अंग्रेज़ी विभाग से आए श्री संदीप मिन्हास ने अपने बीज-भाषण में वैश्विक और स्थानीय दृष्टिकोण से पंजाबी साहित्य में नारीवाद के हस्तक्षेप पर विचार व्यक्त किए। उन्होंने पश्चिमी साहित्य में सैद्धांतिक विकास पर चर्चा की और इस परिप्रेक्ष्य में पंजाबी संस्कृति और साहित्य के मूल्यांकन की बात रखी।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री प्रेम सिंह ने भारतीय परंपरा पर विचार व्यक्त किए और पश्चिमी साहित्य की तुलना में इसकी सार्थकता की बात की। पंजाबी अकादेमी, दिल्ली के उपाध्यक्ष श्री हरमीत सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

संगोष्ठी चार सत्रों में विभाजित थी, जिसमें नारीवाद और उत्तर-नारीवाद से जुड़े कई विषयों पर सुश्री विनीता, श्री कुलजीत शैली, सुश्री गीता लखनपाल, श्रीमती दपिन्दरजीत कौर रंधावा, श्री गुरुचरण सिंह आरसी, श्रीमती गुरदीप कौर बाजवा, श्री अमरजीत सिंह कांग, जसबीर केसर, श्रीमती चरणजीत कौर, श्रीमती रेणुका सिंह, श्री जसबीर सिंह, श्रीमती बेअंत कौर, सुश्री रेखा झांझी आदि साहित्यकारों और विद्वानों ने 'स्त्रीवाद और पंजाबी साहित्य' से जुड़े विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए।



श्री हरमीत सिंह, श्री कर्णजीत सिंह और श्री प्रेम सिंह

'मणिपुरी साहित्य में समकालीन महिला लेखन' विषय पर संगोष्ठी

9-10 फ़रवरी 2005, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी ने जे.एन. मणिपुरी नृत्य अकादमी और मणिपुरी लिटरेरी सोसाइटी के सहयोग से 9-10 फ़रवरी 2005 को 'मणिपुरी साहित्य में समकालीन महिला लेखन' विषय पर एक द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन इंफ़ाल में किया।

"मणिपुरी महिला लेखन की अनदेखी न करें, क्योंकि उन्हें मूल्यांकन और प्रोत्साहन दोनों की ज़रूरत है।" मणिपुरी साहित्य में समकालीन महिला लेखन पर आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रकाश सिंह ने मणिपुरी के मौजूदा महिला लेखन की प्रवृत्तियों को रेखांकित करते हुए साहित्य प्रेमियों से अनुरोध किया।

इस द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन साहित्य अकादेमी, जे.एन. मणिपुरी नृत्य अकादमी, लीकोल और मणिपुरी लिटरेरी सोसाइटी के सहयोग से इंफ़ाल में किया गया था। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि श्री खेलचंद्र सिंह ने अपने भाषण में जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं के योगदान को याद किया।

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री रामकुमार मुखोपाध्याय ने बड़ी साफ़गोई से हाशिए पर पड़े इस वर्ग की क़लम थामने और अपने अनुभव लिखने के कठिन संघर्ष की ओजस्वी प्रवृत्तियों को रेखांकित किया।

संगोष्ठी चार सत्रों में विभाजित थी। इनमें मणिपुरी लेखिकाओं की कविता, कहानी, उपन्यास, यात्रा-वृत्तांत, निबंध-लेखन, नाट्य-लेखन और आलोचना के भीतरी और बाहरी आयामों के साथ-साथ उनकी विषयवस्तु और शिल्प पर श्री लिंचेनबा मीताई, श्री के. हेमचंद्र, श्री च. शीलारेमानी, सुश्री के. शांतिबाला, सुश्री सुबदनी देवी, श्री इबोहाम्बी, श्री ई. दिनमणि सिंह, सुश्री एन. अरुणादेवी आदि ने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता श्री आर.के. झालाजीत सिंह ने की। उनका मानना था कि इस निर्विवाद विमर्श से मणिपुरी साहित्य में समकालीन महिला लेखन के वर्तमान परिदृश्य को नए आयाम मिलेंगे।

'दलितों का रंगमंच' विषय पर संगोष्ठी

10 फ़रवरी 2005, पांडिचेरी

"दलित साहित्य के क्षेत्र में और दलित वर्ग के लिए साहित्य अकादेमी ने सराहनीय कार्य किया है।" साहित्य अकादेमी चेन्नई कार्यालय द्वारा 'दलितों का रंगमंच' विषय पर आयोजित एक दिवसीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए विदुतलाई चिरुथायगल के महासचिव, थोल तिरुमावलावन ने कहा।

साहित्य अकादेमी और पांडिचेरी विश्वविद्यालय के प्रदर्शनकारी कला विभाग के सहयोग से डॉ. बी.आर. आंबेडकर सभागार में इस एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 10 फ़रवरी 2005 को पांडिचेरी में किया गया। कार्यक्रम का आरंभ प्रार्थना के साथ हुआ। साहित्य अकादेमी, चेन्नई कार्यालय के प्रभारी अधिकारी श्री जितेन्द्रनाथ ने अतिथियों और दर्शकों का स्वागत किया। अपने स्वागत-भाषण में उन्होंने दलित साहित्य और रंगमंच के क्षेत्र में अकादेमी के विशिष्ट आयोजनों और अन्य गतिविधियों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। उन्होंने बताया कि अकादेमी श्री पी. शिवकामी द्वारा संपादित दलित साहित्य का एक संकलन निकालने जा रही है।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री वी.सी. थॉमस, डीन, स्कूल ऑफ़ ह्यूमनिटी, पांडिचेरी विश्वविद्यालय ने की। पांडिचेरी विश्वविद्यालय, नाट्य विभाग के अध्यक्ष श्री के.ए. गुणशेखरन ने धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी चार सत्रों में विभाजित थी। जिसमें दलित रंगमंच से जुड़े विभिन्न विषयों पर श्री रामचंद्र मुकेरी, डॉ. पंजानगम और श्री ए. अरिवु नाम्बी की अध्यक्षता में श्री प्रसन्ना, श्री एम. जीवा, श्री ए. रामास्वामी, श्री ज्ञानी, श्री अश्वघोष, श्री बाला-सुगुमार, श्री के.ए. गुणशेखरन, श्री आर. राजू, श्री वी. अरुमुगम, श्री टी. बालासरवनन, श्री के. मुरुगेसन और श्री अरिमलम एस. पद्मनाभन आदि विद्वानों और साहित्यकारों ने आलेख प्रस्तुत किए। दलित रंगमंच की समस्याओं पर हुई चर्चा में प्रतिभागियों तथा श्रोताओं ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

वक्ताओं ने स्वीकार किया कि बच्चों के लिए रंगमंच एक सभ्य साधन हो सकता है और समाज के विकास में अहम भूमिका अदा कर सकता है। हालाँकि पिछले कुछ वर्षों में समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन आए हैं, फिर भी कुछ लोगों को मुख्यधारा से हटाया जा रहा है। ऐसी स्थिति में रंगमंच ही बदलाव ला सकता है।

कार्यक्रम के अंत में आर. राजू ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

'डोगरी साहित्य में समकालीन सरोकार और मुद्दे' विषय पर संगोष्ठी

2-3 मार्च 2005, जम्मू

"वैश्वीकरण हमारे जीवन का अपरिहार्य सत्य है और हम लोग इससे भाग नहीं सकते। इसलिए आज ज़रूरत है भारत की सूक्ष्म संस्कृति को बचाने और मज़बूत करने की।" जम्मू विश्वविद्यालय के कुलपति श्री अमिताभ मट्टू ने साहित्य अकादेमी और जम्मू विश्वविद्यालय के डोगरी विभाग के सहयोग से उक्त विषय पर आयोजित द्विदिवसीय संगोष्ठी में अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा।

इससे पहले डोगरी की विभागाध्यक्ष श्रीमती वीणा गुप्ता ने अपने स्वागत-भाषण में डोगरी भाषा और साहित्य के परिदृश्य पर प्रकाश डालते हुए डोगरी के क्षेत्र में हुए नवीनतम विकासों को भी संक्षेप में बताया।

साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य श्री रामनाथ शास्त्री ने अपने उद्घाटन-भाषण में डोगरी भाषा और साहित्य की उन्नति और विकास पर प्रकाश डाला।

डोगरी लेखक एवं फ़िल्म निर्माता श्री वेद राही ने कहा कि डोगरी को वैश्विक प्रवृत्तियों के साथ क़दम मिलाकर चलना है, किसी भी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने की यही कुंजी है।

साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री ललित मंगोत्रा ने डोगरी भाषा की उन्नति में लेखकों के साथ-साथ पाठकों की भूमिका पर भी प्रकाश डाला।



श्रीमती वीणा गुप्ता, श्री अमिताभ मट्टू, श्री रामनाथ शास्त्री, श्री ललित मंगोत्रा और श्री वेद राही

संगोष्ठी के तीन सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः श्री एन.डी. शर्मा, श्री वेद घई और श्री डी.सी. प्रशांत ने की और श्री नूर सिंह, श्री देव जमवाल, श्री जितेन्द्र उधमपुरी, श्री ललित गुप्ता, श्री शिव दत्त, श्रीमती चंपा शर्मा और श्रीमती वीणा गुप्ता ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। शाम को आयोजित काव्य गोष्ठी में श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा, श्री संदीप दुबे, श्री अजय गुप्ता, श्री धीरज केसर, श्री कीमत राज, श्री दया राम दया, श्री शक्ति सिंह, श्री कुलदीप डोगरा, श्री सुनील शर्मा, श्री सुरजीत होश और श्री शिव देव ने श्री प्रकाश प्रेमी की अध्यक्षता में कविता-पाठ किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता जम्मू दूरदर्शन केन्द्र के निदेशक श्री एम.के. रैणा 'रत्नाकर' ने की। इस सत्र के मुख्य अतिथि जम्मू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति श्री एम.आर. पुरी ने डोगरी भाषा के उत्थान के लिए युवा पीढ़ी को आगे आने के लिए कहा।

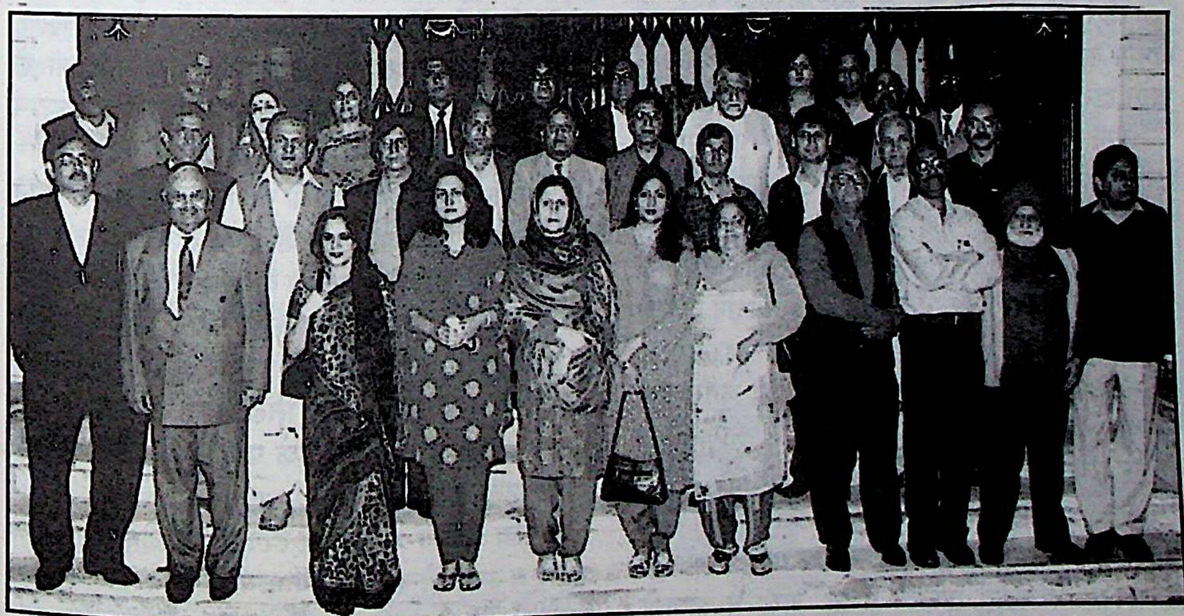
पाकिस्तान यात्रा पर भारतीय लेखक प्रतिनिधि-मंडल 2-14 मार्च 2005, पाकिस्तान

"दो देशों को क़रीब लाने में उर्दू और पंजाबी दोनों भाषाओं ने विशेष भूमिका निभायी है।" साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग ने जनाब फ़ख़र ज़मान जमां द्वारा आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कहा। उन्होंने दोनों देशों के बीच संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों, शिक्षकों, लेखकों और प्रतिनिधि-मंडलों के आदान-प्रदान के साथ-साथ पुस्तकों के अनुवाद की आवश्यकता पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि अगर जर्मनी के लोग बर्लिन की दीवार तोड़ सकते हैं तो कोई वजह नहीं है कि भारत और पाकिस्तान के लोग एक साथ मिलकर नहीं चल सकते।

भारतीय लेखकों का एक प्रतिनिधि मंडल साहित्य अकादेमी के सौजन्य से 13 दिनों की सौहार्द यात्रा पर पाकिस्तान गया था। इस प्रतिनिधि-मंडल में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग, सचिव प्रो. के. सच्चिदानंदन, उपसचिव (विक्रय) श्री आर.के. शर्मा के अतिरिक्त श्री गिरिराज किशोर, श्री सुतिंदर सिंह नूर, श्री शहरयार, श्रीमती पद्मा सचदेव, श्री साजिद रशीद, श्री क़मर रईस, श्री शीन काफ़ निज़ाम और श्रीमती तरन्नुम रियाज़ शामिल थे।

जनाब फ़ख़र ज़मान ने वीज़ा की औपचारिकताओं को आसान बनाने की बात रखी, ताकि दोनों देशों में आपसी आवागमन आसान हो सके।

प्रो. के. सच्चिदानंदन, सचिव, साहित्य अकादेमी ने कहा कि दोनों देशों की जनता शांति और भाईचारा चाहती है, इसके बावजूद दोनों देशों के निजी हित, विशेषकर धार्मिक तत्त्व, शांति के लिए बढ़ाए गए क़दमों को रोकते हैं और आपस में नफ़रत फैलाते हैं।



पाकिस्तानी प्रतिनिधि मंडल के सदस्य

श्री सुतिन्दर सिंह नूर ने पंजाबी भाषा की शैक्षिक स्थिति के बारे में विस्तारपूर्वक बताया और कहा कि पंजाबी भाषा और साहित्य को पढ़ने के लिए आपसी सहयोग को दृढ़ करना होगा।

3 मार्च को प्रतिनिधि-मंडल ने लाहौर अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले के उद्घाटन समारोह में शिरकत की। लाहौर पुस्तक मेले के प्रतिनिधियों ने प्रतिनिधि-मंडल का गर्मजोशी से स्वागत किया। पुस्तक मेले का उद्घाटन पंजाब के लेफ़्टिनेंट जनरल ख़लील मक़बूल ने किया। इस अवसर पर प्रो. गोपीचंद नारंग को 'गेस्ट ऑफ़ ऑनर' की शील्ड प्रदान की गई।

4 मार्च को प्रो. के. सच्चिदानंदन और श्री आर.के. शर्मा ने फ़ेडरेशन ऑफ़ पाकिस्तानी पब्लिशर्स के द्वारा भारत एवं पाकिस्तान के बीच बौद्धिक संपदा अधिकार, प्रकाशन और व्यापार विषय पर आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया। लाहौर अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले के अध्यक्ष श्री नज़म सेठी ने प्रो. के. सच्चिदानंदन को लाहौर पुस्तक मेले में साहित्य अकादेमी के स्टॉल के लिए ट्रॉफ़ी प्रदान की।

5 मार्च को प्रतिनिधि-मंडल को उर्दू विज्ञान मंडल द्वारा आमंत्रित किया गया। संवाद सत्र में प्रो. गोपीचंद नारंग ने भारत और पाकिस्तान के बीच शैक्षिक और बौद्धिक सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री सुतिन्दर सिंह नूर ने लाहौर विश्वविद्यालय के पंजाबी विभाग को उनका पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकें बनाने में भारत द्वारा प्रदान की जा रही मदद का ज़िक्र किया।

इसी दिन दोपहर के बाद साउथ एशियन फ़्री मीडिया एसोसिएशन की ओर से साहित्यिक संध्या का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रो. गोपीचंद नारंग ने की। श्री मुन्नू भाई और श्री इम्तियाज़ आलम के साथ भारत के प्रतिभागियों ने भी भारत-पाकिस्तान के रिश्ते को मज़बूत बनाने के लिए अपने विचार रखे। विचार गोष्ठी के बाद श्री शहरयार, श्री शीन काफ़ निज़ाम, श्री सुतिन्दर सिंह नूर, श्री क़मर रईस, श्रीमती पद्मा सचदेव, प्रो. के. सच्चिदानंदन और श्रीमती तरन्नुम रियाज़ ने कविता-पाठ किया।

6 मार्च को विश्व पंजाबी परिषद् ने प्रो. गोपीचंद नारंग की अध्यक्षता में 'साहित्य और शांति' विषयक संगोष्ठी आयोजित की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. नारंग ने भाषायी, साहित्यिक और सांस्कृतिक संबंधों की बात की। उन्होंने कहा कि भाषाएँ किसी को नहीं जानती, वे ख़ुशबू की तरह फैल जाती हैं। श्री गिरिराज किशोर ने शांति स्थापित करने और उसके लिए राहें खोजने की सलाह दी।

प्रो. के. सच्चिदानंदन ने कहा कि समकालीन समाज में हिंसा के मुख्य स्रोत वैश्वीकरण जातिवाद और लैंगिक असमानता है। प्रतिनिधि मंडल के बाक़ी सदस्यों ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

8 मार्च की सुबह प्रतिनिधि-मंडल इस्लामाबाद गया, जहाँ श्री अहमद फराज़ सहित अंतर्राष्ट्रीय उर्दू कांग्रेस के आयोजकों ने उनका स्वागत किया।

लेखकीय प्रतिनिधि मंडल द्वारा अपनी तरह की पहली पाकिस्तान यात्रा का उद्देश्य भारत-पाकिस्तान के सांस्कृतिक रिश्तों को मज़बूत कर फिर से संवाद क़ायम करने के लिए मंच तैयार करना था। दो देशों के बीच प्रतिनिधि-मंडलों के आदान-प्रदान से लेखकों और कलाकारों के बीच मित्रता के साथ-साथ संवाद बनता है।

'ओड़िसा में जनजातीय वाचिक साहित्य' विषय पर संगोष्ठी

8-9 मार्च 2005, कालाहांडी

"अपनी अनुपम सरंचना और विषय-वस्तु के कारण आदिवासियों के मौखिक साहित्य को सुरक्षित रखना आवश्यक है।" मुख्य अतिथि खगेन्द्र महापात्र साहित्य अकादेमी के कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय और महावीर सांस्कृतिक अनुष्ठान द्वारा आयोजित संगोष्ठी में बोल रहे थे।

प्रख्यात विद्वान एवं कवि श्री सीताकांत महापात्र ने अपने उद्घाटन-भाषण को आदिवासियों की भाषा पर केन्द्रित करते हुए आदिवासी साहित्यिक परंपरा के प्रलेखन की आवश्यकता पर बल दिया। सुप्रसिद्ध शोधकर्ता महेन्द्र मिश्र ने अपने बीज-भाषण में बताया कि ओड़िसा में क़रीब एक लाख आदिवासी बच्चे ऐसे हैं, जो न लिख सकते हैं, न पढ़ सकते हैं। उनकी आत्म तथा सामूहिक पहचान के लिए मौखिक परंपरा ज़रूरी है।

मुख्य अतिथि श्री प्रभाकर स्वैन ने कुछ आदिवासी गीत सुनाए व उनके सौन्दर्य-शास्त्रीय मूल्यों की बात की। ओड़िया परामर्श मंडल की संयोजिका और कथाकार श्रीमती प्रतिभा राय ने कहा कि भारतीय संस्कृति का मूल आदिवासी संस्कृति है।



संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में, श्री सत्यनारायण सिंह, श्री रामकुमार मुखोपाध्याय, श्रीमती प्रतिभा राय, श्री सीताकांत महापात्र, श्री खगेश्वर महापात्र, श्री महेन्द्र कुमार मिश्र और श्री प्रभाकर स्वैन

पहले सत्र में श्री चंद्रशेखर दास वर्मा की अध्यक्षता में सर्वश्री चित्रसेन पसायत, सेमुअल दानी और क्षेत्राबशी मनसेठ ने आलेख पढ़े। दूसरे सत्र में श्री सुभाषचंद्र मिश्र की अध्यक्षता में सर्वश्री आदिकंद मोहांती, गजानन मिश्र, श्री पुरुषोतम प्रधान और श्री सुरेन्द्र बेहरा ने अपने विचार रखे। श्री सरोज कुमार दास ने धन्यवाद ज्ञापन किया। पहले दिन के कार्यक्रम का समापन 'घुमरा नृत्य' के साथ हुआ।

दूसरे दिन, पहले सत्र में श्री खगेश्वर महापात्र की अध्यक्षता में श्री राजेन्द्र पाधी और श्री द्वारिका नाथ नायक ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र में श्री खगेश्वर महापात्र की अध्यक्षता में सुश्री सुनीति देवी और श्रीमती दमयंती बेसरा ने अपने आलेख पढ़े। अगले सत्र में श्री कृष्ण चंद्र प्रधान की अध्यक्षता में श्रीमती अंजली पाधी और श्री परमेश्वर मुंडा ने अपने विचार रखे।

संगोष्ठी का समापन श्री थौमल रामपुर के 'ढब नृत्य' के साथ हुआ।

'हिन्दी-मराठी : आदान-प्रदान' विषयक परिसंवाद
12 मार्च 2005, मुंबई

"रचनात्मक साहित्य के अनुवाद के लिए लक्ष्य भाषा और स्रोत भाषा के ज्ञान के साथ-साथ उन प्रदेशों की लोक-संस्कृति की जानकारी होना भी ज़रूरी है।" श्री दामोदार खड़से ने अनुवाद प्रक्रिया में, विशेषरूप से मराठी से हिन्दी अनुवाद करते समय, अनुवादकों के सामने आनेवाली समस्याओं पर विस्तार से बात करते हुए कहा।

वे साहित्य अकादेमी के मुंबई स्थित क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा 'हिन्दी-मराठी आदान-प्रदान' विषय पर हिन्दुस्तान प्रचार सभा, मुंबई में आयोजित परिसंवाद में बोल रहे थे।

साहित्य अकादेमी, मुंबई के क्षेत्रीय सचिव श्री प्रकाश भातंब्रेकर ने अपन स्वागत-भाषण में अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों का संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत किया।

सुश्री वसंतिका पुणतांबेकर, जो एक स्थापित अनुवादिका हैं, ने हिन्दी से मराठी और मराठी से हिन्दी में बहुत से अनुवाद किए हैं। अनुवाद करते समय सामने आनेवाली समस्याओं पर बात करते हुए उन्होंने अपने खट्टे-मिठे अनुभव श्रोताओं के साथ बाँटे। उनका मानना है कि कार्यालयी अनुवाद साहित्यिक अनुवाद से बिलकुल भिन्न होता है।

श्री जयप्रकाश सावंत ने चर्चा को आगे बढ़ाते हुए कहा कि अनुवाद के द्वारा मराठी और हिन्दी के साहित्य को समृद्ध किया जा सकता है।

श्री बलवंत जेऊरकर ने हिन्दी में अनूदित मराठी साहित्य



श्री जयप्रकाश सावंत, श्री बलवंत जेऊरकर और श्री दामोदार खड़से

का संक्षिप्त ब्यौरा दिया और कहा कि मराठी-हिन्दी अनुवाद का आदान-प्रदान दोतरफ़ा न होकर एकतरफ़ा है।

हिन्दी की लब्धप्रतिष्ठ लेखिका सुश्री पुष्पा भारती ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में हिन्दी साहित्यकारों और विद्वानों को तर्कों का गहराई से विश्लेषण किया और स्वीकार किया कि मराठी-हिन्दी अनुवाद का पारस्परिक आदान-प्रदान एकतरफ़ा है।

कार्यक्रम के अंत में श्री प्रकाश भातंब्रेकर ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

'प्रेमचंद के साहित्य में दलित और स्त्री' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

12-13 मार्च 2005, अलीगढ़

"हर बड़ा फ़नकार अपने दौर की पैदावार होता है, लेकिन वह अपनी रचनाओं के ज़रिए एक नया दौर भी पैदा करता है। प्रेमचंद ऐसे ही बड़े फ़नकार और अदीब थे। उन्होंने अपने अदब के ज़रिए सामाजिक बुराइयों पर गहरी चोट करते हुए इंसानी क़द्रों पर ज़ोर दिया।" ये उद्गार हैं उर्दू के प्रसिद्ध कथाकार श्री जोगिंदर पाल के। वे अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय और साहित्य अकादेमी द्वारा संयुक्त रूप से 'प्रेमचंद के साहित्य में दलित और स्त्री' विषय पर आयोजित गोष्ठी में अध्यक्ष पद से बोल रहे थे।

इस गोष्ठी में हिन्दी-उर्दू के विद्वानों ने एक मंच पर प्रेमचंद साहित्य पर विचार-विमर्श किया।

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी की उद्घाटन करते हुए सुप्रसिद्ध कथाकार श्री विभूति नारायण राय ने दलित संदर्भ में प्रेमचंद के कथासाहित्य का विवेचन करते हुए उन्हें दलित-मुक्ति का समर्थक बताया। उन्होंने कहा कि सवर्ण सोच से प्रभावित भारतीय समाज में दलित-समाज की मुक्ति का मार्ग कितना जटिल था? यह प्रेमचंद बख़ूबी समझते थे, इसीलिए वे परंपरागत भारतीय सामाजिक व्यवस्था और धार्मिक तंत्र को तोड़ना आवश्यक समझते थे।

उन्होंने आगे कहा कि बड़ा रचनाकार और सृजनकर्ता हमेशा युगद्रष्टा होता है। वह अपने व्यक्तित्व और समय की सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए, नए रास्ते की तलाश करता है। प्रेमचंद ने समाज के सबसे निम्न एवं उत्पीड़ित वर्ग—दलित और स्त्रियों—की व्यथा को समझा और उसे शब्दों में पिरोया। इसीलिए वे बेचैनी के साथ नए रास्ते की तलाश करते है।

मुख्य वक्ता के रूप में हिन्दी के प्रसिद्ध समीक्षक प्रो. कुँवरपाल सिंह ने कहा कि प्रेमचंद का नारी विमर्श और दलित विमर्श परंपरागत भारतीय समाज को बदलने के लिए संघर्षशील एवं कर्मठ नारियों और दलितों से ज़ुल्म के विरुद्ध प्रतिकार करने का आह्वान करता है। उन्होंने कहा कि *गोदान* की मालती नई और जागरूक नारी का प्रतीक है, जो सामाजिक परिवर्तन और समाज के नव निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाती है। प्रो. सिंह ने प्रेमचंद की प्रासंगिकता को रेखांकित करते हुए कहा कि आज़ादी के बाद भारतीय समाज तेज़ी से बदला है। इस बदलते समाज में आज भी प्रेमचंद हमारे बीच प्रासंगिक हैं, क्योंकि उन्होंने धर्म, धन एवं सत्ता के गठबन्धन के दुष्परिणामों को पहली बार अपने कथासाहित्य के द्वारा पाठकों के सामने रखा।

संगोष्ठी में आमंत्रित विद्वानों और उपस्थित जनों का स्वागत करते हुए संगोष्ठी की निर्देशक प्रो. आज़रमी दुख़्त सफ़वी ने प्रेमचंद की रचनाओं से महत्त्वपूर्ण उद्धरण देते हुए कहा कि दलित और स्त्री की वास्तविक स्थिति का जैसा चित्रण प्रेमचंद के यहाँ मिलता है, वैसा उनके समकालीन किसी लेखक के यहाँ नहीं मिलता। उनकी कहानियों में औरत के विभिन्न रूप मौजूद हैं। प्रेमचंद ने औरतों के हक़ूक़ के लिए न केवल आवाज़ बुलंद की, बल्कि उनमें बेदारी पैदा करके उन्हें गुलामी से आज़ादी का रास्ता भी दिखाया।

संगोष्ठी के प्रथम अकादमिक सत्र, 'प्रेमचंद के साहित्य में दलित' में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के श्री कुमार पंकज ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि प्रेमचंद ने अपने साहित्य में आम आदमी को प्रतिष्ठा प्रदान की है। उन्होंने पहली बार जन-साधारण की समस्याओं को उठाते हुए साहित्य को जनसाधारण से जोड़ा। हमें प्रेमचंद साहित्य पर चर्चा करने से पहले उनकी रचनाओं के पाठ को ध्यान से पढ़ना चाहिए फिर गंभीरतापूर्वक दलितों, औरतों, किसानों तथा विभिन्न वर्गों की मानसिकता, आशाओं, आकांक्षाओं पर चर्चा करनी चाहिए।

दलित साहित्य के प्रसिद्ध अध्येता श्री चमन लाल (पंजाबी विश्वविधालय, पटियाला) ने कहा कि जो दलित प्रेमचंद के साहित्य को जला रहे हैं, वे अपने आपको अपमानित कर

रहे हैं। प्रेमचंद से बड़ा दलितों का हमदर्द और सहायक हिन्दी-उर्दू में कोई नहीं है।

श्री आशिक़ बालौत ने अपने आलेख में यह सवाल उठाया कि यह कितनी बड़ी विडंबना है कि पहली बार अछूतों, दलितों के प्रति संवेदना व्यक्त करनेवाले अग्रणी लेखक प्रेमचंद पर कुछ तथाकथित दलितवादी, दलित विरोधी होने का आरोप लगाकर दलित वर्ग के भीतर ही पैदा हुए उस नव ब्राह्मणवादी वर्ग की सत्ता की राजनीति कर रहे हैं, जो फासीवादी संस्कृति को जन्म दे रहा है।

दलित लेखक श्री कँवल भारती ने अपना आलेख पढ़ते हुए कहा कि प्रेमचंद के दलित पात्र ही सबसे अधिक क्रांतिकारी हैं। उनके उपन्यासों और कहानियों में दलित के प्रति कोरी सहानुभूति नहीं है, वरन् गहन संवेदना है। सवर्ण दलितों के संघर्ष में वह दलितों के साथ हैं। दलितों की मुक्ति के उपाय उनके साहित्य में मिलते है। भारती ने आगे कहा कि प्रेमचंद कायस्थ थे, इसीलिए उनके साहित्य में दलितों के प्रति सहानुभूति मिलती है। अगर वे सवर्ण होते तो दलितों के प्रति उनकी ऐसी गहन संवेदना न होती।

सायं में एक कहानी गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें हिन्दू-उर्दू के प्रसिद्ध कथाकारों—सर्वश्री क़ाज़ी अब्दुल सत्तार, जोगिन्दर पाल, सय्यद मुहम्मद अशरफ़, तारिक़ छतारी श्रीमती नमिता सिंह ने कहानी-पाठ किया। इन कथाकारों की कहानियों पर इस सत्र के संचालक श्री आशिक़ बालौत ने कहा कि ये कहानियाँ मानवीय संवेदना और सामाजिक बदलाव की प्रतीक हैं।

तृतीय अकादमिक सत्र 'दलित एवं नारी-विमर्श' विषय का प्रवर्त्तन करते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के श्री अजय तिवारी ने कहा कि प्रेमचंद के दलित और नारी-विमर्श को जानने के लिए पूरे राष्ट्रीय आंदोलन को समझने की आवश्यकता है। हमारे राष्ट्रीय आंदोलन का लक्ष्य केवल राजनीतिक स्वंतत्रता प्राप्त करना नहीं था, बल्कि हमारे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन को नया रूप देना भी था। जो लेखक और संपादक दलित-विमर्श और नारी-विमर्श के नाम पर व्यापार कर रहे हैं, वे प्रेमचंद की महान् विरासत को कलंकित करने का प्रयास कर रहे हैं।

हिन्दी के आलोचक प्रो. प्रदीप सक्सेना ने बहस को आगे बढ़ाते हुए अपने आलेख में कहा कि यह इन विमर्शों की शक्ति का ही प्रमाण है कि तमाम बुद्धिजीवी चाहे पक्ष या विपक्ष में हों, लेकिन वे आज इन ज्वलंत मुद्दों पर संजीदगी से बात कर रहे हैं। गोष्ठियों के माध्यम से हम किसी निष्कर्ष पर पहुँचना चाहते हैं। लेकिन अभी तक गोष्ठी में प्रेमचंद के चिन्तन पर कम बात की गई है। प्रेमचंद का प्रौढ़ चिन्तन स्त्री प्रश्न पर पुरुष लेखकों में पहला प्रगतिशील हस्तक्षेप है।

श्री इम्तियाज़ अहमद ने अपने आलेख में नारी-विमर्श के संदर्भ में कहा कि प्रेमचंद ने भारतीय नारी को जो गरिमा और महत्त्व प्रदान किया है, वह भारतीय साहित्य में अद्वितीय है।

श्री आशुतोष कुमार ने कहा कि हम अपने बड़े रचनाकारों से जनतांत्रिक रिश्ता बनाकर ही उन पर ठीक से विचार कर सकते हैं। प्रेमचंद से भी हमें पहले यही जनतांत्रिक रिश्ता स्थापित करना होगा, तभी उनके साहित्य के परिप्रेक्ष्य में दलित और नारी-विमर्श पर बहस की जा सकती है।

सुप्रसिद्ध कथाकार डॉ. नमिता सिंह ने अपने आलेख में कहा कि प्रेमचंद की नारियाँ परंपरागत सामाजिक व्यवस्था के बदलाव की प्रतीक हैं।

श्री रमेश कुमार ने प्रेमचंद के साहित्य के पुनर्पाठ का आग्रह किया। श्री अजय बिसारिया ने अपने आलेख में प्रेमचंद को राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन का साहित्यिक प्रवक्ता बताया और कहा कि वह एक ऐसे रचनाकार हैं, जो अपने युग को कथासाहित्य में ढालने में समर्थ रहे।

श्री शैलेश ज़ैदी ने हस्तक्षेप करते हुए प्रेमचंद को सही परिप्रेक्ष्य में देखने, परखने पर बल दिया।

श्री गोपाल कृष्ण शर्मा ने दलित और स्त्री के नाम पर की जा रही राजनीति का विरोध किया।

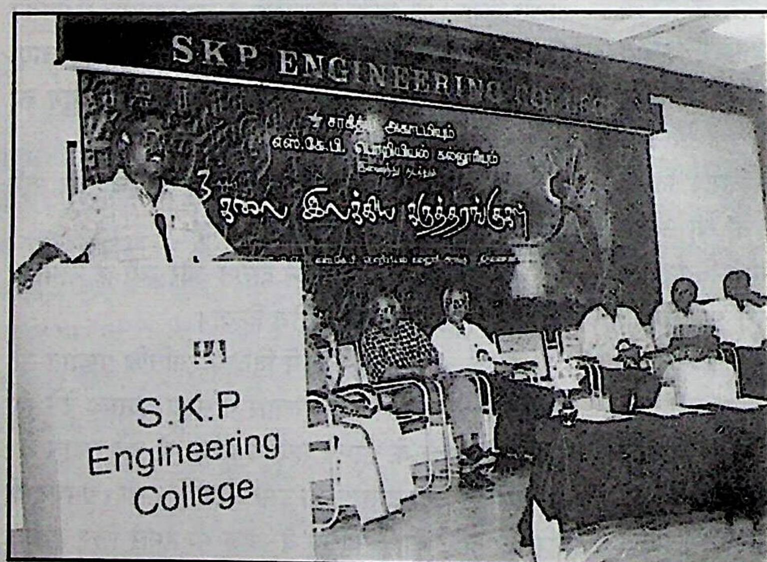
गोष्ठी के समापन सत्र में विशिष्ट अतिथि प्रख्यात उर्दू कथाकार श्री क़ाज़ी अब्दुल सत्तार ने मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा कि प्रेमचंद के सामने राष्ट्रीय मुक्ति के बड़े सवाल थे। उन्होंने नारी और दलितों को इसी संदर्भ में देखा। प्रेमचंद के पास दूर-दृष्टि थी, इसीलिए वे आज भी हमारे लिए सार्थक बने हुए हैं।

'आधुनिक तमिष़ साहित्य की प्रवृत्तियाँ' विषय पर संगोष्ठी

15-17 मार्च 2005, तिरुवन्नामलै

"आधुनिक तमिष़ साहित्य की प्रवृत्तियों पर चर्चा के लिए चेन्नई शहर से दूर इस संगोष्ठी का आयोजन सच में एक सराहनीय क़दम है।" साहित्य अकादेमी के युवतम महत्तर सदस्य श्री डी. जयकांतन ने अपने उद्घाटन-भाषण में कहा। इस संगोष्ठी का आयोजन साहित्य अकादेमी के चेन्नई कार्यालय ने एस. के. पी. इंजीनियरिंग कॉलेज, तिरुवन्नामलै के सहयोग से किया था।

संगोष्ठी दस सत्रों में विभाजित थी। पाँच सत्रों में आज की तमिष़ कविता, कथासाहित्य, लघु-कहानी, रंगमंच और आलोचना पर विचार-विमर्श हुआ। इन सत्रों में क्रमशः जी. तिलकावती, डॉ. पंजागम, मेलनमई पोन्नूसामी, प्रलयन और टी. एस. नटराजन की अध्यक्षता में मालती मैत्री, कलालप्रिया, के. रामचंद्रन, अरुणन, मुरुगेषा पांड्यन, लक्ष्मण पेरुमल, अष़ाकिया पेरियावन, अश्वघोष, मंगई, पेरुमल और इरा मोहन ने अपने आलेख पढ़े। अगले दो सत्रों में इरा मोहन और कुरिंजीवेलन की अध्यक्षता में वासंती, बामा, मुतु नीलावन, के. वी. शैलजा, रुद्र तुलसीदास, तमिलनादन, जी. कुप्पूस्वामी, के. स्टालिन और आर. नटराज ने तमिष़ साहित्य की नई प्रवृत्तियों और अनुवाद की समस्याओं पर विस्तार से विचार-विमर्श किया। दसवें सत्र में 'क्रासरोड साहित्य' पर श्री आर. बालचंद्रन 'बाला' की अध्यक्षता में एस. विश्वनाथन ने अपना आलेख पढ़ा। दो सत्र रचना पाठ को समर्पित थे।



संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र

समापन सत्र के अध्यक्ष पोन्नीलन और मुख्य अतिथि श्री दामोदर मावज़ो थे। समापन वक्तव्य में श्री एम. मुकंदन ने मलयाळम् साहित्य की बदलती प्रवृत्तियों की चर्चा की।

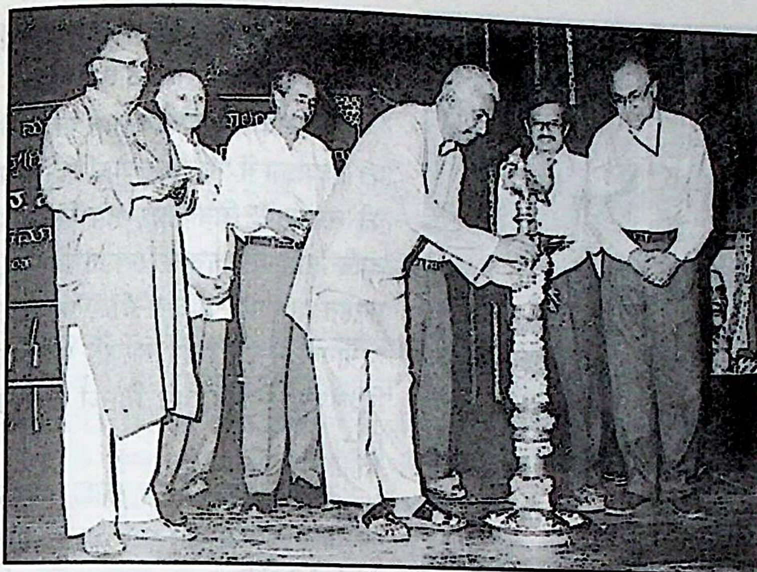
पु. टी. ना. की जन्मशतवार्षिकी

17 मार्च 2005, बंगलौर

"पु.टी.ना. का अपनी रचनाओं में प्राचीनतम शब्दों (*बागी, इरावू, तन्नाथे, होलालू*) का प्रयोग करना भाषा के प्रति उनके प्रेम को दर्शाता है।" गिराड्डी गोविन्दराज ने पु.टी.ना. जन्म-शतवार्षिकी के अवसर पर साहित्य अकादेमी, बंगलौर क्षेत्रीय कार्यालय, डॉ. पु. टी. ना. ट्रस्ट और कन्नड एवं संस्कृति विभाग के सहयोग से आयोजित संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कहा।

साहित्य अकादेमी, बंगलौर के क्षेत्रीय सचिव श्री ए. कृष्णमूर्ति ने अपने स्वागत-भाषण में पु. टी. ना. के महाकाव्य *श्रीहरिचरित* की बात की। श्री सी. आर. सिम्हा ने उनके गीता-नाटक गीता *नाटकगलु* के बारे में चर्चा की। श्री एच. एस. वेंकटेश ने पु. टी. ना. के काव्य में 'मंदिर संस्कृति' को रेखांकित किया।

अगले सत्र में श्री जी. एस. अमूर की अध्यक्षता में श्री एस. वी. रंगाचार ने पु. टी. ना. के रचनात्मक गद्य पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री ओ. एल. नागभूषण ने पु. टी. ना. के काव्य विचारों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि पु. टी. ना. आलोचकों को यह कहते हुए नकारते हैं कि आलोचक को कविता की समझ कभी हो ही नहीं सकती। पु. टी. ना. ट्रस्ट के श्री राम भट्ट ने कार्यक्रम का संचालन किया। दोपहर में श्री चंद्रशेखर कंबार द्वारा निर्देशित पु. टी. ना. पर निर्मित फ़िल्म का प्रदर्शन हुआ।



उद्घाटन सत्र में, श्री एच. एस. वेंकटेश मूर्ति, श्री एच. वी. रंगाचार्य, श्री सी. एन. रामचंद्रन, श्री गिराड्डी गोविन्दराज, श्री ओ. एल. नागभूषण स्वामी और श्री सी. आर. सिम्हा

समापन सत्र में अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष और महत्तर सदस्य यू. आर. अनंतमूर्ति ने कहा कि पु. टी. ना. अपने समकालीन लेखकों से अलग हैं।

मुख्य अतिथि श्री बी. ए. विवेक ने कहा कि पु. टी. ना. ने 'गाँधीजी' नामक कविता में गाँधी के व्यक्तित्त्व का बड़ी ख़ूबसूरती से चित्रण किया है।

संगोष्ठी के बाद शाम को पु. टी. ना. के नाटक 'अहिल्या' का मंचन उडुपी के कलाविदरु ग्रुप ने किया। इसका निर्देशन श्री उधावर माधवाचार्य ने किया था।

'उर्दू की नई बस्तियाँ' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी
18-20 मार्च 2005, नई दिल्ली

"राजनीति भाषाओं को पैदा नहीं कर सकती है। अगर ऐसा होता तो बँटवारे के बाद गत 57 वर्षों में उर्दू भाषा हिन्दुस्तान में ख़त्म हो चुकी होती। शिक्षा संबंधी मुश्किलों और समस्याओं के बावजूद देश में उर्दू की लोकप्रियता में कोई कमी नहीं आई है। वास्तव में उर्दू हिन्दुस्तान की जनता की भाषा है। तमाम क्षेत्रीय बोलियों और भाषाओं के साथ उर्दू का बहुत गहरा संबंध है। सही अर्थों में यह एक सेक्युलर भाषा का दर्जा रखती है।" सुप्रसिद्ध उर्दू साहित्यकार और साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग ने "उर्दू की नई बस्तियाँ" विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में कहा।

इस त्रिदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन साहित्य अकादेमी ने अपने नई दिल्ली स्थित सभागार में किया था। प्रो. के. सच्चिदानंदन, सचिव, साहित्य अकादेमी ने सभी अतिथियों और श्रोताओं का स्वागत किया। अपने स्वागत-भाषण में उन्होंने उर्दू की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परंपरा पर प्रकाश डाला।

इस संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए लॉस एंजलिस से पधारीं मुख्य अतिथि श्रीमती नैयर जहाँ ने कहा कि हिन्दुस्तान में जन्म लेकर उर्दू भाषा आज पूरे विश्व में फैल चुकी है। उर्दू को जहाँ भी प्यार और मोहब्बत की आबो-हवा मिलती है यह अपनी खुशबू बिखेरने लगती है। उन्होंने बताया कि अमेरिका के पश्चिमी तट पर उर्दू का चिराग़ रौशन है और इस चिराग़ को रौशन करने में 'उर्दू मरकज' नामक संस्था का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

कनाडा से पधारे डॉ. सैयद तक़ी आबिदी ने अपने बीज-भाषण में उर्दू भाषा के भविष्य से जुड़े कई सवाल उठाए "क्या आनेवाले पचास वर्षों तक उर्दू की ये नई बस्तियाँ क़ायम रह पाएँगी।" उर्दू भाषा की लिपि पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए उन्होंने पूछा कि क्या उर्दू रोमन लिपि में जीवित रह पाएगी? अपने व्याख्यान में उन्होंने सुझाव दिया कि इस संगोष्ठी में इस विषय पर भी बहस होनी चाहिए कि आधुनिक तकनीक के युग में उर्दू का विस्तार और प्रगति किस तरह संभव है। इतना ही नहीं, उन्होंने यह भी कहा कि उर्दू भाषा के विकास के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय कमेटी स्थापित की जानी चाहिए, जो इसके विकास और प्रगति की राह में आनेवाली रुकावटों से निबट सके।

शीन काफ़ निज़ाम ने सभी मेहमानों को शुक्रिया अदा करते हुए कहा कि उर्दू पर कितना भी बुरा वक़्त आया हो,



संगोष्ठी का एक क्षण

बलराज कोमल और अब्दुल मन्नान तर्ज़ी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

छठे सत्र में अब्दुल कलाम क़ासिमी की अध्यक्षता में 'नई बस्तियों में उर्दू लिपि की समस्याएँ' विषय पर सर्वश्री सैयद तक़ी आबिदी, अब्दुल ग़फ़्फ़ार अज़्म, फ़रहत शहज़ाद और मनज़िर आशिक़ हरगानवी ने उर्दू लिपि से जुड़े मुद्दों पर विश्लेषणात्मक विचार-विमर्श प्रस्तुत किया।

सातवें सात्र में श्री आफ़ाक़ अहमद की अध्यक्षता में यासमीन बोधी और इरतिज़ा करीम ने 'यूरोप, स्कैण्डिनेविया और मॉरीशस में उर्दू' विषय पर अपने आलेख पढ़े।

लेकिन वह हमेशा फलती-फूलती रही है और इसके विकास और प्रगति का सिलसिला निरंतर जारी है।

भारत में पाकिस्तान के उच्चायुक्त श्री अज़ीज़ अहमद ख़ान, गुलज़ार देहलवी तथा ख़्वाजा हसन सानी निज़ामी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

नौ सत्रों में विभाजित इस तीन-दिवसीय समारोह में लगभग 50 देशी-विदेशी विद्वानों और साहित्यकारों ने उर्दू भाषा से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए।

पहले सत्र में उर्दू की नई बस्तियों से जुड़ी समस्याओं पर चर्चा हुई। इस सत्र में सुश्री मुग़नी तबस्सुम की अध्यक्षता में सर्वश्री रज़ा अली आबिदी, ख़लील-उर-रहमान, वकील अंसारी और आफ़ाक़ अहमद ने अपने आलेख पढ़े।

दूसरे और तीसरे सत्र में "बरतानिया में उर्दू भाषा और साहित्य" विषय पर चर्चा हुई। क्रमशः रज़ा अली आबिदी और क़मर रईस की अध्यक्षता में सर्वश्री साबिर इरशाद उस्मानी, अब्दुल गफ़्फ़ार अज़्म ग़ज़नफ़र, सैफ़ी सिरौंजी, ओबैद सिद्दीक़ी, एम. असदुद्दीन, शाफ़े क़िदवई, निज़ाम सिद्दीक़ी, फ़े सीन एजाज़ और मोहम्मद शाहिद हुसैन ने अपने आलेख पढ़े।

अगले दिन, चौथे एवं पाँचवे सत्र में संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में उर्दू भाषा और साहित्य की समस्याओं पर चर्चा के साथ-साथ उनके समाधानों पर भी जमकर बहस हुई। इन सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः डॉ. अब्दुल्लाह और वारिस अल्वी ने की और सर्वश्री अब्दुर रहमान अब्द, अतहर रिज़वी,

तीसरे और अंतिम दिन, आठवें सत्र में मोहम्मद ज़मान आज़ुर्दा की अध्यक्षता में सर्वश्री रज़ा अली आबिदी, सैयद तक़ी आबिदी और ख़लील-उर-रहमान ने विदेशों में आबाद हो रही उर्दू की नई बस्तियों में उर्दू पत्रकारिता के साथ-साथ उर्दू पत्र-पत्रिकाओं के योगदान और उपलब्धियाँ पर विचार-विमर्श किया।

नवें सत्र में पाकिस्तान से आए श्री अमजद इस्लाम अमजद की अध्यक्षता में नासिर बग़दादी, आलिया इमाम, गुलज़ार जावेद और हुमायूँ ज़फ़र ज़ैदी ने 'खाड़ी और मध्य पूर्व देशों में उर्दू की वर्तमान स्थिति' पर आलेख प्रस्तुत किए।

इस्लामाबाद (पाकिस्तान) से पधारे आलिया इमाम ने चीन में उर्दू के अध्ययन और अध्यापन पर आलेख में रूस, उज़बेकिस्तान और मध्य एशिया में उर्दू भाषा की गतिविधियों का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी में भारत, पाकिस्तान, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी, मॉरीशस और स्कैण्डिनेवियाई देशों से आए विद्वानों और साहित्यकारों ने अपने-अपने देशों में उर्दू भाषा में रचे जा रहे साहित्य के योगदान और समस्याओं पर बारीकी से विचार-विमर्श किया, जिसके परिणामस्वरूप अनेक अनुद्घाटित तथ्य सामने आए।

अनन्दाशंकर राय की जन्मशतवार्षिकी पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

22-24 मार्च 2005, कोलकाता

साहित्य अकादेमी ने 22-24 मार्च 2005 को अन्नदाशंकर राय की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर अपने क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के सभागार में एक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

अपने स्वागत व्याख्यान में अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव (कोलकाता) श्री रामकुमार मुखोपाध्याय ने वक्ताओं का स्वागत किया तथा उपस्थित श्रोताओं को उनका परिचय दिया। उन्होंने कहा कि अन्नदाशंकर राय ने साहित्य की कम-से-कम दस विधाओं में व्यापक रूप से प्रयोग किए तथा बाङ्ला, अंग्रेज़ी और ओड़िया भाषाओं पर अपनी दक्षता एवं सृजनात्मकता का स्थायी प्रभाव छोड़ा। विद्वान लेखक एवं नॉर्थ बंगाल विश्वविद्यालय और विश्वभारती के पूर्व कुलपति श्री अम्लान दत्ता ने संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कहा कि बाङ्ला और ओड़िया के जीवन और साहित्य में अन्नदाशंकर राय का प्रमुख स्थान है। उन्होंने कहा कि किसी भी एक सफल सृजनात्मक लेखक की भाँति अन्नदाशंकर राय भी स्थानीय और वैश्विक जीवन से संबंध रखते थे। एक ओर तो अन्नदाशंकर राय ने एक कलाकार के रूप में ख़ुशी देने के लिए लिखा है तथा दूसरी ओर उन्होंने एक सामाजिक कर्त्तव्य के निष्पादन हेतु लिखा है। उन्होंने यह भी कहा कि उनकी तरह का मार्गदर्शन करनेवाले लेखक आज चाहे न के बराबर हों, लेकिन उनके विचार हमारे जीवन को सही दिशा प्रदान करते रहेंगे। अन्नदाशंकर साहित्य के प्रख्यात विद्वान श्री धीमान दासगुप्ता ने अपने बीज-भाषण में बताया कि अन्नदाशंकर राय बंगाल नवजागरण के अंतिम रचनाकार थे। उन्होंने बाङ्ला साहित्य की समस्त विधाओं में अपना योगदान दिया है तथा उसकी समस्त प्रशाखाओं को समृद्ध भी किया। वह न केवल एक बहुसर्जक लेखक थे वरन् एक बहुमुखी प्रतिभा वाले व्यक्ति भी थे। यह प्रतिभा उनकी जीवन-कला, दूर-दृष्टि और सृजनात्मक लेखन में देखी जा सकती है। अन्नदाशंकर राय बचपन से ही दो प्रकार के महान् साहित्यों से प्रभावित रहे। पहला साहित्य तीन हज़ार वर्ष पुराना भारतीय साहित्यिक परंपरा का है तथा दूसरा यूरोपीय पुर्नजागरण का पाँच हज़ार वर्षों पुराना साहित्य है। अन्नदाशंकर ने इन दोनों विधाओं को अपनी साहित्यिक क्षमता से समृद्ध किया है। उन्होंने कहा कि अन्नदाशंकर का साहित्यिक सृजन मात्र एक साहित्यिक कार्य ही नहीं था, बल्कि वह कला-दर्शन का एक अभिन्न अंक है। बाङ्ला निबंधकार और गाँधीवादी कार्यकर्त्ता श्री शैलेश कुमार बंद्योपाध्याय, जो संगोष्ठी के मुख्य अतिथि भी थे, ने कहा कि अन्नदाशंकर राय मनुष्य के बहुमुखी विकास में विश्वास रखते थे। अपने लेखों में, मानव जाति की विवेचना करने के लिए उन्होंने उनकी बहुमुखी विकास प्रक्रिया को पुनर्जीवित किया है। अपने बचपन में अन्नदाशंकर वैश्विकतावाद से प्रभावित थे तथा बाद के वर्षों में वह तीन महान रूसी लेखकों दोस्तोयव्स्की, टॉलस्टाय और चेखव से प्रभावित हुए। उन्होंने अपना समस्त जीवन सत्य की खोज तथा मानव के कल्याण में लगा दिया। श्री बंद्योपाध्याय ने बताया कि वह मानवी समस्याओं से गहनता से जुड़े रहे तथा उन्होंने अपना व्यक्तित्व समाज को समर्पित कर दिया। प्रख्यात बाङ्ला कवि, कथाकार एवं अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री सुनील गंगोपाध्याय ने कहा कि कई लोग अन्नदाशंकर का मूल्यांकन विचारक के रूप में करते हैं, जबकि लेखक उनका मूल्यांकन उनकी रचनात्मकता के आधार पर करते हैं। उनके पूर्वकालीन कार्य जैसे—'अगुन नियं खेला, पुतुल नियं खेला', उनकी निर्भीक आधुनिकतावादी छवि को प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने आगामी सत्रों में अन्नदाशंकर के कविता-संग्रह से उनकी कुछ कविताएँ भी पढ़कर सुनाईं।



उद्घाटन सत्र में भी श्री सुनील गंगोपाध्याय और श्री शैलेश कुमार बंद्योपाध्याय

कार्यक्रम के अंत में भी दिब्येन्दु पालित ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

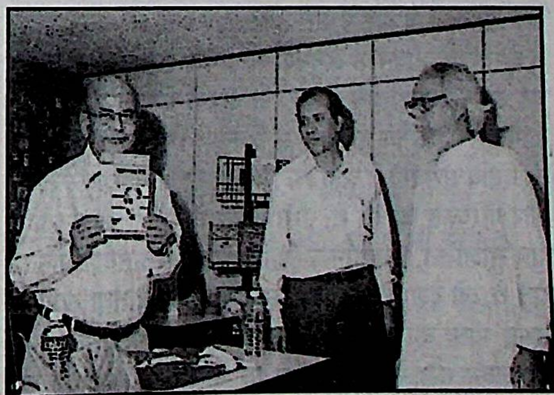
प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री सुरजीत दासगुप्ता ने की। श्री अब्दुर रऊफ़, श्री हुसैनुर रहमान, सुश्री मानसी दास गुप्ता तथा प्रो. सोमेन्द्रनाथ बंद्योपाध्याय ने 'हमारे युग में अन्नदाशंकर राय' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। समालोचक और 'चतुरंग' के संपादक श्री अब्दुर रऊफ़ ने अन्नदाशंकर राय के विचारों के संदर्भ में भारत की समकालीन समस्याओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अन्नदाशंकर ने अपने समय की सभी समस्याओं, चाहे वह सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा राजनीतिक हों, को अपने लेखन में उजागर किया है। इस प्रकार उन्होंने अपने लेखन द्वारा प्रत्येक समस्या के निदान हेतु बुद्धिवादी और तर्कसम्मत सुझावों का महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। निबंधकार एवं समालोचक श्री हुसैनुर रहमान ने 'अन्नदाशंकर राय : आधुनिकतावाद और वर्तमान विश्व' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि अन्नदाशंकर एक विलक्षण प्रतिभा वाले व्यक्ति थे, जिन्होंने अपने सृजनात्मक कार्यों में अपनी कला का प्रयोग वास्तविक तथा शैलीगत दोनों रूपों में किया। सुश्री मानसी दास गुप्ता ने कहा कि अन्नदाशंकर शब्दों को तोड़े-मरोड़े बिना वास्तविक सत्य को कहने में सक्षम थे। उन्होंने युवाओं को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अन्नदाशंकर के सृजनात्मक कार्यों का मूल्यांकन करने हेतु आह्वान किया। विश्व भारती के पूर्व बाङ्ला प्रोफ़ेसर सोमेन्द्रनाथ बंद्योपाध्याय ने कहा कि अन्नदाशंकर एक राष्ट्रवादी होने के साथ-साथ एक अंतर्राष्ट्रवादी भी थे तथा उनका एक आदर्शवादी सार्वभौमिक दृष्टिकोण था—एक ऐसा आदर्श, जो भोर की भाँति पवित्र था। अन्नदाशंकर के जीवनी लेखक एवं कथाकार श्री सुरजीत दासगुप्ता ने अपने अध्यक्षीय वव्याख्यान में अन्नदाशंकर द्वारा लिखित 'एई समय' में बताए गए अशुभ समय को व्याख्यायित किया। अन्नदाशंकर ने 90 वर्ष की आयु में भी सामाजिक अन्याय से कभी समझौता नहीं किया। अन्नदाशंकर उग्रवादियों के एक संगठन के निशाने पर तब बन गए, जब उनका 'अनुब्रबेश' विषयक निबंध एक समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री शिवनारायण राय ने की। इस सत्र के वक्ता थे—सर्वश्री चिन्मय गुहा, कौशिक गुहा सौरीन भट्टाचार्य और स्वप्न मजूमदार। इस सत्र का विषय था—'अन्नदाशंकर और उनके विचार'। निबंधकार एवं फ्रांसीसी भाषा के विद्वान श्री चिन्मय गुहा ने अन्नदाशंकर के जीवन पर रोमा रोलां के प्रभाव के बारे में बताया। श्री गुहा ने बताया कि चेतना के स्तर पर वह रोमा रोलां के आभारी थे। रूसी भाषा के विद्वान एवं अनुवादक श्री कौशिक गुहा ने टॉलस्टाय के प्रति अन्नदाशंकर के विचारों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि अन्नदाशंकर का टॉलस्टाय से साहित्यिक परिचय तब हुआ जब उन्होंने 'ट्वेनूटि थ्री टेल्स ऑफ़ टॉलस्टाय' का अनुवाद किया, जो उनके शुरुआती दिनों की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी। उन्होंने बताया कि अन्नदाशंकर ने टॉलस्टाय से एक ऐसी लेखन शैली को ग्रहण किया जो अतिसूक्ष्म विनोदशीलता को परिलक्षित करती है। एक विद्वान श्री सौरीन भट्टाचार्य ने गाँधी जी के अन्नदाशंकर पर पड़े प्रभाव के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि गाँधीजी एक बहुमुखी प्रतिभावाले व्यक्ति थे तथा अन्नदाशंकर के अनुसार गाँधीजी एक महानायक थे, जिनके जीवन का अंत दुर्भाग्यपूर्ण था, जो भारत की गौरवपूर्ण स्वतंत्रता के लिए एक कलंक साबित हुआ। प्रख्यात विद्वान प्रो. शिवनारायण राय ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि यूँ तो अन्नदाशंकर इन सभी महान व्यक्तियों से प्रभावित थे, किन्तु वह इनमें से किसी का भी अंधानुसरण नहीं करते थे। प्रो. राय ने कहा कि अन्नदाशंकर एक मानवतावादी थे, उन्होंने अपना जीवन आम आदमी से संबंधों को विकसित करने में समर्पित कर दिया।

तृतीय सत्र के वक्ता थे—श्री ब्रजनाथ रथ, सुश्री सुलोचना दास, श्री प्रफुल्ल कुमार मोहांती और प्रो. सौभाग्य मिश्रा। इस सत्र की अध्यक्षता श्रीमती प्रतिभा राय ने की। इस सत्र का विषय था—'अन्नदाशंकर और ओड़िया साहित्य'। ओड़िया कवि श्री ब्रजनाथ रथ ने कहा कि बेशक अन्नदाशंकर ने ओड़िया साहित्य में केवल चार वर्षों तक ही अपना साहित्यिक सृजन-कार्य किया हो, फिर भी उनका ओड़िया साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है तथा वह सबुज आंदोलन के संस्थापक सदस्यों के रूप में माने जाते हैं। श्री रथ ने बताया कि अन्नदाशंकर राय ने ओड़िया साहित्य को कुछ गीत और निबंधों का योगदान भी दिया है, जो *सबुज अक्षरा* (1966) में संकलित हैं। उन्होंने कहा कि अन्नदाशंकर अपने बाङ्ला यात्रावृत्त *पाथे प्रबासे* के सफल प्रकाशन के बाद, स्थायी रूप से बाङ्ला साहित्य में ही लिखने लगे। समालोचक सुश्री सुलोचना दास ने कहा यद्यपि अन्नदाशंकर की ओड़िया में लिखित रचनाओं

की संख्या कम है, किन्तु सौन्दर्यपरक दृष्टि से वह ओड़िया साहित्य की उत्कृष्ट रचनाओं में गिनी जाती हैं। उनके द्वारा ओड़िया पुस्तकों और लेखकों पर लिखे गए साहित्यिक निवंध भी उच्च कोटि के हैं। उन्होंने कहा कि अन्नदाशंकर ने अपने सबुज मित्रों के साथ मिलकर ओड़िया साहित्य को नया आधार प्रदान किया है। कवि एवं साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता प्रो. सौभाग्य मिश्रा ने कहा कि अन्नदाशंकर राय ने सामान्यरूप से प्रेम, सौन्दर्य और युवाओं पर आधारित कविताएँ ही लिखी हैं। 'प्रलय प्रेरणा' (1924) में कवि ने समस्त अशक्तों और अवरोधों को नष्ट करने की इच्छा ज़ाहिर की, जबकि 'सृजन स्वप्न' (1924) में उन्होंने अपनी प्रियतमा के साथ एक कल्पित एकांत में रहने की इच्छा ज़ाहिर की है। प्रो. मिश्रा ने कहा कि *कमला बिलासरा बिदया* में उन्होंने कलादेवी का शानदार विदाई का भाषण प्रस्तुत किया है—यह ओड़िया साहित्य की अब भी एक अनूठी कविता है, यह न केवल नवयुवकों के मस्तिष्क के आध्यात्मिक द्वंद्वों, बल्कि अन्नदाशंकर द्वारा ओड़िया साहित्य से अनपेक्षित वापसी तथा बाङ्ला को अपने सृजनात्मक लेखन की अभिव्यक्ति के लिए ग्रहण करने पर भी प्रकाश डालती है। प्रख्यात समालोचक और साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता श्री प्रफुल्ल कुमार मोहांती ने कहा कि सबुज आंदोलन के तीन प्रख्यात लेखक थे—अन्नदाशंकर राय, कालिन्दीचरण पाणिग्रही और भीखूनाथ पट्टनाइक। उन्होंने कहा कि प्रारंभ में अन्नदाशंकर बाङ्ला और ओड़िया दोनों भाषाओं में ही लिखते थे। प्रख्यात ओड़िया कथाकार श्रीमती प्रतिभा राय ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि अन्नदाशंकर ने कई उपनामों से लिखा है, इनमें से एक उपनाम दयानिधि भी था। उन्होंने अन्नदाशंकर को एक मानवतावादी एवं तर्क बुद्धिपरक व्यक्ति बताया तथा उन्हें सामाजिक अन्याय और अंधविश्वासों के विरुद्ध लड़नेवाला एक प्रबल योद्धा बताया। अपने दर्शनशास्त्र में वह गाँधी जी के समान हो सकते थे, जबकि उनके सबुज आंदोलन ने ओड़िया साहित्य को अत्यधिक समृद्ध किया था तथा उसका ओड़िया के युवा लेखकों पर गहरा प्रभाव पड़ा था।

चतुर्थ सत्र में सर्वश्री कर्बी डेका हज़ारिका, रामबहल तिवारी, रामलाल अधिकारी और ताराकांत झा ने 'अन्नदाशंकर और भारतीय साहित्य' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री उत्पल कुमार बसु ने इस सत्र की अध्यक्षता की। असमिया विद्वान और अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल के संयोजक श्री कर्बी डेका हज़ारिका ने कहा कि कई बाङ्ला लेखकों के विचारों और अनुभूतियों ने असमिया साहित्य को प्रभावित किया है, फिर भी अन्नदाशंकर के मामले में यह उनका तथ्यपरक तर्क था, जिसने उनके साहित्य से अधिक असमिया लोगों के दिलों को जीता है। बाङ्ला और हिन्दी के विद्वान श्री रामबहल तिवारी ने 'अन्नदाशंकर और भारतीय साहित्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि अन्नदाशंकर राय ने कविताओं से लेकर *क्रांतदर्शी* जैसे लघु उपन्यास; तथा साहित्य की समस्त विधाओं में लिखा है। इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि अन्नदाशंकर के विशाल और बहुआयामी दृष्टिकोण वाले सृजनात्मक कार्यों का उसकी निकटवर्ती भाषाओं जैसे—हिन्दी आदि भाषाओं पर प्रभाव पड़ेगा ही। नेपाली विद्वान श्री रामलाल अधिकारी ने कहा कि अन्नदाशंकर की लेखन शैली की पहली विशेषता सरलता तथा दूसरी पवित्रता है। उनकी पद्य-शैली को पद्य लेखन की पराकाष्ठा भी माना जा सकता है। मैथिली लेखक एवं अनुवादक श्री ताराकांत झा ने कहा कि अन्नदाशंकर जीवन में पहले एक कलाकार हैं, तदुपरांत वह एक लेखक हैं। उन्होंने अन्नदाशंकर और हरिमोहन झा (लगभग उसी काल में) के प्रकाशित उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया। बाङ्ला कवि श्री उत्पल कुमार बसु ने अन्नदाशंकर के सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक योगदानों की चर्चा करते हुए कहा कि अन्नदाशंकर बँटवारे से खुश नहीं थे, उनके अनुसार यह एक बड़ी भारी भूल थी।



संगोष्ठी में अन्नदाशंकर राय पर लिखित विनिबंध का लोकार्पण करते हुए श्री दिव्येन्दु पालित

पंचम सत्र में श्री मंसूर मूसा और श्री उज्ज्वल कुमार मजूमदार ने 'अन्नदाशंकर के उपन्यास' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा श्री आलोक राय ने इस सत्र की अध्यक्षता की। बांगला अकादमी, बाङ्ला‌देश के पूर्व निदेशक एवं प्रख्यात समालोचक श्री मंसूर मूसा ने अन्नदाशंकर के भाषा संबंधी विचारों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि अन्नदाशंकर राय ने बाङ्ला गद्य लेखन एवं निर्विवाद रूप से भाषा-विज्ञान में विशिष्ट योगदान दिया है। बाङ्ला विद्वान एवं समालोचक श्री उज्ज्वल कुमार मजूमदार ने अन्नदाशंकर के *क्रांतिदर्शी* उपन्यास के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि अन्नदाशंकर की एक लंबे समय से यह इच्छा थी कि वह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम तथा सितंबर 1939 से जनवरी 1948 के बीच हुई सांप्रदायिक हिंसा से संबंधित एक महा-उपन्यास लिखें। उनकी यह इच्छा अंततः चार खंडों में विभाजित इस महा-उपन्यास को लिखकर हुई। बाङ्ला विद्वान एवं समालोचक श्री आलोक राय ने कहा कि अन्नदाशंकर ने अपने कथा साहित्य लेखन द्वारा अपनी कुशल प्रतिभा का प्रमाण दिया। उन्होंने लेखन कला की एक नवीन शैली का भी प्रयोग किया। अपने *अपसरन* (1942) नामक उपन्यास का नायक बादल विचारमग्न और मनमौजी है, जबकि सुधी संभवतः लेखक की आंतरिक सचेतना है। *पुतुल नियेे खेला* (1933) को *अगुन निये खेला* का अंतिम भाग कहा जा सकता है। श्री आलोक राय ने कहा कि उनके लेखन में भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

षष्ठ सत्र की अध्यक्षता श्री कार्तिक लाहिड़ी ने की तथा सर्वश्री अमर मित्र, देवर्षी सरोगी, रवि शंकर बल और स्वप्न पांडा ने अन्नदाशंकर की कहानियों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री मित्र ने अन्नदाशंकर की कहानियों की शक्ति और सीमाओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि अन्नदाशंकर ने वास्तविक जीवन के अनुभवों को अपनी कहानियों में दर्शाया; वह अपने समकालीन लेखकों से अपनी कहानियों में दर्शाए जानेवाले दार्शनिक विचारों से बिल्कुल भिन्न थे। कथाकार श्री देवर्षि सरावगी ने कहा कि जिस प्रकार अन्नदाशंकर जटिल और परिष्कृत व्यक्ति थे; उसी प्रकार से उनकी कहानियों के पात्र सुशिक्षित, प्रशासनिक सेवाओं में कार्यरत तथा ईमानदार होते थे, जो देश के बारे में गहराई से सोचते थे तथा कभी भी अभद्र भाषा का प्रयोग नहीं करते थे। बाङ्ला कथाकार श्री रवि शंकर बल ने उक्त विषय पर बोलते हुए कहा कि एक कहानीकार के रूप में अन्नदाशंकर एक न्यायाधीश के समतुल्य थे। बाङ्ला कथाकार श्री स्वप्न पांडा ने कहा कि अन्नदाशंकर के कथा साहित्य लेखन की तुलना में उन्हें उनकी कविताएँ और निबंध अधिक आकर्षित करते हैं। उन्होंने 'दुजनय' को अन्नदाशंकर की प्रथम प्रकाशित कहानी बताया, जो पारंपरिक कहानी लेखन परंपरा से हटकर थी। उनकी कहानियों के नायक वास्तविक जीवन से अलग थे, उनके आदर्शवादी पात्र अन्नदाशंकर की सृजनात्मक परिकल्पना की उपज थे।

सप्तम सत्र की अध्यक्षता सुश्री गीता देबनाथ ने की। सर्वश्री अभिजीत सेन, विश्वबंधु भट्टाचार्य, वीतशोक भट्टाचार्य और मानवेन्द्र बंधोपाध्याय ने 'अन्नदाशंकर के यात्रा-वृत्तांत, निबंध, काव्य और शिशु-गीत' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रख्यात कथाकार श्री अभिजीत सेन ने कहा कि सन् 1931 में अन्नदाशंकर द्वारा प्रकाशित *पथे प्रबासे*, यूरोप पर लिखी गई एक सफल यात्रा-डायरी है। यह एक युवा भारतीय यात्री द्वारा यूरोपीय जीवन और समाज से हुई पहली भेंट का अभिलेख है, जिसके द्वारा उन्होंने एक विचारमग्न साहित्यिक कलाकार की अनुभूतियों को उजागर किया है। उन्होंने अन्नदाशंकर द्वारा विभिन्न कालों में लिखी गई उनकी यात्रा-डायरी के बारे में बताया तथा उनके द्वारा की गई विभिन्न देशों की यात्राओं के उपरांत वहाँ के सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं पर उनके द्वारा की गई विचारोत्तेजक टिप्पणियों के बारे में भी बताया। समालोचक श्री विश्वबंधु भट्टाचार्य ने कहा कि अन्नदाशंकर के जीवन में उनकी बहुमुखी प्रतिभा एक साथ समानांतर रूप से चलती रही; जैसे—वह एक कलाकार, विचारक, दूरद्रष्टा और मिथकवादी व्यक्ति भी थे, जो ज्ञानशक्ति द्वारा नहीं वरन् अंतर्ज्ञान द्वारा नियंत्रित थे। एक निबंधकार के रूप में अन्नदाशंकर सौम्य और जटिल दोनों प्रकार के व्यक्ति थे तथा अपनी लेखन-शैली में दो विभिन्न प्रकार के गद्य, जिनका प्रतिनिधित्व रवीन्द्रनाथ ठाकुर और प्रमथ चौधुरी करते थे, की विशेषताओं का सम्मिश्रण प्रस्तुत करते थे। प्रख्यात समालोचक श्री वीतशोक भट्टाचार्य ने अन्नदाशंकर के काव्य पर प्रकाश डाला। उनके काव्य पर उनके कथा साहित्य लेखन, निबंध और यात्रा वृत्तांत लेखन की प्रतिच्छाया देखी जा सकती है। उनके काव्य में शिशु-गीत, तुक्तक और कुकविता भी शामिल हैं। श्री मानवेन्द्र बंधोपाध्याय ने उपस्थित श्रोताओं को अन्नदाशंकर के शिशु-गीत पढ़कर सुनाए। उन्होंने सुरुचिपूर्ण ढंग से शिशु-गीत लिखे तथा उन्हें प्रकाशन हेतु संकलित किया। अंत में उन्होंने कहा कि उनके इस प्रयास ने कई लेखकों को *साहित्य पथिकृत्त* पत्रिका में अपने शिशु-गीत प्रकाशनार्थ भिजवाने हेतु प्रेरित किया। प्रख्यात विद्वान एवं

त्रिपुरा स्थित एक कॉलेज की प्रधानाचार्या तथा इस सत्र की अध्यक्षा सुश्री गीता देबनाथ ने कहा कि शिक्षित लोग शिक्षा के प्रति उदासीन रहते हैं, किन्तु अन्नदाशंकर ने सभ्यता की उन्नति हेतु हमारा ध्यान बार-बार आम लोगों के साहित्य की ओर आकृष्ट किया है।

समापन सत्र की अध्यक्षता श्रीमती महाश्वेता देवी ने की। इस सत्र के वक्ता श्री देवेश राय थे। प्रख्यात कथाकार और समालोचक श्री राय ने संगोष्ठी में पढ़े गए आलेखों का सार प्रस्तुत किया तथा बीसवीं शताब्दी में स्थानीय और सार्वभौम के परिप्रेक्ष्य में अन्नदाशंकर के आदर्शों और विचारों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि गत शताब्दी में अन्नदाशंकर के लेखन ने बाङ्ला युवाओं की 40 से 70 वर्ष तक की आयुवर्ग की समस्त पीढ़ी को प्रभावित किया है। श्रीमती महाश्वेता देवी ने कहा कि उनके पिता ने उन्हें बचपन से ही अन्नदाशंकर को पढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अन्नदाशंकर राय द्वारा साहित्य को दिए गए उनके बहुमूल्य योगदानों का पुनर्मूल्यांकन किए जाने का भी सुझाव दिया।

श्रीमंत शंकरदेव की जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी
27-29 मार्च 2005, गुवाहाटी

"शंकरदेव को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर और अधिक मान्यता दिलाने की ज़रूरत है।" असम के सम्मानीय संस्कृति मंत्री हेमप्रभा सइकिया ने श्रीमंत शंकरदेव उत्सव का उद्घाटन करते हुए कहा।

इस उत्सव का आयोजन साहित्य अकादेमी के कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय और श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र के सहयोग से 27-29 मार्च 2005 को गुवाहाटी में साहित्य अकादेमी के स्वर्ण जयंती समारोहों के दौरान किया गया। इस अवसर पर राम नारायण गोयनका की पुस्तक *महापुरुष श्री शंकरदेव* का विमोचन भी किया गया।

मुख्य अतिथि चंद्रशेखर रथ ने अपने भाषण में कहा कि शंकरदेव और उनके वैष्णव आंदोलन से ओड़िसा के लोग अपरिचित नहीं हैं। उन्होंने इस बात पर विशेष ज़ोर दिया कि ओड़िया और असमिया संस्कृतियाँ वर्षों से एक-दूसरे को प्रभावित करती रही हैं।

इसके बाद तपज्योति ओझा ने अपनी सुरीली आवाज़ में 'भोरगीत' प्रस्तुत किया, जो असमिया संगीत को इस महापुरुष की ख़ूबसूरत देन माना जाता है।



श्री नगेन साइकिया और श्रीमती मालिनी गोस्वामी

साहित्य अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल के संयोजक सुश्री कर्बी डेका हज़ारिका ने कहा, "यह उत्सव महपुरुष श्री शंकरदेव को बड़े परिप्रेक्ष्य में स्थापित करनेवाला सिद्ध होगा।"

साहित्य अकादेमी के सचिव प्रो. के. सच्चिदानंदन ने अपने स्वागत-भाषण में महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव को बहुआयामी व्यक्तित्व का स्वामी और अहंकार रहित विद्वान बताया।

श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र के उपाध्यक्ष श्री शोभा ब्रह्म, असम संस्कृति विभाग के सचिव श्री मृणाल बरुआ और श्री वीरेन्द्रनाथ दत्त ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर श्रीमंत शंकरदेव के बहुआयामी व्यक्तित्त्व पर परिचर्चा के लिए एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी में कुल छह सत्र थे, जिनमें सर्वश्री शिवनाथ बर्मन, नगेन सइकिया, केशवानंद देव गोस्वामी, प्रदीप ज्योति महंत, जतिन गोस्वामी और ध्रुबज्योति बोरा की अध्यक्षता में अतुल बोरा, लीलावती सइकिया बोरा, मालिनी गोस्वामी, भूपेन रायचौधुरी, भावानन्द बोर्बयान, नीवा रानी फूकन, अर्चना महंत, दिलीप रंजन बड़ठाकुर, नीलिमा बड़ठाकुर, मल्लिका कंदाली, करुणा बोरा, निरुपमा महंत और नरेन कलिता ने शंकरदेव के भक्ति आंदोलन, उनके साहित्यिक योगदान के साथ-साथ इनके संगीत, नृत्य और असम की चित्रकला, मूर्तिकला और वास्तुकला के विकास में उनके योगदान पर भी चर्चा की।

प्रो. मोहन सिंह की जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी
28-29 मार्च 2005, पटियाला

साहित्य अकादेमी ने पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के पंजाबी विभाग के सहयोग से प्रो. मोहन सिंह की जन्म

शतवार्षिकी के अवसर पर द्विदिवसीय संगोष्ठी आयोजित की। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए पंजाबी कथाकार श्रीमती दिलीप कौर टिवाणा ने कहा, "मोहन सिंह आज भी हमारे बीच हैं।"

कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक श्री कर्णजीत सिंह ने सभी अतिथियों और श्रोताओं का स्वागत किया। सुप्रसिद्ध पंजाबी कवि श्री सुरजीत पातर ने अपने बीज-भाषण में मोहन सिंह की कविता पर विस्तार से चर्चा की और उनकी कविता में स्पष्टवादिता के उच्च मानकों, अभिव्यक्ति के आनंद और विलक्षणता पर प्रकाश डाला। इनके अतिरिक्त कार्यक्रम के मुख्यअतिथि, मोहन सिंह के समसामयिक और मित्र श्री जंगजीत सिंह आनंद और उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष श्री हरचरण सिंह ने भी मोहन सिंह के व्यक्तित्त्व और कृतित्व पर अपने विचार व्यक्त किए।

पंजाबी आकादमी के सचिव, श्री रवैल सिंह विशिष्ट अतिथि थे। उद्घाटन सत्र का संचालन पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के पंजाबी विभाग के अध्यक्ष श्री सतीश वर्मा ने किया। कार्यक्रम के अंत में साहित्य अकादेमी की उपसचिव श्रीमती रेणु मोहन भान ने धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी चार सत्रों में संपन्न हुई, जिनकी अध्यक्षता क्रमशः सर्वश्री सुतिन्दर सिंह नूर, प्रेम सिंह, देवेन्द्र सिंह और कर्णजीत सिंह ने की। श्री तेजवंत सिंह गिल ने कहा कि मोहन सिंह की कविता एक तरफ़ रूसी कविता से मेल खाती है तो दूसरी ओर पाब्लो नेरुदा की स्पानी कविता से।

श्री नासिर नक़वी ने मोहन सिंह और फैज़ अहमद फैज़ की कविताओं में समानता और उनके बीच के अंतर को चिह्नित किया। इनके अतिरिक्त सर्वश्री सुखदेव सिंह, मनमोहन सिंह, सुखविन्दर सिंह सांगा, राजेन्द्र पाल सिंह, तेजवंत सिंह गिल, चमन लाल, एस. तरसेम, बलदेव सिंह चीमा, तरलोक सिंह आनंद, सतीश कुमार वर्मा आदि ने भी अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'असमिया साहित्य में सूफ़ीवाद' विषय पर परिसंवाद

29 मार्च 2005, गुवाहाटी

"सूफ़ीमत का वेदांत के अद्वैतवाद से गहरा संबंध है। इसी कारण अज़ानपीर की 'ज़ीकिरों' में हम अपनी आत्मा और परमात्मा को एक रूप में देखते हैं। साधारण शैली में लिखे गए अज़ानपीर के गीत ने इस्लाम के रहस्यवादी आदर्शों को प्रचारित कर लोकप्रिय बनाने में अहम भूमिका निभाई है।" श्री नगेन सइकिया 'असमिया साहित्य में सूफ़ीमत' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बोल रहे थे। अपने बीज-भाषण में उन्होंने 'सूफ़ी' शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ स्पष्ट किया।

इस संगोष्ठी का आयोजन साहित्य अकादेमी के कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय और कॉटन कॉलेज, गुवाहाटी के सहयोग से 29 मार्च 2005 को गुवाहाटी, असम में किया गया।

लब्धप्रतिष्ठ असमिया लेखक श्री जतिन गोस्वामी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। संस्कृति विभाग की श्रीमती नंदिता भट्टाचार्जी गोस्वामी ने अपने स्वागत-भाषण में संगोष्ठी के उद्देश्य और विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संगोष्ठी के विषय में हिन्दू और मुस्लिम जीवन और संस्कृति की एकता का मिशन निहित है।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कॉटन कॉलेज के प्रधानाचार्य श्री उदयादित्य भराली ने कहा कि असम के महान सूफ़ी-संत अज़ानपीर बहुत बड़े मानवतावादी थे। अज़ानपीर अपने गीतों के माध्यम से, जिन्हें 'ज़ीकिर' और 'ज़ारिस' कहते हैं, एक वर्गहीन समाज की स्थापना करना चाहते थे।

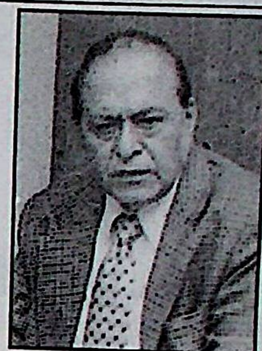
पहले सत्र के वक्ता श्री ज़ाकिर हुसैन ने इस बात पर ज़ोर दिया कि असमिया साहित्य में सूफ़ीमत का अध्ययन असम के अग्रणी सूफ़ी अज़ानपीर पर किसी पूर्वग्रह के बिना ऐतिहासिक दृष्टि से होना चाहिए। कॉटन कॉलेज के दर्शनशास्त्र विभाग के प्रोफ़ेसर श्री प्रदीप खटोनयार ने अपने वक्तव्य में बताया कि आत्मबोध सूफ़ीवाद का मुख्य सिद्धांत है। उन्होंने असमिया साहित्य में परावर्तित सूफ़ी आदर्शों का भी उल्लेख किया। इनके अतिरिक्त इस्लामिक अध्ययन विभाग के सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर और विभागाध्यक्ष मोहम्मद बाबर अली और श्री नूर इस्लाम सइकिया ने भी असमिया साहित्य के उत्थान और विकास में सूफ़ीमत की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए।

समापन सत्र में सुश्री मंजू देवी पेगू ने अध्यक्ष और अतिथियों का संक्षिप्त परिचय दिया। श्री सुरेश चंद्र बोरा ने संगोष्ठी की रिपोर्ट प्रस्तुत की। समापन-सत्र की अध्यक्षता कर रहे श्री जतिन गोस्वामी ने संगोष्ठी में हुई चर्चाओं का सार प्रस्तुत किया।

कॉटन कॉलेज के असमिया विभाग के अध्यक्ष श्री केशव चंद्र शर्मा ने इस महत्त्वपूर्ण आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी का आभार प्रकट किया। संस्कृति विभाग के श्री सुधेन्दु मोहन भद्र ने धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रो. गोपीचंद नारंग मज़ीनी मेडल से सम्मानित

विश्व भर में जियुसेप्पे मज़ीनी के शताब्दी महोत्सव के अवसर पर इटली सरकार ने कुछ विशिष्ट व्यक्तियों को इटली के साथ सांस्कृतिक संबंधों को सशक्त बनाने में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए 'मज़ीनी मेडल' प्रदान करने का निर्णय लिया। साहित्य अकादेमी को यह घोषणा करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग जो प्रख्यात विद्वान, समालोचक और भाषाविद् हैं, भी मेडल लेनेवाले विशिष्ट व्यक्तियों में से एक हैं। यह मेडल 16 मार्च 2005 को इटली दूतावास, नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में प्रदान किया गया।

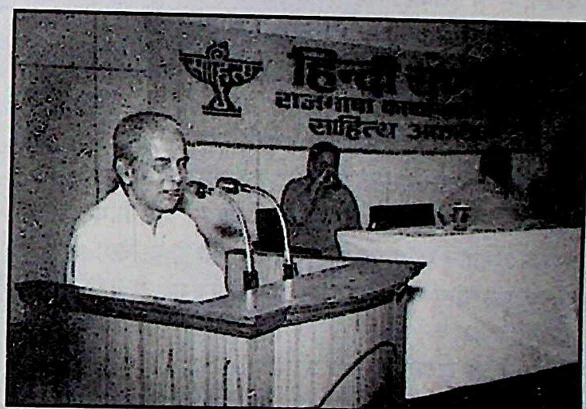


प्रो. गोपीचंद नारंग

राजभाषा पर्व

14 से 22 सितंबर 2004

साहित्य अकादेमी ने अपने प्रधान कार्यालय में 14 से 22 सितंबर 2004 तक 'राजभाषा पर्व' का सफल आयोजन किया। उद्घाटन समारोह में अकादेमी के उपसचिव श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने मुख्य अतिथि और समस्त उपस्थित सहकर्मियों का स्वागत करते हुए कहा कि वर्तमान संदर्भ में हिन्दी का प्रश्न बड़ा ही जटिल है। इसका इतिहास लगभग 1000 वर्ष पुराना है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी को राजभाषा का दर्ज़ा तो दिया गया है, किन्तु अब तक उसे वह दर्ज़ा नहीं मिल सका, जो उसे मिलना चाहिए।



प्रख्यात हिन्दी कवि श्री केदारनाथ सिंह उद्घाटन व्याख्यान देते हुए

राजभाषा अनुभाग के हिन्दी अनुवाद श्री निशांत ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। हिन्दी संपादक श्री अरुण प्रकाश ने कहा कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिन्दी दिवस/पखवाड़े को मनाना केवल रस्म अदायगी रह गई है। हिन्दी के निजी प्रचार-प्रसार द्वारा ही हिन्दी का विकास हुआ है। हिन्दी को बोलने वाले 40 करोड़ लोग हैं तथा उसकी 48 उपबोलियाँ हैं। उन्होंने सुझाया कि हिन्दी की पुस्तकें सस्ती होनी चाहिए, ताकि सब लोग उसे ख़रीद सकें। मुख्य अतिथि डॉ. केदारनाथ सिंह ने कहा कि साहित्य अकादेमी ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सबसे अधिक कार्य किया है। उन्होंने कहा कि आज़ादी से पूर्व लोगों का हिन्दी से जो जुड़ाव था, वह आज की पीढ़ी में नहीं है। हिन्दी भाषा को लेकर द्वैत बना रहेगा। उन्होंने यह भी कहा कि सत्तासीन लोग चाहें तो हिन्दी को उसका उचित स्थान मिल सकता है। इस अवसर पर अकादेमी के अंग्रेज़ी संपादक श्री निर्मलकांति भट्टाचार्जी ने हिन्दी दिवस/पखवाड़े को औपचारिक अनुष्ठान बताते हुए सुझाव दिया है कि हमें हिन्दी के अलावा अन्य भाषाओं का सप्ताह भी मनाया जाना चाहिए। कार्यक्रम के अंत में उप-संपादक श्री देवेन्द्र कुमार देवेश ने औपचारिक धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'राजभाषा पर्व' के विभिन्न कार्यक्रमों के अंतर्गत निबंध-लेखन, वाद-विवाद, श्रुतलेख, प्रश्न-मंच, काव्य-पाठ और हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।



अकादेमी की राजभाषा गृह-पत्रिका *आलोक* के तीसरे अंक का लोकार्पण करते हुए श्री मैनेजर पांडेय

समापन समारोह में उपसचिव श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. मैनेजर पांडेय तथा उपस्थित श्रोताओं का स्वागत करते हुए कहा कि अगर हमें हिन्दी को बढ़ाना है तो इसकी विभिन्न शैलियों को स्वीकार करना होगा। अकादेमी के हिन्दी संपादक श्री अरुण प्रकाश ने अपने व्याख्यान में कहा कि मैं हिन्दी में ही काम करता हूँ और मुझे इसमें कार्य करने में कोई कठिनाई नहीं आई है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. मैनेजर पांडेय ने साहित्य अकादेमी की राजभाषा पत्रिका *आलोक* के तृतीय अंक का लोकार्पण किया तथा राजभाषा पर्व के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफल होनेवाले प्रतिभागियों को पुरस्कार भी प्रदान किए। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि हिन्दी साहित्य की ही नहीं, विचार की भी भाषा है। हिन्दी के अनेक रूप हैं—साहित्य की भाषा, अख़बारों की शाषा, कार्यालय की भाषा, बाज़ार की भाषा, बोलचाल की भाषा आदि। उन्होंने कहा कि हिन्दी एक सुदृढ़ भाषा है और इसके विकास और उन्नति के लिए हम सबको मिलकर सघन प्रयास करने होंगे। अकादेमी के उप-संपादक श्री देवेन्द्र कुमार देवेश ने कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद-ज्ञापन किया।

पुस्तकालय

राजधानी दिल्ली स्थित पुस्तकालयों के मानचित्र पर साहित्य अकादेमी पुस्तकालय का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। पुस्तकालय में 22 भाषाओं की पुस्तकों में साहित्य, समालोचना, दर्शनशास्त्र, इतिहास तथा उससे संबंधित विषयों की पुस्तकों का विशाल भंडार होने के साथ-साथ पुस्तकालय के सक्रिय सदस्यों की संख्या भी उसी अनुपात में है। वर्ष 2004-05 में पुस्तकालय के 377 और नए सदस्य बने।

हिन्दी और अंग्रेज़ी पुस्तकों की सूची जो *लैन सेवा* पर उपलब्ध है, पाठकों में लोकप्रियता अर्जित कर रही है। इन दोनों भाषाओं की नवीनतम पुस्तकों की सूची तैयार कर *लैन सेवा* पर उपलब्ध कराया जा रहा है। इन खंडों के स्वचलन द्वारा पुस्तकालय कम समय में माँगी गई ग्रंथ-सूची सेवा उपलब्ध करा पाने में सक्षम है। पुस्तकालय ने महाभारत पर आधारित पुस्तकों की भी एक सूची तैयार की है।

पुस्तकालय भारतीय साहित्य पर अंग्रेज़ी भाषा में लिखे गए आलेखों, जो उसे प्राप्त पत्रिकाओं पर आधारित हैं, कि अनुक्रमणिका भी तैयार करता है। पुस्तकालय के सदस्यों के लिए डाटाबेस भी उपलब्ध है।

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालयों में भी पुस्तकालय हैं। क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों में प्रत्येक वर्ष नियमित रूप से नई पुस्तकें उपलब्ध कराई जाती हैं।

अनुवाद कार्यशालाएँ

वर्ष 2004-05 में तीन अनुवाद कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। कई युवा और उभरते अनुवादकों को अनुवाद कला में प्रशिक्षित तथा उसके लिए प्रोत्साहित किया गया। इन कार्यशालाओं में किए गए अनुवादों को क्रमशः उनकी भाषाओं में अकादेमी द्वारा एक संकलन के रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

तेलुगु-हिन्दी अनुवाद कार्यशाला
9-14 अगस्त 2004, हैदराबाद

पंजाबी-राजस्थानी अनुवाद कार्यशाला
20-26 अगस्त 2004, अंबाला कैण्ट

नेपाली-बाङ्ला अनुवाद कार्यशाला
23-25 नवंबर 2004, कोलकाता



नेपाली-बाङ्ला अनुवाद कार्यशाला का दृश्य

स्वर्ण जयंती उद्घाटन समारोह

1 नवंबर 2004, नई दिल्ली



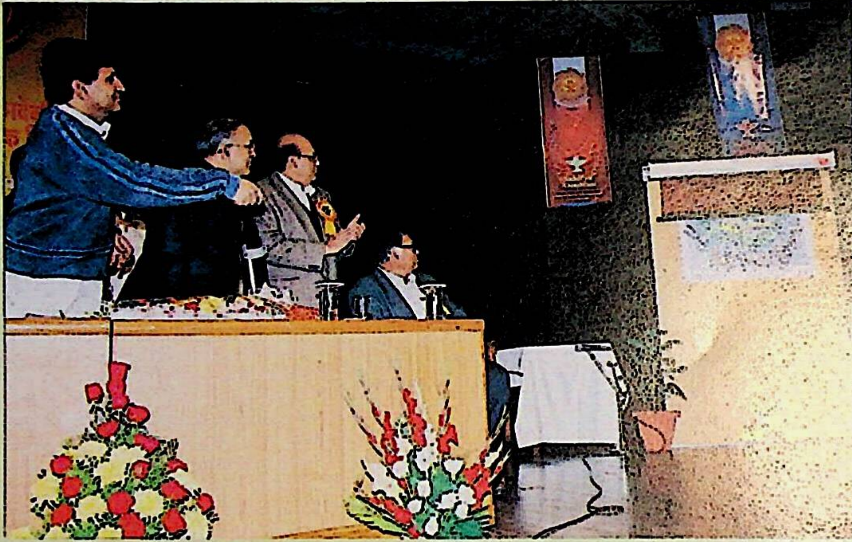
अकादेमी के स्वर्ण जयंती समारोहों का उद्घाटन करते हुए
माननीय प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह। उनके साथ खड़े हैं
अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. गोपी चंद नारंग



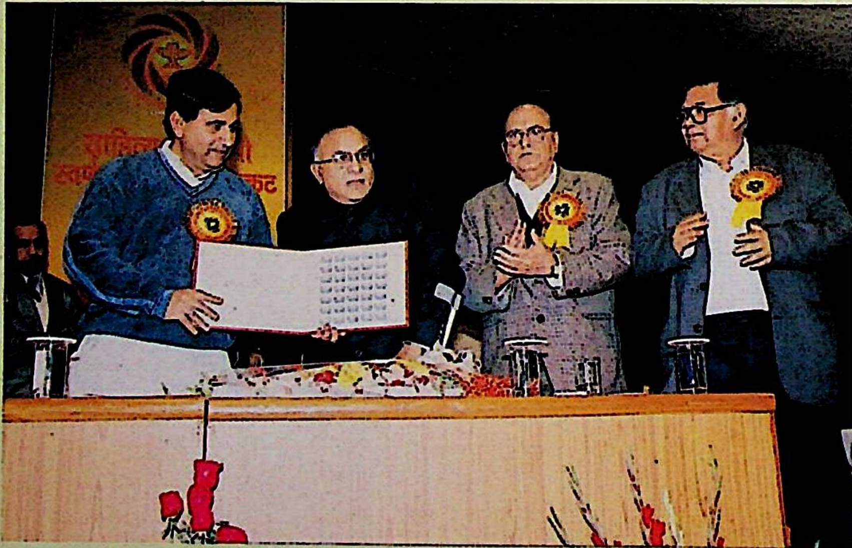
माननीय प्रधानमंत्री का स्वागत करते हुए अकादेमी के अध्यक्ष

डाक टिकट लोकार्पण समारोह

21 दिसंबर 2004, नई दिल्ली



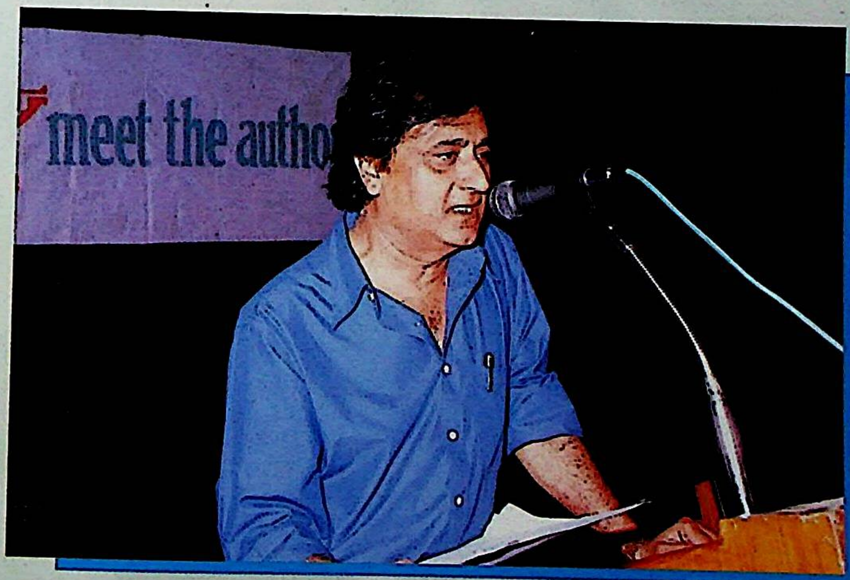
साहित्य अकादेमी स्वर्ण जयंती स्मारक डाक टिकट का लोकार्पण करते हुए माननीय राज्यमंत्री, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी, डॉ. शकील अहमद तथा उनके साथ खड़े हैं, माननीय सूचना एवं प्रसारण तथा संस्कृति मंत्री श्री एस. जयपाल रेड्डी, प्रो. गोपी चंद नारंग और श्री सुनील गंगोपाध्याय



(बाएँ से दाएँ): माननीय राज्यमंत्री, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी.डॉ. शकील अहमद, माननीय सूचना एवं प्रसारण तथा संस्कृति मंत्री श्री एस. जयपाल रेड्डी, प्रो. गोपी चंद नारंग और श्री सुनील गंगोपाध्याय



अमित चौधुरी
21 मई 2004, नई दिल्ली

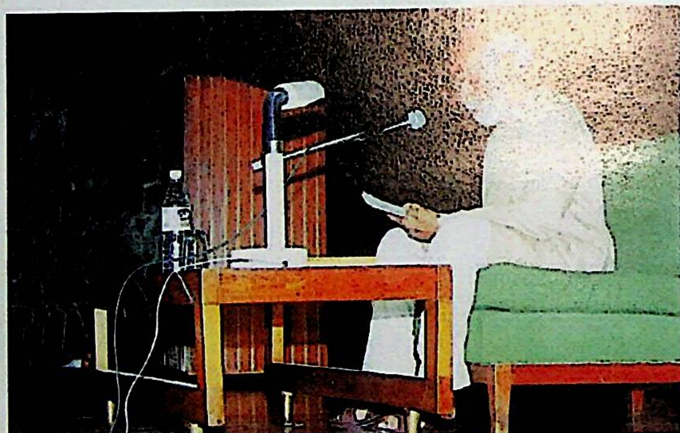


सलाहुद्दीन परवेज़
16 जुलाई 2004, बंगलौर

लेखक से भेंट



नवनीता देव सेन
12 अगस्त 2004, नई दिल्ली



त्रिलोचन शास्त्री
15 सितंबर 2004, नई दिल्ली



एम. कमल
6 अक्तूबर 2004, मुंबई

लेखक से भेंट

इंद्र बहादुर राई
16 नवंबर 2004, कर्सियांग



आशा बागे
9 नवंबर 2004, मुंबई



कोविलन
6 जनवरी 2005, त्रिचूर

चंद्रकांत टोपीवाला
1 फ़रवरी 2005, मुंबई



सुवप्रसन्ना
23 जून 2004, कोलकाता



सीताकांत महापात्र
24 जून 2004, नई दिल्ली

व्यक्ति और कृति



अरिबम श्याम शर्मा
10 सितंबर 2004, इंफ़ाल

मेरे झरोखे से

स. ही. वात्स्यायन 'अज्ञेय' पर रघुवीर चौधुरी
18 अगस्त 2004, मुंबई

के. एस. मधुकर पर मोहन सिंह
18 अक्तूबर 2004, जम्मू



पद्मा सचदेव
23 जून 2004, मुंबई



सुमतीन्द्र नाडिग
5 दिसंबर 2004, धारवाड़

अरुण कोल्हटकर
17 जुलाई 2004, मुंबई

दर्शन दर्शी
1 मार्च 2005, जम्मू-कश्मीर

एन. बीरेन सिंह
3 मार्च 2005, इंफ़ाल



शीन काफ़ निज़ाम
9 फ़रवरी 2005, अहमदाबाद

कथा संधि



राजी सेठ
30 अप्रैल 2004, नई दिल्ली



मति नंदी
9 जून 2004, कोलकाता



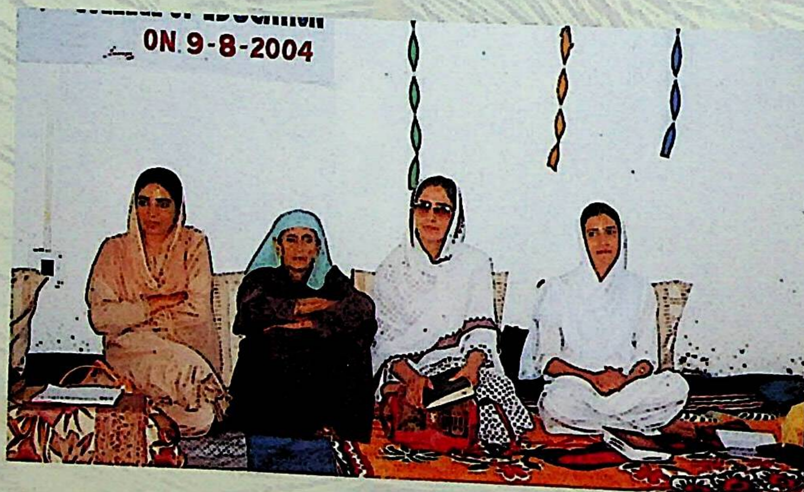
महाबलेश्वर सैल
16 जनवरी 2005, सदाशिवगढ़



आठ बाङ्ला कवयित्रियाँ
13 जुलाई 2004, कोलकाता



नयना आडारकर, सुधा अमोणकर
4 अगस्त 2004, गोवा



रफ़ीक़ा बशीर, सीमा शाह, फ़िरदौसा रैणा, ज़ेबा ज़ीनत, रुमसारा जी, सोफ़ी आरिफ़ा अरवाल, तनज़ीमा शाफ़ी, मसूदा क़ुरैशी
9 अगस्त 2004, सोपोर



अंडमान और निकोबार के लेखक
27 सितंबर 2004, पोर्ट ब्लेयर



कमल कुमार, सविता सिंह तथा मनोरमा महापात्र बिस्वाल
23 दिसंबर 2004, नई दिल्ली

साधना झा, हेमलता चौधरी तथा श्वेता झा
26 सितंबर 2004, कोलकाता

नेपाली महिला लेखक
16 नवंबर 2004, कर्सियांग

डोगरी महिला कवयित्रियाँ
22 फ़रवरी 2005, जम्मू



प्रेम प्रकाश और महेश नेनवाणी
4 सितंबर 2004, भोपाल



बद्री नारायण, आर. चेतन क्रांति तथा यतीन्द्र मिश्र
16 सितंबर 2004, नई दिल्ली

अमर नाथ झा 'भारती', विनय भूषण और दिलीप कुमार झा
26 सितंबर 2004, कोलकाता

थॉमस जोसेफ़, लक्ष्मी राजीव तथा यूमा वासुकी
23 नवंबर 2004, तिरुवनंतपुरम

जितेन्द्र ऊधमपुरी, शिव देव सुशील तथा चमन अरोड़ा
5 जनवरी 2005, जम्मू



चंद्रप्रकाश देवल, विजयदान देथा, एम. वी. नायक तथा दामोदर माउज़ो
29 सितंबर 2004, गोवा

'गीतरू' और 'कुद' प्रस्तुति
18 दिसंबर 2004, ऊधमपुर



सिन्ध और कच्छ की वाचिक परंपरा की प्रस्तुति
27 जनवरी 2005, भुज



प्रह्लाद सिंह टिपाण्या
15 अक्तूबर 2004, नई दिल्ली



ओमप्रकाश राय
1 दिसंबर 2004, नई दिल्ली

साहित्य मंच और सांस्कृतिक विनिमय गोष्ठियाँ

मुशायरा जश्न-ए-बहाव
9 अप्रैल 2004, नई दिल्ली

सूरदास पर साहित्य मंच
16 अप्रैल 2004, मुंबई

साहित्य मंच एवं पुस्तक विमोचन : एस. पी. नरसिम्हालु नायडु
17 अप्रैल 2004, कोयंबटूर

साहित्य मंच : रॉबिन राय चौधुरी
10 मई 2004, मुंबई

साहित्य मंच : वीर सावरकर
21 मई 2004, मुंबई

साहित्य मंच : के. जयकुमार
3 जून 2004, नई दिल्ली

एक शाम मणिपुरी लेखकों के साथ
3 जून 2004, कोलकाता

पुस्तक विमोचन कार्यक्रम : पोरट्टम
6 जून 2004, बंगलौर

कवि अनुवादक : सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम
15 जून 2004, पालाक्कड

साहित्य मंच : अनिल अवाचट
18 जून 2004, मुंबई

वी.पी. काले पर साहित्य मंच
16 जुलाई 2004, मुंबई

पुस्तक विमोचन कार्यक्रम : विपाशा की पुस्तक उपटेला रंगोठी रिसायली भिन्टो
18 जुलाई 2004, मुंबई

वर्तमान नेपाली साहित्य पर साहित्य मंच
23 जुलाई 2004, कोलकाता

उर्दू मुशायरा
24 जुलाई 2004, मुंबई

साहित्य मंच : अरुण कुकरेजा
30 जुलाई 2004, नई दिल्ली

स्वर्ण जयंती समारोह : वृत्तचित्र वर्ड्स एंड वर्ल्ड्स का प्रदर्शन
4-6 अगस्त 2004, चेन्नई

साहित्य मंच : चंचलकुमार चट्टोपाध्याय की स्मृति में
5 अगस्त 2004, कोलकाता

पाकिस्तानी लेखकों तथा कवियों के साथ एक शाम : इंतिज़ार हुसैन, अहमद फ़राज़ और जेहरा निग़ाह
23 अगस्त 2004, नई दिल्ली

साहित्य मंच : उर्दू कहानी-पाठ
23 अगस्त 2004, मुंबई

विनोबा भावे पर साहित्य मंच
27 अगस्त 2004, मुंबई

वर्ड्स एंड वर्ल्ड्स : फ़िल्मोत्सव
3 सितंबर 2004, बंगलौर

ट्रांसलेटिंग द नेशन : भारतीय साहित्य का अंग्रेज़ी अनुवाद
23 सितंबर 2004, इंफ़ाल

विद्याधर गोखले पर साहित्य मंच
24 सितंबर 2004, मुंबई

उत्तर-पूर्वी युवा कवि सम्मिलन
9-10 अक्तूबर 2004, पश्चिम त्रिपुरा

भारत-चीन सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम
10-23 अक्तूबर 2004, नई दिल्ली

जितेन्द्र मोहन भट्टाचार्य पर साहित्य मंच
11 अक्तूबर 2004, गुवाहाटी

वर्ड्स एंड जेस्चर्स पर स्वर्ण जयंती रंगमंच उत्सव
11-13 अक्तूबर 2004, कोलकाता

स्वर्ण जयंती समारोह : रवीन्द्रनाथ के परिप्रेक्ष्य में
14-15 अक्तूबर 2004, कोलकाता

पुस्तक विमोचन : ग़ालिब : निर्वाचित कबिता
10 नवंबर 2004, कोलकाता

साहित्य मंच : भारत-रूस लेखक सम्मेलन
16 नवंबर 2004, मुंबई

माई फ़ेवरेट बुक
16-26 नवंबर 2004, शिमोगा

सीरिआई लेखकों के प्रतिनिधि मंडल का दौरा
10-12 नवंबर 2004, कोलकाता

साहित्य मंच : सुजाता भट्ट, विवेक नारायण, रूही मजीद
6 दिसंबर 2004, नई दिल्ली

समर्थ रामदास पर साहित्य मंच
17 दिसंबर 2004, मुंबई

आईने : काव्य और फ़िल्मोत्सव
17-18 दिसंबर 2004, गोवा

साहित्य मंच : अविभाजित बाङ्ला संस्कृति : माया मृग की खोज में
24 दिसंबर 2004, कोलकाता

साहित्य मंच : 'उत्तर-पूर्वी साहित्य में वर्तमान प्रवृत्तियाँ'
26 दिसंबर 2004, जमशेदपुर

पुस्तक विमोचन कार्यक्रम : कविताचार्य
29 दिसंबर 2004, कोलकाता

नाट्योत्सव
18 दिसंबर 2005, त्रिवेन्द्रम

पुस्तक विमोचन कार्यक्रम : तंद्रालोकेर प्रहरी
24 जनवरी 2005, कोलकाता

पुस्तक विमोचन कार्यक्रम : अय्यप्प पणिक्करुदे कृतिगल (बाङ्ला)
26 जनवरी 2005, कोलकाता

साहित्य मंच : आनंद काणेकर
28 जनवरी 2005, मुंबई

पुस्तक विमोचन कार्यक्रम : पुलकित
1 फ़रवरी 2005, अहमदाबाद

साहित्य मंच : सो-यामाने, ताकामितसु मस्तुमूरा और तबस्सुम कश्मीरी
2 फ़रवरी 2005, नई दिल्ली

साहित्य मंच : हैंस हैनरिक हॉक
25 फ़रवरी 2005, नई दिल्ली

साहित्य मंच : (स्व.) मालतीबाई बेडेकर
18 मार्च 2005, मुंबई

साहित्य मंच : अल-यंग द्वारा व्याख्यान
30 मार्च 2005, नई दिल्ली

साहित्य मंच : उर्दू परामर्श मंडल के सदस्यों की सहभागिता
31 मार्च 2005, मुंबई

लेखकों को यात्रा अनुदान

निम्नलिखित लेखकों ने वर्ष 2004-2005 के दौरान यात्रा अनुदान का लाभ उठाया—

बाङ्ला : श्रीमती पापड़ी गंगोपाध्याय ने अगरतला, श्री सोहराब हुसैन ने विशाखापट्टनम, हैदराबाद और जगदलपुर की यात्रा की।

गुजराती : श्री महेन्द्र एस. परमार ने असम, श्री जातुश जोशी ने असम की यात्रा की।

कन्नड : श्रीमती डी. सरस्वती ने केरल की यात्रा की।

कोंकणी : एनसी डी' सूज़ा ने बंगलौर और मैसूर, श्री हरीन्दरनाथ शर्मा ने गोवा और महाराष्ट्र की यात्रा की।

मणिपुरी : श्रीमती नी देवी ने बंगलौर और मैसूर, श्री केनसल नकुल ने बंगलौर और मैसूर, श्रीमती रणजीता कोनथोउजम ने बंगलौर और मैसूर तथा श्री थियम अजीत कुमार सिंह ने बंगलौर और मैसूर की यात्रा की।

मराठी : श्री सतीश सोलंकी ने उत्तर प्रदेश, श्री मंगेश एन. काळे ने उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश तथा श्री राजेन्द्र देसाळे ने इंदौर, भोपाल, दिल्ली, आगरा और उज्जैन की यात्रा की।

नेपाली : श्री कैलाश गुरुंग ने धर्मशाला और देहरादून की यात्रा की।

सिन्धी : श्री मुकेश त्रिलोकनी ने पंजाब की यात्रा की।

तमिष़ : डॉ. ए. मल्लिका ने मुंबई तथा श्री ए. सगाया अरोकियादास (असाध) ने ओड़िशा और छत्तीसगढ़ की यात्रा की।

तेलुगु : डॉ. के. मधु ज्योति ने नई दिल्ली की यात्रा की।

पत्रिकाएँ

इंडियन लिटरेचर

(अंग्रेज़ी द्विमासिक)
संपादक : निर्मलकांति भट्टाचार्जी
अप्रैल 2004 से मार्च 2005 तक 6 अंक प्रकाशित।

समकालीन भारतीय साहित्य

(हिन्दी द्विमासिक)
संपादक : अरुण प्रकाश
अप्रैल 2004 से मार्च 2005 तक 6 अंक प्रकाशित।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण

10 फ़रवरी 2005, नई दिल्ली

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उपसमिति ने 10 फ़रवरी 2005 को साहित्य अकादेमी का दौरा किया और भारत के राष्ट्रपति के आदेशानुसार हिन्दी को राजभाषा के रूप में कार्यान्वित करने में साहित्य अकादेमी के प्रयासों का निरीक्षण किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव प्रो. के. सच्चिदानंदन ने समिति के सदस्यों का स्वागत किया और केन्द्र की राजभाषा नीति के अंतर्गत अकादेमी द्वारा राजभाषा के कार्यान्वयन के क्षेत्र में किए गए प्रयासों और अकादेमी की उपलब्धियों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। उन्होंने अकादेमी की कुछ भविष्य की योजनाओं की रूपरेखा भी प्रस्तुत की।

इस अवसर पर साहित्य अकादेमी की ओर से अकादेमी के सचिव के अलावा उपसचिव श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी (राजभाषा प्रभारी), श्री ललित कुमार जैन (लेखा), श्री आर. के. शर्मा (बिक्री), विशेष कार्य अधिकारी श्री एम. एच. वेंकटश्वरन, पुस्तकालयाध्यक्ष श्रीमती मणि विजयलक्ष्मी कुरैशी, प्रशासनिक अधिकारी श्री विश्वनाथ पिल्लै तथा हिन्दी अनुवादक श्री निशांत उपस्थित थे। इनके अतिरिक्त संस्कृति मंत्रालय से संयुक्त सचिव श्री के. जयकुमार और संस्कृति मंत्रालय में निदेशक (राजभाषा) श्रीमती मोहिनी हिंगोरानी भी उपस्थित थे।

राजभाषा संसदीय समिति की पहली उपसमिति के कुल 11 सदस्यों में से पाँच सांसद उपस्थित थे, जिनके नाम इस प्रकार हैं—सर्वश्री जयप्रकाश, संतोष गंगवार, थावरचंद गहलोत, गिरधारी लाल भार्गव और छत्रपाल सिंह लोधा। समिति कार्यालय से वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी श्री संजीब चटर्जी, एक हिन्दी अधिकारी और एक रिपोर्ट भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

बैठक की अध्यक्षता श्री जयप्रकाश ने की। सदस्यों ने निरीक्षण प्रश्नावली के आधार पर अकादेमी में हिन्दी काम-काज की समीक्षा की और राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों को शत-प्रतिशत पूरा करने का आश्वासन लिया। अंत में उपसमिति के संयोजक श्री जयप्रकाश ने समिति के प्रतिवेदन के पहले पाँच खंडों पर किए गए राष्ट्रपति के आदेशों का संकलन अकादेमी के सचिव को भेंट किया।

पुस्तक प्रदर्शनियाँ

2004

23 अप्रैल - 1 मई 2004, कोलकाता
1-9 मई 2004, पुणे
6 जून 2004, बंगलौर
25-27 जून 2005, सानेहाल्ली
12 जुलाई 2004, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली
16 जुलाई 2004, बंगलौर
16 जुलाई 2004, मुंबई
17-24 जुलाई 2004, मुंबई
18 जुलाई 2004, मुंबई
6-15 अगस्त 2004, कानपुर
11-14 अगस्त 2004, दिल्ली पब्लिक लाईब्रेरी
12 अगस्त 2004, नई दिल्ली
21-29 अगस्त 2004, दिल्ली पुस्तक मेला, नई दिल्ली
23 अगस्त 2004, नई दिल्ली
3-5 सितंबर 2004, भोपाल
4-11 सितंबर 2004, भुवनेश्वर
10-19 सितंबर 2004, बंगलौर
14 सितंबर 2004, नई दिल्ली
26 सितंबर 2004, बंगलौर
1-2 अक्तूबर 2004, बंगलौर
1-10 अक्तूबर 2004, अहमदाबाद
8-10 अक्तूबर 2004, बंगलौर
17-19 अक्तूबर 2004, मुंबई
17-18 अक्तूबर 2004, चंडीगढ़

19-22 अक्तूबर 2004, नई दिल्ली
20 अक्तूबर 2004, नई दिल्ली
21-25 अक्तूबर 2004, मुंबई
27-28 अक्तूबर 2004, मसूरी
30 अक्तूबर - 7 नवंबर 2004, नई दिल्ली
9-10 नवंबर 2004, ग़ाज़ियाबाद
9-12 नवंबर 2004, दार्जीलिङ्
12-13 नवंबर 2004, नई दिल्ली
14-20 नवंबर 2004, नई दिल्ली
14-21 नवंबर 2004, असम
16-26 नवंबर 2004, शिमोगा
24-28 नवंबर 2004, पुणे
26 नवंबर - 5 दिसंबर 2004, इंदौर
1-12 दिसंबर 2004, भुवनेश्वर
3-4 दिसंबर 2004, मुंबई
3-5 दिसंबर 2004, भुवनेश्वर
3-14 दिसंबर 2004, पटना
3-1 दिसंबर 2004, रायगढ़, महाराष्ट्र
8-14 दिसंबर 2004, बीरभूमि
10-12 दिसंबर 2004, अहमदाबाद
11-12 दिसंबर 2004, जम्मू
14-20 दिसंबर 2004, जलपाईगुड़ी
15-16 दिसंबर 2004, मुंबई
17-18 दिसंबर 2004, मुंबई
17-26 दिसंबर 2004, झारखंड
18-26 दिसंबर 2004, हुगली
22-26 दिसंबर 2004, नई दिल्ली
22-28 दिसंबर 2004, दार्जीलिङ्
31 दिसंबर 2004 - 9 जनवरी 2005, नागपुर

2005

1-10 जनवरी 2005, असम
5-15 जनवरी 2005, कृष्णानगर, पश्चिम बंगाल
6-9 जनवरी 2005, मुंबई
6-16 जनवरी 2005, उदयपुर
10-17 जनवरी 2005, दुर्गापुर
12-14 जनवरी 2005, नई दिल्ली
13-18 जनवरी 2005, मालदा
13-23 जनवरी 2005, औरंगाबाद
15-23 जनवरी 2005, मुंबई
15-31 जनवरी 2005, मुंबई
17-22 जनवरी 2005, दुलियाजान, असम
26 जनवरी - 6 फ़रवरी 2005, कोलकाता
27 जनवरी 2005, नई दिल्ली
28-30 जनवरी 2005, नासिक
7-16 फ़रवरी 2005, राउरकेला, ओड़िसा
8-17 फ़रवरी 2005, नई दिल्ली
10-16 फ़रवरी 2005, पश्चिम बंगाल
13-20 फ़रवरी 2005, भोपाल
16-22 फ़रवरी 2005, पश्चिम बंगाल
17 फ़रवरी 2005, नई दिल्ली
17-26 फ़रवरी 2005, राजकोट
18-28 फ़रवरी 2005, सांगली
24-25 फ़रवरी 2005, नई दिल्ली
26 फ़रवरी - 9 मार्च, त्रिपुरा
25-28 मार्च 2005, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

बैठकें

सामान्य परिषद्

1 नवंबर 2004, नई दिल्ली
16 फ़रवरी 2005, नई दिल्ली

कार्यकारी मंडल

29 अप्रैल 2004, नई दिल्ली
27 अगस्त 2004, नई दिल्ली
15 फ़रवरी 2005, नई दिल्ली

पश्चिमी क्षेत्रीय परिषद्

8 अक्तूबर 2004, अहमदाबाद

पूर्वी क्षेत्रीय परिषद्

17 मई 2004, कोलकाता

उत्तरी क्षेत्रीय परिषद्

6 जुलाई 2004, दिल्ली

भाषा परामर्श मंडल की बैठकें

असमिया	:	17 मई 2004, कोलकाता
बाङ्ला	:	2 जून 2004, कोलकाता
डोगरी	:	18 अक्तूबर 2004, जम्मू
अंग्रेज़ी	:	14-15 मार्च 2004, त्रिवेन्द्रम
गुजराती	:	8 जून 2004, मुंबई
हिन्दी	:	20 दिसंबर 2004, नई दिल्ली
कन्नड	:	14 जून 2004, बंगलौर
कोंकणी	:	21 मई 2004, गोवा
कश्मीरी	:	1 अक्तूबर 2004, श्रीनगर
मैथिली	:	5 जून 2004, मधुबनी (बिहार)
मलयाळम्	:	20 मई 2004, एरनाकुलम
मणिपुरी	:	3 जून 2004, कोलकाता
मराठी	:	6 मई 2004, नासिक
नेपाली	:	23 जुलाई 2004, कोलकाता
ओड़िया	:	30 नवंबर 2004, कोलकाता
पंजाबी	:	29 सितंबर 2004, नई दिल्ली
राजस्थानी	:	24 सितंबर 2004, नई दिल्ली
संस्कृत	:	15 दिसंबर 2004, कोलकाता
सिन्धी	:	2 जून 2004, वड़ोदरा
तमिष़	:	4 जून 2004, चेन्नई
तेलुगु	:	18 जून 2004, बंगलौर
उर्दू	:	31 मार्च 2004, मुंबई

नई भाषाओं को मान्यता

भारतीय संविधान के 8वें अनुच्छेद में बोडो और संताली भाषाओं को शामिल किए जाने के परिणामस्वरूप, साहित्य अकादेमी ने वर्ष 2004 से इन भाषाओं को मान्यता प्रदान कर दी है। तदनरूप साहित्य अकादेमी ने अपनी सामान्य परिषद् एवं कार्यकारी मंडल में श्री मनोरंजन लाहरी और (डॉ.) श्रीमती दमयंती बेशरा को सदस्यों के रूप में मनोनीत किया है। उक्त भाषाओं के परामर्श मंडलों का गठन किया जा चुका है तथा इन मंडलों के नव निर्वाचित्त सदस्यों के नाम निम्नलिखित हैं—

बोडो परामर्श मंडल 2005-2007

डॉ. अनिल कुमार बोरो

श्री सुरथ नरज़ारी

डॉ. कमलेश्वर ब्रह्म

डॉ. मंगल सिं हाज़'वारी

श्री भूपेन नरज़ारी

श्री फूकन चौधरी बसुमतारी

श्रीमती स्वर्ण प्रभा चैनारी

श्रीमती अंजलि प्रभा दइमारि

डॉ. प्रेमानंद मचहारी

श्री मनोरंजन लाहरी (संयोजक)

संताली परामर्श मंडल 2005-2007

डॉ. कृष्णचंद्र टुडु

डॉ. सोहागिनी टुडु

श्री अर्जुन चरण हेम्ब्रम

श्री रविलाल टुडु

श्री रूपचंद हंसदा

श्री कालीपद सरेन

श्री जगन्नाथ मुर्मू

श्री सी.पी. माझी

श्री सलखु मुर्मू

डॉ. (श्रीमती) दमयंती बेशरा (संयोजक)

भारतीय साहित्य का अभिलेखागार

साहित्य के क्षेत्र में अभिलेखन के महत्त्व और उसकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए साहित्य अकादेमी ने मार्च, 1997 ई. से भारतीय साहित्य के अभिलेखागार की एक परियोजना प्रारंभ की। जब अभिलेखागार पूरी तरह से बन जाएगा तो यह लेखकों और साहित्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री एकत्र और संरक्षित करेगा, जैसे कि पांडुलिपियाँ, चित्र, ऑडियो रिकार्डिंग, वीडियो रिकार्डिंग और प्रतिकृतियाँ (शबीह) आदि। पूरे भारतवर्ष में संस्थाओं और व्यक्तियों के पास उपलब्ध वीडियो फ़िल्म एवं फुटेज, लेखकों की पांडुलिपियाँ, लेखकों के मध्य हुए रोचक पत्राचार एवं साक्षात्कार और पाठ के उपलब्ध ऑडियो रिकार्डिंग को इकट्ठा कर यह भारतीय साहित्य के संग्रहालय के लिए एक ठोस आधार तैयार करेगा। अभिलेखागार में कुछ अत्यंत महत्त्वपूर्ण चित्रों को *सीडी-रोम्स* पर स्कैन करने और संरक्षित करने का कार्य शुरू कर दिया गया है। लगभग एक सौ चित्रों का चयन कर उन्हें पोर्टफ़ोलियो *सीडी* में संरक्षित किया गया है। इस परियोजना के अंतर्गत लेखकों पर फ़िल्म निर्माण और लेखकों की फ़िल्मों की प्रविधियों और अभिलेखागार से संबंधित अभिलेखन और साहित्यिक स्मारकों को संरक्षित रखने की विधियों पर कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएगा। साहित्य अकादेमी ने फ़िल्मों और भारतीय लेखकों और उनके लेखन से संबंधित वीडियो रिकार्डिंग के अभिलेखागार की परियोजना पर कार्य प्रारंभ किया है। अकादेमी द्वारा महत्त्वपूर्ण भारतीय लेखकों पर बनाई गई फ़िल्मों में उनके चित्रों, आवाज़ों, जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं, जिन्होंने उनके जीवन को बदल दिया, उनके विचारों और सृजनात्मक उपलब्धियों एवं समकालीन प्रतिक्रिया को अभिलेखित करने का प्रयास किया गया है। वीडियो फ़िल्मों का यह अभिलेखागार भविष्य के अनूठे भारतीय साहित्यिक संग्रहालय का बीज होगा, जो आम पाठकों के लिए आनंद का विषय होगा और साहित्यिक अनुसंधान-कर्ताओं और इतिहासकारों के लिए उपयोगी होगा। ये फ़िल्में उन निर्देशकों द्वारा निर्मित की गई हैं, जो अपनी तरह के सृजनात्मक कलाकार हैं।

अकादेमी के द्वारा अब तक पैंतालीस लेखकों पर वीडियो फ़िल्में बनाई गई हैं। इन फ़िल्मों के *वीएचएस-कैसेट* और *सीडी-रोम्स* बिक्री के लिए भी उपलब्ध हैं। अकादेमी से किए जानेवाले पत्राचार को पुनर्मूल्यांकित किया गया है तथा नेहरू एवं अन्य प्रख्यात व्यक्तियों के महत्त्वपूर्ण पत्रों को संरक्षण हेतु तैयार किया गया है। ऑडियो टेप्स की प्रामाणिकता को जाँचने के उपरांत उनका क्रमांकन, शीर्षक एवं सूची बनाने का कार्य आरंभ कर दिया गया है।

जनजातीय एवं वाचिक साहित्य परियोजना

अकादेमी की इस दूसरी महत्त्वपूर्ण परियोजना का शुभारंभ सन् 1996 ई. में किया गया। अपने कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए यद्यपि अकादेमी ने बाईस भाषाओं को मान्यता दी है, इसे और अधिक भाषाओं को मान्यता प्रदान करने के लिए अनुरोध प्राप्त होते रहे हैं। भाषा विकास मंडल ने इन अनुरोधों पर विचार किया और अनुशंसा की कि अकादेमी को उन भाषाओं में साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए अलग से एक परियोजना कार्यालय स्थापित करना चाहिए। इसके अनुसार डॉ. जी. एन. देवी के निर्देशन में वड़ोदरा में एक परियोजना कार्यालय स्थापित किया गया। इस परियोजना कार्यालय की मुख्य गतिविधियाँ इस प्रकार हैं—

(क) जनजातीय भाषाओं में प्रकाशनों और ऑडियो, वीडियो अभिलेखन तथा रिकार्डिंग के माध्यम से एक राष्ट्रीय मिशन के रूप में साहित्य के संरक्षण और संवर्धन का कार्य।

(ख) लोकसाहित्यविदों, भाषाविदों, रंगकर्मियों, संगीतकारों और लेखकों की एक सलाहकार समिति गठित करना, जो जनजातीय कल्पना को एक एकीकृत विषय के रूप में बरतने की संभावना पर विचार करे।

(ग) स्थानीय स्तर पर लोकसाहित्यविदों का एक राष्ट्रीय नेटवर्क स्थापित करना, जिसमें स्थानीय स्तर के कार्यकर्त्ता हों, जो अकादेमी को परियोजना में सहयोग कर सकें।

(घ) जनजातीय साहित्य से संबंधित विषय पर संगोष्ठियों का आयोजन और उसमें महत्त्वपूर्ण लोक साहित्य-विदों, भाषाविदों की सहभागिता सुनिश्चित करना।

(ङ) एक नियमित प्रकाशन शुरू करना—एक ऐसी पत्रिका, जो दो वर्षों में एक बार प्रकाशित हो। परियोजना कार्यालय ने संताली भाषा के लिए दो राष्ट्रीय संगोष्ठियों और एक कार्यशाला का आयोजन किया। तीन पुस्तकें इस वित्तीय वर्ष में प्रकाशित की गई हैं।

परियोजना कार्यालय द्वारा वर्ष के दौरान दस पुस्तकों का प्रकाशन किया गया। कुछेक पुस्तकें अभी प्रकाशनाधीन हैं।

वड़ोदरा की परियोजना को समाप्त कर दिया गया है। उसके स्थान पर गुवाहाटी में उत्तर-पूर्वी भाषाओं पर केन्द्रित एक नई परियोजना को शुरू किया गया है। इस परियोजना के निदेशक श्री प्रदीप आचार्य हैं।

अनुवाद केन्द्र

अकादेमी ने बंगलौर और कोलकाता में दो अनुवाद केन्द्रों की स्थापना की। ये केन्द्र उस क्षेत्र की भाषाओं से अंग्रेज़ी तथा अन्य भाषाओं में अनूदित पुस्तकों की विशेष शृंखला के प्रकाशन से की गई है। हमने अपने दो केन्द्रों से पूर्व आधुनिक गौरव-ग्रंथों के प्रकाशन की शृंखला प्रारंभ की है। बंगलौर में स्थित केन्द्र ने 'अस्मिता' नामक एक नई परियोजना भी आरंभ की है।

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

साहित्य अकादेमी की प्रमुख गतिविधियों में *इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर* का निर्माण भी है। यह अपनी तरह की पहली योजना है, जिसमें भारत की बाईस भाषाओं को शामिल किया गया है। अंग्रेज़ी में प्रस्तुत इस विश्वकोश से भारतीय साहित्य की अभिवृद्धि और विकास की व्यापक रूपरेखा सामने आई है। लेखकों, पुस्तकों और सामान्य विषयों पर लिखित प्रविष्टियों को संबद्ध परामर्श मंडलों द्वारा सुव्यवस्थित किया गया और एक संचालन समिति द्वारा अंतिम रूप दिया गया है। देश भर के सैकड़ों लेखकों ने विभिन्न विषयों पर प्रविष्टियाँ भेजी हैं। यह विश्वकोश, जिसे छह खंडों की परियोजना के रूप में नियोजित किया गया, प्रकाशित है। डिमाई क्वार्टो आकार के प्रत्येक खंड में लगभग 1000 पृष्ठ हैं।

इस समय प्रो. के. अय्यप्प पणिक्कर के निर्देशन में *इनसाइक्लोपीडिया* के संशोधित संस्करण के लिए काम चल रहा है। संशोधित संस्करण का प्रथम खंड प्रेस में छपने के लिए तैयार है।

हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

अकादेमी की इस परियोजना का उद्देश्य है, विभिन्न भाषाओं में और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों के अंतर्गत विभिन्न कालों में भारत में साहित्यिक गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना। प्रो. शिशिर कुमार दास द्वारा लिखित सन् 1800 ई. से 1910 ई. और सन् 1911 ई. से 1956 ई. तक के कालखंड को समेटनेवाले दो खंडों का प्रकाशन हो चुका है। मध्यकालीन कालखंड पर केन्द्रित खंड पर कार्य चल रहा है। इस खंड के लेखक हैं प्रो. के. अय्यप्प पणिक्कर। लोकसाहित्य से संबंधित खंड का लेखन प्रो. जी. एन. देवी कर रहे हैं।

नेशनल बिब्लियोग्राफ़ी ऑफ़ इंडियन लिटरेचर सेकेण्ड सीरीज़, 1954-2000

साहित्य अकादेमी की कार्यकारी मंडल की 19 अगस्त 2002 को हुई बैठक में लिए गए निर्णय के अनुरूप, एन. बी. आई. एल. की दूसरी शृंखला, जिसमें सन् 1954-2000 तक का काल खंड सम्मिलित है, का कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। यह पुस्तक विद्वानों, पुस्तकालय के पाठकों, प्रकाशकों, पुस्तक विक्रेताओं तथा उन व्यक्तियों के लिए कारगर सिद्ध होगी, जो पुस्तकों को संदर्भिका के रूप में देखने की रुचि रखते हैं।

इस दूसरी शृंखला में, साहित्यिक स्तर की समस्त पुस्तकों तथा साहित्य के क्षेत्र में स्थायी मूल्यों तथा 1 जनवरी 1954 से 31 दिसंबर 2000 तक के मध्य प्रकाशित संबद्ध विषय सम्मिलत हैं।

इस परियोजना के अंतर्गत 22 भारतीय भाषाओं की ग्रंथ-सूची का संकलन बनाने की योजना है। इस संदर्भ में 22 भाषाओं के विशेषज्ञों को अनुबंधित किया गया है। उक्त कार्य संकलन के विभिन्न स्तरों पर यूनाईटेड स्टेट्स लाईब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस के पूर्व चयन एवं सूचीकरण अधिकारी श्री ज़ेड. ए. बर्नी के संपादन में किया जा रहा है। तैयार सामग्री को सीआईआईएल—अकादेमी-एनबीटी वेबसाइट पर उपलब्ध कराया गया है। उक्त कार्य को पुस्तक के साथ-साथ *सी.डी.* में भी उपलब्ध कराया जाएगा।

असमिया

मोर जीवनर किछु कथा (आत्मकथा)
ले. एम. नज़र अली
पृ. XIV+102, मू. 70 रु.
ISBN : 81-260-1870-4

संचयन (असमिया काव्य संचयन)
संक. एवं संपा. महेश्वर नियोग
पृ. 476, मू. 80 रु.
ISBN : 81-260-2009-7 (पुनर्मुद्रण)

राजा (बाङ्ला गौरव-ग्रंथ)
ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर
अनु. महेन्द्र बोरा
पृ. 108, मू. 30 रु.
ISBN : 81-260-2009-1 (पुनर्मुद्रण)

रक्तकरबी (बाङ्ला गौरव-ग्रंथ)
ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर
अनु. केशब महंत
पृ. 70, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-2007-5 (पुनर्मुद्रण)

गेनजी कोनाबोरर साधु (जापानी गौरव-ग्रंथ)
ले. मुरासाकी शिकाबु
अनु. अतुलचंद्र हज़ारिका
पृ. 314, मू. 100 रु.
ISBN : 81-260-2011-3 (पुनर्मुद्रण)

पूर्णिमा राति अरु अन्यान्य गल्प
(पुरस्कृत पंजाबी कहानियाँ)
ले. करतार सिंह दुग्गल
अनु. स्वप्ना भट्टाचार्य
पृ. 196, मू. 100 रु.
ISBN : 81-260-2016-4

घरे बाइरे (बाङ्ला गौरव-ग्रंथ)
ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर
अनु. पराग कुमार भट्टाचार्य
पृ. 168, मू. 90 रु.
ISBN : 81-260-1868-2

बाङ्ला

कविता चर्या
(परिसंवाद में प्रस्तुत की गईं बाङ्ला कविताएँ)
पृ. 148, मू. 70 रु.

ग़ालिब : निर्वाचित कविता
संपा. ज्योतिभूषण चाकी और शंख घोष
पृ. 308, मू. 125 रु.
ISBN : 81-260-1871-2

बंगीय शब्दकोश (बाङ्ला शब्दकोश खंड-I एवं II)
संक. हरिचरण बंद्योपाध्याय
पृ. खंड-I. 1278, खंड-II. 1194
मू. 600 रु. (प्रति खंड)
ISBN : 81-260-1979-4 (पुनर्मुद्रण)

न्यू यॉर्के कबि (लोर्का की स्पानी कविताएँ)
ले. एफ़. जी. लोर्का
पृ. 156, मू. 90 रु.
ISBN : 81-260-1973-5

बाङ्ला गल्प संकलन (खंड-II)
(बाङ्ला कहानियों का संकलन)
पृ. 288, मू. 80 रु.
ISBN : 81-260-2087-3 (पुनर्मुद्रण)

दलित (मराठी, गुजराती एवं कन्नड भाषाओं की दलित रचनाओं से चयन)
संपा. देवेश राय
पृ. 308, मू. 90 रु.
ISBN : 81-260-2010-5 (पुनर्मुद्रण)

अंतरिक्षे बिस्फोरन (मराठी विज्ञान साहित्य)
ले. जयंत वी. नारलीकर
अनु. मानबेन्द्र बंद्योपाध्याय
पृ. 104, मू. 45 रु.
ISBN : 81-260-2004-0 (पुनर्मुद्रण)

निर्बाचित कविता
(पुरस्कृत असमिया काव्य-संग्रह)
ले. नीलमणि फुकन
अनु. तड़ित चौधुरी
पृ. 112, मू. 60 रु.
ISBN : 81-260-2002-4

दूशै बछरेर बाङ्ला *प्रबंध साहित्य* (खंड-I)
(गत 200 वर्षों के बाङ्ला निबंध)
संपा. आलोक राय, पबित्र सरकार
एवं आभ्र घोष
पृ. 520, मू. 160 रु.
ISBN : 81-260-2018-0 (संशोधित संस्करण)

गुलिवरेर भ्रमण बृत्तांत (गुलिवर के यात्रा-वृत्तांत)
ले. जोनाथन स्विफ़्ट
अनु. लीला मजूमदार
पृ. 352, मू. 80 रु.
ISBN : 81-260-2001-6 (पुनर्मुद्रण)

दिन ओ रात्रि (पुरस्कृत मलयाळम् कविताएँ)
ले. के. अय्यप्प पणिक्कर
अनु. उत्पल कुमार बासु
पृ. 146, मू. 90 रु.
ISBN : 81-260-2012-1

तंद्रालोकेर प्रहरी (ओड़िया उपन्यास)
ले. मनोज दास
अनु. तपन कुमार खानराह
पृ. 140, मू. 90 रु.
ISBN : 81-260-1981-6

बाणभट्टेर आत्मकथा (हिन्दी गौरव-ग्रंथ)
ले. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी
अनु. प्रियरंजन सेन
पृ. 302, मू. 100 रु.
ISBN : 81-260-2013-X (पुनर्मुद्रण)

वेरियर एलवीनेर आदिवासी जगत
(पुरस्कृत आत्मकथा)
ले. वेरियर एलविन
अनु. महाश्वेता देवी एवं पृथिवी साहा
पृ. 368, मू. 130 रु.
ISBN : 81-260-2017-2 (पुनर्मुद्रण)

हरप्रसाद शास्त्री (बाङ्ला विनिबंध)
ले. सत्यजित चौधुरी
पृ. 162, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-2019-9 (पुनर्मुद्रण)

अन्नदाशंकर राय (बाङ्ला लेखक पर विनिबंध)
ले. सुरजीत दासगुप्ता
पृ. 128, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-2106-3

वामन फिरलो ना (बाल-साहित्य)
ले. जयंत नारलीकर
पृ. 132, मू. 55 रु.
ISBN : 81-260-2107-1 (पुनर्मुद्रण)

आश्रय (पुरस्कृत सिन्धी उपन्यास)
ले. हरि मोतवाणी
अनु. अफ़सार अहमद एवं दुर्गा थावरानी
पृ. 80, मू. 40 रु.
ISBN : 81-260-2108-X (पुनर्मुद्रण)

अवनीन्द्रनाथ टैगोर (विनिबंध)
ले. अमितेन्द्रनाथ टैगोर
पृ. 84, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-2110-1 (पुनर्मुद्रण)

रामकृष्ण परमहंस (विनिबंध)
ले. स्वामी लोकेश्वरानंद
पृ. 104, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-2109-8

रक्तमनीर हरे (खंड-I)
(बंगाल विभाजन पर चुनिन्दा कहानियाँ)
संक. एवं संपा. देवेश राय
पृ. 424, मू. 130 रु.
ISBN : 81-260-2111-X (संशोधित संस्करण)

झाँपी (पुरस्कृत मैथिली कहानी-संग्रह)
ले. गोविन्द झा
अनु. गौरी सेन
पृ. 80, मू. 75 रु.
ISBN : 81-260-2005-9

डोगरी

आग्ग गवाह (अकादेमी द्वारा पुरस्कृत
मलयाळम् उपन्यास *अग्नि साक्षी*)
ले. एन. ललितांबिका अंतर्जनम्
अनु. ओम गोस्वामी
पृ. 112, मू. 100 रु.
ISBN : 81-260-1741-4

सआदत हसन मंटो (विनिबंध)
ले. वारिस अल्वी
अनु. विजय वर्मा
पृ. 91, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1846-1

कल्हण (विनिबंध)
ले. सोमनाथ धर
अनु. ध्यान सिंह
मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1987-5

अंग्रेज़ी

जाहेरा (मणिपुरी उपन्यास)
ले. हिजाम अंगांघल सिंह
अनु. ई. सोनमणि सिंह
पृ. 248 मू. 90 रु.
ISBN : 81-260-1546-2

वेन स्टोन मैल्ट्स
ले. पी. लंकेश
संपा. वनमाला विश्वनाथ
पृ. 200, मू. 75 रु.
ISBN : 81-260-1138-6

फोक टेल्स ऑफ़ निकोबार
ले. रॉबिन राय चौधुरी
पृ. 86, मू. 80 रु.
ISBN : 81-260-1299-5 (पुनर्मुद्रण)

टेल्स टोल्ड बाई मिस्टिक्स
पुनर्सृजन : मनोज दास
पृ. 312, मू. 180 रु.
ISBN : 81-260-1159-9 (पुनर्मुद्रण)

हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन इंग्लिश लिटरेचर
ले. एम. के. नायक
पृ. vi + 320, मू. 90 रु.
ISBN : 81-7201-840-1 (पुनर्मुद्रण)

ईस्ट-वेस्ट (भाग-I) (बाङ्ला गौरव-ग्रंथ)
ले. सुनील गंगोपाध्याय
अनु. इनाक्षी चटर्जी
पृ. 742, मू. 245 रु.
ISBN : 81-260-1895-X

एनशंट इंडियन लिटरेचर (खंड-II)
संपा. टी. आर. एस. शर्मा
पृ. 930, मू. 450 रु.
ISBN : 81-260-0794-X (पुनर्मुद्रण)

बिटवीन यू एंड मी
संक. एवं संपा. ओ. एल. नागभूषण स्वामी
पृ. 124, मू. 60 रु.
ISBN : 81-260-1563-2

कुसुमाग्रज (विनिबंध)
ले. निशिकांत मिरजकर
पृ. 80, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1929-4

सुरेश जोशी (विनिबंध)
ले. शिरीष पांचाल
पृ. 76, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1922-0 (पुनर्मुद्रण)

द ड्राट एंड अदर स्टोरीज़
ले. सनत चंद्र चटर्जी
अनु. ससोधर सिन्हा
पृ. xvi + 106, मू. 50 रु.
ISBN : 81-260-1931-X

गोल्ड नूग्गेट्स (स्वतंत्रतापूर्व तेलुगु कहानियाँ)
संक. एवं संपा. भा. कृष्णमूर्ति और सी. विजयश्री
पृ. xvi + 471, मू. 225 रु.
ISBN : 81-260-1930-1

कारमेलिन
ले. दामोदर मावज़ो
अनु. विद्या पै
पृ. iv + 281, मू. 125 रु.

द इंग्लिश राइटिंग्स ऑफ़ रवीन्द्रनाथ टैगोर (खंड-II)
संपा. शिशिर कुमार दास
पृ. 780, मू. 450 रु.
ISBN : 81-260-1193-9 (पुनर्मुद्रण)

जीवनानंद दास (विनिबंध)
ले. चंद्रनंदन दास गुप्ता
पृ. viii + 48, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1874-7

जैकोब एंड डूलसे (पुर्तगाली जीवन के रेखाचित्र)
ले. जिप (फ्रांसिस्को जोओ कोस्टा)
अनु. अल्वारोनवोन्हा दा कोस्टा
पृ. xi + 196, मू. 115 रु.
ISBN : 81-260-1968-9

श्रीवेदांत देशिका (विनिबंध)
ले. एम. नरसिम्हाचारी
पृ. 98, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1890-9

जोश मलसयानी (विनिबंध)
ले. भूपेन्द्र अज़ीज़ परिहार
पृ. 86, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1933-6

राइटिंग द वेस्ट (1750-1947)
संपा. सी. विजयश्री
पृ. xv + 214, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1944-1

द पार्टिंग्स (असमिया उपन्यास *ज़ेउजी पतर काहिनी*)
ले. रसना बरुआ
अनु. मृणाल मिरी
पृ. iv + 263, मू. 125 रु.
ISBN : 81-260-1919-0

अष्टाध्यायी ऑफ़ पाणिनी (खंड-XI)
ले. एस. डी. जोशी और जे. ए. एफ़. रूडबेरीगेन
पृ. vii + 251 + xi, मू. 200 रु.
ISBN : 81-260-1893-3

कॉनटेम्परेरी इंडियन शॉर्ट स्टोरीज़-सीरीज़-III
(विभिन्न भारतीय भाषाओं की 19 कहानियों का संग्रह)
पृ. vi + 222, मू. 40 रु.
ISBN : 81-260-1589-6 (पुनर्मुद्रण)

कॉनटेम्परेरी इंडियन शॉर्ट स्टोरीज़ (सीरीज़-IV)
संपा. शांतिनाथ के. देसाई
पृ. x + 337, मू. 70 रु.
ISBN : 81-260-1807-0 (पुनर्मुद्रण)

राजतरंगिनी
ले. कल्हण
अनु. आर. एस. पंडित
पृ. xiii + 783, मू. 200 रु.
ISBN : 81-260-1236-6 (पुनर्मुद्रण)

चर्निंग ऑफ़ द सिटी (पुरस्कृत डोगरी उपन्यास)
ले. ओ. पी. शर्मा 'सारथी'
अनु. शिवनाथ
पृ. 64, मू. 35 रु.
ISBN : 81-260-1969-7 (पुनर्मुद्रण)

कॉनटेम्परेरी इंडियन शॉर्ट स्टोरीज़ (खंड-I)
ले. विभिन्न लेखक
पृ. viii + 232, मू. 40 रु.
ISBN : 81-260-1587-X (पुनर्मुद्रण)

कॉनटेम्परेरी इंडियन शॉर्ट स्टोरीज़ (खंड-II)
ले. विभिन्न लेखक
पृ. viii + 232, मू. 40 रु.
ISBN : 81-260-1588-8 (पुनर्मुद्रण)

हब्बा खातून (विनिबंध)
ले. एस. एल. साधु
पृ. 56, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1954-9 (पुनर्मुद्रण)

हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन इंग्लिश लिटरेचर
ले. एम. के. नायक
पृ. xii + 320, मू. 90 रु.
ISBN : 81-260-1872-0 (पुनर्मुद्रण)

आर. के. नारायण (विनिबंध)
ले. रंगा राव
पृ. 122, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1971-9

मॉडर्न इंडियन पोएट्री इन इंग्लिश
संपा. के. अय्यप्प पणिक्कर
पृ. 177, मू. 65 रु.
ISBN : 81-7201-1233-7 (पुनर्मुद्रण)

नाइनटीन सेन्चूरी इंडियन इंग्लिश प्रोज़
संपा. मोहन रमनन्
पृ. x + 249, मू. 130 रु.
ISBN : 81-260-1943-3 (पुनर्मुद्रण)

हर्बर्ट (पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. नवारुण भट्टाचार्य
अनु. ज्योति पंजवाणी
पृ. iv + 104, मू. 60 रु.
ISBN : 81-260-1932-8

हिस्ट्री ऑफ़ मॉडर्न मैथिली लिटरेचर
(स्वातंत्र्योत्तर काल)
ले. देवकांत झा
पृ. viii + 365, मू. 200 रु.
ISBN : 81-260-1892-5

नोवेयर बट देयर (पुरस्कृत हिन्दी काव्य)
ले. अशोक वाजपेयी
अनु. विजय मुंशी
पृ. 140, मू. 100 रु.
ISBN : 81-260-1370-8

रेमिनिसेन्सिज़ (पुरस्कृत राजस्थानी संस्मरण)
ले. नेम नारायण जोशी
अनु. एन. सहल
पृ. 110, मू. 50 रु.
ISBN : 81-260-1840-2

हरिवल्लभ भयानी (गुजराती विद्वान) (विनिबंध)
ले. बलवंत जानी
पृ. 60, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-2024-5

वी. जे. पी. सल्धाना (कोंकणी लेखक) (विनिबंध)
ले. एडविन डी'सूज़ा
पृ. 88, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-2028-8

द गोल्डन ट्रेज़री ऑफ़ इंडो-एंगलियन पोएट्री
संपा. वी. के. गोकाक
पृ. 360, मू. 75 रु.
ISBN : 81-260-1196-3 (पुनर्मुद्रण)

बिनोदनी
ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर
अनु. कृष्णा कृपलानी
पृ. viii + 247, मू. 90 रु.
ISBN : 81-7201-403-1

इंग्लिश राईटिंग ऑफ़ रवीन्द्रनाथ टैगोर, खंड-I
संपा. शिशिर कुमार दास
पृ. 669, मू. 450 रु.
ISBN : 81-260-1295-1 (पुनर्मुद्रण)

कॉनटेम्परेरी इंडियन शॉर्ट स्टोरीज़ इन इंग्लिश
ले. शिव के. कुमार
पृ. viii + 241, मू. 75 रु.
ISBN : 81-260-1806-2 (पुनर्मुद्रण)

फ़ाइव डिकेड्स (साहित्य अकादेमी का संक्षिप्त इतिहास)
संपा. एवं संक. डी. एस. राव
पृ. xii + 346, मू. 1100 रु.
ISBN : 81-260-2060-1

मधुराचेन्ना (विनिबंध)
ले. जी. एस. कापसे
अनु. जी. बी. सज्जन
पृ. 92, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1730-9

अरली नॉवल्स इन इंडिया
संपा. मीनाक्षी मुखर्जी
पृ. xx + 278, मू. 140 रु.
ISBN : 81-260-1342-7 (पुनर्मुद्रण)

इन दैट सेंस यू टच्ड इट एंड अनक्वाइट वाटर्स
ले. केतकी कुशरि डायसन एवं लक्ष्मी कनन
संपा. केकी एन. दारूवाला
पृ. xiv + 193, मू. 90 रु.
ISBN : 81-260-1990-5

लाइफ़ ऑन माई साईड ऑफ़ द स्ट्रीट एंड
डॉयलॉग एंड अदर पोएम्स
ले. अन्ना सुजाता मथाई एवं
प्रिया सरुक्कई छाबड़ीया
पृ. xvi + 158, मू. 90 रु.
ISBN : 81-260-1991-3

माई फ़ादर्स फ्रैंड एंड अदर स्टोरीज़
(पुरस्कृत तमिष़ कहानियाँ)
ले. अशोकमित्रन
अनु. लक्ष्मी होलमस्ट्रॉम
पृ. x + 207, मू. 120 रु.
ISBN : 81-260-1347-8 (पुनर्मुद्रण)

लाइक ए रिवर फ़ैड बाई मैनी ए स्ट्रीम
(संवत्सर व्याख्यानमाला शृंखला)
ले. के. अय्यप्प पणिक्कर
पृ. 20, मू. 20 रु.
ISBN : 81-260-1995-6

पाटदेई (पुरस्कृत ओड़िया कहानियाँ)
ले. बीनापाणि मोहांती
अनु. अशोक के. मोहांती
पृ. 128, मू. 60 रु.
ISBN : 81-260-2116-0

गुजराती

कबीर वचनावली (चौथा संस्करण)
अनु. पिनाकिन त्रिवेदी एवं रणधीर उपाध्याय
पृ. 480, मू. 200 रु.
ISBN : 81-260-1041-1

आरण्यक (तीसरा संस्करण)
ले. बिभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
अनु. चंद्रकांत मेहता
पृ. 264, मू. 140 रु.
ISBN : 81-260-1036-3

ग़ालिब (प्रख्यात उर्दू कवि)
ले. एम. मुजीब
अनु. चाँदबीबी शेख़
पृ. 88, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1664-7

मणिलाल द्विवेदी (गुजराती लेखक)
ले. धीरूभाई ठक्कार
अनु. लाभशंकर पुरोहित
पृ. 88, मू. 25 रु.
(गुजराती साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशित)

कलि-कथा : वाया बाई पास
ले. अलका सरावगी
अनु. चंद्रिका व्यास
पृ. 212, मू. 100 रु.
ISBN : 81-260-2024-2

गुजराती प्रतिनिधि ग़ज़ालों (ग़ज़लो का संकलन)
संक. एवं संपा. चीनू मोदी
पृ. xxviii + 152, मू. 95 रु.
ISBN : 81-7201-878-9 (पुनर्मुद्रण)

पुलकित (पू. ला. देशपांडे के चुनिंदा निबंध, संस्मरण और रेखाचित्र)
संक. एवं अनु. अरुणा जडेजा
पृ. 216, मू. 110 रु.
ISBN : 81-260-1967-0

रवि रश्मि (भाग-I) (टैगोर क़ी चुनिंदा कहानियाँ)
परिचय : सोमनाथ मैत्र
अनु. बच्चूभाई शुक्ला
पृ. 176, मू. 90 रु.
ISBN : 81-260-2030-X

हिन्दी

पाताल भैरवी (पुरस्कृत असमिया उपन्यास)
ले. लक्ष्मीनंदन बोरा
अनु. नीता बैनर्जी
मू. 100 रु.
ISBN : 81-260-0108-9 (पुनर्मुद्रण)

उत्पल दत्त के तीन नाटक (बाङ्ला नाटक)
ले. उत्पल दत्त
अनु. सांत्वना निगम
पृ. 316, मू. 200 रु.
ISBN : 81-260-0750-8 (पुनर्मुद्रण)

महादेवी रचना संचयन
(महादेवी वर्मा की चुनिन्दा रचनाएँ)
संपा. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
पृ. 296, मू. 180 रु.
ISBN : 81-260-0437-1 (पुनर्मुद्रण)

संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र
(पुरस्कृत उर्दू समालोचना)
ले. गोपीचंद नारंग
अनु. देवेश
पृ. 456, मू. 225 रु.
ISBN : 81-260-0798-2 (संशोधित पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद रचना संचयन
(प्रेमचंद की चुनिन्दा रचनाएँ)
संपा. निर्मल वर्मा एवं कमल किशोर गोयनका
पृ. 1028, मू. 300 रु.
ISBN : 81-7201-633-8 (पुनर्मुद्रण)

आधुनिक रूसी कहानी
(रूसी कहानियों का संकलन)
संपा. एवं. अनु. हेमचंद्र पांडे
पृ. 340, मू. 180 रु.
ISBN : 81-260-1834-8

साहित्य और चेतना (संवत्सर व्याख्यान-18)
ले. गोविन्द चंद्र पांडेय
पृ. 32, मू. 15 रु.
ISBN : 81-260-1897-6

मेरी कविता मेरे गीत (पुरस्कृत डोगरी काव्य)
ले. पद्मा सचदेवा
पृ. 95, मू. 50 रु.
ISBN : 81-7201-275-6 (पुनर्मुद्रण)

शाहज़ादा दाराशिकोह, खंड-I (पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. श्यामल गंगोपाध्याय
अनु. ममता खरे
पृ. 547, मू. 200 रु.
ISBN : 81-260-0744-3 (पुनर्मुद्रण)

शाहज़ादा दाराशिकोह, खंड-II
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. श्यामल गंगोपाध्याय
अनु. ममता खरे
पृ. 558, मू. 200 रु.
ISBN : 81-260-0744-3 (पुनर्मुद्रण)

भूषण (मध्यकालीन हिन्दी कवि पर विनिबंध)
ले. राजमल बोरा
पृ. 123, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1900-X

यह राजधानी (पुरस्कृत कश्मीरी कहानियाँ)
ले. एच. के. कौल
अनु. गौरी शंकर रैणा
पृ. 80, मू. 40 रु.
ISBN : 81-260-1830-5

अब भी वसंत को तुम्हारी ज़रूरत है
(चुनिन्दा जर्मन कविताओं का संकलन)
ले. रिल्के
अनु. अनामिका
पृ. 83, मू. 40 रु.
ISBN : 81-260-1899-2

केसरी सिंह बारहठ (राजस्थानी लेखक पर विनिबंध)
ले. फ़तेह सिंह मानव
पृ. 128, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1617-5 (पुनर्मुद्रण)

बारहठ नरहरिदास (राजस्थानी लेखक पर विनिबंध)
ले. ओंकार सिंह लखावत
पृ. 112, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1613-2 (पुनर्मुद्रण)

आरण्यक (बाङ्ला उपन्यास)
ले. बिभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
अनु. हंसकुमार तिवारी
पृ. 216, मू. 125 रु.
ISBN : 81-260-0932-2 (संशोधित पुनर्मुद्रण)

तन्मय धूलि
(साहित्य अकादेमी पुरस्कृत ओड़िया काव्य)
ले. प्रतिभा सत्पथी
अनु. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र
पृ. 104, मू. 50 रु.
ISBN : 81-260-1902-6

ग-गीत (पुरस्कृत राजस्थानी कविताएँ)
ले. मोहन आलोक
अनु. नीरज दइया
पृ. 95, मू. 50 रु.
ISBN : 81-260-1901-8

बिहारी (मध्यकालीन हिन्दी कवि पर विनिबंध)
ले. बच्चन सिंह
पृ. 60, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-0414-2 (पुनर्मुद्रण)

गोसाईं बागान का भूत (बाङ्ला बाल उपन्यास)
ले. शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय
अनु. अमर गोस्वामी
पृ. 86, मू. 30 रु.
ISBN : 81-260-0226-3 (पुनर्मुद्रण)

महावीर प्रसाद द्विवेदी
(आधुनिक हिन्दी लेखक पर विनिबंध)
ले. नंद किशोर नवल
पृ. 97, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-0672-2 (पुनर्मुद्रण)

जयदेव (मध्यकालीन संत पर विनिबंध)
ले. एस. के. चटर्जी
अनु. आनंद कुशवाहा
पृ. 63, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1913-1 (पुनर्मुद्रण)

प्रभाकर माचवे
(आधुनिक हिन्दी लेखक पर विनिबंध)
ले. राजेन्द्र उपाध्याय
पृ. 128, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1912-3

ईश्वरचंद्र विद्यासागर (विनिबंध)
ले. हिरण्मय बैनर्जी
अनु. शुभा वर्मा
पृ. 79, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1908-5 (पुनर्मुद्रण)

देवीशंकर अवस्थी
(आधुनिक हिन्दी समालोचक पर विनिबंध)
ले. अरविन्द त्रिपाठी
पृ. 116, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1898-4

सरहपा (हिन्दी के प्रथम कवि पर विनिबंध)
ले. डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय
पृ. 68, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-0005-8 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद (आधुनिक हिन्दी कथाकार पर विनिबंध)
ले. प्रकाश चंद्र गुप्ता
पृ. 64, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-0670-6 (पुनर्मुद्रण)

किसे कहते हैं नाट्यकला (नाट्यालोचन)
ले. शंभु मित्र
अनु. प्रतिभा अग्रवाल
पृ. 48, मू. 25 रु.
ISBN : 81-7201-679-4 (संशोधित पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला साहित्य का इतिहास (अजिल्द)
ले. सुकुमार सेन
अनु. निर्मला जैन
पृ. 396, मू. 100 रु.
ISBN : 81-260-1949-2 (संशोधित पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला साहित्य का इतिहास (सजिल्द)
ले. सुकुमार सेन
अनु. निर्मला जैन
पृ. 396, मू. 200 रु.
ISBN : 81-260-1949-2 (संशोधित पुनर्मुद्रण)

बाबरनामा (बाबर के संस्मरण)
अनु. युगजित नवलपुरी
पृ. 521, मू. 150 रु.
ISBN : 81-260-0014-7 (पुनर्मुद्रण)

रवीन्द्रनाथ की कहानियाँ, खंड-I
ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर
अनु. राम सिंह तोमर
पृ. 403, मू. 100 रु.
ISBN : 81-260-0323-5 (पुनर्मुद्रण)

रवीन्द्रनाथ की कहानियाँ, खंड-II
ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर
अनु. कणिका तोमर
पृ. 292, मू. 65 रु.
ISBN : 81-260-0323-5 (पुनर्मुद्रण)

हिन्दी साहित्य का इतिहास
ले. विजयेन्द्र स्नातक
पृ. xi+463, मू. 200 रु.
ISBN : 81-260-0144-5 (पुनर्मुद्रण)

ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ, भाग-I
ले. जैकोब लुडविग कार्ल ग्रिम एवं
विलहेम कार्ल ग्रिम
अनु. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 218, मू. 90 रु.
ISBN : 81-260-2040-7

तुकाराम (मध्यकालीन संत कवि पर विनिबंध)
ले. भालचंद्र नेमाडे
अनु. चंद्रकांत पाटील
पृ. 69, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1914-X

हज़ारी प्रसाद द्विवेदी
(आधुनिक हिन्दी लेखक पर विनिबंध)
ले. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
पृ. 94, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-0016-3 (पुनर्मुद्रण)

मुक्तिस्वप्न (स्पानी उपन्यास)
ले. होसे रिसाल
पृ. 360, मू. 170 रु.
ISBN : 81-260-1905-0

उजला राजमार्ग (कश्मीरी कविता संकलन)
संपा. रतनलाल शांत
पृ. 188, मू. 120 रु.
ISBN : 81-260-1911-5

उपेन्द्रनाथ अश्क
(आधुनिक हिन्दी लेखक पर विनिबंध)
ले. राजेन्द्र टोकी
पृ. 136, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1911-5

पं. श्रीराम शर्मा
(आधुनिक हिन्दी लेखक पर विनिबंध)
ले. राम गोपाल शर्मा 'दिनेश'
पृ. 104, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-2044-X

भगवतशरण उपाध्याय (विनिबंध)
ले. खगेन्द्र ठाकुर
पृ. 96, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-2045-8

भूली यादें मधुपुर की (पुरस्कृत असमिया कहानियाँ)
ले. शीलभद्र
अनु. नीता बैनर्जी
पृ. 112, मू. 50 रु.
ISBN : 81-260-2046-6

गोरखनाथ (मध्यकालीन संत पर विनिबंध)
ले. नगेन्द्रनाथ उपाध्याय
पृ. 68, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-2042-3 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद : चुनिंदा कहानियाँ, भाग-I
संपा. अमृत राय
पृ. 96, मू. 30 रु.
ISBN : 81-7201-975-0 (पुनर्मुद्रण)

कन्नड

वा.रा. (विनिबंध)
ले. एस. वेंकटरमन
अनु. पी. वेणुगोपाल
पृ. 88, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-0984-5

स्वर्णा कमलागलु
(साहित्य अकादेमी पुरस्कृत तेलुगु कहानी-संग्रह, *स्वर्णा कमलालु*)
ले. आई. सरस्वती देवी
अनु. पी. वेणुगोपाल
पृ. 962, मू. 300 रु.
ISBN : 81-260-1731-7

नीली चँदिरा
ले. शिव प्रसाद सिंह
अनु. पी. शशिकला
पृ. xxii+774, मू. 350 रु.
ISBN : 81-260-1733-3

सौगंधिका परिणय (मध्यकालीन गौरव-ग्रंथ)
ले. मुम्मादी कृष्णराजा वोदेयर
संपा. एच. एस. श्रीमती
पृ. xx + 796, मू. 600 रु.
ISBN : 81-260-1738-4

कोंकणी

भंगारचेन सुकने
ले. ओम गोस्वामी
अनु. शीला कोलामबकर
पृ. 160, मू. 65 रु.
ISBN : 81-260-1929-8

अंकारित कथा (समकालीन मराठी कहानी संकलन)
अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 156, मू. 76 रु.
ISBN : 81-260-1959-X

कश्मीरी

नवीन अगस्त
ले. मनोरंजन दास
अनु. मिशैल सुल्तानपुरी
पृ. iv + 100, मू. 70 रु.
ISBN : 81-260-1845-3

जूलान
ले. भवनेन्द्र नाथ सईकिया
अनु. रतन लाल जौहर
पृ. 276, मू. 200 रु.
ISBN : 81-260-1851-X

आले (पुरस्कृत डोगरी कहानियाँ)
ले. वेद राही
अनु. गनी बेग
पृ. 180, मू. 150 रु.
ISBN : 81-260-1939-5

वहाब खार (विनिबंध)
ले. शाद रमज़ान
पृ. 96, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1938-7

नईमा साद (विनिबंध)
ले. महफ़ूज़ा जान
पृ. 76, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1940-9

एंथोलॉजी ऑफ़ कश्मीरी लीलास
संपा. रतन लाल तलाशी
पृ. 310, मू. 200 रु.
ISBN : 81-260-1986-7

मैथिली

ललित (मैथिली लेखक पर विनिबंध)
ले. विभूति आनंद
पृ. 98, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1889-5

वाल्मीकि (प्रथम संस्कृत कवि पर विनिबंध)
ले. पांडुरंग राव
पृ. 108, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1889-5

दुधमुहाँ (पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास *द मॉरनिंग फ़ेस*)
ले. मुल्कराज आनंद
अनु. देव नारायण मिश्र
पृ. 462, मू. 350 रु.
ISBN : 81-260-1950-6

युद्ध अओर योद्धा (नेपाली महाकाव्य)
ले. अगम सिंह गिरि
अनु. अनंत बिहारी लाल दास 'इंदु'
पृ. 56, मू. 40 रु.
ISBN : 81-260-1891-7

मलयाळम्

अभिनवगुप्त
ले. जी.टी. देशपांडे
अनु. सी. राजेन्द्रन
पृ. 256, मू. 100 रु.
ISBN : 81-260-1972-7

तिक्कोदियन (विनिबंध)
ले. पी. वत्सला
पृ. 90, मू. 25 रु.

भक्तिकाव्यम (तमिष्ष भक्ति-गीतों का संकलन)
संक. ए.ए. मानवलन्
अनु. अट्टूर रवि वर्मा
पृ. 404, मू. 160 रु.
ISBN : 81-260-1151-3

मणिपुरी

कुनुरिनग्गी लानजेन
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी कथासाहित्य *फ़्लाइट ऑफ़ पिजंस*)
ले. रस्किन बॉण्ड
अनु. एस. भानुमति देवी
पृ. 120, मू. 65 रु.
ISBN : 81-260-1863-1

अट्टोपा लांगुवइमाला
(भारतीय कहानियों का संकलन)
संक. एवं संपा. एन. कुंजमोहन सिंह
अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 168, मू. 110 रु.
ISBN : 81-260-1978-6

मणिपुरी फुंगवारी (मणिपुरी लोक-साहित्य)
संक. आई. आर. बाबु सिंह
पृ. 86, मू. 40 रु.
ISBN : 81-260-2015-6 (पुनर्मुद्रण)

मराठी

राजा राममोहन राय (विनिबंध)
ले. सौमेन्द्रनाथ टैगोर
अनु. श्रीनाथ तिवारी
पृ. 68, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1924-7

मौखिक परंपरेतिल बाल-गीत (बाल-गीत)
संक. एवं. संपा. मधुकर वाकोडे
पृ. 60, मू. 50 रु.
ISBN : 81-260-1921-2

तुलशीचा रोप (गुजराती गौरव-ग्रंथ)
ले. ज़ावेरचंद मेघानी
अनु. अंजनी नरवाने
पृ. viii + 248, मू. 120 रु.
ISBN : 81-260-1928-X

तुकाराम गाथा (तुकाराम के चुनिन्दा अभंग)
संक. एवं संपा. भालचंद्र नेमाडे
पृ. 206 + xiv + iv, मू. 110 रु.
ISBN : 81-260-1925-5

खोटे सत्य (हिन्दी उपन्यास *झूठा सच*)
ले. यशपाल
अनु. सूर्यनारायण रणसुभे
पृ. 464, मू. 190 रु.
ISBN : 81-260-1923-9

महात्मा ज्योतिराव फुले
(मराठी लेखक और समाज सुधारक पर विनिबंध)
ले. बी. एल. भोले
पृ. 112, मू. 25 रु.
ISBN : 81-7201-728-6

शाह लतीफ़ (विनिबंध)
ले. के. बी. आडवाणी
अनु. लक्ष्मण हरदवाणी
पृ. 68, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1960-3

प्रेमचंद यांच्या निवादक गोष्ठी (भाग-I)
ले. अमृत राय
अनु. बाबा भांड
पृ. 100, मू. 60 रु.
ISBN : 81-260-1961-1

नामदेव (विनिबंध)
ले. एम. जी. देशमुख
पृ. 64, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1965-4 (पुनर्मुद्रण)

बा. भा. बोरकर (विनिबंध)
ले. प्रभा गाँवकर
पृ. 120, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1964-6 (पुनर्मुद्रण)

परजा (ओड़िया उपन्यास)
ले. गोपीनाथ मोहांती
अनु. सविता दामले
पृ. vi + 278, मू. 125 रु.
ISBN : 81-260-1958-1

मराठी दलित कविता (दलित काव्य संकलन)
संक. एवं संपा. बी. रंगाराव
पृ. 164, मू. 90 रु.
ISBN : 81-260-2020-2

अपना जे पाहतो (पुरस्कृत हिन्दी काव्य)
ले. मंगलेश डबराल
अनु. बलवंत जेउरकर
पृ. 72, मू. 60 रु.
ISBN : 81-260-2026-1

निबुर्द्धिचा राज्यकरभर (बाल-साहित्य)
ले. गोपाल दास
अनु. मृणालिनी कामत
पृ. 116, मू. 60 रु.
ISBN : 81-260-2022-9

नेपाली

भारतेली कथाहरू
(विभिन्न लेखकों की कहानियों का संकलन)
संक. खडक राज गिरि
पृ. 80, मू. 50 रु.
ISBN : 81-260-1948-4

ओड़िया

होमेरांका ओडिसी (ग्रीक गौरव-ग्रंथ का अनुवाद)
ले. होमर
अनु. गुरुचरण बेहरा
पृ. 304, मू. 125 रु.
ISBN : 81-260-1864-X

श्रृंखल (पुरस्कृत असमिया कहानियाँ)
ले. भवेन्द्रनाथ सइकिया
अनु. ज्योत्स्ना बिस्वाल राउत
पृ. 184, मू. 90 रु.
ISBN : 81-260-1867-4

अर्थबल्लभ मोहांती (विनिबंध)
ले. बासुदेव साहु
पृ. 80, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1974-3

श्रेष्ठगल्प (श्रेष्ठ कहानियाँ)
ले. बिभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
अनु. गिरिबाला मोहांती
पृ. 220, मू. 100 रु.
ISBN : 81-260-1975-1

एकोशटि गल्प
ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर
अनु. कालिन्दी चरण पाणिग्रही
पृ. 416, मू. 100 रु.
ISBN : 81-260-1980-8 (पुनर्मुद्रण)

अकालरे सारस (पुरस्कृत हिन्दी कविता-संग्रह)
ले. केदारनाथ सिंह
अनु. प्रवासिनी महाकुद तिवारी
पृ. 112, मू. 80 रु.
ISBN : 81-260-1976-X

आमार गाच्छा अबेनी डेहरारे बाहुच्छी
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. रस्किन बॉण्ड
अनु. मृणाल चटर्जी
पृ. 128, मू. 80 रु.
ISBN : 81-260-1977-8

ब्रह्मानंद पांडा (विनिबंध)
ले. वैष्णव चरण सामल
पृ. 108, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-2014-8

अष्टराग (असमिया उपन्यास)
ले. होमेन बोरगोहेन
अनु. मोनालिसा जेना
पृ. 104, मू. 80 रु.
ISBN : 81-260-2000-6

धूम्राभा उपत्यका (पुरस्कृत गुजराती उपन्यास)
ले. वीनेश अंताणी
अनु. प्रशांत कुमार मोहांती
पृ. 108, मू. 120 रु.
ISBN : 81-260-2000-8

जाइपारे किन्तु काहिनी जिबि
(पुरस्कृत बाङ्ला काव्य-संग्रह)
ले. शक्ति चट्टोपाध्याय
अनु. इंदुभूषण कर
पृ. 64, मू. 50 रु.
ISBN : 81-260-2115-2

पंजाबी

पंजाबी लोकगीत
संपा. एम. एस. रंधावा एवं देवेन्द्र सत्यार्थी
मू. 110 रु.
ISBN : 81-7201-405-8

परछाँवें
ले. मोहम्मद ज़मान आज़ुर्दा
अनु. हरभजन सिंह सागर
पृ. 100, मू. 40 रु.
ISBN : 81-260-1630-2

साहित विच दलित चेतना
संपा. सुतिन्दर सिंह नूर
पृ. 120, मू. 50 रु.
ISBN : 81-260-1848-8

अय्यप्प पणिक्कर दियाँ कवितावाँ
अनु. मंजीत पाल कौर
पृ. 248, मू. 100 रु.
ISBN : 81-260-1623-X

ग्रिम बंधुओं दियाँ कहानियाँ (भाग-I)
अनु. चंदर नेगी
पृ. 232, मू. 150 रु.
ISBN : 81-260-1844-5

ग्रिम बंधुओं दियाँ कहानियाँ (भाग-II)
अनु. चंदर नेगी
पृ. 224, मू. 150 रु.
ISBN : 81-260-1844-5

बस्तिवाद उत्तर-बस्तिवाद अते पंजाबी साहित
संपा. जसपाल कौर
मू. 85 रु.
ISBN : 81-260-1984-0

मोहन राकेश (विनिबंध)
ले. प्रतिभा अग्रवाल
अनु. कुलवंत कौर
मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1985-0

राजस्थानी

सिद्ध अलुनाथ कविया
(राजस्थानी रचनाओं का संकलन)
संक. फ़तेह सिंह मानव
पृ. 267, मू. 100 रु.
ISBN : 81-260-1015-0 (पुनर्मुद्रण)

अय्यप्प पणिक्कर री कवितावां
(पुरस्कृत कविताएँ)
ले. के. अय्यप्प पणिक्कर
अनु. भगवती लाल व्यास
पृ. 247, मू. 200 रु.
ISBN : 81-260-1824-0

सात फेरा आभै मे (पुरस्कृत गुजराती उपन्यास)
ले. कुंदनिका कपाड़िया
अनु. रामनरेश सोनी
पृ. 328, मू. 250 रु.
ISBN : 81-260-1825-9

महानायक (मराठी गौरव-ग्रंथ)
ले. विश्वास पाटिल
अनु. सत्यनारायण स्वामी
पृ. 930, मू. 500 रु.
ISBN : 81-260-1951-4

वन रा वारिस
ले. महाश्वेता देवी
अनु. अर्जुन सिंह शेखावत
पृ. 250, मू. 200 रु.
ISBN : 81-260-1952-2

सिन्धी

अग्निसाक्षी (पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास)
ले. एन. ललितांबिका अंतर्जनम
अनु. विष्णु बेलाणी
पृ. 148, मू. 50 रु.
ISBN : 81-260-1771-6 (पुनर्मुद्रण)

साहितिक पुष्प
(दीवान कवरु मान की चुनिन्दा रचनाएँ)
संक. एल. एच. अजवाणी, मू. 40 रु.
ISBN : 81-260-1926-3

कबीर वचनावली
संक. एवं. अनु. कमला गोकलाणी
पृ. 164, मू. 50 रु.
ISBN : 81-260-1927-1

सिन्धी एकांकी (1981-2000)
(सिन्धी एकांकी नाटकों का संकलन)
संक. एवं. संपा. लक्ष्मण भमबाणी
पृ. 332, मू. 90 रु.
ISBN : 81-260-1963-8

चूंदा मराठी कहानियूँ
(समकालीन मराठी कहानियों का संकलन)
अनु. लक्ष्मण हर्दवाणी एवं प्रताप पुर्सवाणी
पृ. xx + 188, मू. 60 रु.
ISBN : 81-260-2032-6

तमिष़

नमक्कल कविग्नरिन तेरुनतेदुता कवितैगल
संक. जी. राजावेलु
पृ. 328, मू. 110 रु.
ISBN : 81-260-1729-5

नवीना तमिल कथैकल
(आधुनिक तमिष़ कहानियों 1960-95 का संकलन)
संक. सा. कंदासामी
पृ. 358, मू. 120 रु. (पुनर्मुद्रण)

तमस
ले. भीष्म साहनी
अनु. वेंकट स्वामीनाथन
पृ. x + 338, मू. 180 रु.
ISBN : 81-260-1656-6

सेघुथम्पी पावलर (विनिबंध)
ले. अब्दुल रहमान
पृ. 134, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1248-X

तमिष़ भक्ति इलाक्कियम
(तमिष़ भक्ति साहित्य का संकलन)
संक. ए. ए. मानवलन
पृ. 302, मू. 165 रु.
ISBN : 81-260-1544-6

गोट्या (बाल-साहित्य)
ले. सुरेखा पाणंदीकर
अनु. एन. सुब्रह्मण्यम
पृ. 96, मू. 50 रु.
ISBN : 81-260-1653-1

अयालगा तमिल इलाक्कियम
(विदेश में लिखे गए तमिष़ साहित्य का संकलन)
संक. सा. कंदासामी
पृ. 328, मू. 150 रु.
ISBN : 81-260-1717-1

के.सी.एस. अरुणाचलम (विनिबंध)
ले. मा. नराराजन
पृ. 128, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1723-6

मयलइ सीनि वेंकटासामी (विनिबंध)
ले. वी. अरासु
पृ. 128, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1720-1

रवीन्द्रनाथ टैगोर
ले. शिशिर कुमार घोष
अनु. ए. ए. मानवलन
पृ. 168, मू. 65 रु.
ISBN : 81-260-0892-X

मोजनी (विनिबंध)
ले. के. आर. सच्चिदानंदन
मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1711-2

कृष्णदेवरायर (विनिबंध)
ले. आडपा रामकृष्ण राव
अनु. अकिला शिवरामन
पृ. 96, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1715-5

देवुलापल्ली कृष्ण शास्त्री (विनिबंध)
ले. वेंकटेशवरालु
अनु. दक्षिणामूर्ति अइयाह
मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1782-1

कवियोगी सुथ्थानंद भरतियार (विनिबंध)
ले. पी. सुभाष चंद्र बोस
पृ. 126, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1783-X

अमइप्पुमइयावादम, पिनामइप्पियल मट्टरूम कीज़हइ *कविया इयल*
(पुरस्कृत उर्दू पुस्तक *साख़्तियात, पस साख़्तियात और मशरिक़ी शेरियात*)
ले. गोपीचंद नारंग
अनु. एच. बालसुब्रह्मण्यम
पृ. xxviii + 584, मू. 275 रु.
ISBN : 81-260-1909-3

पाम्बुम कयिरुम
(पुरस्कृत उपन्यास *द सर्पेन्ट एंड द रोप*)
ले. राजा राव
अनु. टी.सी. रामास्वामी
पृ. vi + 684, मू. 250 रु.
ISBN : 81-260-17-X

तेलुगु

रविनिरामकविति (रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कहानियाँ)
अनु. एम. सूरी
पृ. 412, मू. 180 रु.
ISBN : 81-260-1684-1 (पुनर्मुद्रण)

वेयिनोक्का रतरुलु
(अरबी गौरव-ग्रंथ *वान थाऊज़ैंड एंड वन*)
अनु. घांदीकोटा बेहमाजी राव
पृ. 560, मू. 225 रु.
ISBN : 81-260-1683-3 (पुनर्मुद्रण)

वक्र रेखा
ले. इस्मत चुग़ताई
अनु. एम. राम रेड्डी
पृ. 248, मू. 110 रु.
ISBN : 81-260-1152-1

मलयाला जनपदा गेयालु
(मलयाळम् लोक साहित्य)
संक. एल. आर. स्वामी
पृ. 276, मू. 125 रु.
ISBN : 81-260-1150-5

नानगगरी सेनहितुडु
(तमिष़ कहानी-संग्रह *अप्पाविन स्नेहिदर*)
ले. अशोकमित्रन्
अनु. जी. चिरंजीवि
पृ. 168, मू. 100 रु.
ISBN : 81-260-1736-8

बाबा फरीद (विनिबंध)
ले. बलवंत सिंह आनंद
अनु. एम. राम रेड्डी
पृ. 64, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1739-5

अश्वघोष (विनिबंध)
ले. रोमा चौधुरी
अनु. के. आर. के. मोहन
पृ. 64, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1732-5

उर्दू

कलि पस गुप्ता रिज़ा (विनिबंध)
ले. शमीम तारिक़
पृ. 112, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1849-6

सआदत हसन मंटो (विनिबंध)
ले. वारिस अल्वी
पृ. 100, मू. 25 रु.
ISBN : 81-7201-786-3

अख़्तर उरैनवी (विनिबंध)
ले. एस. एम. हसनैन
पृ. 96, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1621-3

सहर इशासाबादी (विनिबंध)
ले. वीरेन्द्र प्रसाद सक्सेना
पृ. 100, मू. 25 रु.
ISBN : 81-260-1628-0

कलि कथा : वाया बाईपास
ले. अलका सरावगी
अनु. ख़ुर्शीद आलम
पृ. 299, मू. 150 रु.
ISBN : 81-260-1842-9

झड़ा झड़ती (पुरस्कृत मराठी उपन्यास)
ले. विश्वास पाटिल
अनु. साजिद रशीद
पृ. 660, मू. 250 रु.
ISBN : 81-260-1851-8

धुआँ (कहानी-संग्रह)
ले. गुलज़ार
पृ. 186, मू. 125 रु.
ISBN : 81-260-1936-0

दून का सब्ज़ा
ले. रस्किन बॉण्ड
अनु. ज़िआ-उल-रहमान सिद्दिक़ी
पृ. 227, मू. 125 रु.
ISBN : 81-260-1941-7

ख़ुशबुओं की वादी से
(उर्दू शायरी)
ले. हिनांक बर्जिस
पृ. 71, मू. 50 रु.
ISBN : 81-260-1938-7

पनाहगाह (उर्दू शायरी)
ले. मिराज राणा
पृ. 96, मू. 40 रु.
ISBN : 81-260-1629-9

वार्षिक लेखा

2004 - 2005

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र विवरण यथातिथि 31 मार्च 2005

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुसूचियाँ	चालू वर्ष	गत वर्ष
संग्रह निधि और दायित्व			
संग्रह निधि	1	10,000,000	10,000,000
आरक्षित और अधिशेष	2	21,200,266	15,473,710
नियत/अक्षय निधि	3	148,581,725	147,593,662
सुरक्षित ऋण और उधार	4	—	—
असुरक्षित ऋण और उधार	5	—	—
स्थगित जमा दायित्व	6	—	—
चालू दायित्व और उपबंध	7	3,753,051	3,484,653
योग		183,535,042	176,552,025
परिसंपत्तियाँ			
स्थायी परिसंपत्तियाँ	8	58,644,295	63,344,265
नियत/अक्षय निधियों से निवेश	9	21,780,835	23,438,500
अन्य निवेश	10	—	—
चालू परिसंपत्ति, ऋण, अग्रिम आदि	11	103,109,912	89,769,260
विविध व्यय (एक सीमा तक अवलेखित या समायोजित)		—	—
योग		183,535,042	176,552,025
महत्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	24		
प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ	25		

लेखा पर आधारित पुस्तकों तथा वाउचरों के आधार पर संकलित
कृते रजनीश एंड एसोसिएट्स
सनदी लेखाकार

	ह/-	ह/-	ह/-
स्थान : नई दिल्ली दिनांक : 14.05.2005 (भागीदार)	राकेश कुमार वर्मा (प्रवर लेखापाल)	ललित कुमार जैन (उपसचिव)	के. सच्चिदानंदन (सचिव)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

आय और व्यय लेखा : 31 मार्च 2005 को समाप्त वर्ष के लिए

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुसूचियाँ	चालू वर्ष	गत वर्ष
आय			
बिक्री/सेवाओं से प्राप्त आय	12	–	–
अनुदान/इमदाद राशि प्राप्त	13	96,636,266	67,782,111
शुल्क/अंशदान प्राप्त	14	–	–
निवेश से प्राप्त आय	15	–	–
रॉयल्टी, प्रकाशन इत्यादि से प्राप्त आय	16	9,124,742	10,922,324
प्राप्त ब्याज	17	1,724,008	2,955,409
अन्य आय	18	321,509	450,347
पूर्ण हुए कार्यों तथा किए जा रहे कार्यों के स्टॉक में (उतार)/चढ़ाव	19	–	–
योग (ए)		107,806,525	82,110,191
व्यय			
स्थापना व्यय	20	35,804,714	26,459,471
अन्य प्रशासनिक व्यय इत्यादि	21	65,953,652	55,325,565
अनुदान, इमदादें आदि पर व्यय	22	321,603	403,632
ब्याज	23	–	–
योग (बी)		102,079,969	82,188,668
आय पर व्यय का आधिक्य (ए-बी)		5,726,556	(78,477)
विशेष आरक्षित में स्थानांतरित (प्रत्येक का अलग-अलग विवरण दें।)		–	–
सामान्य आरक्षित से स्थानांतरित		–	–
कुल योग अधिशेष के कारण/(घाटा)			
संग्रह/पूँजी निधि में अग्रेनीत		5,726,556	(78,477)
महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	24		
प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ	25		

लेखा पर आधारित पुस्तकों तथा वाउचरों के आधार पर संकलित
कृते रंजनीश एंड एसोसिएट्स
सनदी लेखाकार

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 14.05.2005

(भागीदार)

ह/-
राकेश कुमार वर्मा
(प्रवर लेखापाल)

ह/-
ललित कुमार जैन
(उपसचिव)

ह/-
के. सच्चिदानंदन
(सचिव)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2005

(राशि रुपये में)

	चालू वर्ष	गत वर्ष
अनुसूची-1—संग्रह निधि :		
वर्ष के आरंभ में शेष	10,000,000	11,193,846
जमा : संग्रह निधि में योगदान	—	—
जमा/(घाटा) : आय और व्यय लेखा में से स्थानांतरित	—	—
कुल आय/(व्यय) राशि का शेष		
जमा : संग्रह निवेश पर प्राप्त कुल व्याज	—	—
घटा : योजनागत संग्रह में स्थानांतरित	—	(1,193,846)
वर्ष के अंत में शेष	10,000,000	10,000,000

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2005

(राशि रुपये में)

	चालू वर्ष	गत वर्ष
अनुसूची - 2—आरक्षित और अधिशेष :		
1. आरक्षित पूँजी :		
पिछले लेखा के अनुसार		
वर्ष के दौरान जमा (राशि)		
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ	–	–
2. आरक्षित पुनर्मूल्यन :		
पिछले लेखा के अनुसार		
वर्ष के दौरान जमा (राशि)		
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ	–	–
3. विशेष आरक्षित :		
पिछले लेखा के अनुसार		
वर्ष के दौरान जमा (राशि)		
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ	–	–
4. सामान्य आरक्षित :		
पिछले लेखा के अनुसार	15,473,710	15,552,187
वर्ष के दौरान जमा (राशि)	5,726,556	–
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ	–	(78,477)
योग	21,200,266	15,473,710
कुल योग	21,200,266	15,473,710

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2005

(राशि रुपये में)

अनुसूची-3–नियत/अक्षय निधि	चालू वर्ष				गत वर्ष					
	स्थायी परिसंपत्ति निधि	प्रकाशन निधि	सा.भ.नि.	योग	स्थायी परिसंपत्ति निधि	प्रकाशन निधि	योजनागत निधि	गैर योजनागत निधि	सा.भ.नि.	योग
(ए) निधियों का आदि शेष	63,344,265	49,959,454	31,483,603	144,787,322	55,761,247	49,933,602	492,208	12,667	29,259,334	155,459,059
(बी) निधियों में बढ़ोतरी :										
(i) दान/अनुदान/अभिदान	4,323,897	–	4,905,350	9,227,497	16,727,565	–	55,755,000	50,892,961	4,793,907	108,167,456
(ii) छात्रों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय	–	–	2,198,258	2,198,258	–	–	–	–	2,057,458	2,057,458
– निवेश पर ब्याज	–	–	–	–	–	–	872,927	715,298	–	1,586,723
(iii) अन्य बढ़ोतरियां										
– प्रकाशनों की बिक्री	–	–	–	–	–	–	11,621,290	–	–	11,621,290
– रॉयल्टी	–	–	–	–	–	–	40,160	–	–	40,160
– अग्रिम राशियों की ब्याज सहित वसूली	–	–	–	–	–	–	641,831	1,028,558	–	1,620,239
– पेंशन और सीपीएफ के लिए दिया गया कर्मचारियों का योगदान	–	–	–	–	–	–	–	66,636	–	66,636
– बयाना और प्रतिभूति जमा	–	–	–	–	–	–	–	277,014	–	277,014
– संयुक्त सेवाओं से प्राप्तियां	–	–	–	–	–	–	–	504,958	–	504,958
– विविध प्राप्तियां	–	–	–	–	–	–	–	585,805	–	585,805
– पुस्तकालय की पुस्तकों पर रियायत	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
– प्रकाशनों/वीडियो फिल्मों/कागज	–	6,366,427	–	6,366,427	–	25,852	–	–	–	25,852
– संग्रह निधि से ब्याज का स्थानांतरण	–	–	–	–	–	–	1,193,846	–	–	1,193,846
(iv) अतिरिक्त अर्जन	–	–	–	–	–	–	–	–	165,177	165,177
योग (बी)	4,323,897	6,366,427	7,101,848	17,792,172	16,727,565	25,852	70,125,074	33,667,103	6,996,522	127,540,116
योग (ए + बी)	67,668,162	56,325,881	38,585,451	162,579,494	72,488,812	49,959,454	70,615,283	33,679,770	36,255,856	282,999,175
(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए										
(i) पूंजी व्यय										
– स्थायी परिसंपत्ति	–	–	–	–	–	–	11,600,000	73,741	–	11,673,741
– अन्य										
– स्टाफ को अग्रिम	–	–	–	–	–	–	–	990,850	–	990,850
– प्रतिभूति की वापसी	–	–	–	–	–	–	–	26,750	–	26,750
– पुस्तकालय और सूचना सेवा में सुधार	–	–	–	–	–	–	6,114,755	–	–	6,114,755
– निधि से पूंजी की कटौती/वापसी	–	–	2,497,891	2,497,891	–	–	–	–	3,647,859	3,647,859
– पूर्व और अंतिम समायोजना	–	–	2,476,011	2,476,011	–	–	–	–	959,217	959,217
– वर्ष के दौरान कटौतियां/समायोजन	34,100	–	–	34,100	–	–	–	155,182	–	155,182
– वर्ष के दौरान मूल्यह्रास	8,989,767	–	–	8,989,767	9,144,547	–	–	–	–	9,144,547
योग	9,023,867	–	4,973,902	13,997,769	9,144,547	–	17,714,755	1,246,525	4,607,076	32,712,899
(ii) राजस्व खर्च										
– वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि	–	–	–	–	–	–	–	19,133,201	–	19,133,201
– किराए की दरें और कर	–	–	–	–	–	–	–	6,909,772	–	6,909,772
योजनाओं के अंतर्गत व्यय										
– प्रशासनिक कार्यों में सुधार	–	–	–	–	–	–	6,956,392	3,964,883	–	10,921,275
– प्रचार और प्रदर्शनियां	–	–	–	–	–	–	3,889,606	–	–	3,889,606
– लेखकों की सेवाएं	–	–	–	–	–	–	9,487,832	–	–	9,487,832
– प्रकाशन योजनाएं	–	–	–	–	–	–	13,020,551	–	–	13,020,551
– अनुवाद और भाषाओं का विकास	–	–	–	–	–	–	3,439,780	–	–	3,439,780
– साहित्यिक समारोह और कार्यक्रम	–	–	–	–	–	–	6,154,686	–	–	6,154,686
– संयुक्त सेवाओं का भुगतान	–	–	–	–	–	–	–	784,669	–	784,669
– स्वर्ण जयंती समारोह	–	–	–	–	–	–	3,005,561	–	–	3,005,561
– अन्य योजनाओं पर खर्च	–	–	–	–	–	–	3,945,660	–	–	3,945,660
योग	–	–	–	–	–	–	51,898,088	30,794,525	–	82,692,615
योग (सी)	9,023,867	–	4,973,902	13,997,769	9,144,547	–	69,612,843	32,041,048	4,607,076	115,405,512
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए + बी - सी)	58,644,295	56,325,881	33,611,549	148,581,725	63,344,265	49,959,454	1,002,441	1,638,722	31,648,760	147,593,662

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2005

	चालू वर्ष योग	गत वर्ष योग
अनुसूची - 4—सुरक्षित ऋण और उधार		
(1) केन्द्र सरकार	—	—
(2) राज्य सरकार (उल्लेख करें)	—	—
(3) वित्तीय संस्थाएँ		
(क) आवधिक ऋण	—	—
(ख) ब्याज प्रोद्भूत और देय	—	—
(4) बैंक		
(क) आवधिक ऋण	—	—
— ब्याज प्रोद्भूत और देय	—	—
(ख) अन्य ऋण (उल्लेख करें)	—	—
— ब्याज प्रोद्भूत और देय	—	—
— केनरा बैंक से ओवरड्राफ्ट की सुविधा	—	—
(5) अन्य संस्थाएँ और अभिकरण	—	
(6) डिबेंचर और बॉण्ड्स	—	—
(7) अन्य (उल्लेख करें)	—	—
योग	—	—

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2005

	चालू वर्ष योग	गत वर्ष योग
अनुसूची - 5—असुरक्षित ऋण और उधार		
(1) केन्द्र सरकार	—	—
(2) राज्य सरकार (उल्लेख करें)	—	—
(3) वित्तीय संस्थाएँ		
(4) बैंक		
(क) आवधिक ऋण	—	—
(ख) अन्य ऋण (उल्लेख करें)	—	—
(5) अन्य संस्थाएँ और अभिकरण	—	—
(6) डिबेंचर और बॉण्ड्स	—	—
(7) आवधिक जमा	—	—
(8) अन्य (उल्लेख करें)	—	—
योग	—	—
अनुसूची - 6—आस्थगित जमा दायित्व		
(क) पूँजीगत उपस्करों तथा अन्य परिसंपत्तियों के वंधकीकरण द्वारा सुरक्षित स्वीकृतियाँ	—	—
(ख) अन्य	—	—
योग	—	—

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2005

	चालू वर्ष		गत वर्ष	
		योग		योग
अनुसूची - 7—चालू दायित्व और उपबंध				
(ए) चालू दायित्व				
(1) स्वीकृति				
प्रतिभूति जमा (द्वारा)				
— पुस्तकालय के सदस्य	1,903,938	—	1,661,338	
— अन्य	17,500	1,921,438	18,000	1,679,338
(2) विविध लेनदार				
(क) सामान के लिए	37,344	—	988,462	—
(ख) रॉयल्टी	47,707	—	192,555	—
(ग) अन्य	1,194,245	1,279,296	—	1,181,017
(3) प्राप्त अग्रिम		125,235	—	55,530
(4) प्रोद्भूत ब्याज पर देय नहीं :				
(ए) सुरक्षित ऋण/उधार	—	—	—	—
(बी) असुरक्षित ऋण/उधार	—	—	—	—
(5) क़ानूनी दायित्व :				
(ए) अतिशोध्य	—	—	—	—
(बी) देय यात्रा भत्ता	—	—	10,399	10,399
(6) अन्य चालू दायित्व :				
देय वेतन	—	—	—	115,169
लेखा परीक्षा शुल्क	—	27,082	—	43,200
सा.भ.नि. खाता	—	—	—	—
(बी) प्रावधान				
(1) कर लगाने के लिए	—	—		—
(2) प्रोद्भूत रॉयल्टी के लिए	300,000	—	300,000	—
(3) अधिवर्षिता/पेंशन	—	—	—	—
(4) संचित अवकाश भुनाना	—	—	—	—
(5) व्यापार वारंटी/दावे	—	—	—	—
(6) अन्य—देय लेखा परीक्षा शुल्क	100,000	400,000	100,000	400,000
योग (बी)		400,000		400,000
योग (ए + बी)		3,753,051		3,484,653

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2005

(राशि रुपये में)

विवरण	दर	कुल ब्लॉक				मूल्यहास			कुल ब्लॉक	
		वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के अंत तक में कुल योग	चालू वर्ष के अंत तक कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
अनुसूची-8-स्थायी परिसंपत्ति										
1. भूमि :										
(क) पूर्ण स्वामित्व वाली		–	–	–	–	–	–	–	–	–
(ख) पट्टे पर		2,552,933	–	–	2,552,933	–	–	–	2,552,933	2,552,933
2. भवन :										
(क) पट्टे वाली भूमि पर		–	–	–	–	–	–	–	–	–
(ख) पट्टे वाली भूमि पर		–	–	–	–	–	–	–	–	–
(ग) फ़्लैट/परिसर का स्वामित्व		–	–	–	–	–	–	–	–	–
(घ) भूमि पर अधिरचना		–	–	–	–	–	–	–	–	–
3. संयंत्र और तंत्र		–	–	–	–	–	–	–	–	–
4. वाहन	20%	768,004	–	–	768,004	153,601	122,881	276,481	491,523	614,403
5. फर्नीचर और जुड़नार	15%	15,667,265	684,232	–	16,351,497	2,077,170	2,108,036	4,185,206	12,166,291	13,590,095
6. कार्यालय उपकरण	25%	15,243,731	649,609	–	15,893,340	3,681,980	2,982,803	6,664,783	9,228,557	11,561,751
7. कंप्यूटर/परिधीय	60%	657,866	891,688	–	1,549,554	97,391	707,024	804,415	745,139	560,475
8. विद्युतीय प्रस्थापन	25%	–	181,224	–	181,224	–	22,653	22,653	158,571	–
9. पुस्तकालय में पुस्तकें	10%	21,156,960	1,512,192	34,100	22,635,053	1,950,543	2,030,586	3,981,129	18,653,924	19,206,417
10. वातानुकूलन	25%	4,842,053	404,952	–	5,247,005	1,183,862	1,015,786	2,199,647	3,047,358	3,658,191
11. कार्य संलग्न पूँजी		11,600,000	–	–	11,600,000	–	–	–	11,600,000	11,600,000
चालू वर्ष का कुल योग		72,488,812	4,323,897	34,100	76,778,610	9,144,547	8,989,767	18,134,315	58,644,295	63,344,265
गत वर्ष		55,761,247	16,727,565	–	72,488,812	–	9,144,547	9,144,547	63,344,265	55,761,247
कार्य संलग्न पूँजी		–	–	–	–	–	–	–	–	–

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2005

	चालू वर्ष योग	गत वर्ष योग
अनुसूची - 9—नियत/अक्षय निधियों से निवेश		
(1) सरकारी प्रतिभूतियों में	—	—
(2) अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियाँ	—	—
(3) शेयर	—	—
(4) डिबेंचर और बॉण्ड्स	—	—
— आई.डी.बी.आई. सुविधा बॉण्ड्स	7,500,000	7,500,000
(5) समनुषंगी और संयुक्त उद्यम	—	—
(6) अन्य	—	—
— टीडीआर स्टेट बैंक	—	2,072,092
— केडीआर केनरा बैंक	8,280,835	7,866,408
— एफ़डीआर, आई.डी.वी.आई.	6,000,000	6,000,000
कुल योग	21,780,835	23,438,500

अनुसूची - 10—निवेश—अन्य		
(1) सरकारी प्रतिभूतियों में	—	—
(2) अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियाँ	—	—
(3) शेयर	—	—
(4) डिबेंचर और बॉण्ड्स	—	—
(5) समनुषंगी और संयुक्त उद्यम	—	—
(6) अन्य		
— केनरा बैंक के साथ एफ़डीआर	—	—
योग	—	—

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2005

(राशि रुपये में)

	चालू वर्ष		गत वर्ष	
		योग		योग
अनुसूची-11—चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण, अग्रिम आदि				
(ए) चालू परिसंपत्तियाँ :				
(1) वस्तुसूची				
प्रकाशन एवं काग़ज़ का स्टॉक				
पुस्तकें : अकादेमी के प्रकाशन	51,562,026		45,596,933	
वीडियो फ़िल्म	89,337		100,000	
काग़ज़ : अपने पास	1,347,037		1,461,135	
मुद्रणालयों में	3,327,481	56,325,881	2,801,386	49,959,454
(2) विविध देनदार				
(क) बारह माह की अवधि से अधिक बकाया ऋण	2,814,202		2,813,178	
(ख) अन्य	2,996,354	5,810,555	3,758,614	6,571,792
(3) हाथ में शेष धन या बकाया राशि (जिसमें चेक/ड्राफ़्ट, रसीदी टिकट और अग्रदाय शामिल है।)		357,838		121,930
(4) बैंक में शेष धन :				
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ :				
— चालू ख़ातों पर	—		—	
— जमा ख़ातों पर	10,000,000		10,000,000	
— बचत ख़ातों पर	4,606,223		2,519,234	
— सा.भ.नि. के बचत ख़ातों पर	4,266,369	18,872,592	1,167,839	13,687,073
(ख) ग़ैर-अनुसूचित बैंकों के साथ :				
— चालू ख़ातों पर	—		—	
— जमा ख़ातों पर	—		—	
— बचत ख़ातों पर	—		—	
(5) डाक-घर के बचत ख़ाते	—		—	
योग (ए)		81,366,866		70,340,249

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2005

(राशि रुपये में)

	चालू वर्ष		गत वर्ष	
		योग		योग
अनुसूची-11—चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण, अग्रिम आदि (जारी)				
(बी) ऋण, अग्रिम तथा अन्य परिसंपत्तियाँ :				
(1) ऋण				
(क) स्टॉफ़	7,183,002		7,178,334	
(ख) अन्य व्यक्ति/संस्था, जो समान गतिविधियों/कार्यों में संलग्न हैं।	—	—	—	—
(ग) अन्य—सा.भ.नि. अग्रिम	4,014,421	11,197,423	4,128,602	11,306,936
(2) अग्रिम और अन्य राशियाँ जिन्हें नक़दी अथवा सदृश अथवा उसके समतुल्य मूल्य के लिए वसूला जाना है।				
(क) पूँजी ख़ातों पर				
(ख) पूर्व भुगतान	483,165		491,360	
(ग) अन्य				
समायोज्य अग्रिम	—		1,252,077	
प्रतिभूति जमा	865,881		885,243	
पूर्व भुगतान ख़र्चे	32,854		47,087	
संयुक्त सेवाएँ वसूली योग्य	2,042,393		1,949,768	
अन्य वसूली योग्य	3,571,406	6,995,699	658,199	5,283,734
(3) प्रोद्भूत आय				
(क) नियत/अक्षय निधियों से निवेश पर	3,422,130		2,779,784	
(ख) निवेशों पर—अन्य	—		—	
(ग) ऋणों तथा अग्रिमों पर	—		—	
(घ) अन्य	—	3,422,130	—	2,779,784
(4) प्राप्त करने योग्य दावे				
(क) वसूली योग्य सा.भ.नि.	127,794		58,558	
(ख) ग़ैर योजनागत ख़ाता	—	127,794	—	58,558
योग (बी)	21,743,046	21,743,046		19,429,012
योग (ए + बी)		103,109,912		89,769,261

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

31 मार्च 2005 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

	चालू वर्ष योग	गत वर्ष योग
अनुसूची-12—बिक्री/सेवाओं से प्राप्त आय		
(1) बिक्री से प्राप्त आय		
(क) भंडारों द्वारा की गई बिक्री	–	–
(2) सेवाओं से प्राप्त आय		
(क) श्रम और प्रक्रमण शुल्क		–
(ख) व्यावसायिक/परामर्श सेवाएँ	–	–
(ग) एजेंसी कमीशन और दलाली	–	–
(घ) अनुरक्षण सेवाएँ (उपकरण/संपत्ति)	–	–
योग	–	–

	चालू वर्ष गैर योजनागत	गत वर्ष गैर योजनागत
अनुसूची - 13—अनुदान/इमदाद		
(अटल अनुदान और प्राप्त इमदाद)		
(1) केन्द्र सरकार		
(क) पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय, संस्कृति विभाग से प्राप्त अनुदान		
योजनागत	64,639,000	55,753,000
गैर योजनागत	33,500,000	30,892,964
(2) राज्य सरकार	–	–
(3) सरकारी अभिकरण	80,000	–
(4) संस्थाएँ/कल्याणकारी निकाय	–	–
(5) अंतर्राष्ट्रीय संगठन	–	–
(6) अन्य	100,000	–
जमा : वर्ष के प्रारंभ में अव्ययित शेष	2,641,163	504,875
घटा : वर्ष के अंत में अव्ययित शेष	–	2,641,163
घटा : वर्ष के दौरान पूँजीगत अनुदान	4,323,897	16,727,565
योग	96,636,266	67,782,111

अनुसूची - 14

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

31 मार्च 2005 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

	चालू वर्ष योग	गत वर्ष योग
अनुसूची - 14—शुल्क/अंशदान		
(1) प्रवेश शुल्क	–	–
(2) वार्षिक शुल्क/अंशदान	–	–
(3) संगोष्ठी/कार्यक्रम शुल्क	–	–
(4) परामर्श शुल्क	–	–
(5) अन्य	–	–
योग	–	–

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

31 मार्च 2005 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

	अक्षय निधियों से निवेश		अन्य निवेश	
	चालू वर्ष	गत वर्ष	चालू वर्ष	गत वर्ष
अनुसूची - 15—निवेश से प्राप्त आय				
(1) ब्याज				
(क) सरकारी प्रतिभूतियों पर	–	–	–	–
(ख) अन्य बॉण्ड/डिबेंचर	–	–	–	–
(2) लाभांश		–		–
(क) शेयरों पर	–	–	–	–
(ख) म्युचुवल फंड प्रतिभूतियों पर	–	–	–	–
(3) किराए	–	–	–	–
(4) अन्य				
निवेशों से प्राप्त ब्याज	2,043,929	2,202,801	–	–
घटा : सा.भ.नि. पूँजी में स्थानांतरित	(2,043,929)	(2,202,801)	–	–
योग	–	–	–	–
नियत/अक्षय निधियों में स्थानांतरित	–	–	–	–

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

31 मार्च 2005 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

	चालू वर्ष योग	गत वर्ष योग
अनुसूची - 16—रॉयल्टी, प्रकाशन इत्यादि के प्राप्त आय		
(1) रॉयल्टी से प्राप्त आय	9,159	40,160
(2) प्रकाशन से प्राप्त आय	9,115,583	10,882,164
(3) अन्य	—	—
योग	9,124,742	10,922,324
अनुसूची - 17—प्राप्त ब्याज		
(1) सशर्त जमा		
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ	1,222,035	2,657,049
(ख) ग़ैर अनुसूचित बैंकों के साथ	—	—
(ग) संस्थाओं के साथ	—	—
(घ) अन्य	—	—
(2) बचत ख़ातों पर :		
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ	230,566	120,238
(ख) ग़ैर अनुसूचित बैंकों के साथ	—	—
(ग) डाक घर के बचत ख़ाते	—	—
(घ) अन्य	—	—
(3) ऋणों पर :		
(क) कर्मचारी/स्टाफ़	271,407	178,122
(ख) अन्य	—	—
(4) ऋणदाताओं पर ब्याज तथा अन्य प्राप्तियाँ	—	—
अन्य	—	—
योग	1,724,008	2,955,409

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

31 मार्च 2005 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

	चालू वर्ष योग	गत वर्ष योग
अनुसूची - 18—अन्य आय		
1. परिसंपत्तियों की बिक्री/निपटान से प्राप्त आय		
(क) निजी परिसंपत्तियाँ	–	–
(ख) परिसंपत्तियाँ जोकि अनुदान अथवा निःशुल्क प्राप्त हुईं।	–	–
ग़ैर उपोज्य सामग्री (स्थायी परिसम्पत्ति) की बिक्री		
पुस्तकालय की खोई हुई पुस्तकों के मूल्य की वसूली	12,917	–
2. निर्यात को प्रोत्साहन	–	–
3. विविध आय		
सामान्य	243,463	383,711
कर्मचारियों का पेंशन अंशदान	–	13,766
कर्मचारियों का सीजीएचएस अंशदान	65,130	52,870
योग	**321,509**	**450,347**
अनुसूची - 19—पूर्ण हुए कार्यों तथा किए जा रहे कार्यों के स्टॉक में (उतार)/चढ़ाव		
(ए) अंतशेष स्टॉक		
— तैयार सामान	–	–
— कार्य प्रगति पर	–	–
— अर्द्ध-स्थायी परिसंपत्तियाँ	–	–
(बी) घटा : आदिशेष स्टॉक		
— तैयार सामान	–	–
— कार्य प्रगति पर	–	–
— अर्द्ध-स्थायी परिसंपत्तियाँ	–	–
कुल (उतार)/चढ़ाव (ए-बी)	–	–

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

31 मार्च 2005 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

	चालू वर्ष योग	गत वर्ष योग
अनुसूची - 16—रॉयल्टी, प्रकाशन इत्यादि के प्राप्त आय		
(1) रॉयल्टी से प्राप्त आय	9,159	40,160
(2) प्रकाशन से प्राप्त आय	9,115,583	10,882,164
(3) अन्य	—	—
योग	9,124,742	10,922,324
अनुसूची - 17—प्राप्त ब्याज		
(1) सशर्त जमा		
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ	1,222,035	2,657,049
(ख) ग़ैर अनुसूचित बैंकों के साथ	—	—
(ग) संस्थाओं के साथ	—	—
(घ) अन्य	—	—
(2) बचत ख़ातों पर :		
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ	230,566	120,238
(ख) ग़ैर अनुसूचित बैंकों के साथ	—	—
(ग) डाक घर के बचत ख़ाते	—	—
(घ) अन्य	—	—
(3) ऋणों पर :		
(क) कर्मचारी/स्टाफ़	271,407	178,122
(ख) अन्य	—	—
(4) ऋणदाताओं पर ब्याज तथा अन्य प्राप्तियाँ	—	—
अन्य	—	—
योग	1,724,008	2,955,409

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

31 मार्च 2005 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

	चालू वर्ष योग	गत वर्ष योग
अनुसूची - 18—अन्य आय		
1. परिसंपत्तियों की बिक्री/निपटान से प्राप्त आय	—	—
(क) निजी परिसंपत्तियाँ		
(ख) परिसंपत्तियाँ जोकि अनुदान अथवा निःशुल्क प्राप्त हुईं।	—	—
ग़ैर उपोज्य सामग्री (स्थायी परिसम्पत्ति) की बिक्री		
पुस्तकालय की खोई हुई पुस्तकों के मूल्य की वसूली	12,917	—
2. निर्यात को प्रोत्साहन	—	—
3. विविध आय		
सामान्य	243,463	383,711
कर्मचारियों का पेंशन अंशदान	—	13,766
कर्मचारियों का सीजीएचएस अंशदान	65,130	52,870
योग	**321,509**	**450,347**
अनुसूची - 19—पूर्ण हुए कार्यों तथा किए जा रहे कार्यों के स्टॉक में (उतार)/चढ़ाव		
(ए) अंतशेष स्टॉक		
— तैयार सामान	—	—
— कार्य प्रगति पर	—	—
— अर्द्ध-स्थायी परिसंपत्तियाँ	—	—
(बी) घटा : आदिशेष स्टॉक		
— तैयार सामान	—	—
— कार्य प्रगति पर	—	—
— अर्द्ध-स्थायी परिसंपत्तियाँ	—	—
कुल (उतार)/चढ़ाव (ए-बी)	—	—

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

31 मार्च 2005 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

	चालू वर्ष योग	गत वर्ष योग
अनुसूची - 20—स्थापना व्यय		
(क) वेतन, मज़दूरी और भत्ते	27,471,732	21,604,888
(ख) अन्य निधियों में अंशदान (उल्लेख करें)	—	—
(ग) स्टाफ़ कल्याण के ख़र्चे	—	—
(घ) कर्मचारियों की सेवा-निवृत्ति पर हुए ख़र्चे तथा आवधिक लाभ	7,147,003	3,412,623
(ङ) अन्य		
अवकाश यात्रा सुविधा	268,225	251,893
स्टाफ़ यात्रा	346,306	313,517
चिकित्सा सुविधाएँ	571,448	876,550
योग	35,804,714	26,459,471

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

31 मार्च 2005 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

	चालू वर्ष योग	गत वर्ष योग
अनुसूची - 21—अन्य प्रशासनिक व्यय		
(क) किराया, परिकर एवं कर	7,353,830	6,468,903
(ख) मुद्रण एवं लेखन सामग्री	273,372	135,952
(ग) लेखा परीक्षा एवं लेखा शुल्क	95,841	263,775
(घ) दूरभाष एवं डाक-व्यय	1,947,524	1,797,439
(ङ) वाहन अनुरक्षण	218,894	244,924
(त) अन्य आकस्मिक व्यय	1,428,215	—
(थ) पूर्व अवधि व्यय	231,817	—
विभिन्न योजनागत परियोजनाओं के अंतर्गत व्यय		
(द) पुस्तकालय और सूचना सेवा में सुधार	3,948,805	2,653,014
(ध) अकादेमी के प्रकाशन	10,905,591	10,559,730
(न) प्रशासनिक कार्यप्रणाली का आधुनीकीकरण एवं सुधार	1,321,845	2,575,139
(प) साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम	4,903,430	6,085,076
(फ) साहित्य अकादेमी प्रकाशनों की बिक्री संवर्द्धन, विज्ञापन, प्रचार, पुस्तक प्रदर्शनियाँ आदि	2,522,508	3,271,583
(ब) लेखकों की सेवा एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान	8,651,929	9,187,606
(भ) अनुवाद योजनाएँ	3,623,452	4,292,466
(म) क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजना	127,810	1,150,273
(य) भाषाओं का विकास	744,173	466,608
(र) हिन्दी सप्ताह कार्यक्रम	130,489	33,453
(ल) इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन पोएटिक	9,397	183,116
(व) स्वर्ण जयंती समारोह	16,857,025	3,021,208
(श) नेशनल कल्चरल फ़ेलोशिप	—	1,611,500
(ष) अन्य	—	1,310,140
(स) दोषपूर्ण एवं संदिग्ध ऋण	657,705	13,660
योग	65,953,652	55,325,565

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

31 मार्च 2005 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

	चालू वर्ष योग	गत वर्ष योग
अनुसूची - 22—अनुदान, इमदाद आदि पर व्यय		
(क) संस्थाओं/संगठनों को दिए गए अनुदान	–	–
(ख) संस्थाओं/संगठनों को दी गई इमदाद		
—राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता	321,603	403,632
योग	321,603	403,632

	चालू वर्ष योग	गत वर्ष योग
अनुसूची - 23—ब्याज		
(क) स्थायी ऋण पर	–	–
(ख) अन्य ऋणों पर (बैंक शुल्क सम्मिलित)	–	–
(ग) अन्य (उल्लेख करें)	–	–
योग	–	–

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

प्राप्ति और भुगतान लेखा : यथातिथि 1-04-2004 से 31-03-2005 तक

प्राप्तियाँ	चालू वर्ष योग	गत वर्ष योग
I. आदि शेष		
(क) हाथ में रोकड़	121,930	38,436
(ख) बैंक में जमा		
(i) चालू खातों में	–	–
(ii) जमा खातों में	–	397,046
(iii) बचत खातों में	2,519,234	52,681
(ग) रसीदी टिकट हाथ में	–	16,712
II. प्राप्त अनुदान		
(क) भारत सरकार द्वारा		
– संस्कृति मंत्रालय-योजनागत	64,639,000	55,753,000
– संस्कृति मंत्रालय-गैर-योजनागत	33,500,000	30,892,964
(ख) राज्य सरकार द्वारा	–	–
(ग) अन्य स्रोतों द्वारा (विवरण दें)	80,000	
III. निवेशों पर ब्याज–		
(क) नियत/अक्षय निधियाँ	–	–
(ख) स्वपूंजी (अन्य निवेश)	–	–
IV. प्राप्त ब्याज		
(क) बैंकों में जमा राशि पर	1,452,601	2,780,071
(ख) ऋण, अग्रिम आदि	271,407	178,122
V. अन्य आय		
– फीस (प्रवेश एवं शिक्षा)	–	–
– दान	100,000	–
VI. उधार ली गई राशि		
VII. यदि कोई अन्य प्राप्तियाँ (विवरण दें)		
(क) नियत/अक्षय निधियाँ, पूंजी में बढ़ोतरी	–	–
(ख) बयाना/प्रतिभूति जमा	265,600	277,014
(ग) प्रायोजित कार्यक्रम	–	–
(घ) संयुक्त सेवाएं 128,057	304,998	
(ङ) प्रकाशन की बिक्री	9,969,974	11,621,290
(च) रॉयल्टी प्राप्त 9,159	40,160	
(छ) विविध आय 253,879	383,711	
(ज) स्टाफ को दी गई अग्रिम राशियों की वसूली	1,328,332	1,492,117
(झ) कर्मचारियों द्वारा सीजीएचएस अंशदान	65,130	52,870
(ञ) कर्मचारियों द्वारा पेंशन अंशदान	–	13,766
(ट) अन्य	–	96
(ठ) प्रधान मंत्री राहत कोश	50,802	–
योग	114,755,105	104,295,054

भुगतान	चालू वर्ष योग	गत वर्ष योग
I. व्यय		
(क) स्थापना व्यय (अनुसूची 20 के तदनुरूप)	35,799,193	19,135,201
(ख) प्रशासनिक व्यय (अनुसूची 21 के तदनुरूप)	64,179,866	68,887,497
II. विभिन्न परियोजना के भुगतान हेतु पूंजी	–	–
III. निवेशों और जमा राशियों के लिए किए गए भुगतान		
(क) नियत/अक्षय निधियों से	–	–
(ख) स्वपूंजियों से (निवेश-अन्य)	–	–
IV. स्थायी परिसंपत्तियों तथा पूंजी पर आधारित कार्यों पर व्यय		
(क) स्थायी परिसंपत्तियों की खरीद	4,323,897	73,741
(ख) पूंजी पर आधारित कार्यों पर व्यय		11,600,000
V. अधिशेष धन/ऋणों की वापसी		
(क) भारत सरकार को	–	–
(ख) राज्य सरकार को	–	–
(ग) अन्य पूंजी उपलब्ध करानेवालों को	–	–
VI. वित्त शुल्क (ब्याज)	–	–
VII. अन्य भुगतान (उल्लेख करें)		
उधार लेनेवालों को भुगतान	–	–
स्टाफ को अग्रिम राशि	–	–
– वाहन अग्रिम	383,000	249,350
– त्योहार अग्रिम	70,500	106,500
– कंप्यूटर अग्रिम	460,000	635,000
– गृह निर्माण अग्रिम	337,500	–
– अवितरित मानदेय	–	–
प्रतिभूति वापसी	21,000	26,750
संयुक्त सेवाएँ	522,414	784,669
अन्य (वसूली योग्य)	3,570,912	–
बिक्री समायोजन खाता	69,960	155,182
प्रधानमंत्री राहत कोश	50,802	–
अंत शेष		
(क) हाथ में रोकड़	159,163	121,930
(ख) बैंकों में शेष	–	–
(i) चालू खातों में	–	–
(ii) जमा खातों में	–	–
(iii) बचत खातों में	4,606,223	2,519,234
(ग) रसीदी टिकट हाथ में	198,675	–
योग 114,755,105	104,295,054	

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 14.05.2005

(भागीदार)

ह./-
राकेश कुमार शर्मा
(प्रवर लेखापाल)

ह./-
ललित कुमार जैन
(उपसचिव)

ह./-
के. सच्चिदानंदन
(सचिव)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

सामान्य भविष्य निधि का तुलन-पत्र : यथातिथि 31-03-2005

2003-2004	लेखाशीर्ष	2004-2005		2003-2004	लेखाशीर्ष	2004-2005	
	सा. भ. नि. ख़ाता				निवेश (लागत पर)		
29,259,334	01-04-2004 को शेष	31,483,603			आवधिक जमा (निम्नांकित बैंकों के साथ)		
	वर्ष के दौरान परिवर्धन :			2,072,092	स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया, नई दिल्ली	–	
4,793,907	कर्मचारियों का सा. भा. नि. में अंशदान	4,903,590		7,866,408	केनरा बैंक, नई दिल्ली	8,280,835	
2,037,438	ग्राहकों के ख़ाते में ब्याज, जमा	2,198,258		7,500,000	आईडीवीआई बैंक, सुविधा	7,500,000	
6,831,345		7,101,848		6,000,000	आईडीवीआई बैंक, फलैक्सी बॉण्डस	6,000,000	21,780,835
	वर्ष के दौरान कटौती :			23,438,500			
3,224,900	अंतिम निकासी	1,904,000			निवेशों पर प्रोदभूत ब्याज		
422,959	अग्रिमों का अंतिम निकासी में परिवर्तन	593,891		2,785,662	01-04-2004 को शेष	2,779,784	
959,217	पूर्ण एवं अंतिम भुगतान	2,476,011		2,133,231	जमा : 2004-2005 के दौरान प्रोदभूत ब्याज	1,965,286	
4,607,076		4,973,902	33,611,549	2,139,109	घटा : वर्ष के दौरान परिपक्वता पर ब्याज	1,322,940	3,422,130
				2,779,784			
	ब्याज (अविनियोजित) ख़ाता						
(75,497)	01-04-2004 को शेष	89,680			ग्राहकों को अग्रिम		
2,176,830	जमा : निवेश पर प्रोद्भूत ब्याज	1,965,286		3,602,283	01-04-2004 को शेष	4,128,602	
25,971	जमा : एसबी ख़ातों पर प्राप्त ब्याज	78,643		2,796,000	जमा : वर्ष के दौरान स्वीकृत	2,396,000	
–	जमा : अन्य प्राप्तियाँ	–		1,846,722	घटा : वर्ष के दौरान वसूली	1,916,290	
2,127,304		2,133,609		422,959	घटा : अग्रिमों का अंतिम निकासी में परिवर्तन	593,891	4,014,421
2,037,438	घटा : सा. भ. नि. के ग्राहकों के ख़ाते में ब्याज जमा	2,198,258		4,128,602			
					अन्य अग्रिम		
186	घटा : बैंक शुल्क	521			वसूली योग्य राशि–साहित्य अकादेमी	–	127,794
–	घटा : कॉनट्रा समायोजन	(65,170)		58,558			
2,037,624		2,133,609			बैंक शेष		
				5,128	– एस.वी. ख़ाता सं. 01100/401527, एसवीआई नई दिल्ली	2,614,755	
				1,162,711	– एस.वी. ख़ाता सं. 3264, केनरा बैंक, नई दिल्ली	1,651,614	4,266,369
31,573,283	योग		33,611,549	31,573,283	योग		33,611,549

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

सामान्य भविष्य निधि का प्राप्ति और भुगतान : यथातिथि 01-04-2004 से 31-03-2005

2003-2004	प्राप्तियाँ	2004-2005	2004-2005 (कुल)	2003-2004	भुगतान	2004-2005	2004-2005 (कुल)
2,643,648	बैंक शेष	1,167,839					
	सा. भा. नि. ख़ाता				सा. भ. नि. ख़ाता		
4,793,907	कर्मचारियों का अंशदान	4,903,590		3,224,900	अंतिम निकासी	1,904,000	
1,846,722	सा. भ. नि. से अग्रिमों का भुगतान	1,916,290	7,987,719	959,217	पूर्ण और अंतिम भुगतान	2,476,001	4,380,011
					ग्राहकों को अग्रिम		
				2,796,000	वर्ष के दौरान ग्राहकों को		
					दी गई अग्रिम राशि		2,396,000
	प्राप्त ब्याज				निवेश		
2,182,708	सा. भा. नि. के निवेश पर ब्याज	1,322,940		15,302,470	वर्ष के दौरान किए गए निवेश		3,376,780
25,971	बैंक वचत ख़ातों पर ब्याज	78,643	1,401,583	58,744	साहित्य अकादेमी से		
	निवेश				वसूली योग्य राशि		4,587
12,016,213	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि		5,034,445		बैंक अंत शेष		
				1,162,710	केनरा बैंक	1,651,614	
				5,128	एस. बी. आई	2,614,755	4,266,369
23,509,169	योग		14,423,747	23,509,169	योग		14,423,747

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

सामान्य भविष्य निधि खाता वर्ष 2004-2005 में निवेश और प्रोद्भूत ब्याज की अनुसूची

विवरण	माह	क्रय तिथि	परिपक्वता तिथि	निवेश राशि	ब्याज की दर (%)	निवेश									
						शेष 1.4.2004 को	2004-2005 में बढ़ोतरी	2004-2005 में परिपक्वता	शेष 31.3.05 को	31.3.2004 तक प्रोद्भूत	2004-2005 तक प्रोद्भूत	कुल योग 31.3.05	2004-05 में परिपक्वता पर प्राप्त	31.3.05 को प्रोद्भूत	निवेश का कुल मूल्य
भारतीय स्टेट बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा :															
टी.डी.आर. सं. 459650	37	31/10/00	30/11/03	831072	10	831072	—	831072	—	265539	—	265539	265539	—	—
टी.डी.आर. सं. 459977	36	5/10/01	10/5/04	529921	9.5	529921	—	529921	—	158671	13733	172404	172404	—	—
टी.डी.आर. सं. 346844	36	21/7/03	20/7/06	711099	6	711099	—	711099	—	29923	(3,097)	26826	26826	—	—
टी.डी.आर. सं. 547271	36	—	—	—	—	—	702325	702325	—	—	2225	2225	2225	—	—
टी.डी.आर. सं. 547213	36	—	—	—	—	—	1096611	1096611	—	—	21519	21519	21519	—	—
योग				2072092		2072092	1798936	3871028	0	454133	34380	488513	488513		
केनरा बैंक नई दिल्ली में आवधिक जमा :															
के.डी.आर. सं. 1797	37	13/3/01	12/4/04	719443	10	719443	—	719443	—	252899	3446	256345	256345	—	—
के.डी.आर. सं. 1802	37	13/3/01	4/12/04	143889	10	143889	—	143889	—	50580	689	51269	51269	—	—
के.डी.आर. सं. 1799	37	4/9/01	5/8/04	300085	10	300085	—	300085	—	102498	4315	106813	106813	—	—
के.डी.आर. सं. 3849	37	11/8/02	11/7/05	2576991	7	2576991	—	—	2576991	261546	203975	465521	—	465521	3042512
के.डी.आर. सं. 3061	37	4/5/02	4/4/05	500000	8	500000	—	—	500000	85169	48952	134121	—	134121	634121
के.डी.आर. सं. 3062	36	4/3/02	4/2/05	1418859	8	1418859	—	—	1418859	242399	138198	380597	—	380597	1799456
के.डी.आर. सं. 5165	36	27/1/04	26/1/07	1257723	5.5	1257723	—	—	1257723	12129	71296	83425	—	83425	1341148
के.डी.आर. सं. 5199	36	2/1/04	1/1/07	949418	5.5	949418	—	—	949418	8584	53787	62371	—	62371	1011789
के.डी.आर. सं. 5492	36	15/5/04	14/5/07	195158	5.5	—	195158	—	195158	—	9540	9540	—	9540	204698
के.डी.आर. सं. 5493	36	9/5/04	8/5/07	406898	5.5	—	406898	—	406898	—	20274	20274	—	20274	427172
के.डी.आर. सं. 5376	36	13/4/04	12/4/07	975788	5.5	—	975788	—	975788	—	52756	52756	—	52756	1028544
योग				9444252		7866408	1577844	1163417	8280835	1015804	607228	1623032	414427	1208605	9489440
आईडीबीआई, नई दिल्ली में आवधिक जमा :															
आईडीबीआई फ्लैक्सी बॉण्ड	15	17/12/03	16/12/18	6000000	7	6000000	—	—	6000000	105000	420000	525000	420000	105000	6105000
आईडीबीआई सुविधा एफ़डीआर सं. 31/1/7211	60	28/9/02	27/9/07	7500000	10	7500000	—	—	7500000	1204847	903678	2108525	—	2108525	9608525
योग				13500000		13500000	0	0	13500000	1309847	1323678	2633525	420000	2213525	15713525
कुल योग				25016344		23438500	3376780	5034445	21780835	2779784	1965286	4745070	1322940	3422130	25202965

1-4-2004 को पिछला शेष	23438500
वर्ष के दौरान जमा	3376780
योग	26815280
वर्ष के दौरान परिपक्व	5034445
योग	21780835

31-03-2005 को समाप्त वर्ष के लिए वित्तीय लेखा के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची 24—महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ

1. लेखा परिपाटी

वित्तीय विवरण ऐतिहासिक मूल्य परिपाटी तथा लेखा की प्रोद्भवन पद्धति के आधार पर तैयार किए गए हैं।

2. वस्तुसूची मूल्यांकन

(2.1) पुस्तकों के स्टॉक का मूल्यांकन उनके मुद्रित मूल्य की 40% राशि पर किया गया है।

(2.2) पुस्तकों के स्टॉक का मूल्यांकन उनकी न्यूनतम लागत तथा कुल विश्वसनीय मूल्य पर किया गया है। लागत उनके तौल के औसत मूल्य या लागत पर आधारित है।

3. स्थायी परिसंपत्तियाँ

(3.1) स्थायी परिसंपत्तियाँ अर्जन की लागत पर आधारित हैं, जिसमें आवक भाड़ा, कर और परिकर तथा अर्जन से संबंधित आनुषांगिक एवं प्रत्यक्ष व्यय भी सम्मिलित हैं। निर्माण से संबंधित परियोजनाओं के संदर्भ में, पूर्व प्रचालन व्यय (जिनमें परियोजनाओं के पूर्ण होने पर दिए गए ऋणों पर ब्याज शामिल है), पूँजी परिसंपत्तियों के मूल्य का भाग हैं।

(3.2) ग़ैर-अनुवीक्षण अनुदानों (संग्रह निधि के अलावा) द्वारा प्राप्त स्थायी परिसंपत्तियों की पूँजी का मूल्य निर्धारण तदनुरूप जमा आरक्षित पूँजी पर आधारित है।

4. मूल्यह्रास

(4.1) मूल्यह्रास को आयकर के 1961 के अधिनियम में विनिर्दिष्ट लिखित मूल्यों/दरों के अनुरूप किया गया है, इसमें पुस्तकालय की पुस्तकों पर छूट है जिन पर मूल्यह्रास की दर 10 प्रतिशत है।

(4.2) वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों की बढ़ोतरी के संदर्भ में, मूल्यह्रास को परिसंपत्तियों की ब्लॉक पद्धति के आधार पर विचारा गया।

(4.3) वर्ष के दौरान स्थायी पद्रिसंपत्तियों की कटौतियों के संदर्भ में, मूल्यह्रास को दर्शाए जाने की आवश्यकता नहीं।

5. विविध व्यय

आस्थगित राजस्व व्यय गत 5 वर्षों के प्रारंभ से नहीं लिखा गया।

6. बिक्री के लिए लेखा

बिक्री में उत्पाद शुल्क और बिक्री का कुल लाभ, रियायत तथा व्यापार छूट शामिल हैं।

7. सरकारी अनुदान/इमदाद

(7.1) वह सरकारी अनुदान जो कि संगठन की प्रवृत्ति (या प्रकृत्ति) के हैं, जिन पर पूँजी लागत द्वारा परियोजनाओं को चलाया जाता है उन्हें पूँजी राजस्व माना गया है।

(7.2) विशिष्ट स्थायी परिसंपत्तियों पर दिए गए अनुदान के संदर्भ में, उन्हें उनसे संबंधित परिसंपत्तियों में लागत पर कटौती में दर्शाया गया है।

(7.3) सरकारी अनुदानों/इमदादों का लेखा उगाही के आधार पर किया गया है।

8. विदेशी मुद्रा संचालन

(8.1) विदेशी मुद्रा में किया गया संव्यवहार, जिस तिथि को लेन-देन किया गया है, उस तिथि की विनिमय दर पर तय किया गया है।

(8.2) चालू परिसंपत्तियों, विदेशी मुद्रा ऋण तथा चालू दायित्वों को वर्ष के अंत तक चलनेवाली विनिमय दरों में परिवर्तित किया गया है तथा यदि विदेशी मुद्रा दायित्व स्थायी परिसंपत्तियों से संबंधित हैं तो उन्हें प्राप्त लाभ/हानि में स्थायी परिसंपत्तियों की लागत में समायोजित किया गया है और अन्य मामलों में उन्हें राजस्व माना गया है।

9. पट्टा

पट्टों के किराए पट्टों की शर्तों के आधार पर ख़र्च किए गए हैं।

10. सेवा-निवृत्ति लाभ

(10.1) किसी कर्मचारी की मृत्यु/सेवा-निवृत्ति में दिए जानेवाले उपदान का दायित्व प्रोद्‌भूत है, उसके बीमांकित मूल्यांकन पर आधारित है।

(10.2) कर्मचारी को संचित अवकाश का भुगतान प्रोद्‌भूत है तथा इस बात को भी सुनिश्चित किया गया है कि संबंधित कर्मचारी (जो लाभ के अधिकारी/हक़दार हैं) को मिलनेवाले लाभ प्रत्येक वर्ष के अंत में मिलें।

अनुसूची 25—प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ

1. प्रासंगिक दायित्व

(1.1) संगठन (अथवा व्यक्ति) के विरुद्ध किए गए दावों को ऋणों की पावती के रूप में नहीं दर्शाया गया है—रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

(1.2) 31.03.2005 तक 1,72,376/- रुपये की राशि श्रीमती शोभा लक्ष्मी (गत वर्ष 1,02,041/-रु.) को उनके वेतन की 50 प्रतिशत राशि ग़ैर भुगतान लेखा-शीर्ष के अंतर्गत दी जा सकती है। उक्त कर्मचारी के विरुद्ध फ़र्ज़ी प्रमाण-पत्र प्रस्तुत किए जाने के लिए उन पर कोर्ट में केस डाला गया है। कर्मचारी इस वक़्त निलंबित है तथा उसका 50 प्रतिशत वेतन रोक लिया गया है।

(1.3) निम्नांकित विवादास्पद माँगें :
आयकर—रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

बिक्रीकर—रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)
नगरपालिका कर—रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

(1.4) संगठन द्वारा पार्टियों को दिए गए आदेशों का अनुपालन न किए जाने के विरुद्ध दावे—रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

2. पूँजीगत प्रतिबद्धताएँ

पूँजी लेखा में अनुबंधों के अनुमानित मूल्य को लागू नहीं किया है तथा अग्रिमों की कुल 3,41,60,000/- रुपये की राशि (गत वर्ष 3,41,60,000/-रु.) भी उपलब्ध नहीं कराई गई है। उक्त प्रतिबद्धता के.लो.नि.वि. को भवन निर्माण का अनुबंध दिए जाने के संदर्भ में है।

3. पट्टा दायित्व

भविष्य में प्लॉट और यंत्रों की वित्तीय पट्टे पर की जानेवाली देख-रेख पर व्यय की जानेवाली राशि—रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

4. चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण और अग्रिम

संगठन का मानना है कि सामान्य व्यापार के संदर्भ में चालू परिसंपत्तियों, ऋणों और अग्रिमों से उतना ही उगाही योग्य पैसा है, जितना कि तुलन-पत्र के कुल योग में दर्शाया गया है।

5. कराधान

1961 के आयकर अधिनियम के अंतर्गत तीन कर योग्य राशि नहीं है, इसलिए आयकर का प्रावधान आवश्यक नहीं है।

6. विदेशी मुद्रा संव्यवहार

(6.1) आयात के मूल्य की सी.आई.एफ़. के आधार पर गणना : शून्य
तैयार सामान, कच्चा माल एवं अवयव (पारगमन सहित)
तथा पूँजीगत सामान की ख़रीद
भंडार, अतिरिक्त और उपभोज्य

(6.2) विदेशी मुद्रा में व्यय :

(क) बारसीलोना और चीन की यात्रा — 8,27,326/- रु.
— योजनागत योजना के अंतर्गत—साहित्यिक विनिमय

(ख) वित्तीय संस्थाओं/बैंकों को विदेशी मुद्रा में भेजी गई रक़म और ब्याज भुगतान — शून्य

(ग) अन्य व्यय :

बिक्री पर कमीशन	शून्य
कानूनी तथा व्यावसायिक व्यय	शून्य
विविध व्यय	शून्य

(6.3) अर्जन :

एफ़.ओ.बी. के आधार पर निर्यात मूल्य — शून्य

(6.4) लेखापरीक्षकों को पारिश्रमिक — शून्य

7. वर्ष 2003-2004 के संग्रह निधि के ब्याज को चालू वर्ष में इस्तेमाल किया गया है तथा वर्ष 2004-2005 के चालू वर्ष में संग्रह निधि पर रु. 8,25,000/- रुपये के प्राप्त ब्याज को बैंक शेष के रूप में सुरक्षित रखा गया है तथा इसे अगले वित्तीय वर्ष 2005-2006 में इस्तेमाल किया जाएगा। एक करोड़ रुपये की संग्रह निधि की राशि को नई दिल्ली स्थित केनरा बैंक में आवधिक जमा किया गया है।

8. गत वर्ष के तदनुरूप आँकड़ों को जहाँ भी आवश्यक हो पुनर्वर्गीकृत/पुनर्व्यवस्थित किया गया है।

9. अनुसूची 1 से 23 जिसमें, प्राप्ति और भुगतान, सा.भ.नि. तुलन पत्र, सा.भ.नि. प्राप्ति और भुगतान, 31-03-2005 को समाप्त वर्ष के तुलन-पत्र के संलग्नक एवं अभिन्न अंग हैं तथा आय और व्यय लेखा भी इसी तिथि को समाप्त वर्ष का संलग्नक एवं अभिन्न अंग है।

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001

फ़ोन : 23386626/27/28, 23387386, 23386088

फ़ैक्स : 091-11-23382428

ई-मेल : secy@ndb.vsnl.net.in

वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in

विक्रय विभाग

'स्वाति'

मंदिर मार्ग, नई दिल्ली 110 001

फ़ोन : 23745297, 23364207

फ़ैक्स : 091-11-23364207

क्षेत्रीय कार्यालय

172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग

दादर, मुंबई 400 014

फ़ोन : 24135744

फ़ैक्स : 091-22-24147650

जीवनतारा बिल्डिंग, चौथी मंज़िल

23 ए /44 एक्स., डायमंड हार्बर रोड,

कोलकाता 700 053

फ़ोन : 24781806, 24787405

फ़ैक्स : 091-33-24789375

सेंट्रल कॉलेज परिसर,

डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी,

बंगलौर 560 001

फ़ोन : 2245152

फ़ैक्स : 091-80-2121932

चेन्नई कार्यालय

मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल),

443(304) अन्नासालइ,

तेनामपेट, चेन्नई 600 018

टैलीफ़ैक्स : 091-44-24311741



शब्द ही
एकमात्र रत्न हैं
जो मेरे पास हैं
शब्द ही
एकमात्र वस्त्र हैं
जिन्हें मैं पहनता हूँ
शब्द ही
एकमात्र आहार है
जो मुझे जीवित रखता है
शब्द ही
एकमात्र धन है
जिसे मैं लोगों में बाँटता हूँ

– संत तुकाराम